सार बचन राधास्वामी

छंद बंद

जिस को
परम पुरुष पूर्ण धनी स्वामी जी महाराज
ने
ज़बाने मुबारक से फ़र्माया

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

परम संत हुज़ूर धनी स्वामी शिवदयाल सिंह जी महाराज

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

भूमिका

1. परम संत हुज़ूर स्वामी जी महाराज कि जिनका नाम नामी सेठ शिवदयाल सिंह जी था, भादों वदी अष्टमी संवत 1875 बिक्रमी मुताबिक 25 अगस्त सन् 1818 ईसवी को बवक़्त क़रीब चार बजे तड़के महल्ला पन्नी गली शहर आगरे में प्रकट हुए। आप बैंजल सेठ क्षत्रियों के एक मशहूर खानदान से थे, जो अर्सा तक़रीबन दो सो साल का हुआ कि लाहौर से देहली और देहली से आगरे आए थे। आपके वालिद शरीफ़ का इस्म गरामी[1] सेठ दिलवाली सिंह जी था, और आपके दादा साहिब सेठ मलूकचन्द जी रियासत धौलपुर में दीवान के ओहदे[2] पर मुमताज[3] थे।

2. आपके ख़ानदान में शुरू से ही गुरबाणी का प्रचार था और जुमला[4] अहले ख़ानदान क्या मर्द कया औरतें और बच्चे जिन की मादरी ज़बान पंजाबी थी, निहायत प्रेम और भाव के साथ रोज़मर्रा[5] गुरुनानक साहिब की बाणी का पाठ किया करते थे, सुबहा को जपुजी साहिब और शाम को सोदर रहिरास। हुज़ूर स्वाम़ी जी महाराज ने जितना अर्सा सत्संग किया गुरु ग्रन्थ साहिब और तुलसी साहिब

---

1. शुभ नाम। 2. पद। 3. सुसज्जित। 4. सब। 5. प्रतिदिन।

की बाणी का पाठ करते रहे। चूँकि उत्तर प्रदेश में पंजाबी ज़बान का रिवाज बहुत कम है और आम लोगों को पंजाबी समझने में दिक़्क़त[1] महसूस होती थी इस लिये बहुत से प्रेमी सत्संगियों और सत्संगिनों ने इस्रार[2] करके उन ऊँची और गूढ़ रूहानी रमजों को सरल भाषा में आम फ़हम ज़बान में कहने पर मज़बूर किया। इसमें शक नहीं कि जिस ख़ूबी के साथ हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने राज़हाय सरबस्ता[3] यानी गूढ़ भेदों को आसान और सलीस ज़बान में कलम-बन्द किया है उस की नज़ीर[4] आज कहीं नहीं मिलती। यह अपनी नज़ीर आप ही है।

3. हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने छ: साल की उमर से ही रूहानी तल्कीन[5] व हिदायत का सिलसिला शुरू कर दिया था। ख़ुद अपने वालदैन को और नीज़ उन साधुओं को जो उनकी बज़ूरगी से वाक़िफ़ होकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर होते थे हर तरह से परमार्थ समझाते थे।

4. आप करीब पंद्रह वर्ष तक अपने मकान की एक कोठरी में जो अन्दर दूसरे कोठे के थी, बैठ कर सुरत शब्द योग का अभ्यास करते रहे, यहाँ तक कि अक्सर औक़ात दो-दो तीन-तीन रोज तक बाहर नहीं निकलते थे और न ही इस अरसे में हाजत ज़रूरी की तरफ़ तवज्जह होती थी।

5. अकसर सत्संगी व सत्संगिनें एक वर्ष से ज़ियादा आम सत्संग जारी करने के लिये हठ कर रहे थे और बारबार यही प्रार्थना हुज़ूर स्वामी जी महाराज के चरणों में करते थे। आखिर उनकी अर्ज़ क़बूल फ़र्मा कर संवत 1997 (बिक्रमी) बरोज़ बसन्त पंचमी मुताबिक जनवरी 1861 (ईसवी) को हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने

---

1. कठिनता। 2. आग्रह करके। 3. गुप्त। 4. उदाहरण। 5. प्रचार, उपदेश।

अपने मकान पर बयान संत-मत और उसका उपदेश परमार्थी लोगों को फ़र्माना शुरू किया और यह सत्संग सतरह वर्ष तक रात-दिन बराबर ज़ारी रहा ।

6. राधासवामी मत का दूसरा नाम संत-मत है जो कि पिछले जमाने में निहायत गुप्त रहा। जो संत प्रकट होते वे मुद्दतों परखने और अज़माइश करने के बाद और अंत: करण यानी ज़मीर साफ़ करके सिर्फ़ ख़ास ख़ास अधिकारियों को इस ऊँचे और सच्चे नाम का भेद बताते थे । लेकिन अब इस घोर कलयुग में जीवों को निहायत निर्बल यानी कमज़ोर और दुनिया में फंसा हुआ देख कर हुज़ूर स्वामी जी माहाराज ने अपनी दया मेहर का बल देकर लोगों को भवसागर से पार करने के लिये फ़ैज़े-आम[1] ज़ारी फर्मा दिया । पिछले ज़माने में किसी संत ने इस फ़ैयाज़ी[2] और फ़राख़-दिली[3] से नाम का भेद नहीं दिया । इस सबब से अक्सर मतों में लोग शग्ल रूहानी यानी अन्तर्मुखी अभ्यास को छोड़ कर पूजा पाठ वग़ैरा बाहर-मुखी साधनों की तरफ़ रागिब[4] हो गये

7. राधास्वामी मत में तीन चीज़ें तरकार हैं--गुरू, नाम और सत्संग, और तीनों के ज़रीए ही उद्धार हो सकता है यानी नजात[5] हासिल हो सकती है । अव्वल गुरू पूरा और सच्चा चाहिये यानी संत सतगुरु । वंशवाली[6] गुरुओं से काम नहीं निकलेगा। दोयम नाम भी सब से ऊँचा और सच्चा और पूरा और असली यानी ज़ाती चाहिये, ब-मैं भेद नामी यानी मुसम्मा के । कृत्रिम यानी सिफ़ाती नामों से काम नहीं चलेगा । तीसरे सत्संग भी सच्चा चाहिये । उसकी दो क़िस्में हैं, एक सत्संग

---

1. जीवों के लाभहित। 2. बख्शिश। 3. खुले दिल से। 4. ध्यान देने लग पड़े। 5. मुक्ति। 6. गुरुओं के खानदान के कुल गुरु महन्त आदि।

अन्तरी, दूसरा बाहरी। अन्तरी सत्संग यह है कि अभ्यासी अपनी सुरत यानी जीवात्मा या रूह को अन्तर में चढ़ा कर सत्पुरूष राधास्वामी के चरणों में लगावे या उस तरफ़ मुतवज्जह[1] करे। दूसरा यह कि जब उसको दर्शन और संग सत्पुरूषों का जो कि सच्चे और पूरे संत और साध हैं नसीब होवे यह उनके बचन सुने और दर्शन करें और जो सेवा बन सके करे। इन दोनों क़िस्म के सत्संग से कुछ दिनों में हालत साफ़ बदलती हुई मालूम होगी।

8. और जो और काम परमार्थी क़िस्म के हैं, मिस्ल तीर्थ और ब्रत मन्दिर और मूरत और पोथियों का पाठ और जप और सुमिरन सिफ़ाती नाम का, इन कामों के करने से ज़रा भी हालत नहीं बदलती, क्योंकि इन कामों में निज मन और जीवात्मा यानी रूह जिसको संत सुरत कहते हैं शामिल नहीं होते और इसी सबब से इन कामों का असर ज़ाहिर नहीं होता। अलबत्ता[2] ज़ाहिरी आन्नद और अहंकार वगैरा दिल में आ जाता है।

9. सुरत यानी जीवात्मा या रूह जो ख़ास सत्पुरूष राधास्वामी की अंश है इस जिस्म में एक बड़ा जौहर है कि जिसकी ताक़त से कुल बदन और मन और इन्द्रयाँ वगैरा अपना अपना काम देती हैं। सो संतों ने इसी जौहर को छाँट कर उसके असल भण्डार और खज़ाने की तरफ़ मुतवज्जाह किया और जब इसकी सच्ची तवज्जह उधर को हुई, तब आहिस्ता-2 इसकी हालत भी बदलती जाती है और दुनिया और उसके पदार्थ रोज़-बरोज़ नज़र में ओछे और हक़ीर[3] दिखलाई देते हैं। इस जौहर लतीफ़[4] का असल मुक़ाम क़याम यानी ठहराव पिंड यानी जिस्म में आँखों के पीछे है और वहाँ से यह तमाम देह में फैला है और सब

---

1. धयान देवे। 2. परन्तु, लेकिन। 3. तुच्छ।

आज्ञा (अंङ्गो) को ताक़त दे रहा है और इस का भंडार और खज़ाना आदि शब्द यानी आदि नाद है।

10. मालूम होवे कि आदि शब्द कुल का कर्ता और स्वामी है, और आदि सुरत यानी उसके अव्वल ज़हूर का नाम राधा है। इन्हीं का नाम सुरत और शब्द है और जब इनकी धार नीचे आई, तब इसी आदि शब्द से और शब्द, और आदि सुरत से और सुरत, और शब्द से सुरत और सुरत से शब्द बराबर प्रकट होते आये और अपने-अपने मुक़ाम पर कायम हुए।

11. शब्द की महिमा तो तमाम मतों के ग्रन्थों में है और ख़ास ख़ास संतों ने गूढ़ भेद को किसी क़दर वज़ाहत के साथ भी बयान किया है, लेकिन स्वामी जी ने निहायत तफ़सील के साथ यानी विस्तार पूर्वक शब्द भेद ज़ाहिर फ़र्माया है।

12. खुलासा भेद शब्द का नीचे लिखा जाता है:-- कुल की आदि राधास्वामी यानी कुल मालक है यहाँ शब्द निहायत गुप्त है और उसकी उपमा यानी नमूना इस रचना में कहीं नहीं है। इसी शब्द से सत्तपुरुष प्रकट हुए। शबद पहला—सत्तपुरुष का शबद जिसको सत्तनाम और सत्तशब्द भी कहते हैं और जिसकी सत्त क़ुदरत से सोहं पुरुष और पारब्रह्म और ब्रह्म और माया प्रकट हुए।

दूसरा—सोंह पुरुष का शब्द। तीसरा—पारब्रह्म् का शब्द जिसकी मदद से तीन लोक की रचना ठहरी हुई है। चौथा—ब्रह्म् का शब्द, जो कि प्रणव है, और जिससे सूक्ष्म यानी ब्रह्म्डीं वेद और ईश्वरी माया प्रकट हुई। पाँचवाँ—माया और ब्रह्म् का शब्द जिससे त्रिलोकी की रचना का मसाला प्रकट हुआ और आकाशी वेद ज़ाहिर हुए। माया शब्द के नीचे वैराट पुरुष का शब्द और

जीव और मन का शब्द प्रकट हुआ।

13. इस वक़्त में जो कोई शब्द के अभ्यास का ज़िक्र भी करते हैं तो सिवाय नीचे के शब्द के ऊँचे शब्दों की उनको खबर तक भी नहीं है और बाज़े बैराटी शब्द को ही कर्ता शब्द मानते हैं और कोई कोई माया और ब्रह्म के मिले हुए शब्द का सिर्फ़ जिक्र करते हैं। मगर उसकी महिमा और सिफ़त और उसके स्थान और अभ्यास की युक्ति से, जिससे वह प्राप्त होवे, नावाक़िफ़ हैं। इन सब शब्दों का हाल इस पोथी में तफ़सील वार लिखा हुआ है।

14. तरीक़ा राधास्वामी यानी संत—पन्थ का भक्ति मार्ग का है, यानी सच्चे और पूरे मालिक के चरणों में प्रेम और प्रीत और प्रतीति करना। इसको उपासना और तरीक़त भी कहते हैं। इस मार्ग में या तो संत सतगुरु और साध गुरु की महिमा है और या उनके असली शब्द स्वरूप की महिमा है। संत सतगुरु उनको कहते हैं कि जो सत्तपुरुष और राधास्वामी के मुक़ाम पर पहुँचे, और साध गुरु उनको कहते हैं जो ब्रह्म और पारब्रह्म के मक़ाम पर पहुँचे, और जो यहाँ तक नहीं पहुँचे, उनको साध और सत्संगी कहा जाता है। इन दोनों जानी संत और साध का असली स्वरूप, शब्द स्वरूप है और ज़ाहिरी स्वरूप नर स्वरूप यानी इन्सानी ख़िर्का[1] है जो कि वे लोगों के समझाने और बुझाने और उपकार और उद्धार के लिये धर कर संसार में प्रकट होते हैं। जब यह मालूम हुआ कि यह पूरे संत या पूरे साध हैं तो फिर उन में और सत्तपुरुष या पारब्रह्म में भेद नहीं माना जाता है। इस वास्ते जब जब पूरे संत या पूरे साध प्रकट होते हैं, तो उनके चरण सेवक उनकी महिमा सत्तपुरुष या पारब्रह्म के बराबर करते

---

1. चोला, लिबास।

हैं और बाहिर में उनकी पूजा और सेवा और आरती वग़ैरा उसी तौर से बजा लाते हैं जैसे कि मालिक की करना चाहिये और इस ज़ाहिरी स्वरूप की सेवा और दर्शन और बचन और उनके चरणों में प्रेम और प्रीति करने से और जो जुगत वे बतलावें उसके अभ्यास करने से सुरत यानी जीवात्मा मन और माया के जाल से अलाहदा हो कर आकाश में और उससे परे चढ़ती है और अन्तर के स्वरूप यानी शब्द में पहुँचती है, तब सच्चा और पूरा उद्धार जीव का होता है।

15. जब तक कि पूरे संत या पूरे साध न मिलें तब तक खोजी को मुनासिब है की उनकी तलाश में रहे और जो कोई उनका सत्संगी यानी सेवक मिल जावे कि जिसने उनके दर्शन और सेवा बख़ूबी की है और उनसे भेद शब्द मार्ग का हासल करके अभ्यास किया है और कर रहा है उससे प्रीति करे और भेद मार्ग और मंजिल का और जुगत उसकी प्राप्ति की यानी तरीक़ा अभ्यास का दरयाफ़्त करके कमाई शुरू करे और सच्चा इष्ट राधास्वामी के चरणों में जो कुल के मालिक हैं, और जहाँ कि पहुँचने का इरादा हर एक परमार्थी को मजबूत करना चाहिये, बाँध कर अपना काम करना शुरू करे। जो प्रीति और प्रतीति सच्ची और शौक़ सच्चा और पक्का होगा तो जरूर कुल मालिक आप किसी न किसी वक़्त पर चाहे जिस स्वरूप से दर्शन देकर इस जीव का काम अपनी दया और कृपा से बनावेंगे।

16. राधास्वामी नाम कुल मालिक ने अपना आप प्रकट किया है, और जब कि हुज़ूर साहिब के चरण सेवकों को कुछ दिन अभ्यास और सत्संग करने से कुछ-कुछ उनकी भारी क़ुदरत और गति मालूम हुई और कुछ उनहोंने अपनी कृपा से थोड़ी अपनी पहिचान बख़्शी, तब से उनको उसी नाम से जिस मुक़ाम

यानी राधास्वामी पद से कि वे आये थे पुकारना शुरू किया और वह अपनी मौज से इस कलयुग में जीवों पर निहायत दया करके संत स्वरूप अवतार धारण करके प्रकट हुए । संत-मत में भी वही क़ायदा जारी है जो और तरीक़त यानी उपासना वालों के मत में जारी है और वह यह है कि सतगुरु पूरे यानी मुर्शद-कामिल में और मालिक कुल में भेद नहीं करते और इसी सबब से उनको उसी नाम से पुकारते हैं जो कि असली नाम उस मुक़ाम यानी पद का है जहाँ से कि वे आये हैं । राधास्वामी नाम सुरत और शब्द की एक सिफत है, जैसे समुद्र और उसकी लहर, शब्द और उसको धुन, प्रेमी और प्रीतम, इन सब का मतलब एक ही है ।

17. इस मत के मानने वालों और सुरत शब्द के अभ्यास करने वालों को चन्द रोज़ में आप उनके अन्तर में मालूम हो जावेगा कि यह क्या भारी नियामत और दुर्लभ पदार्थ उन को मिला है, और जिस क़दर दिन-दिन उन की हालत मोक्ष और उद्धार की होती जावेगी उसको वे आप देख लेंगे और सब मतों के सिद्धान्त और मक़ाम की और उनकी गति की आप खबर हो जावेगी कि कौन मत कहाँ से निकला है और कहां तक उसकी रसाई और पहुँच है ।

18. यह मत और इसका अभ्यास खास-कर उन लोगों के वास्ते है जिन को सच्चे मालिक के मिलने की चाह है, और जिनको अपने जीव के कल्याण और उद्धार का दिल में फ़िक्र है और जो लोग कि दुनिया के सामान और नामवरी और मान और बढ़ाई और इल्म यानी विद्या को पसन्द करते हैं और परमार्थ को अपना रोज़गार मुक़र्रर करते हैं उनके वास्ते यह उपदेश नहीं है और न उनको यह कलाम पसन्द आवेगा, बल्कि जहाँ तक मुमकिन होगा वह इस पर तान करेंगे और गलत और फ़ुजूल ठहरावेंगे और सबब इसका यह है

कि इस कलाम को सुन कर उनका मन घबरा जाता है कि इसको मानने से उनकी दुनिया और देह के मज़े बिलकुल जाते रहेंगे और रोज़गार में फ़र्क आ जावेगा, इस वास्ते वे जहाँ तक बन सकेगा ऐसी कोशिश करेंगे कि यह मत जारी न होवे ताकि जिन जीवों को उन्होंने गफ़लत में डाल रखा है और तरह ब तरह की पूजाओं में भरमा रखा है और उनसे अपने रोज़गार और आमदनी की सूरत पैदा कर रखी है, वे उनके गोल और हुक्म बरदारी से अलाहदा न हो जावें और उनकी पूजा और आमदनी में ख़लल न पड़े।

19. हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने भी अपनी जिन्दगी मिसल और गृहसथी संतों के बसर की, और किसी सत्संगी की भेट और पूजा अपने खाने पीने या ज़ाती इस्तेमाल में नहीं लाये, और अपना कुल सरमाया[1] परमार्थ में ख़रच कर दिया और दुनिया में आला से आला पवित्र ज़िन्दगी का नमूना बनकर दिखा दिया। चूँकि ज़माना आज़ादी का था, इस वास्ते आपने कलाम भी निहायत आज़ादी और बेबाकी[2] से फ़र्माया है, और दुनिया में आपकी मुख़ालफ़त भी सिर्फ़ चन्द अशख़ास बिरादरी तक ही महदूद थी। हर एक मज़हब व मिल्लत के लोग आप पर दिल व जान से फ़रेफ़्ता[3] थे।

आपने उनसठ साल दस महीने तक जीवों का उद्धार करके आसाढ़ वदी एकम संवत् 1935 बिक्रमी मुताबिक 15 जून सन् 1878 ई. को अपने मकान पर पन्नी गली शहर आगरे में चोला छोड़ा।

आख़िरी बचन जो हुज़ूर मुक़द्दम व मुअल्ला ने चोला छोड़ने के मौक़े पर ज़बाने-मुबारक से अर्शाद फ़र्माए, नीचे दर्ज किये जाते हैं।

---

1. पूंजी। 2. निर्भयता। 3. मुग्ध।

वचन आख़िरी

वचन जो कि स्वामी जी महाराज ने आख़िरी रोज़ पेशतर अन्तर ध्यान होने के, वास्ते हिदायत साधूओं, सत्संगियों व सत्संगिनों के ख़ास ज़बाने मुबारक से फ़र्माये।

तारीख 15 जून सन् 1878 मुताबिक असाढ़ वदी पड़वा (1) संवत् 1925 बि: रोज शनीचर वक्त अलस्सबाह।

वचन 1---चनद्रसैन सत्संगी जो कि हर पूनो (पूर्णमासी) को मौज़ा कुरसंडे से वासते दर्शन हुज़ूर स्वामी जी महाराज के आता था, उसको स्वामी जी महाराज ने पास बुला कर फ़र्माया: तुम बैठ जाओ और दर्शन ख़ूब गौर से कर लो और इस स्वरूप को अपने ह्रदय में रख लो क्योंकि दूसरी पूनों को तुमको दर्शन न होंगे तुम्हारी भक्ति पूर्ण हुई।

वचन 2---वक्त आठ बजे सुबह के स्वामी जी महाराज ने फ़र्माया कि :---अब चलने की तैयारी है। इसके बाद महाराज ने सुरति चढ़ाई और सब भास खैंच लिया, सिर्फ़ सफ़ैद डेले आँखों के पीले हो गये थे। फिर पाव घंटे के बाद सुरति उतारी और उस वक्त यह फ़र्माया :---अब मौज फिर गई, अभी देर है। तब सेठ प्रताप सिंह ने पूछा कि कब की मौज है ? उस पर फ़र्माया :---कि बाद दोपहर के।

वचन 3—फिर भारा सिंह साधु और सत्संगियों ने कुछ रूपया भेंट करना शुरू किया और बन्दगी करने लगे उस पर लाला जगन्नाथ खत्री पड़ोसी कहने लगे, कि इस वक्त महाराज का

ध्यान अन्तर में लगने दो, रूपया पेश करने का यह वक्त नहीं है। तब स्वामी जी महाराज ने उसकी तरफ़ मुतवज्ज्ह हो कर यह फ़र्माया:--- कि ध्यान इसका नाम है कि जब चाहे तब सुरति पहुँचा दो और जब चाहे तब उतार लो, और हमने तो डेरे रात को ही पहुँचा दिये और सुरति सत्तपुरुष की गोद में पहुँचा दी, मगर तुम लोगों से कुछ वचन कहने को उतर आये हैं।

वचन 4---फिर यह फ़र्माया कि तुम जानते हो कि मेरी छः वर्ष की उमर थी जब से मैं परमार्थ में लगा हूं तब से यह अभ्यान पका हुआ है और यह दृष्टान्त फ़र्माया;---कि कच्चा पैराक हो, उनको डूबते वक्त कहो कि अब तू पैर (तैर) तो उस वक्त वह क्या पैरेगा वह तो डूबे ही गा। और जो लड़कपन से तैरना सीख रहा है उसको दरया में डाल दोगे तो वह नहीं डूबेगा और यह देह तो खलड़ी है, यह तो किसी की भी नहीं रही है। इसका क्या है, और ज़िन्दगी भर का भजन सिमरन सिर्फ़ इसी वास्ते है कि इस वक्त न भूले, इस वासते ऐसा नाम का अभ्यास करो कि चलते फिरते नाम न भूले।

वचन 5---फिर स्वामी जी महाराज ने राय साहिब सालगराम और कुल साधुओं व सत्संगियों व सत्संगिनों की तरफ मुतवज्जह हो कर फ़र्माया:---कि जैसा मुझ को समझते हो वैसा ही अब राधा[1] जी को समझना और राधा जी और छोटी माता[2] जी को बराबर जानना।

---

1. असली नाम माता जी का माता नरायण देवी जी था। लेकिन चूँकि सेठ प्रताप सिंह जिन्होंने यह वचन लिखें है, उन को राधा जी के नाम से पुकारते थे, इस वास्ते याहां राधा जी ही दरज है।
2. छोटी माता जी से मुराद सेठ बिन्द्रावन जी साहिब जो कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज के मंझले भाई थे, की सुपत्नी से है।

वचन 6---फिर राधा जी महाराज को हुकम दिया कि सिब्बो[3] और बुक्की[3] और बिशनों[3] को पीठ न देना।

वचन 7---सनमुखदास[4] को फर्माया:--- कि इसको सब साधुओं का महन्त किया और यह फर्माया:---कि एसी महन्ती नहीं जैसी दुनिया में जार्रा है यानी सनमुखदास और विमलदास साधुओं के अफ़सर हुए और इन्तज़ाम और बन्दोबस्त साधुओं का इनके तअल्लुक़ रहेगा और बाग में ठहरें और बाग का मालिक "प्रतापा" (सेठ प्रताप सिंह)।

वचन 8---फिर फ़र्माया:---कि गर्हस्थी अपनी पूजा साधुओं से न करावें।

वचन 9---फिर रद्धी बीबी नें पूछा---कि हमारे वास्ते किसको तजवीज़ किया है ? इस पर फ़र्माया :---कि गृहस्थियों के वास्ते तो राधा जी और साधुओं के वासते सनमुख दास।

वचन 10---स्वामी जी महारहज ने फ़र्माया:--- कि गृहस्थी औरतें बाग़ में जाकर किसी साधु की पूजा और सेवा न करें। इन सब को चाहिये कि राधा जी के दर्शन और पूजा करें। फिर फ़र्माया:---कि शेर और बकरी को एक घाट पानी मैनें पिलाया है और किसी का काम नहीं है कि ऐसा करे।

---

3. ये तीनों हुज़ूर स्वामी जी महाराज की खास सेविकायें थी।
4. जालन्धर शहर के बाशिन्दे हुज़ूर स्वामी जी महाराज के गुरुमुख सेवक थे।

वचन 11---फिर बीबी बुक्की ने अर्ज़ किया कि स्वामी जी मुझ को भी अपने साथ ले चलो। इस पर फ़र्माया---कि तुम घबराओ मत तुमको जल्दी बुला लेंगे, तुम अन्तर में चरनों की तरफ ज़ोर देना।

वचन 12---फिर सेठ प्रताप सिंह नें अर्ज़ किया---कि मुझको भी अपने संग ले चलो । इस पर फर्माया:---कि तुमसे अभी बहुत काम लेना है। बाग़ में रहोगे और सत्संग करोगे और कराओगे।

वचन 13---फिर सुदर्शन सिंह ने पूछा कि---जो कुछ पुछना होवे तो किस से पूछे ? उस पर फर्माया:---कि जिस किसी को पूछना होवे वह सालगराम से पूछे।

वचन 14---फिर सेठ प्रताप सिंह की मुतरफ तवज्जह हो कर फर्माया:---कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का था और राधास्वामी मत सालगराम का चलाया हुआ है। इसको भी चलने देना और सत्संग जारी रहे और सत्संग आगे से बढ़कर होगा।

वचन 15---फिर फर्माया:---सब सत्संगी ख़ाह गृहस्थी या भेष, किसी तरह न घबरावें, मैं हर एक के अङ्ग सङ्ग हूं और आगे को सब की सँभाल पहिले से विशेष रहेगी।

वचन 16---फिर फर्माया:---कि कलजुग में और कोई करनी नहीं बनेगी, केवल सतगुरु के स्वरूप का ध्यान और नाम का सिमरन बनेगा।

वचन 17---सेठ प्रताप सिंह ने अर्ज़ किया---कि शब्द खुले। इस पर फर्माया:---कि धुन का सुनाई देना और उस में आनन्द का प्राप्त होना, यही शब्द का खुलना है।

वचन 18---फिर स्वामी जी महाराज ने राधा जी की तरफ मुतवज्जह हो कर फर्माया:---कि मैंने स्वार्थ और परमार्थ दोनों में कदम रखा है यानी दोनों बरते हैं सो संसारी चाल भी सब करना और साधुओं को भी अपनी रीति करने देना।

वचन 19—फिर स्वामी जी महाराज सेहन में से भीतर कमरे के तशरीफ ले गये और क़रीब पौने दो बजे बाद दोपहर के अन्तर ध्यान हुए।

सूची पत्र सार बचन छंद बंद

शब्द की टेक पृष्ठ

आ

शब्द की टेक | पृष्ठ

शब्द की टेक		पृष्ठ

शब्द की टेक		पृष्ठ

ग

शब्द की टेक | पृष्ठ

शब्द की टेक पृष्ठ

शब्द की टेक		पृष्ठ

शब्द की टेक | | पृष्ठ

शब्द की टेक		पृष्ठ
शब्द ने रची त्रिलोकी सारी	०००	88
शब्द बिना सारा जग अंधा	०००	91
शब्द संग बाँध सुरत का ठाट	०००	92
शब्द संग लगी सुरत की डोर	०००	312
शोभा देखूँ मैं अब गुरु की	०००	330

स

शब्द की टेक पृष्ठ

बचनों का सूची पत्र

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

सोरठा

राधास्वामी नाम, जो गावे सोई तरे।
कल[1] कलेश सब नाश, सुख पावे सब दुख हरे ।।1।।
ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार, बहुरि[2] न जगमें जन्मई ।।2।।

दोहा

राधास्वामी गाय कर, जनम सुफल कर ले।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले ।।3।।
बैठक स्वामी[3] अद्‌भुती, राधा[4] निरख निहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ।।4।।
गुप्त रूप जहँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर[5] नहिं पावई, जहाँ कोइ बिसराम ।।5।।

।। मंगलाचरण ।।

करूँ बन्दगी राधास्वामी आगे । जिन परताप जीव बहु जागे ।।1।।
बारम्बार करूँ परनाम । सतगुरु पदम[6] धाम सतनाम ।।2।।
आदि अनाति जुगादि अनाम । संत स्वरूप छोड़ निज धाम ।।3।।

---

1. काल। 2. फिर। 3. कुल मालिक आदि शब्द। 4. आदि सुरत।
5. दया। 6. सेत कँवल।

आये भव जल नाव लगाई । हम से जीवन लिया चढ़ाई ।।4।।
शब्द दृढ़ाया सुरत बताई । करम भरम से लिया बचाई ।।5।।

दोहा

कोटि कोटि करूँ बन्दना, अरब खरब दंडौत ।
राधास्वामी मिल गये, खुला भक्ति का सोत[1] ।।

चौपाई

भक्ति सुनाई सबसे न्यारी[2] । वेद कतेब[3] न ताहि बिचारी ।।1।।
सत्तपुरुष चौथे पद बासा । संतन का वहाँ सदा बिलासा ।।2।।
सो घर दरसाया गुरु पूरे । बीन बजे जहँ अचरज तूरे[4] ।।3।।
आगे अलख पुरुष दरबारा । देखा जाय सुरत से सारा[5] ।।4।।
तिस पर अगम लोक इक न्यारा । संत सुरत कोई करत बिहारा ।।5।।
तहाँ से दरसे अटल[6] अटारी[7] । अद्‌भुत राधास्वामी महल सँवारी ।।6।।
सुरत हुई अति कर मगनानी । पुरुष अनामी जाय समानी ।।7।।

।। बचन पहला ।।

संदेश

संदेश[8] ---प्रगट होना परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी का संत सतगुरु रूप धार कर वास्ते उद्धार जीवों के ।।

सुनावना अधिकारी को इस संदेश का कि परम पुरुष धनी राधास्वामी जीवों को महा दुखी और भरम में भूला हुआ देख कर

---

1. भंडार । 2. पृथक । 3. मजहबी किताबें । 4. आवाज एक तरह के बाजे की । 5. तत्व वस्तु । 6. जो कभी नाश न हो । 7. सब से ऊपर का मकान । 8. खबर ।

आप उनके उद्धार के निमित्त[1] संत सतगुरु रूप धारण करके प्रगट हुये और अति दया करके भेद अपने निज स्थान का और युक्ति उसके प्राप्ति की सुरत शब्द के मार्ग[2] से उपदेश करते हैं। जीवों को चाहिये कि उनके चरण कँवल में प्रेम करें ।।

इस मार्ग की कमाई से मन बस में आवेगा और सिवाय इसके दूसरा कोई उपाव मन के निश्चल और निर्मल करके चढ़ाने का आकाश के परे इस कलयुग में निश्चय करके नहीं है। जितने मत संसार में प्रवृत[3] हैं, उन सब का सिद्धांत[4] संतो की पहिली मंजिल[5] निहायत दूसरी मजल तक खतम[6] हो जाता है। जो सुरत शब्द का अभ्यास विधि पूर्वक बन आवे तो मन और सुरत निर्मल होकर और शब्द को पकड़ के आकाश के परे जो घट घट में व्यापक है, चढ़ेंगे और नौद्वार अथवा पिंड देश को छोड़ कर ब्रह्मांड यानी त्रिकुटी में पहुंचेंगे और वहाँ से सुरत मन से अलग होकर आगे चलेगी और सुन्न और महासुन्न के बिलास देखती हुई और सत्त लोक और अलख लोक और अगम लोक में दर्शन सत पुरुष और अलख पुरुष और अगम पुरुष का करती हुई राधास्वामी के निज देश में प्राप्त होगी। इसी स्थान से आदि में सुरत उतरी थी और त्रिलोकी में आकर कालके जाल में फँस गई थी सो उसी स्थान पर फिर जा पहुंचेगी। सुरत शब्द मार्गी को यह सब स्थान यानी विष्णु-लोक और शिव-लोक और ब्रह्म-लोक और शक्ति-लोक और कृष्ण-लोक और राम लोक और ब्रह्म और पारब्रह्म पद और जैनियों का निर्वाण-पद और ईसाईयों का मकाम-खुदा और रूहुल क़ुद्स का निर्वाण-पद और ईसाईयों का मुकाम-ख़ुदा और रूहुल क़ुद्स[8] और मुसलमानों के आलमे मलकूत[9] और जबरूत[10] और

1. वास्ते। 2. रास्ते। 3. जारी। 4. आखिरी पद। 5. स्थान। 6. पूरा। 7. अभ्यासी। 8. पवित्र आत्मा। 9. देव लोक, जहां केवल फिरिशते रहते हैं। 10. सुषुप्ति।

लाहूत[1] सुन्न के नीचे नीचे रास्ते में पड़ेंगे। यह सब लीला देखती हुई सुरत संतों के प्रताप से अपने निज देश को प्राप्त होगी।

।। शब्द पहला ।।

आरती

चलो री सखी मिल आरत गावें। ऋतु बसंत आये पुरुष पुराने ।।1।।
अलख अगम का भेद सुनावें। राधास्वामी नाम धरावें ।।2।।
सुरत शब्द की रेल चलावें। जीव चढ़ाय अगम पुर धावें ।।3।।
सतसँग धारा नितहि बहावें। राधास्वामी छिन छिन गावें ।।4।।
उमँग उमँग हिया भेंट चढ़ावें। काल जाल दुख दूर बहावें ।।5।।
ऐसे समरथ पुरुष अपारा। दृष्टि जोड़ रहुं दर्श अधारा ।।6।।
पल पल खटकत विरह करारी[2]। जस हूलत[3] कोइ सेल[4] कटारी ।।7।।
बिन देखे दीदार[5] न मानूँ। जग संसार सभी विष जानूँ ।।8।।
अमृत कुंड रूप राधास्वामी। अचऊँ[6] छिनछिन तबमन मानी ।।9।।
बिन राधास्वामी मोहिं कछु न सुहावे। चार लोक मेरे काम न आवे ।।10।।
ज्ञान ध्यान और जोग बैरागा। तुच्छ[7] समझ मैनें इनको त्यागा ।।11।।
मैं तो चकोर चंद राधास्वामी। नहिं भावे सतनाम अनामी ।।12।।
बिन जल मछली चैन न पावे। कंवल बिना अल[8] क्यों ठहरावे ।।13।।
स्वाँति बिना जैसे पपिहा तरसे। सुत वियोग माता नहिं सरसे[9] ।।14।।
अस अस हाल भया अब मेरा। कासे बरनूं कोऊ न हेरा[10] ।।15।।
दान देयं तो दें राधास्वामी। और न कोई ऐसा अंतरजामी ।।16।।
ऐसी भक्ति होय इक रंगी। काटे बन्धन मन बहुरंगी ।।17।।

---

1. तुरिया। 2. तीव्र, तेज़। 3. छेदता है। 4. बरछा। 5. दरशन। पान करूँ, पिऊँ। 7. ओछा। 8. भँवरा। 9. मगन होती है। 10. पहिचानता।

राधास्वामी राधास्वामी नित गुन गाऊँ। चरन सरनपर हिया उमगाऊँ।।18।।
कहाँ लग बरनूं मेहर अपारा। दिन दिन होवत मौज[1] नियारा।।19।।
जगत जीव कहा[2] समझे लीला। देख देख हंसन चित सीला[3]।।20।।
अब के दाव पड़ा मोरा सजनी। जब आयो राधास्वामी की सरनी।।21।।
खुल गये भक्ति प्रेम भडांरा। कोटिन जीव का होय उधारा।।22।।
चहुं दिस धूम पड़ी अब भारी। काल नगर मानो[4] दे हैं उजाड़ी।।23।।
स्वामी दयाल मौज ऐसी धारी। दीन होय तिस लेहैं उबारी।।24।।
मैं किंकर उन चरनन दासा। सब जीवन को देऊँ दिलासा[5]।।25।।
बाँध सुरत चरनन में राखो। अगम अपार अमी रस चाखो।।26।।
हंस सभा कहा बरनूं सोभा। होवत जहाँ शब्दन की बरषा।।27।।
चमकत बिजली गरज अकाशा। और कहा कहुं[9] अजब तमाशा।।28।।
बंकनाल के नाले छूटे। सुखमन नदियाँ भरम पुल टूटे।।29।।
त्रिकुटी घाट बैठ मल धोई। मान सरोवर दुरमत खोई।।30।।
हंस रूप होय सुरत समानी। शब्द अगम धुन अंतर जानी।।31।।
महासुन्न के ऊपर गाजी[7]। राधास्वामी हो गये राज़ी।।32।।
भँवरगुफा की खिड़की खोली। सत्तपुरुष की सुन लइ बोली।।33।।
हंस सभी अगवानी धाये। अलख लोक से लेवन आये।।34।।
सुरत सिरोमन पहुंची धाई। अलख पुरुष का दर्शन पाई।।35।।
नाना विधि जहाँ बजत बधाई। हंस सभी मिल आरत गाई।।36।।
अगम लोक जाय झंडा गाड़ा। अगम पुरुष का भेद उघाड़ा[8]।।37।।
वहाँ का मरम न कोई आखा। बिरले संत गुप्त कर भाखा।।38।।
जीव दया अब अति कर आई। राधास्वामी खुल क़र गाई।।39।।

---

1. दया की धार। 2. क्या। 3. चित्त की शांति। 4. जैसे। 5.दरशन।
6. पान करूँ, पिऊँ। 7. ओछा। 8. भँवरा। 9. मगन होती है।
10. पहिचानता।

मानो रे मानो जीव अभागी । राधास्वामी करि हैं सभागी ।।40।।
धाओ दौड़ो पकड़ो चरना । जैसे बने तैसे आओ सरना ।।41।।
फिर औसर[1] नहिं पाओ रे ऐसा । अब कारज करो जैसा रे तैसा ।।42।।
छोड़ो कर्म धर्म पाखंडा । सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मण्डा ।।43।।
जब होवे हिये सुरत अखंडा । पहुंचे सत्तलोक सचखंडा ।।44।।
वहाँ से अलख लोक को धावे । अगम लोक में जाय समावे ।।45।।
अगम पुरुष का दर्शन करई । अद्भुत रूप सुरत जब धरई ।।46।।
हंसा पाँति[2] जोड़ जहाँ बैठे । झुंड झुंड रहें इकट्ठे ।।47।।
अरबन खरबन भान[3] उजारा । कहा कहुं सोभा भूमि[4] अपारा ।।48।।
कँवलन क्यारी चहुं दिस[5] लागी । झालर मोती झुम झुम[6] आगी ।।49।।
राग रंग धुन अति झनकारा । अमी सरोवर[7] भरे हैं अपारा ।।50।।
हीरे लाल रतन की धरती । चाँद सुरज की चादर तनती[8] ।।51।।
जहाँ राधास्वामी का तख़्त[9] बिराजे । हंस मंडली अद्भुत राजे ।।52।।
धूम धाम नित होत सवाई[10] । आनंद मंगल दिन प्रति गाई ।।53।।
ऐसा देश रचा राधास्वामी । निज भक्तन को करें बिसरामी ।।54।।

।। शब्द दूसरा ।।

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में । गुरु होय जीव चिताये ।।1।।
जिन जिन माना बचन समझ के । तिनको संग लगाये ।।2।।
कर सतसँग सार रस पाया । पी पी तृप्त अघाये[11] ।।3।।
गुरु सँग प्रीत करी उन ऐसी । जस चकोर चन्दाये ।।4।।
गुरु बिन कल नहिं पड़त घड़ी इक । दम दम मन अकुलाये[12] ।।5।।
जब गुरु दर्शन मिलें भाग से । मगन होत जस बछड़ा गाये ।।6।।
ऐसी प्रीत लगी जिन गुरुमुख । सो सो गुरु अपनाये ।।7।।

---

1. समय। 2. पंक्ति। 3. सूर्य। 4. जगह। 5. दिशा। 6. लटकती हुई। 7. ताल। 8. फैल हुई। 9. सिंहासन। 10. अधिक। 11. तृप्त हो गये। 12. घबराये।

तन की लगन भोग इन्द्री के । छिन में सब बिसराये[1] ।।8।।
गुरु की मूरत बसी हिये में । आठ पहर गुरु संग रहाये ।।9।।
अस गुरु भक्ति करी जिन पूरी । ते ते नाम समाये ।।10।।
स्वाँति बूँद जस रटत[2] पपीहा । अस धुन नाम लगाये ।।11।।
नाम प्रताप सुरत अब जागी । तब घट शब्द सुनाये ।।12।।
शब्द पाय गुरु शब्द समानी । सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये ।।13।।
अलख शब्द और अगम शब्द ले । निज पद राधास्वामी आये ।।14।।
पूरा घर पूरी गति पाई । अब कुछ आगे कहा न जाये ।।15।।

।। बचन दूसरा ।।

सिफ़त राधास्वामी नाम की

।। सिफ़त पहिली ।।

सोरठा

राधास्वामी नाम, सिफ़त[3] करूँ इस नाम की ।
सुनो कान ते आन[4] भिन्न, भिन्न[5] वर्णन करूँ ।।1।।
पाँच अक्षर आये हिन्दी में । जबाँ[6] फ़ारसी अक्षर दस में ।।2।।
पाँच शब्द का भेद बतावें । दस मुक़ाम को ले पहुंचावें ।।3।।

।। सिफ़त दूसरी ।।

एक सिफ़त यह वर्ण[7] बताई । सिफ़त दूसरी खुल कर गाई ।।1।।
राधा धुन का नाम सुनाऊँ । स्वामी शब्द भेद बतलाऊँ ।।2।।
धुन और शब्द एक कर जानो । जल तरंग सम भेद न मानो ।।3।।

---

1. भूले । 2. सुमिरता है । 3. महिमा । 4. आ करके । 5. जुदा । 6. भाषा । 7. बयान करके ।

॥ सिफ़त तीसरी ॥

सिफ़त तीसरी करूँ बखाना । सुनो चित्त से देकर काना ॥1॥
राधा प्रीत लगावन हारी[1] । स्वामी प्रीतम नाम कहा री ॥2॥
यह भी सिफ़त बताय दई । राधास्वामी सुरत शब्द गाया री ॥3॥

॥ सिफ़त चौथी ॥

राधा आदि सुरत का नाम । स्वामी आदि शब्द निज धाम ॥1॥
सुरत शब्द और राधास्वामी । दोनों नाम एक कर जानी ॥2॥
सुरत शब्द संग करे बिलास । यों राधास्वामी ढिंग[2] बास ॥3॥
राधास्वामी दो कर जान । होयँ एक सत लोक ठिकान ॥4॥

॥ बचन तीसरा ॥

महिमा परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की जो कि संत सतगुरु रूप धारन करके वास्ते उद्धार जीवों के जगत में प्रगट हुए और वर्णन प्रेम प्रीति उनके चरण कँवल में

सोरठा

राधास्वामी नाम, जो गावे सोई तरे ।
कलकलेश सब नाश, सुख पावे सब दुख हरे ॥1॥
ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई ।
जो जाने सो पार, बहुरि न जग में जन्मई ॥2॥

॥ शब्द पहला ॥

अकह अपार अगाध अनामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ॥1॥
हैरत[3] रूप अथाह दवामी[4] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ॥2॥

---

1. लगाने वाली । 2. पास । 3. अचरज । 4. हमेशा कायम रहने वाला ।

अगम रूप धर आये अगामी[1] । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।3।।
अलख धाम के फिर हुए धामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।4।।
सतलोक में हुए सतनामी । वह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।5।।
भँवरगुफा बैठे अंतरजामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।6।।
महासुन्न पर बैठक ठानी[2] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।7।।
सुन में अक्षर[3] रूप मुक़ामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।8।।
गगन मँडल ओंकार अकामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।9।।
रूप निरंजन धारा श्यामी[4] । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।10।।
मन के घाट हुए अब कामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।11।।
इन्द्री घाट बिकार घटामी[5] । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।12।।
स्थूल रूप धर जगत जगामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।13।।
त्रिगुन रूप जग रचा रचामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।14।।
अललपच्छ[6] सम फिर उलटामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।15।।
पहुंचे फिर निज धाम अनामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।16।।
फिर हुए जस थे प्रथम अनामी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।17।।
महिमा उनकी कस कह गामी[7] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।18।।
बार बार मैं करूँ नमामी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।19।।
जोगी ज्ञानी मर्म न जानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।20।।
ब्रह्मा विष्णु महेश भुलानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।21।।
गौर[8] सवित्री लछमी न जानी । गति मेरे प्यारे राधास्वामी ।।22।।
शेष गनेश कुरम[9] अज्ञानी । जस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।23।।
ऋषि मुनि नारदादि भटकानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।24।।

---

1. जहाँ किसी की गम यानी पहुँच न हो । 2. मुक़र्रर की । 3. अविनाशी । 4. श्याम रंग । 5. दूर किया । 6. एक अकाशी पक्षी जो अंडे से निकलते ही आसमान को लौट जाता है यानी ज़मीन तक नहीं आता । 7. गाऊँ । 8. पारवती । 9. ओंकार ।

सनकादिक पित्रादि न जानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।25।।
देवी देव रहे पछतानी । अस मेरे प्यारे राधासवामी ।।26।।
ईश्वर परमेश्वर भरमानी । क्या मेरे प्यारे राधास्वामी ।।27।।
वेद कतेब पुराण नदानी[1] । मत मेरे प्यारे राधास्वामी ।।28।।
चाँद सुरज तारा गगनानी । जाने न मेरे प्यारे राधास्वामी ।।29।।
अल्ला ख़ुदा रसूल[2] न मानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।30।।
इन भी भेद नहिं पहिचानी । जस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।31।।
गंगा जमुना सार न जानी । सो मैरे प्यारे राधास्वामी ।।32।।
तीरथ बरत जगत लिपटानी । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।33।।
तीन लोक सब काल चबानी[3] । वाह मेंरे प्यारे राधास्वामी ।।34।।
कोई न परखे तुम्हरी बानी । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।35।।
महिमा कहाँ लग बर्न बखानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।36।।
दर्शन रस ले रहुं अघानी[4] । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।37।।
चरन सरन में रहूं लिपटानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।38।।
दर्श नैन रस रहूं तृप्तानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।39।।
बचन सुना दइ अगम निशानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।40।।
सुरत शब्द मारग दरसानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।41।।
भेद पाय मैं रहूँ समानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।42।।
होय न कुछ कभि मेरी हानी[5] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।43।।
मैं नारी तुम पुरुष सुजानी । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।44।।
विरह भाव में हुई दिवानी[6] । देख मेरे प्यारे राधास्वामी ।।45।।
जम जगात[7] कुछ लगे न लगानी । बल मेरे पयारे राधास्वामी ।।46।।
कलमल दाग धुले व धुलानी । पाये मेरे प्यारे राधास्वामी ।।47।।

---

1. नहीं जाना । 2. पैग़म्बर । 3. खायगा । 4. तृप्त । 5. नुकसान । 6. मस्त । 7. कर, महसूल ।

जन्म जन्म रही धोख धुखानी[1] । क्या मेरे प्यारे राधास्वामी ।।48।।
अब मेरा भाग जगा जग जानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।49।।
काम क्रोध नहीं लोभ लुभानी । गये मेरे प्यारे राधास्वामी ।।50।।
जाल ज़बर अब सभी कटानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।51।।
धाम मिला जहाँ अचरज बानी । दिया मेरे प्यारे राधास्वामी ।।52।।
संतन साथ हुई संतानी । जो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।53।।
बारम्बार करूँ परनामी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।54।।
धाम आपना भला दुरानी[2] । तुम मेरे प्यारे राधास्वामी ।।55।।
तुम्हरी गति कुछ अजब कहानी । सुनी मेरे प्यारे राधास्वामी ।।56।।
मैं रही निस दिन नाम दीवानी । तुम्हरे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।57।।
काल मार तुम दूर हटानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।58।।
मैं बल जाऊँ चरन क़ुरबानी[3] । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।59।।
गावत गुन तुम अति हरखानी । ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।60।।
देख रूप तुम रहुं मगनानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।61।।
मैं चकोर तुम चन्द समानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।62।।
मैं विरहन तुम दरश घुमामी[4] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।63।।
मैं पल पल तुम दरश दिवानी[5] । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।64।।
तुम्हरे बचन मद झूम झुमानी[6] । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।65।।
तुम स्वाँती मैं सीप निमानी[7] । यों मेरे प्यारे राधास्वामी ।।66।।
तुम्हरी गति मति गोप[8] छिपानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।67।।
तुमही सब विधि लीला ठानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।68।।
ज्यों पपिहा स्वाँती तरसानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।69।।
तुम चुम्बक मैं लोह कठिनानी । खिंच रहुं मेरे प्यारे राधास्वामी ।।70।।

---

1. धोखा खाय। 2. छिपाया। 3. बलिदान करना। 4. मतवाली। 5. मस्त। 6. मतवाली हुई। 7. दीन। 8. गुप्त।

मैं मृगनी तुम नाद समानी । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।71।।
मैं मछली तुम हुए मेरे पानी । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।72।।
राम न जाना कृष्ण न जानी । तुम को मेरे प्यारे राधास्वामी ।।73।।
सीता रूकमिन और पटरानी[1] । सुने न मेरे प्यारे राधास्वामी ।।74।।
ईसा मूसा मरियम[2] मानी । चूके मेरे प्यारे राधास्वामी ।।75।।
कुलकर[3] और मुरादेवी रानी । पाये न मेरे प्यारे राधास्वामी ।।76।।
क़ुतुब[5] पैग़म्बर[5] ग़ौस[5] रबानी[5] । मिले न मेरे प्यारे राधास्वामी ।।77।।
हिन्दू मुसलमान क्या जानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।78।।
ध्रुव प्रहलाद न मरम पिछानी । ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।79।।
नहिं धरती नहिं वहाँ असमानी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।80।।
पवन न अग्नि और नहिं पानी । जहां मेरे प्यारे राधास्वामी ।।81।।
तीनों गुन महा तत्व न जानी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।82।।
नहिं आतम परमातम धामी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।83।।
सुन्न और महासुन्न अलगानी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।84।।
भँवरगुफा सतलोक निचानी । ऊँचे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।85।।
अलख लोक और अगम ठिकानी । तिस परे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।86।।
और न कोइ रहें नाम निशानी[6] । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।87।।
महिमा वहाँ की तुले न तुलानी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।88।।
षट शास्तर नहिं आदि पुरानी । जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी ।।89।।
तीन लोक नहिं चौथे धामी । जहाँ बसें मेरे प्यारे राधास्वामी ।।90।।
पंडित भेख न शेख़ पिछानी । सो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।91।।
ऐसे चरन पर हुई मस्तानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।92।।
कामादिक सब दीन लुटानी । तब मिले मेरे प्यारे राधास्वामी ।।93।।

---

1. महारानी । 2. ईसा की मां । 3. जैनियों के देवता । 4. जैनियों की आदि माता ।
5. फ़क़ीर, मुस्लमानों के महात्मा । 6. रेखा ।

हुई सफ़ाई गगन चढ़ानी । तब लिये मेरे प्यारे राधास्वामी ।।94।।
पंथ चली गइ अधर ठिकानी । मिल गये मेरे प्यारे राधास्वामी ।।95।।
अति बिलास आनन्द हुलसानी[1] । मलि गये मेरे प्यारे राधास्वामी ।।96।।
जहाँ तहाँ वज्र कपाट खुलानी । देखे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।97।।
सतयुग त्रेता द्वाप[2] बितानी । कलि प्रगटे प्यारे राधास्वामी ।।98।।
खोज दिया और किया अपनामी । ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।99।।
तिमिर[3] हटाया रैन बिहानी[4] । भानु रूप प्यारे राधास्वामी ।।100।।
भानु अनंत उगे[5] घट आनी । ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।101।।
कोइ गति मति उन जाने न जानी । जस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।102।।
अंग अंग में प्रेम रंगानी । बसे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।103।।
चरण न भूले देह भुलानी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।104।।
मम हिरदे तुम रहो लुकानी[6] । हे मेरे प्यारे राधास्वामी ।।105।।
जुग[7] नहिं छूटे रहूँ जुगानी । बर दो मेरे प्यारे राधास्वामी ।।106।।
कलि साप तुम दूर बहानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।107।।
जस कमोदनी[8] चन्द्र दिखानी । अस मेरे प्यारे राधास्वामी ।।108।।
गुरु स्वरुप आये राधास्वामी । वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।।109।।

।। शब्द दूसरा ।।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गुन गाऊँ उनका सार ।।1।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मुख देखूँ नैन निहार ।।2।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । करूँ सरवन बचन अधार ।।3।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सब सेवा करूँ सम्हार ।।4।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । नित हाज़िर खड़ी दरबार ।।5।।

---

1. खुश हुआ । 2. द्वापर । 3. अँधेरा । 4. बीती । 5. उदय हुए । 6. गुप्त । 7. जोड़ा । 8. कोई का फूल ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुई दासी चरन निहार ।।6।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लइ सरना अब की बार ।।7।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । उन कीन्ही दया अपार ।।8।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सब छूट गया संसार ।।9।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । फिर त्यागा कुल परिवार ।।10।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लज्जा जग दई निवार[1] ।।11।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मैं पकड़ी उनकी लार[2] ।।12।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । कामादिक दिये निकार ।।13।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मल धोये सब ही झाड़[3] ।।14।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । ईर्षा दई चित्त से डार ।। 15।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मान मद भागे बड़े गँवार ।।16।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सफ़ाई हो गई हिये मँझार ।।17।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । घट आई उलटी धार ।।18।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मैं छोड़े अब नौ द्वार ।।19।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । फिर हुई वार से पार ।।20।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । नभ[4] आई मन को मार ।।21।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । तिल देखूँ अजब बहार ।।22।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । जहाँ झिल मिल जोत उजार ।।23।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । पचरंगी गुल[5] गुलज़ार[6] ।।24।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । यह लीला लखी नियार[7] ।।25।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । कंज[8] में करती आज बिहार ।।26।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । चली आगे को पग धार ।।27।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । चढ़ खोला बंक दुआर ।।28।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । त्रिकुटी में देख बहार ।।29।।

---

1. निकाल दी। 2. संग। 3. झाड़ कर साफ़ करके। 4. चिदाकाश। 5. फूल। 6. फुलवारी, बग़ीचा। 7. जुदा, नयारी। 8. सहसदल कँवल।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुन चढ़ आई दसवें द्वार ।।30।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । महा सुन खेली खेल अपार ।।31।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गुफा में सुनी एक झनकार ।।32।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । अमर पद पहुँची खोल किवाड़ ।।33।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । बीन की सुनी जहाँ धधकार ।।34।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दयाल संग पाया काल बिडार[1] ।।35।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । शब्द का चढ़ गया आज ख़ुमार ।।36।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । अलख में पहुँची लगन सुधार ।।37।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । अगम का पाया अब भंडार ।।38।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । राधास्वामी देखा मैं दीदार ।।39।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिटा मेरे घट का सब ही खार[3] ।।40।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लगी मेरी नौका आन किनार ।।41।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । उतर गया जनम जनम का भार ।।42।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । ममत और माया डाली मार ।।43।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिटाया कर्म भर्म गुब्बार[4] ।।44।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिले अब मेरे निज दिलदार[5] ।।45।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुई मैं उनके गल की हार ।।46।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । विरोधी बैठे सब ही हार ।।47।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लिया अब ऐसा अगम विचार ।।48।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । बहूं नहिं कबही भौ की धार ।।49।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । रहूं मैं निस दिन अब हुशियार ।।50।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । तिमिर भी नासा हुआ उजियार ।।51।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुइ अब छिन छिन शुकर गुज़ार ।।52।।

---

1. दूर करके। 2. नशा। 3. मैल, कड़वाई। 4. अन्धकार। 5. प्रीतम।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । डारिया उन पर तन मन वार ।।53।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दिया औघट[1] से घाट उतार ।।54।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । किया राधास्वामी यह सिंगार ।।55।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुई मैं अब उन नाम अधार ।।56।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गई मैं अपने निज घरबार ।।57।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लगी मैं रूप निहार निहार ।।58।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुआ मैं[2] सेवा संग पियार ।।59।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिली निज बस्ती छुटा उजाड़[3] ।।60।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुन्न में खेलूँ शब्द सम्हार ।।61।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार ।।62।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । जलाऊँ सभी काल की जार[4] ।।63।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । जगत का घटा सभी विस्तार ।।64।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लगी अब सूरत तज अहंकार ।।65।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । लोभ भी मारा बड़ा लबार[5] ।।66।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मोह भी भागा अजब चमार ।।67।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । काम पर पड़ी बहुत धिक्कार ।।68।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । काल दल जीता जीती नार[6] ।।69।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । देखती घट में अब गुलज़ार[7] ।।70।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । काट अब डारा सब जंजार ।।71।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुनू मैं तन में राग धमार[8] ।।72।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुरत अब हुई बहुत सरशार[9] ।।73।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मूल गह[10] छोड़ दई सब डार ।।74।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । चढ़न को आगे हूं तैयार ।।75।।

---

1. उलटा । 2. मोहि । 3. जंगल । 4. जान । 5. झूँठा । 6. माया । 7. फुलवार । 8. राग का नाम । 9. मस्त । 10. पकड़ कर ।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सिंह[1] भी भागा देख सियार[2]।।76।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । शब्द की बाँधी कमर कटार ।।77।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गुरु ने दीन्ही अस तलवार ।।78।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सूरमा[3] सुरत चढ़ी ललकार[4] ।।79।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । करम दल[5] भागा सुनत पुकार ।।80।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । भरम भी भागा बाजी तार[9] ।।81।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दूर हुई मन से जग की कार[7] ।।82।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गई अब सूरत गगन मंझार ।।83।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । चाँदनी घट में खुली अगार[8] ।।84।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुरत अस चढ़ती बारम्बार ।।85।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । खोलिया सुन्न का बज्र किवाड़।।86।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुई अब हलकी उतरा भार ।।87।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुनूं धुन घट में रारंकार।।88।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । अमी जल भरा हुई पनिहार[9] ।।89।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । बंद सब टूटे हुआ छुटकार।।90।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिला अस मौसम[10] सदा बहार ।।91।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । ख़िज़ाँ[11] का काँटा दिया निकार ।।92।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गुरु ने लीन्हा गोद बिठार ।।93।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सुनाई पहिले धुन ओंकार ।।94।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । करूं मैं सेवा इक इक न्यार ।।95।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । छुटाई गुरु ने जग बेगार ।।96।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिला अब प्रेम भक्ति औज़ार[12] ।।97।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दिया सब घट का कूड़ा टार ।।98।।

---

1. काल। 2. जीव। 3. शूरवीर। 4. पुकार। 5. फ़ौज। 6. शब्द। 7. करतूत।
8. प्रकाशवान। 9. पानी भरने वाली। 10. ऋतु। 11. पतझड़। 12. हथियार।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । चली अब सुरत शब्द की लार ।।99।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दिया मैं तन मन अपना वार ।।100।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गुफा चढ़ सुनी बीन झनकार ।।101।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । किया मैं अलख अगम को पार ।।102।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । दिया राधास्वामी पार उतार ।।103।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हुइ मैं उन पर अब बलिहार ।।104।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । नाम रस पाया किया अहार ।।105।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सब अटक मिटा आचार ।।106।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । भोग सब हो गये अब बीमार ।।107।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । करूँ नहिं उनका कुछ तीमार[1] ।।108।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । भँवर मन बैठा सुन गुंजार ।।109।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । अगम सुख पाया नहीं शुमार[2] ।।110।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मौन होय बैठी तज गुफ़तार[3] ।।111।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिला मोहिं आज सार का सार[4]।।112।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । सोई है सब का सत करतार ।।113।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । रहूं मैं उसको सदा चितार[5] ।।114।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । हंस जहाँ बैठे बहुत क़तार[6] ।।115।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । आनँद अब मिला मोहिं बिसियार[7] 116।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । किया मैं सब से आज किनार[8] ।।117।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । करूँ मैं गुरु सँग बहुत पियार ।।118।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । मिले राधास्वामी अति दातार ।119।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गही मैं सरना आज तुम्हार ।।120।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । बोझ मैं डाला सभी उतार ।।121।।

---

1. खातिरदारी, ग़मख्वारी। 2. गिनती। 3. बोलना। 4. खुलासा, जौहर, तत्व। 5. याद रखना। 6. पंक्ति। 7. अधिक। 8. जुदा।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । तीन तज पाया मैं पद चार ।।122।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । छुटाया मुझ से खेल असार[1] ।।123।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । किया मैं मन का आज शिकार ।।124।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की । गई मैं राधास्वामी की सरकार ।।125।।

।। शब्द तीसरा ।।

राधास्वामी नाम सुनाया राधास्वामी ।
राधास्वामी रूप दिखाया राधास्वामी ।।1।।
राधास्वामी धाम लखाया राधास्वामी ।
राधास्वामी खेल खिलाया राधास्वामी ।।2।।
राधास्वामी मेल मिलाया राधास्वामी ।
राधास्वामी पंथ चलाया राधास्वामी ।।3।।
राधास्वामी सेव कराई राधास्वामी ।
राधास्वामी भेव[2] जनाइ राधास्वामी ।।4।।
राधास्वामी मौज चलाइ राधास्वामी ।
राधास्वामी सिफ़त[3] कहाइ राधास्वामी ।।5।।
राधास्वामी गुन मैं गाऊँ राधास्वामी ।
राधास्वामी महिमा सुनाऊं राधास्वामी ।।6।।
राधास्वामी आरत बनाई राधास्वामी ।
राधास्वामी जोत जगाई राधास्वामी ।।7।।
राधास्वामी मर्म लखावे राधास्वामी ।
राधास्वामी भेद सुनावे राधास्वामी ।।8।।

---

1. असत्त, झूठा । 2. भेद । 3. महिमा ।

राधास्वामी सुरत शब्द राधास्वामी।
राधास्वामी धुनन बुलाई राधास्वामी ।।9।।
राधास्वामी संग कराया राधास्वामी।
राधास्वामी रंग चढ़ाया राधास्वामी ।।10।।
राधास्वामी बूझ[1] बुझाइ राधास्वामी।
राधास्वामी सूझ[2] सुझाइ राधास्वामी ।।11।।
राधास्वामी भान[3] किरन राधास्वामी।
राधास्वामी सिंध बुन्द राधास्वामी ।।12।।
राधास्वामी चन्द्र कला राधास्वामी।
राधास्वामी गगन गिरा[4] राधास्वामी ।।13।।
राधास्वामी धरनि नीर राधास्वामी।
राधास्वामी अग्नि पवन राधास्वामी ।।14।।
राधास्वामी तीन[5] चार[6] राधास्वामी।
राधास्वामी एक[7] दोय[8] राधास्वामी ।।15।।
राधास्वामी सात[9] बीस[10] राधास्वामी।
राधास्वामी सहस[11] दसम[12] राधास्वामी ।।16।।
राधास्वामी कंज[12] श्याम राधास्वामी।
राधास्वामी सेत सुन्न राधास्वामी ।।17।।
राधास्वामी ओंग रँग राधास्वामी।
राधास्वामी सोहँग सत्त राधास्वामी ।।18।।
राधास्वामी अलख अगम राधास्वामी।
राधास्वामी आप हुए राधास्वामी ।।19।।

---

1. समझ। 2. निर्णय। 3. सूरज। 4. वाणी शब्द। 5. तीन गुण। 6. चार अन्तः करन। 7. सत्त पुरुष राधास्वामी। 8. ब्रह्म और माया। 9. सात द्वारे। 10. दस इन्द्रिय और उनके देवता। 11. सहस दल कँवल। 12. दसवाँ द्वार। 13. तीसरा तिल।

राधास्वामी महिमा कहें राधास्वामी।
राधास्वामी अस्तुत करें राधास्वामी ।।20।।
राधास्वामी सार लखावें राधास्वामी।
राधास्वामी प्यार करावें राधास्वामी ।।21।।
राधास्वामी चरन पुजावें राधास्वामी।
राधास्वामी पाट[1] खुलावें राधास्वामी ।।22।।
राधास्वामी शब्द बतावें राधास्वामी।
राधास्वामी देश बुझावें राधास्वामी ।।23।।
राधास्वामी गुप्त प्रकाशें राधास्वामी।
राधास्वामी तेज निहारें राधास्वामी ।।24।।
राधास्वामी सम देखें राधास्वामी।
राधास्वामी गम[2] खोलें राधास्वामी ।।25।।
राधास्वामी गाउँ ध्याउँ राधास्वामी।
राधास्वामी पुर्ष अर्श[3] राधास्वामी ।।26।।
राधास्वामी गीत नाद राधास्वामी।
राधास्वामी गान नाद राधास्वामी ।।27।।
राधास्वामी छान[4] छनाई राधास्वामी।
राधास्वामी प्रीत लगाई राधास्वामी ।।28।।
राधास्वामी मथन मथी राधास्वामी।
राधास्वामी आदि अंत राधास्वामी ।।29।।
राधास्वामी मद्ध बिराजें राधास्वामी।
राधास्वामी जुक्ति जतन राधास्वामी ।।30।।
राधास्वामी रतन लाल राधास्वामी।
राधास्वामी दयाल कृपाल राधास्वामी ।।31।।

---

1. परदा। 2. भेद। 3. चैतन्य आकाश। 4. निर्णय।

राधास्वामी आन[1] मनाइ राधास्वामी ।
राधास्वामी आन जगाइ राधास्वामी ।।32।।
राधास्वामी पीव[2] पिता राधास्वामी ।
राधास्वामी गुरु संत राधास्वामी ।।33।।
राधास्वामी अजर अमर राधास्वामी ।
राधास्वामी कुरम[3] शेष[4] राधास्वामी ।।34।।
राधास्वामी चेत मिलो राधास्वामी ।
राधास्वामी खेत जिताया राधास्वामी ।।35।।
राधास्वामी भक्ति सिखाई राधास्वामी ।
राधास्वामी भाव बढ़ाया राधास्वामी ।।36।।
राधास्वामी सुमिर सुमिर राधास्वामी ।
राधास्वामी लगन लगाइ राधास्वामी ।।37।।
राधास्वामी तोल तुलावें राधास्वामी ।
राधास्वामी मोल अमोल राधास्वामी ।।38।।
राधास्वामी नेम प्रेम राधास्वामी ।
राधास्वामी धरम करम राधास्वामी ।।39।।
राधास्वामी जुक्ति जोग राधास्वामी ।
राधास्वामी भुक्त भोग राधास्वामी ।।40।।
राधास्वामी रैन दिवस राधास्वामी ।
राधास्वामी निमिष[5] जाम[6] राधास्वामी ।।41।।
राधास्वामी धूप छाँव राधास्वामी ।
राधास्वामी सूर[7] सोम[8] राधास्वामी ।।42।।
राधास्वामी जाप मौन राधास्वामी ।
राधास्वामी नैन हृदय राधास्वामी ।।43।।
राधास्वामी अंतर बाहर राधास्वामी ।

---

1. हुक्म । 2. पति । 3. ब्रह्म । 4. पारब्रह्म । 5. पल । 6. पहर । 7. सूरज । 8. चाँद ।

राधास्वामी प्रोक्ष[7] प्रत्यक्ष[2] राधास्वामी ।।44।।
राधास्वामी अधर धरनि राधास्वामी ।
राधास्वामी व्याप व्यापक राधास्वामी ।।45।।
राधास्वामी दात दाता राधास्वामी ।
राधास्वामी करन कारन राधास्वामी ।।46।।
राधास्वामी तरन तारन राधास्वामी ।
राधास्वामी सृष्ट सृष्टा राधास्वामी ।।47।।
राधास्वामी दृष्ट दृष्टा राधास्वामी ।
राधास्वामी व्रत तीरथ राधास्वामी ।।48।।
राधास्वामी वेद कतेब राधास्वामी ।
राधास्वामी गाय गवाओ राधास्वामी ।।49।।
राधास्वामी पूज पुजाओ राधास्वामी ।
राधास्वामी अपर अपार राधास्वामी ।।50।।
राधास्वामी अधर अधार राधास्वामी ।
राधास्वामी अगम अगाध राधास्वामी ।।51।।
राधास्वामी परम अगार राधास्वामी ।
राधास्वामी कँवल भँवर राधास्वामी ।।52।।
राधास्वामी उधर इधर राधास्वामी ।
राधास्वामी अघड़ सुघड़ राधास्वामी ।।53।।
राधास्वामी डाल मूल राधास्वामी ।
राधास्वामी गाऊँ सब गाओ राधास्वामी ।।54।।

।। शब्द चौथा ।।

राधास्वामी आय प्रगट हुए जब से ।
राधास्वामी नाम सुनावें तब से ।।1।।

---

1. गुप्त । 2. प्रगट ।

राधास्वामी नाम जपूँ मैं मन से।
राधास्वामी धाम मिला अब तन से ।।2।।
राधास्वामी दरस करूँ नैनन से।
राधास्वामी बचन सुनूँ सरवन से ।।3।।
राधास्वामी कहत रहूं हियरे से।
राधास्वामी सुनत रहूं जियरे से ।।4।।
राधास्वामी नाम धरूँ प्रानन से।
राधास्वामी नाम गहूं इन्द्रिन से ।।5।।
राधास्वामी राह चलूँ पाँवन[1] से।
राधास्वामी सेव करूँ दोउ कर से ।।6।।
राधास्वामी संग करूँ सब धर[2] से।
राधास्वामी पास बसूँ अति डर से ।।7।।
राधास्वामी गाय रही मैं उमंग से।
राधास्वामी ध्याय रही कोइ दिन से ।।8।।
राधास्वामी रटन लगी दम दम से।
राधास्वामी याद बढ़ी छिन छिन से ।।9।।
बिसरत नहिं राधास्वामी जिगर[3] से।
बिछड़त नहिं राधास्वामी पलक से ।।10।।
राधास्वामी रूप देख दोउ तिल से।
राधास्वामी प्रीत लगी मेरे दिल से ।।11।।
राधास्वामी बोले इक दिन मुझ से।
राधास्वामी पर बल[4] गइ उस दिन से ।।12।।
राधास्वामी महिमा क्या कहुं किस से।
राधास्वामी सरन छुड़ावत जम से ।।13।।
राधास्वामी अलग किया भरमन से।

---

1. पैरों। 2. देह। 3. कलेजा। 4. बलिहार हुई।

राधास्वामी लिया छुटा करमन से ।।14।।
राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
राधास्वामी आये देश अगम से ।।15।।
राधास्वामी हंस किया मोहिं नर से ।
राधास्वामी दान दिया निज घर से ।।16।।
राधास्वामी भेद सुनाया धुर से ।
राधास्वामी मोहिं छुड़ाया हम[1] से ।।17।।
राधास्वामी अपना किया जगत से ।
राधास्वामी निपट[2] बचाया छल से ।।18।।
राधास्वामी पार किया भौजाल से ।
प्रेम लगा राधास्वामी गुरु से ।।19।।
मैं चकोर राधास्वामी चंद से ।
मैं कंवला राधास्वामी भान से ।।20।।
मैं कोकिल[3] राधास्वामी अम्ब[4] से ।
मैं भौंरा राधास्वामी कँवल से ।।21।।
मैं दिनकर[5] राधास्वामी गगन से ।
मैं फनधर[6] राधास्वामी मणि से ।।22।।
मैं बाली राधास्वामी मात से ।
मैं कुमार राधास्वामी तात[7] से ।।23।।
मैं दरदी राधास्वामी शान्ति से ।
मैं चकवी राधास्वामी कान्ति[8] से ।।24।।
मैं घायल राधास्वामी विरह से ।
मैं मायल राधास्वामी तरह[10] से ।।25।।
राधास्वामी शब्द लखाया जुक्ति से ।

---

1. अहंकार । 2. बिलकुल । 3. कोयल । 4. आम का दरख्त । 5. सूरज । 6. साँप । 7. पिता । 8. सूरज का प्रकाश । 9. मोहित । 10. छवि अन्दाज ।

राधास्वामी नाम कमाया भक्ति से ।।26।।
मैं प्यारी राधास्वामी प्यार से।
मैं मीना राधास्वामी धार से ।।27।।
मैं अंडा राधास्वामी कुरम[1] से।
मैं तरंग राधास्वामी सिन्ध से ।।28।।
मैं गगरी राधास्वामी नीर से।
मैं कमान[2] राधास्वामी तीर से ।।29।।
मैं भइ बन राधास्वामी सिंह से।
मैं हुइ तन राधास्वामी जान से ।।30।।
मैं वृक्षा राधास्वामी सुफल से।
मैं साखा राधास्वामी फूल से ।।31।।
मैं दीपक राधास्वामी जोत से।
मैं समुद्र राधास्वामी सोत से ।।32।।
मैं धरनी राधास्वामी मेघ से।
मैं सूरा राधास्वामी तेग[3] से ।।33।।
मैं देही राधास्वामी नैन से।
मैं रसना राधास्वामी बैन से ।।34।।
मैं लोहा राधास्वामी नाव से।
मैं निरधन राधास्वामी साव[4] से ।।35।।
मैं सीपी राधास्वामी स्वाँति से।
मैं मोहित राधास्वामी भाँति से ।।36।।
मैं जीती राधास्वामी दाँव[5] से।
मैं तिरपत राधास्वामी भाव से ।।37।।
मैं ब्यंजन[6] राधास्वामी नोन से।
मैं अंकुर राधास्वामी पौन से ।।38।।

---

1. कछुआ जो पानी में रहता है। 2. धनुष। 3. तलवार।
4. साहूकार, धनवान। 5. बाजी। 6. भोजन।

मैं तारा राधास्वामी व्योम[1] से।
मैं कुमुदन[2] राधास्वामी सोम[3] से।।39।।
राधास्वामी मेहर चली मैं घट से।
राधास्वामी चरन पकड़ मेरी हठ से।।40।।
राधास्वामी मोहिं हटाया कपट से।
राधास्वामी पार किया तिल पट[4] से।41।।
राधास्वामी बंक चढ़ाया झट से।
राधास्वामी घाट मिला औघट[5] से।।42।।
राधास्वामी द्वार खुलाया त्रिकुट से।
राधास्वामी हंस किया सर तट[6] से।।43।।
चढ़ी महासुन्न राधास्वामी बल से।
राधास्वामी शुद्ध किया कलमल से।।44।।
राधास्वामी आज मिलाया सोहंग से।
सत्तलोक आइ राधास्वामी संग से।।45।।
राधास्वामी अलख लखाया मौज से।
राधास्वामी अगम दिखाया चौज[7] से।।46।।
राधास्वामी रूप लखा सूरत से।
लगा प्रेम राधास्वामी मूरत से।।47।।
मिली जाय राधास्वामी चरन से।
हुआ उद्धार राधास्वामी सरन से।।48।।
राधास्वामी धाम गई मैं धज[8] से।
राधास्वामी मोहिं सिंगारी सज से।।49।।
राधास्वामी अंग लगाया उमंग से।
राधास्वामी भेद मिला सतसंग से।।50।।

---

1. आकाश। 2. कोई का फूल। 3. चाँद। 4. तिल स्थान का पर्दा। 5. अवघट, कठिन, दुर्गम। 6. मानसरोवर तीर। 7. बिलास। 8. शान, सिंगार।

पार हुई राधास्वामी लगन से।
राधास्वामी आज हटाया मलन[1] से।।51।।
उपमा राधास्वामी कहूं कौन से।
राधास्वामी काढ़ा सभी जोन से।।52।।
राधास्वामी पाये बहुत कठिन से।
मिल गये राधास्वामी बड़े जतन से।।53।।
पिउं अमी राधास्वामी धुन से।
जाय रलूं[1] राधास्वामी सुन से।।54।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

राधास्वामी लिया अपनाय सखी री।
शोभा अद्‌भुत आज लखी री।।1।।
राधास्वामी बचन अगाध सुने री।
राधास्वामी नाम अराध गुने[3] री।।2।।
राधास्वामी अगम अनाम लखे री।
राधास्वामी गति कस बुद्धि भखे[4] री।।3।।
राधास्वामी चरन स्पर्श[5] करे री।
राधास्वामी हिरदे माहिं धरे री।।4।।
राधास्वामी संग भौजाल भने[6] री।
राधास्वामी संगत काल हने[7] री।।5।।
राधास्वामी काढ़ लिया जग से री।
राधास्वामी हंस किया खग[8] से री।।6।।
राधास्वामी अजब संदेश दिया री।
राधास्वामी कहत अंदेश[9] गया री।।7।।

---

1. मलीनता। 2. एक रस होऊँ। 3. सुमिरन। 4. कहे। 5. छूना।
6. काटे। 7. नाश किया। 8. काग। 9. संशय।

राधास्वामी गोद बिठाया मुझे री।
राधास्वामी लेहैं उबार तुझे री।।8।।
राधास्वामी शाम सुबह रट ले री।
राधास्वामी आठ जाम भज ले री।।9।।
राधास्वामी पल पल हिये बसे री।
राधास्वामी मेहर जताऊं किसे री।।10।।
राधास्वामी संग न कोई करे री।
राधास्वामी रंग न कोई धरे री।।11।।
राधास्वामी जिस पर मेहर करें री।
राधास्वामी उस को पकड़ धरें री।।12।।
राधास्वामी मेहर बिना क्या गत री।
कस समझें राधास्वामी मत री।।13।।
राधास्वामी चौथा लोक कहें री।
राधास्वामी अलख अलोक भनें[1] री।।14।।
राधास्वामी अगम सुगम कर दें री।
राधास्वामी धाम जाय फिर ले री।।15।।
राधास्वामी मिले भाग से अब री।
राधास्वामी पकड़ अभी फिर कब री।।16।।
राधास्वामी लाग बढ़ा छिन छिन री।
राधास्वामी तेज देख दिन दिन री।।17।।
राधास्वामी देह धरी आ जग री।
राधास्वामी काल हटावें ठग री।।18।।
तू राधास्वामी सरन मत तज री।
तू राधास्वामी चरन नित भज री।।19।।
राधास्वामी लाम कटें सब अघ[2] री।
राधास्वामी काया मथ ली सगरी[3]।।20।।

---

1. कहें। 2. पाप। 3. कुल, सब।

राधास्वामी शब्द रूप तू सुन री।
राधास्वामी सुरत साथ ले धुन री।।21।।
राधास्वामी संग मार ले मन री।
राधास्वामी काटें नागिन[1] फन री।।22।।
राधास्वामी से गुरु फिर न मिलें री।
राधास्वामी छोड़ें न जिसे गहें री।।23।।
राधास्वामी महिमा कौन कहे री।
वेद थके और शेष रहे री।।24।।
राधास्वामी गुप्त प्रगट हुए अब री।
राधास्वामी भेद दिया मोहिं सब री।।25।।
राधास्वामी चमन[2] दिखाया घट री।
राधास्वामी खोल दिये सब पट री।।26।।
राधास्वामी कला[3] खिलाई नट[4] री।
राधास्वामी गगन चढ़ाया झट[5] री।।27।।
राधास्वामी संग गई सुन तट री।
राधास्वामी रंग लिया जग हट री।।28।।
राधास्वामी भरी आज सुर्त गगरी।
राधास्वामी अजब दिखाई नगरी।।27।।
राधास्वामी संग रही मैं पग[6] री।
राधास्वामी दमक[7] लखी मैं सगरी।।30।।
राधास्वामी मिले भाग उठा जग री।
अमर हुई राधास्वामी सँग लग री।।31।।
राधास्वामी सरन प्रीत हुई जिगरी।
राधास्वामी अजब सुनाई धुन किंगरी।।32।।

---

1. माया। 2. फुलवार। 3. बाज़ी। 4. बाज़ीगर (मन)। 5. जल्दी। 6. विलीन। 7. चमक।

राधास्वामी किया मोहिं अपना री।
राधास्वामी दिया मिटा खपना[1] री।।33।।
राधास्वामी जगत किया सुपना री।
राधास्वामी दूर किया तपना री।।34।।
राधास्वामी नाम सदा जपना री।
राधास्वामी दरस आज तकना री।।35।।
राधास्वामी भेद न काहु कहना री।
राधास्वामी बिन जग बिच बहना री।।36।।
राधास्वामी दिया शब्द गहना[2] री।
राधास्वामी चंद नहीं गहना[3] री।।37।।
राधास्वामी संग न दुख सहना री।
राधास्वामी संग सुखी रहना री।।38।।
राधास्वामी परम विलास दिया री।
राधास्वामी भौजल पार किया री।।39।।
राधास्वामी कर्म भर्म काटे री।
राधास्वामी चरन जभी चाटे री।।40।।
राधास्वामी आरत नित्त करूँ री।
राधास्वामी कहें सो चित्त धरूँ री।।41।।
राधास्वामी प्रेम जगाय रहूं री।
राधास्वामी राधास्वामी नित्त भंजू री।।42।।
राधास्वामी कहना मान चली री।
राधास्वामी ध्यान अब जाय मिली री।।43।।
राधास्वामी सीत[4] मिला मोहिं जब री।
राधास्वामी शुद्ध किया मोहिं तब री।।44।।
राधास्वामी गुन कस गाउं अली[5] री।
राधास्वामी गगन दिखाई गली री।।45।।

---

1. वृथा मेहनत करना। 2. अभूषण, जेवर। 3.ग्रहण। 4.परशाद। 5. सखी।

राधास्वामी कमर बंधाई भली री।
राधास्वामी धुन में जाय पिली री।।46।।
राधास्वामी सब विध काज किया री।
राधास्वामी अचरज साज[1] दिया री।।47।।
राधास्वामी आसन अधर धरा री।
राधास्वामी दर्शन वहीं करा री।।48।।
राधास्वामी शोभा अजब बनी री।
राधास्वामी छबि पर दृष्टि तनी[2] री।।49।।
राधास्वामी जीव उद्धार करें री।
राधास्वामी संत औतार धरें री।।50।।
राधास्वामी मत कुछ अजब चला री।
राधास्वामी भेद अब दिया भला री।।51।।
राधास्वामी गिनें न ब्रह्म ज्ञान री।
राधास्वामी थापें न जोग ध्यान री।।52।।
राधास्वामी मानें न राम कृष्ण री।
राधास्वामी मानें न ब्रह्म विष्णु री।।53।।
राधास्वामी पूजें न शिव गनेश री।
राधास्वामी पूजें न गौर शेष री।।54।।
राधास्वामी मानें न कर्म धर्म री।
राधास्वामी जप तप जानें भर्म री।।55।।
राधास्वामी माने न तीर्थ बर्त री।
राधास्वामी मानें न शास्त्र स्मृति री।।56।।
राधास्वामी मानें न सूर चंद री।
राधास्वामी मानें न गंग जमन री।।57।।
राधास्वामी काटें पिछली टेक री।
राधास्वामी भर्म न राखें एक री।।58।।

---

1. सामान। 2. खिंची।

राधास्वामी बुत[1] पूजा न धार री।
राधास्वामी पित्र पूजा न धार री।।59।।
राधास्वामी कहें गुरु भक्ति साध री।
राधास्वामी भजन बतावे नाद री।।60।।
राधास्वामी सतसंग करो कहें री।
राधास्वामी वक्त गुरु[1] थरपें[4] री।।61।।
राधास्वामी ज़ात न पाँत रखें री।
राधास्वामी हिंदू न तुर्क गहें री।।62।।
राधास्वामी वर्ण आश्रम न गायं री।
राधास्वामी मिथ्या भर्म सुनायें री।।63।।
राधास्वामी भक्ति वर्ण बतायें री।
राधास्वामी गुरु की भक्ति दृढ़ायें री।।64।।
राधास्वामी वेद कतेब उड़ायें री।
राधास्वामी मुरशिद[5] कौल[6] ठहरायें री।।65।।
राधास्वामी मुरशिद ख़ुदा दिखायें री।
राधास्वामी पीर[7] परस्ती[8] सिखायें री।।66।।
राधास्वामी रोज़ा नमाज़ उठायें री।
राधास्वामी मस्जिद बाँग छुड़ायें री।।67।।
राधास्वामी काबा न हज्ज[9] करायें री।
राधास्वामी क़ुराँ न वजीफ़ा[10] पढ़ायें री।।68।।
राधास्वामी दिल पर क़ाबू दिलायें री।
राधास्वामी नफ्स अमारा[11] गिरायें री।।69।।
राधास्वामी रूह[12] असमान चढ़ायें री।
राधास्वामी घट में अर्श[13] दिखायें री।।70।।

---

1. मूर्ति। 2. शब्द। 3. वक्त का गुरु। 4. स्थापित करते है। 5. गुरु। 6. बचन। 7. गुरु। 8. पूजा। 9. यात्रा। 10. जाप। 11. मलीन मन। 12. सुरत। 13. चैतन्य आकाश।

राधास्वामी रूह मेराज[1] दिलायें री।
राधास्वामी तन में ख़ुदा मिलायें री।।71।।
राधास्वामी फ़क़्र[2] को बड़ा बतायें री।
राधास्वामी कहत रसूल[3] न पायें री।।72।।
राधास्वामी सात मकाम लखायें री।
राधास्वामी फ़क़्र मरातिब[4] गायें री।।73।।
राधास्वामी शगल[5] आवाज़ करायें री।
राधास्वामी रूह को सौत[6] सुनायें री।।74।।
राधास्वामी सुरत और शब्द मथें री।
राधास्वामी रूह और सौत कथें री।।75।।
राधास्वामी अनहद नाद कहें री।
राधास्वामी सौत[7] सरमदी[8] गहें री।।76।।
राधास्वामी आदि धाम से आये री।
राधास्वामी सब से ऊँच धाये री।।77।।
राधास्वामी की है प्रथम मँज़िल री।
सो सब मत सिद्धान्त समझ री।।78।।
राधास्वामी पहिली मंजिल कही री।
सब मत का सिद्धान्त वही री।।79।।
राधास्वामी मत अब बहुत बड़ा री।
राधास्वामी मत यह जान पड़ा री।।80।।
राधास्वामी सात मँजिल[9] बरनें री।
राधास्वामी भिन भिन कहें निरने री।।81।।
राधास्वामी गति सब भाँति बड़ी री।

---

1. चढ़ाई। 2. संत गति। 3. पैगम्बर। 4. दरजे। 5. अभ्यास। 6. शब्द। 7. आवाज। 8. अनहद। 9. स्थान।

राधास्वामी चरनन सुरत अड़ी री ।।82।।
राधास्वामी हैरत धाम रहें री ।
राधास्वामी अचरज नाम कहें री ।।83।।
राधास्वामी चुम्बक[1] मैं लोहा री ।
राधास्वामी रूप निरख मोहा री ।।84।।
राधास्वामी भृंगी मैं कीड़ा री ।
राधास्वामी सकल हरी पीड़ा री ।।85।।
राधास्वामी पहुंचे दूर देश री ।
राधास्वामी अपना दिया संदेश री ।।86।।
राधास्वामी कँवला मैं भँवरा री ।
राधास्वामी दरस देख सँवरा[2] री ।।87।।
राधास्वामी कहें सोई करना री ।
राधास्वामी चरन सीस धरना री ।।88।।
राधास्वामी उपमा कौन करे री ।
राधास्वामी सरन जीव उधरे री ।।89।।
राधास्वामी मूरत देख जिउं री ।
राधास्वामी अमृत नाम पिउं री ।।90।।
राधास्वामी सँग घट खोज करूँ री ।
राधास्वामी सँग पट मौज लहूं री ।।91।।
राधास्वामी सँग अब सुरत भरूं री ।
राधास्वामी सँग धुन शब्द सुनूं री ।।92।।
राधास्वामी सँग तिल तोड़ चलूं री ।
राधास्वामी सँग नभ फोड़ मिलूं री ।।93।।
राधास्वामी सँग फिर जोत लखूं री ।
राधास्वामी सँग सुन भेद तकूं री ।।94।।

---

1. चमक पत्थर । 2. सँवारा गया ।

राधास्वामी सँग नल बंक धसूं री।
राधास्वामी सँग चढ़ गगन हंसूं री।।95।।
राधास्वामी सँग दस द्वार गहूं री।
राधास्वामी सँग महासुन्न चढूं री।।96।।
राधास्वामी सँग मैं गुफा रहूं री।
राधास्वामी सँग सतनाम लगूं री।।97।।
राधास्वामी सँग मैं अलख लखूं री।
राधास्वामी सँग अब अगम भखूं री।।98।।
राधास्वामी राधास्वामी रंग रंगू री।
राधास्वामी राधास्वामी धाम बसूं री।।99।।
राधास्वामी कहें सो कार करूं री।
राधास्वामी राधास्वामी पकड़ धरूं री।।100।।
राधास्वामी लीला ताक तकूं री।
राधास्वामी महल अब जाय पकूं री।।101।।
राधास्वामी शोभा अजब कहूं री।
राधास्वामी आगे खड़ी रहूं री।।102।।
राधास्वामी तख़्त बिराज रहे री।
राधास्वामी सख़्त विकार दहे री।।103।।
राधास्वामी जीव निवाज[1] रहे री।
राधास्वामी पीव हमार भये री।।104।।
राधास्वामी अति कर द्याल हुए री।
राधास्वामी दया जम काल मुए[2] री।।105।।
राधास्वामी अब मोहिं अमर किया री।
राधास्वामी पद मोहिं अजर दिया री।।106।।
राधास्वामी गुन गाऊं नित नित री।
राधास्वामी मात हुए और पित री।।107।।

---

1. दया करने वाले। 2. मरे।

राधास्वामी सब से अलग किया री।
राधास्वामी सब बल तोड़ दिया री ।।108।।

।। बचन चौथा ।।

महिमा दर्शन परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की और वर्णन दशा प्रेम और आनन्द की उसकी प्राप्ति में

।। शब्द पहिला ।।

देओ री सखी मोहि उमंग बधाई । अब मेरे आनंद उर[1] न समाई ।।1।।
छिन छिन हरखूं पल पल निरखूं । छबि राधास्वामी मोसे कही न जाई ।।
आरत थाली लीन सजाई । प्रेम सहित रस भर भर गाई ।।3।।
चरन सरन गुरु लाग बढ़ाई । अधिक बिलास रहा मन छाई ।।4।।
कहा कहूं यह घड़ी सुहाई । सुरत हंसनी गई है लुभाई ।।5।।
शब्द गुरु धुन गगन सुनाई । अमी धार धुर से चल आई ।।6।।
रोम रोम और अँग अँग न्हाई । बरन बिनोद[2] कहूं कस भाई।।7।।
लिख लिख कर कुछ सैन जनाई । जानेंगे मेरे जो गुरु भाई ।।8।।
राधास्वामी कहत बनाई । चार लोक में फिरी है दुहाई ।।9।।
सत्तनाम धुन बीन बजाई । काल बली अति मुरछा खाई ।।10।।
अलख अगम दोउ मेहर कराई । राधास्वामी राधास्वामी दरस दिखाई ।।

।। शब्द दूसरा ।।

आज बधावा[4] राधास्वामी गाऊँ । चरन कँवल गुरु प्रेम बढ़ाऊँ ।।1।।
हरख अधिक अब हिये समाऊँ । राधास्वामी रूप चित्त लाऊँ ।।2।।
आज दिवस मेरा भाग अनोखा[5] । दर्शन राधास्वामी मनको पोखा[6]।।3।।
सतगुरु पूरे अंग लगाया । राधास्वामी अचरज खेल दिखाया ।।4।।

---

1. ह्रदय। 2. आनन्द। 3. हुक्म। 4. आनन्द गीत। 5. अचरज। 6. शान्त किया।

बाजत घट में अनहद तूरा । राधास्वामी राधास्वामी खुला ज़हूरा ।।5।।
जगा भाग मेरा अति गंभीरा । राधास्वामी नाम कहत मन धीरा ।।6।।
खुल गये बज्र किवाड़ अर्श[1] के । दर्शन पाये राधास्वामी पुर्ष के ।।7।।
शोभा अधिक कहाँ लग भाखूँ । राधास्वामी मूरत नैनन ताकूँ ।।8।।
दरस अधार जिऊँ छिन छिन में । राधास्वामी गुन गाऊँ पल पल में ।।9।।
गुन गावत मन होत हुलासा[2] । राधास्वामी चरन बँधी मम आसा ।।10।।
मीन मगन जस जल के माहीं । राधास्वामी सरन छूटत अब नाहीं ।।11।।
केल[1] करूँ नित उन के संगा । राधास्वामी किये भरम सब भंगा[4] ।।12।।
निरमल होय चरन लिपटानी । राधास्वामी गति अति अगम बखानी ।।13।।
आनंद मंगल अब रहा छाई । राधास्वामी आगे गाऊँ बधाई ।।14।।
अजब बधावा राधास्वामी गाया । उलट पलट राधास्वामी रिझाया ।।15।।

।। शब्द तीसरा ।।

आज मेरे धूम भई है भारी ।
कहूं क्या राधास्वामी रूप निहारी ।।1।।
घाट अब हो गया सुखमन[5] जारी ।
आरती राधास्वामी करूँ सँवारी ।।2।।
प्रेम रंग भीज गई सुर्त सारी ।
निरत[6] सँग राधास्वामी कीन पुकारी ।।3।।
हुइ जाय सुन में शब्द अधारी ।
चरन में राधास्वामी माथ धरा री ।।4।।
कहूं क्या आरत गावत न्यारी ।
लगी मोहिं राधास्वामी धुन अब प्यारी ।।5।।
अगम गत कैसे कोई विचारी ।
रीत कुछ राधास्वामी अचरज धारी ।।6।।

---

1. चैतन्य आकाश । 2. आनन्द । 3. किलोल । 4. दूर । 5. मध्य की धार ।
6. सुरत का निर्णय करने वाला अंग ।

छोड़ अब तन मन चढ़त अटारी।
जहाँ राधास्वामी तख्त बिछा री ।।7।।
टहल में रहती निस दिन ठाढ़ी।
अमी रस राधास्वामी दीन अहारी ।।8।।
बड़ा अब भाग अपार जगा री।
तेज राधास्वामी बहुत बढ़ा री ।।9।।
कौन यह पावे घट उजियारी।
दई राधास्वामी लाभ अपारी ।।10।।
धुनन की चेत सदा झनकारी।
कीन राधास्वामी मोहिं आपना री ।।11।।
इड़ा[1] तज पिंगला[2] खोज करा री।
शिखर चढ़ राधास्वामी घार सुनारी ।।12।।
सोहँग[3] में बंसी आन पुकारी।
अजब गत राधास्वामी देखी न्यारी ।।13।।
काल पुनि हारा कर्म कटा री।
लगी ऐसी राधास्वामी नाम कटारी[4] ।।14।।
सत्तसर[4] गई सुरत पनिहारी।
भरी राघास्वामी गगरी भारी ।।15।।
हंसनी हो गई हंसन प्यारी।
पिया अब राधास्वामी नाम सुधा[7] री ।।16।।
कहत मैं महिमा राधास्वामी हारी।
करी मैं आरत राधास्वामी सारी ।।17।।

।। शब्द चौथा ।।

जुगनियाँ[8] चढ़ी गगन के पार । सुनी राधास्वामी धूम अपार ।।1।।

---

1. बाईं ओर की नाड़ी। 2. दाईं ओर की नाड़ी। 3. भँवर गुफा। 4. हथियार। 5. दस्मद्वार में जो अमृतसर है। 6. पानी भरने वाली। 7. अमृत। 8. योग करने वाली, मिलने वाली।

लगनियाँ[1] मगन हुई दस द्वार । दगनियाँ[2] मारी राधास्वामी झाड़ ।।2।।
सुँघनियाँ[3] सूँघत मलय[4] निहार । नाम राधास्वामी पाया सार ।।3।।
सुजनियाँ लखी शब्द की धार । राधास्वामी गावत राग मलार ।।4।।
बैरागन भईलो सुरत हमार । चरन राधास्वामी मोर अधार ।।5।।
सुहागिन चली नाम की लार । लई राघास्वामी सेज सँवार ।।6।।
पिया घर पहुँची मौज निहार । हुई राधास्वामी के मौज बलिहार ।।7।।
जाय जहँ देखी लीला सार । राधास्वामी चरन पखार[5] पखार ।।8।।
गई और झाँकी खिड़की पार । राधास्वामी रूप किया दीदार ।।9।।
दृष्टि उलटी करत जुहार[6] । राधास्वामी परसे तज हंकार ।।10।।
गये अब मन के सभी विकार । दी अस राधास्वामी दृष्टि डार ।।11।।
कामना रही न अब संसार । राधास्वामी दीन्हा संशय टार ।।12।।
जुक्ति से डारा मन को मार । चलाई राधास्वामी पैनी[7] धार ।।13।।
मिरगनी[8] भागी बन से हार । राधास्वामी छोड़ा बान सम्हार ।।14।।
कहूं क्या देखी अजब बहार । दिखाया राधास्वामी इक गुलज़ार[9]।।15।।
शब्द गुल[10] खिल गये बार और पार । लगा राधास्वामी से अब प्यार ।।16।।
घोर जहाँ अलहद उठत अपार । सुरत राधास्वामी दई सुधार ।।17।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

राधास्वामी का दरस मैं आज करूँगी । पल पल छिन छिन पार रहूंगी ।।1।।
जगत जाल से बहुत बचूँगी । कर्म काल को मार धरूंगी ।।2।।
सुरत चढ़ाय असमान भरूंगी । गगन मंडल की सैर करूंगी ।।3।।
धुन धधकार अनंत सुनूंगी । शब्द अमी रस अगम पिऊंगी ।।4।।
पुष्ट होय गुरु चरन गहूंगी । सुखमन संग विलास करूंगी ।।5।।
बंकनाल में सहज धसूंगी । त्रिकुटी जा मैं ओंग गहूंगी ।।6।।
सुन्न महासुन पार सजूंगी । भंवरगुफा सतलोक रहूंगी ।।7।।
अलख अगम धुन नित्त भजूंगी । राधास्वामी चरन स्पर्श करूंगी ।।8।।

---

1. लगाने वाली यानी प्रेमी सुरत । 2. धोखा देने वाली माया । 3. सूँघने वाली सुरत । 4. मलियागिरि चन्दन । 5. धोकर । 6. दंडवत । 7. तेज । 8. माया । 9. चमन, बग़ीचा । 10. फूल ।

।। शब्द छठवाँ ।।

देखत रही री दरस गुरु पूरे । चाखत रही री प्रेम रस मूरे ।।1।।
शोभा सतगुरु बरनी न जाई । बाजत घट में अनहद तूरे ।।2।।
बुंद चढ़ी तज पिंड असारा । पहुंची जाय सिन्ध सत नूरे ।।3।।
गरजत गगन विरह उठ जागी । मन कायर अब होवत सूरे ।।4।।
चरन कँवल गुरु हिरदे धारी । करत तमोगुन दम दम चूरे ।।5।।
कृपा दृष्टि सतगुरु अब धारी । काल चक्र डारत अब तोड़े ।।6।।
समुंद सोत धस सुरत समानी । मान सरोवर दरसत हूरे[1] ।।7।।
सुरत चढ़ाय गई सतनामा । पहुंची राधास्वामी चरन हज़ूरे ।।8।।

।। शब्द सातवाँ ।।

गुरु के दरस पर मैं बलिहारी । गुरु के चरन मेरे प्राण अधारी ।।1।।
गुरु के बचन मेरे हिये सिगारी । गुरु स्वरूप दिन रैन सम्हारी ।।2।।
गुरु का संग कर छिन छिन प्यारी । गुरु का रंग ले नैन निहारी ।।3।।
गुरु के धाम पर सुरत लगा री । नील शिखर[2] चढ़ श्याम[3] तका री ।।4।।
सेत सूर जहं नूर लखा री । शब्द अनाहद तूर बजा री ।।5।।
मुरली धमक और बीन सुना री । अद्‌भुत रस अचरज सखी भारी ।।6।।
बिरले संत यह भेद पुकारी । तू भी सरन पड़ उन की जा री ।।7।।
ज्यों मीना जल धार समा री । ज्यों चकोर चन्दा निरखा री ।।8।।
अस परीत सतगुरु संग ला री । कर प्रताप घट होत उजारी ।।9।।
भाग बिना क्या करे बिचारी । यह भी भाग गुरु से पा री ।।10।।
राधास्वामी कही जुक्ति यह सारी । उनके चरन से प्रेम लगा री ।।11।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु का दरस तू देख री । तिल आसन डार ।।1।।

---

1. पारब्रह्म देश की पवित्र आत्मायें । 2. नील चक्र । 3. तीसरा तिल । 4. सार और खुलासा ।

शब्द गुरु नित सनो री । मिल बासन[1] जार ।।2।।
गुरु रूप सुहावन अति लगे । घट भान उजार ।।3।।
कँवल खिलत सुख पावइ । भौंरा कर प्यार ।।4।।
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी । जिन घट अंधियार ।।5।।
पूरा सतगुरु ना मिला । भरमत भौ जार[2] ।।6।।
मैं तो सतगुरु पाइया । जाऊँ बलिहार ।।7।।
ज्यों चकोर चन्दा गहे । रहूं रूप निहार ।।8।।
सतगुरु शब्द स्वरूप हैं । रहें अर्श मँझार ।।9।।
तू भी सुरत स्वरूप है । रहो गुरु की लार ।।10।।
नैनन में गुरु रूप है । तू नैन उघार[3] ।।11।।
सरवन मैं गुरु शब्द है । सुन गगन पुकार ।।12।।
राधास्वामी कह रहे । यह मारग सार ।।13।।
जो जो मानें भाग से । सो उतरें पार ।।14।।

।। बचन पाँचवाँ ।।

वर्णन भेद मार्ग और शोभा सत्तलोक की और महिमा निज स्वरूप और निज स्थान परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की

।। शब्द पहिला ।।

आरत गावे सेवक तेरा । संशय भरम ने चित को घेरा ।।1।।
अब स्वामी किरपा करो ऐसी । संशय जड़ सब जायें बिनासी ।।2।।
निरसंशय चित्त शब्द समाई । दसवें द्वार रहे ठहराई ।।3।।
आगे महासुन्न मैदाना । मौज होय तो करे पयाना[4] ।।4।।
आगे भंवरगुफा की खिड़की । सोहंग धुन जहाँ निसदिन खड़की[5] ।।5।।

---

1. बासना । 2. जाल । 3. खोल । 4. चलना । 5. आवाज हुई ।

तहाँ जाय कर आनंद पाऊं । आगे को फिर सुरत चढ़ाऊं ।।6।।
सत्तनाम सत शब्द ठिकाना । चौथा पद सोइ संत बखाना ।।7।।
हंसन शोभा कही न जाई । खोड़स[1] चन्द्र सूर छबि छाई ।।8।।
अद्‌भुत रूप पुरुष कहा बरनूं । कोटि सूर चन्दा इक रोमूं ।।9।।
दीपन शोभा अजब सँवारी । हंस हंस प्रति[2] दीप निरारी ।।10।।
अमी कुंड जहाँ भर रहे भारी । पुरुष दरस का करें अहारी ।।11।।
नित नित लीला नई जहाँ की । महिमा कहँ लग बरनूं वहाँ की ।।12।।
अलख लोक तिस आगे थापा । गई सुरत तहाँ तज कर आपा ।।13।।
अलख पुरुष शोभा कहा गाई । अरब कोटि शशि सूर लजाई ।।14।।
सुरत रूप वहाँ ऐसा पाई । कोटि भान छबि ऐसी गाई ।।15।।
सुरत चली आगे पग धारा । अगम लोक को जाय निहारा ।।16।।
अगम पुरुष की शोभा न्यारी । कोटिन खरब सूर उजियारी ।।17।।
आगे ता के पुरुष अनामी । ता को अकह अपार बखानी ।।18।।
संत बिनाँ वहाँ और न जाई । संतन निज घर बह ठहराई ।।19।।
हे स्वामी यह बिनती हमारी । भेद दिया तुम अति से भारी ।।20।।
पहुंचूं कैसे सो भी गाओ । मन मेरे को बहुत उमाओ[4] ।।21।।
सुरत शब्द की राह बताई । दया बिना नहिं पहुंचे भाई ।।22।।
संशय भरम न राखो कोई । धीरे धीरे सुरत समोई[5] ।।23।।
शब्द खोज तुम निस दिन राखो । बार बार स्वामी यह भाखो ।।24।।
अब आरत पूरन कह गाई । संत मता सब दिया लखाई ।।25।।

।। शब्द दूसरा ।।

आज आरती इक कहुं भारी । सुमिरन राधास्वामी करूं अधारी ।।1।।
तिल का थाल जोत हुई बाती । प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आती ।।2।।
रूप अनूप हिये में लाती । दर्शन राधास्वामी निज कर पाती ।।3।।

---

1. सोलह । 2. वास्ते । 3. न्यारे । 4. उमँगाओ । 5. प्रवेश या लीन करना ।

मैं चकवी सतगुरु हुए चकवा । रैन भई तो हुआ बिछोहा[1] ।।4।।
मैं अज्ञान रैन बस पड़ी । वार रही और धीर न धरी ।।5।।
सतगुरु पार बसेरा कीन्हा । क्योंकर मिलूं राह नहिं चीन्हा ।।6।।
तड़पूं छिन छिन पिय के वियोग । कस पाऊँ अब पिया संयोग ।।7।।
अति आतुर[2] घबराय पुकारी । तब स्वामी मेरी कीन सम्हारी ।।8।।
रात बिताई हुआ बिहाना । घट के भीतर भान उगाना ।।9।।
चक[4] के वार पड़ी थी थोथी[5] । गुरु चक पार सुनाई पोथी[6] ।।10।।
गुरु से मिली खोल कर पाट । घाट बाट घट बाँधा ठाट ।।11।।
लोहा ज्यों चुम्बक सँग मिली । सुरत शब्द से जाकर रली ।।12।।
सुरत दृष्टि कर द्वारा झाँका । तोड़ा जाय सुई का नाका[7] ।।13।।
भीतर धस जो लीला देखी । बरनीँ कैसे बात अगम की ।।14।।
अंतरजामी सतगुरु जाने । और भेदी पुनि आप पहिचाने ।।15।।
श्याम सेत के मद्ध समानी । घंटा शंख सुनी धुन बानी ।।16।।
सूर चाँद दोऊ दिस देखे । सुखमन गगना तारे पेखे ।।17।।
आगे धसी बंक की नाल । अवगत काल बिछाया जाल ।।18।।
आगे पहुंची त्रिकुटी द्वार । लाल रूप जहँ धुन ओंकार ।।19।।
सुन्न में गई महल दस माहिं । हंसन साथ मानसर न्हाहि ।।20।।
सेत सेत वह सुन्न दिखाई । चंद्र चाँदनी चौक लगाई ।।21।।
शिखर चढ़ी पच्छिम के द्वार । महासुन्न के हो गई पार ।।22।।
भँवरगुफा का ताक़ उधारा । सोंहँग मुरली सुनी पुकारा ।।23।।
चौक परे सतलोक समानी । सत्त पुरुष धुन बीन बखानी ।।24।।
कोटिन सूर[8] लगे इक रोम । कोटि कोटि जहँ ऊगे सोम[9] ।।25।।
सत्तपुरुष की आयस[9] पाय । अलख लोक में पहुंची धाय ।।26।।
अरब सूर शशि[11] लजायँ । ऐसी शोभा देखी आय ।।27।।

---

1. वियोग। 2. तड़पती। 3. उदय हुआ। 4. चक्षु, आँख। 5. बे-काम। 6. आकाश बानी, शब्द। 7. मुख। 8. सूरज। 9. चाँद। 10. आज्ञा। 11. चन्द्रमा।

वहाँ से आज्ञा लेकर चली । अगम पुरुष से जाकर मिली ।।28।।
खरबन चन्द्र सूर उजियारा । और कहूं क्या अगम पसारा ।।29।।
वहाँ से भी फिर आगे बढ़ी । सुरत निरत निज पद में धरी ।।30।।
निज पद है वह राधास्वामी । फिर फिर कहूं मैं राधास्वामी ।।31।।

सोरठा

क्योंकर करूं बखान, महिमा मैं उस धाम की ।
नील नील शशि भान, इक इक कंगुरे[1] लग रहे ।।32।।

पदमन[2] मणि जड़ी महलन में । शोभा वहाँ की कहुं क्योंकर मैं ।।33।।
संख और महासंख शशि भान । गिर्द सिंहासन देखे आन ।।34।।
जस स्वरूप राधास्वामी धारा । शोभा वा की अकह अपारा ।।35।।
क्या दृष्टान्त देऊँ मैं सही । गिनती भी बाक़ी नहिं रही ।।36।।
यह आरत मैं बढ़की कही । कस बरनूँ अब मीरी[3] भई ।।37।।

।। शब्द तीसरा ।।

नगरिया झाँक रही मैं न्यारी । गुरु ने मोहिं दीन्हीं अचरज तारी[4] ।।1।।
सुनी मैं अनहद धुन झनकारी । रूप अब निरखा अद्भुत भारी ।।2।।
कहूं क्या गुरु की मेहर करारी[5] । हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी[6] ।।3।।
छोड़ कर देश पराया आई । महल में राधास्वामी आन बसाई ।।4।।
भेद यह दीन्हा मोहिं मेरे भाई । कहूं कस महिमा उनकी गाई ।।5।।
सरन अब राधास्वामी दृढ़ कर पाई । छोट मुख क्योंकर करूँ बड़ाई ।।6।।
भाग मेरा जागा शब्द सुहाई । नाम रस पाया करूं कमाई ।।7।।
सुरत हुइ निरमल सुखमन पाई । चली और नभ पर करी चढ़ाई ।।8।।
नैन दोउ फेरे जोत दिखाई । सहस दल कँवल मध्य धस आई ।।9।।
श्याम तज सेत रूप दरसाई । बंक चढ़ त्रिकुटी आन समाई ।।10।।
ओंग धुन गरज भली समझाई । सूर जहँ लाल लाल दिखलाई ।।11।।

---

1. कंगूरा । 2. अनेक पदम (संख्या विशेष) । 3. अव्वल नम्बर । 4. कुञ्जी । 5. तेज । 6. प्यारी ।

सुन्न चल मानसरोवर न्हाई । ररंग धुन किंगरी ख़ूब सुनाई ।।12।।
हंस होय आगे पंथ चलाई । महासुन सूरत अजब सजाई ।।13।।
धमक सुन भंवरगुफा ढिंग[1] आई । बाँसुरी सोहंग संग बजाई ।।14।।
वहाँ से सचखंड पहुंची धाई । पुरुष का रूप अनोखा पाई ।।15।।
बीन धुन सुन कर बहुत रिझाई । मेहर हुई भारी कहा न जाई ।।16।।
गुरु मोहिं दीन्हा अलख लखाई । अगम का परदा खोला जाई ।।17।।
वहाँ से राधास्वामी धाम दिखाई । गई और चरन सरन लिपटाई ।।18।।
आरती अद्भुत लीन सजाई । बँगला अचरज रूप बनाई ।।19।।
बैठकर राधास्वामी छबि दिखलाई । उमंग और प्रेम रहा मेरा छाई ।।20।।
सखी सब मिल कर देत बधाई । आज मेरा जन्म सुफल हुआ भाई ।।21।।
ब्रह्म और माया दोउ लजाई । काल और कर्म रहे मुरझाई ।।22।।
जोग और ज्ञान थके पछताई । कहूं क्या कोई मर्म न पाई ।।23।।
संत मत ठीक यही ठहराई । सुरत और शब्द राह दरसाई ।।24।।
वेद नहिं पावे संत बड़ाई । कही अब राधास्वामी यह गति गाई ।।25।।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु मता अनोखा दरसा । मन सुरत शब्द जाय परसा ।।1।।
लीला घट देखी भारी । हुइ सुरत गगन परिहारी ।।2।।
अमृत रस भर भर पीया । तन मन सब सीतल हूआ ।।3।।
चोरी अब चोरन त्यागी । घर उनके अग्नि लागी ।।4।।
साहू अब घट में जागे । पहरा दे शब्द अनुरागे ।।5।।
गुन गावत मन हुलसाया । धुन धावत अधर चढ़ाया ।।6।।
जगमग हुइ जोत उजियारी । घट खिल गइ कँवल कियारी ।।7।।
सुन्दर की खिड़की खोली । सुखमन में धुन नित बोली ।।8।।
चढ़ बंक किवाड़ी खोली । त्रिकुटी जा हुई अमोली ।।9।।

---

1. पास ।

बचन फेरत पान तमोली । यों धुन घट सूरत रोली[1] ।।10।।
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ । छिन छिन में उमँग बढ़ाऊँ ।।11।।
सुर नर मुनि गति नहिं जानी । यह अचरज अकथ कहानी ।।12।।
सुन्न में जा शब्द समानी । अद्‌भुत धुन किंगरी छानी ।।13।।
गई महा सुन्न के नाके । गुरु दया अचंभा[2] ताके ।।14।।
फिर भँवरगुफा लगी डोरी । सोहँग जा सूरत जोड़ी ।।15।।
सतगुरु पद सत कर जाना । गति मति क्या कहूं बखाना ।।16।।
शशि सूर अनेकन पाँती । देखे और आगे जाती ।।17।।
लख अलख अगम दरसाना । मिला राधास्वामी नाम निशाना ।।18।।
यह अजब परम पद पाया । अब तक कोई भेद न गाया ।।19।।
नहिं वेद कतेब सुनाया । जोगी नहिं ज्ञानी धाया ।।20।।
यह वस्तु अमोलक पाई । कोइ बिरले संत बताई ।।21।।
मेरे राधास्वामी परम दयाला । जिन कीन्हा मोहिं निहाला ।।22।।
मैं आरत उनकी करता । तन मन दोउ चरनन धरता ।।23।।
मैं हर दम यही पुकारूँ । मत अगम अगाध सम्हारूँ ।।24।।
मेरा भाग उदय हो आया । राधास्वामी चरन धियाया ।।25।।
जग स्वाद लगा सब फीका । राधास्वामी नाम मैं सीखा ।।26।।
गति मति मेरी उलटी पलटी । गुरु कर दइ सूरत[3] सुल्टी[4] ।।27।।
मेरा काज हुआ सब पूरा । मैं राधास्वामी चरनन धूरा ।।28।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सुख समूह[5] अंतर घट छाया । आरत सामाँ[6] आन सजाया ।।1।।
आनंद हरख अधिक हिये आया । गुरु चरनन में चित्त समाया ।।2।।
दर्शन कर गुरु महिमा गाया । छबि अनूप नैनन में लाया ।।3।।
प्रेम सूर निज गगन उगाया । भर्म तिमिर सब दूर बहाया ।।4।।
जगो भाग धुन अनहद पाया । अंतर सुखमन तीरथ न्हाया ।।5।।

---

1. छाँटी। 2. अचरज। 3. सुरत। 4. सीधी। 5. बहुत। 6. सामान, पदार्थ।

सहसकंवल तिल उलट फिराया । मन को छोड़ सुरत संग धाया ।।6।।
जोत निरंजन रूप दिखाया । अति हुलास कुछ कहा न जाया ।।7।।
घंटा नाद और संख सुनाया । चाँद सूर तारा दरसाया ।।8।।
बंकनाल का द्वार खुलाया । त्रिकुटी चढ़ गुरु शब्द मिलाया ।।9।।
सूरज मंडल वेद पढ़ाया । अर्ध मात्रा मूल जनाया ।।10।।
सुन्न शिखर धुन ररंग जगाया । माया काल दोउ सुलवाया[1] ।।11।।
सेत चन्द्रमा फूल खिलाया । मानसरोवर अमी पिलाया ।।12।।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाया । किङ्गरी सारङ्गी धूम मचाया ।।13।।
महासुन्न धुन गुप्त लखाया । महाकाल बल छीन कराया ।।14।।
भँवर गुफा अमृत बरसाया । सोहंग बंसी नाद बजाया ।।15।।
चढ़ी सुरत सतपुरुष गजाया[2] । सच्चखंड जा तख़्त बिछाया ।।16।।
पुरुष मेहर दुरबीन दिलाया । अलख रूप शोभा परखाया ।।17।।
अगम पुरुष फिर अमी चुवाया । राधास्वामी भेद बताया ।।18।।
भक्त धाम येही ठहराया । आरत कर राधास्वामी रिझाया ।।19।।
फल अपार दुख दूर गँवाया । रसक रसक रस शब्द रसाया ।।20।।
जन्म जन्म के कर्म नसाया । काल दाव अब ख़ूब चुकाया ।।21।।
राधास्वामी चरनन माथ नवाया । राधास्वामी मूरत हिये बसाया ।।22।।
तज विकार मन को समझाया । नाम पकड़ अब काम हटाया ।।23।।
सील छिमा दृढ़ थान जमाया । मन बिहंग को अधर उड़ाया ।।24।।
गुरु भृङ्गी यह कीट चिताया । राधास्वामी चरननिपट लिपटाया ।।25।।

।। बचन छटवाँ ।।

आरती परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी के चरण कंवल में

अब सतगुरु की आरत गाऊं । कथ कथ आरत बहुत सुनाऊं ।।1।।
आरत बानी आगे भनी[3] । विविध भाँति की आरत बनी ।।2।।
राधास्वामी करत बखाना । सतसंगी सुनें देकर काना ।।3।।

---

1. निद्रित किया । 2. ऊँची आवाज़ से बुलाया । 3. कहो ।

।। शब्द पहिला ।।

हे राधा तुम गति अति भारी। हे स्वामी तुम धाम अपारी।
राधास्वामी दोउ मोहिं गोद बिठारी ।।1।।

राधा चरन गहे मैं आ री। स्वामी सरन हुई गति न्यारी।
राधास्वामी की हुई मैं प्यारी ।।2।।

राधा अंतर दया विचारी। स्वामी परगट किया उबारी।
राधास्वामी मिला कर मोहिं सँवारी ।।3।।

राधा पल पल नाम रटा री। स्वामी तिल तिल रूप निहारी।
राधास्वामी मुझ को किया अपना री ।।4।।

राधा गुन क्या कहूं पुकारी। स्वामी महिमा अकह अपारी।
राधास्वामी अब मोहिं लीन सुधारी ।।5।।

राधा दरस कठिन गहिरा री। स्वामी बचन सुनत मोहा री।
राधास्वामी अब के लिया उबारी ।।6।।

राधा बल मन हार गया री। स्वामी बल मैं गगन चढ़ा री।
राधास्वामी कीन्ही मेहर करारी[1] ।।7।।

राधा आरत करूँ सिंगारी। स्वामी संग आरती धारी।
राधास्वामी आरत करन विचारी ।।8।।

राधा चरन सिंहासन धारी। स्वामी चरन सम्हार पखारी[2]।
राधास्वामी चरन अब मिला अधारी ।।9।।

राधा दृष्टि दया कर डारी। स्वामी मेहर करी अब न्यारी।
राधास्वामी कीन मोर उपकारी ।।10।।

राधा गल अब हार चढ़ा री। स्वामी सीतल तिलक लगा री।
राधास्वामी पूजन आज करा री ।।11।।

राधा आगे भोग धरा री। स्वामी सन्मुख थाल भरा री।
राधास्वामी दोनों मान लिया री ।।12।।

---

1. अत्यन्त। 2. धोया।

राधा अमर चीर पहिना री। स्वामी अजर वस्त्र तन धारी।
राधास्वामी शोभा अगम अपारी॥13॥
राधा आरत अब हुइ भारी। स्वामी चित में हर्ष बढ़ा री।
राधास्वामी चरनन आन पड़ा री॥14॥
राधा दिया परशाद दया री। स्वामी मेहर करी कुछ न्यारी।
राधास्वामी पर मैं जाऊँ बलिहार॥15॥
पिरथम आरत राधा धारी। फिर आरत मैं स्वामी सम्हारी।
राधास्वामी आरत कर लइ सारी॥16॥
राधा अपना धाम दिया री। स्वामी चरनन माहिं लिया री।
राधास्वामी दोनों पार किया री॥17॥

॥ शब्द दूसरा ॥

राधास्वामी मेरे सिंध गम्भीर। कोइ थाह न पावत बीर॥1॥
रतनन के भरे भंडार। जहाँ लाल अमोलक सार॥2॥
सुर्त मीन करे जहाँ केल[1]। कल काल धरे जहाँ पेल[2]॥3॥
घट प्रेम धार अब उमँगी। रस सार पिये कोइ संगी॥4॥
तिल उलट चली सुर्त प्यारी। देखी वहाँ जोत उजारी॥5॥
दल द्वार खोल कर पैठी[3]। नल पार अविद्या ऐंठी[4]॥6॥
माया का चक्र हटाया। ब्रह्म दरस सहज में पाया॥7॥
धुन अनहद सार बजाया। सुन भीतर शब्द जगाया॥8॥
गुरु पर अब तन मन वारूँ। गुन गावत कभी न हारूँ॥9॥
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ। मैं नित नित बल बल जाऊँ॥10॥
गुरु मूरत हृदे[5] छिपाऊँ। मन अंदर द्वार खुलाऊँ॥11॥
गुरु संग लिये मोहिं जावें। सत रूप अधर दरसावें॥12॥

---

1. कलोल, आनन्द। 2. पीड़ के। 3. प्रवेश कर गई। 4. आकड़ गई, मुरझा गई। 5. हृदय में।

कँवलन के बाग़ दिखावें । हंसन संग केल करावें ।।13।।
वह आनँद कहत न जाई । सुर्त भीज रही छबि छाई ।।14।।
अमृत रस झड़ी लगाई । छिन छिन पर धार चुवाई ।।15।।
मन गोता खावत भारी । सुर्त जागी मिटी अँधियारी ।।16।।
कोइ सज्जन प्रेम बिलासी । देखत और खेलत पासी ।।17।।
गुरु बचन सुनत मैं हाँसी । हुइ राधास्वामी चरन निवासी ।।18।।
दम दम में प्रेम बढ़ाती । गुरु मूरत अजब दिखाती ।।19।।
मैं नैन परान गँवाती । तन मन की सुध बिसराती ।।20।।
गुरु मूरत अधिक सुहाती । ज्यों चन्द्र चकोर समाती ।।21।।
राधास्वामी मौज दिखाई । मैं चरन धूर होय धाई ।।22।।

।। तीसरा शब्द ।।

आज दिवस सखि मंगल खानी । मैं राधास्वामी सँग आरत ठानी ।।1।।
तन मन थाल विरह कर जोती । सुरत[1] निरत[2] धुन माल[3] परोती ।।2।।
गगन शिखर चढ़ अचरज देखूँ । हंसन साथ महासुन पेखूँ[4] ।।3।।
चरन गहूं अब राधास्वामी के । आरत गाऊँ प्यारे जिय के ।।4।।
छिन छिन निरखूँ छबि राधास्वामी । तन मन अरपूँ दुख हर नामी ।।5।।
छिन छिन निरखूँ छबि प्रीतम की । तन मन अरपूँ दुख हरि हिये की ।।6।।
कहाँ लग बरनूँ चोट विरह की । कोई न जाने साल[5] जिगर की ।।7।।
विरह अग्नि तन मन मेरा फूँका । झाल उठी जग दीन्हा लूका ।।8।।
बिन राधास्वामी मोहिं कौन सम्हारे । लोक चार मेरे ज़रा न अधारे ।।9।।
मैं भइ देही तुम भये स्वाँसा । तुम बिन नहिं जीवन की आसा ।।10।।
तुम भये मेघा मैं भइ मोरा । तुम्हरे दरस मैं करती शोरा ।।11।।
मैं बुलबुल तुम गुल की क्यारी । मैं क़ुमरी[6] तुम सर्व[7] अपारी ।।12।।
तुम चंदा मैं रैन अँधियारी । तुम से शोभा भई हमारी ।।13।।

---

1. आन्तरिक शब्द का श्रवण करना । 2. आन्तरिक दृष्य देखना । 3. गूँथती ।
4. देखूँ । 5. चोट का दुख । 6. एक घुग्गी की किस्म की चिड़िया ।
7. सरू का बूटा ।

प्रेम सिन्ध जब लहर उठाई । भरम कोट सब दीन बहाई ।।14।।
काम क्रोध की बस्ती उजड़ी । आसा मनसा तन से बिछड़ी ।।15।।
लोभ मोह सब दूर निकारी । विषय बासना घट से टारी ।।16।।
राज विवेक हुआ अब भारी । सुख पाया तन रैयत[1] सारी ।।17।।
मैं दासी सतगुरु चरनन की । किये हैं मनोरथ पूरन अब की ।।18।।
कहाँ लग बरनू महिमा उनकी । खबर पड़ी अब अनहद धुन की ।।19।।
सुरत चढ़ी पहुंची ब्रह्मणडा । छोड़ गई यह खाकी पिंडा ।।20।।
गगन मँडल जाय बैठक पाई । सुन्न महल में धधक चढ़ाई ।।21।।
द्वार दसम का पाया मरमा । दूर किये सब कंटक करमा ।।22।।
कर्म काट निज घर को चाली । माया ठगनी दूर निकाली ।।23।।
महासुन्न का खेल दिखाना । क्या कहूँ वहाँ का हाल पूराना ।।24।।
सिंह नाग जहाँ चौकी लाये । बिन सतगुरु कोइ पार न पाये ।।25।।
अन्ध घोर तिस आगे भारी । शब्द गुरु तहाँ कीन उजारी ।।26।।
झँझरी पार झरोखा देखा । संतन जांका बरना लेखा ।।27।।
दायें बाट गइ दीप अचिन्ता । बाइँ दिसा जहाँ सहज बसंता ।।28।।
मद्य होय सूरत चढ़ी आगे । भँवरगुफा जहाँ सोहँग जागे ।।29।।
सोहँ से जाय भेंटा कीन्हा । सत्तनाम धुन ता पर चीन्हा ।।30।।
अलख पुरुष की धुन सुन पाई । तहाँ से अगम पुरुष को धाई ।।31।।
अगम लोक जाय डेरा डाला । अब पाई पूरी टकसाला ।।32।।
अब रहा आगे एक अनामी । कहा कहूँ वह अकह कहानी ।।33।।
अब आरत पूरन भइ मेरी । दया करो स्वामी मैं बल तेरी ।।34।।

।। शब्द चौथा ।।

आज साज कर आरत लाई । प्रेम नगर बिच फिरी है दुहाई ।।1।।
विरह व्यथा के लुट गये डेरे । मिल गये राधास्वामी बिछड़े मेरे ।।2।।
हिरदा थाल सुरत की बाती । शब्द जोत मैं नित्त जगाती ।।3।।

---

1. प्रजा ।

आरत फेरूं सन्मुख ठाढ़ी । प्रीत उमँग मेरी छिन छिन बाढ़ी ।।4।।
तन नगरी बिच बजत ढँढोरा । भागे चोर ज़ोर भया थोड़ा ।।5।।
सील छिमा आय थाना गाड़ा । काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा[1] ।।6।।
स्वामी मेहर करी अब भारी । मैं भी उन चरनन बलिहारी ।।7।।
अब ते सरन पड़ी राधास्वामी । राखो सँग सदा अन्तर जामी ।।8।।
मेरे और न कोई दूजा । मेरे निस दिन तुम्हरी पूजा ।।9।।
तुम बिन और न कोई जानूं । छिन छिन मन में तुमको मानूं ।।10।।
मैं मछली तुम नीर अपारा । केल करूँ मैं तुम्हारी लारा ।।11।।
मैं पपिहा तुम सवाँति के बादल । सुख पाये दुख गये हैं रसातल[2] ।।
तुम चंदा मैं कमोदन हीनी । तुम्हरी लगन में निसदिन भीनी[3] ।।
मैं धरनी तुम गगन बिराजे । कैसे मिलूं मैं तुम सँग आजे ।।14।।
सुरत निरत से चढ़ कर धाऊँ । कभी न छोड़ूँ अस लिपटाऊँ ।।15।।
मैं गुरबतीं राधास्वामी के चरन की । लाज रखो मेरी काल से अबकी ।।16।।
तुम्हरे बल से भइ हूं निचिंती । अब मन में नहिं संका धरती ।।17।।
सूर किया स्वामी खेत जिताया । मार लिया मैंने मन और माया ।।18।।
ख़ाक मिला सब कपट खज़ाना । भाग गया दल मोह तुराना ।।19।।
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़कर लीन्हा । सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा ।।20।।
सिंध महासुन्न बीच में आया । सतगुरु कृपा ने दीन तराया ।।21।।
भँवरगुफा के महल बिराजी । सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी ।।22।।
अलख लोक में सूरत साजी । अगम लोक को छिन में भाजी[4] ।।23।।
पोहप[5] सिंहासन क्या कहुँ महिमा । जहाँ राधास्वामी ने धारे चरना ।।24।।
उन चरनन पर जाय लिपटानी । आगे अकह की क्या कहुं बानी ।।25।।
अब आरत मैं कीन्ही पूरी । भाखा भेद अगम गम मूरी ।।26।।
राधास्वामी की चरन धूर धर । आय गई अपने मैं निज घर ।।27।।

---

1. डाका । 2. पाताल में । 3. भींजी हुई । 4. भागी । 5. पुष्प, फूल ।

।। शब्द पांचवां ।।

यह आरत दासी रची, प्रेम सिंध की धार।
धारा उमँगी प्रेम की, जा का वार न पार ।।1।।
सन्मुख ठाड़ी होय कर बिन्ती करूँ पुकार।
भाग हीन मैं क्यों हुई, स्वामी तुम दरबार ।।2।।
तुम से दाता कोइ नहीं, सब को लीन्हा तार।
मुझ अपराधिन हीन की, अभी न आई बार ।।3।।
मैं पड़ती तुम दरस को, जैसे चन्द चकोर।
सीप चहै जिमि[1] स्वाँति को, मोर चाहि घनघोर ।।4।।

।। चौपाई ।।

तुम दीपक मैं भइ हूं पतंगा । भस्म किया मन तुम्हरे संगा ।।5।।
तुम भृङ्गी मैं कीट अधीना । मिल गये राधास्वामी अति परवीना ।।6।।
तुम चंदन मैं भइ हूं भुवंगन[2] । सीतल भइ लग तुम्हरे चरनन ।।7।।
तुम समुद्र मैं लहर तुम्हारी । तुम से उठ फिर तुमहिं सम्हारी ।।8।।
तुम सूरज मैं किरनी आई । तुम से निकसी तुमहिं समाई ।।9।।
तुम मोती मैं भी भइ धागा । संग तुम्हारा कभी न त्यागा ।।10।।
अब तो कृपा करो राधास्वामी । तुम हो घट घट अंतरजामी ।।11।।
तुम चंदा मैं कला तुम्हारी । घाटि बाढ़ तुम्हरो आधारी ।।12।।
मैं बाली तुम पित और माता । तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राता ।।13।।
नैन थाल और दृष्टी जोती । पलकन छड़ी खड़ी कर लेती ।।14।।
प्रेम नीर का घी अब डारूँ । आरत तुम्हरे सन्मुख वारूँ ।।15।।
घंटा शंख नाद धुन गाजा । बीन बाँसरी अचरज बाजा ।।16।।
ताल मृदंग किंगरी धधकी । ढोल पखावज छिन छिन खिड़की ।।17।।
सहस धार अमृत की बरखा । गगन मँडल फिरे जैसे चरख़ा ।।18।।

---

1. जैसे।   2. सपनी।

घुमँड़ घुमँड़ होवे बलिहारी । आरत शोभा अब भइ भारी ।।19।।
समा बँधा कुछ कहा न जाई । सतसंगी मिल आरत गाई ।।20।।
हीरे लाल न्योछावर[1] होई । माणिक मोती लड़ियाँ पोई[2] ।।21।।
फल और फूल जहाँ अति राजें । राधास्वामी जहाँ बिराजें ।।22।।
मगन हुआ अब तन मन मेरा । राधास्वामी छिन छिन हेरा[3] ।।23।।
आरत कीन्ही अब मैं पूरी । देओ प्रशाद अमीरस मूरी[4] ।।24।।
प्रेम ध्वजा अब गगन फहराई । धुन धधकार अगम से आई ।।25।।

।। शब्द छठवाँ ।।

आनँद मंगल आज, साज सब आरत लाई ।
राधास्वामी हुए हैं दयाल, काल डर दूर बहाई ।।1।।
सुखमन थाल सजाय, बंक की खोल किवाड़ी ।
चन्द्र कटोरी आन, भान की जोत सँवारी ।।2।।
सुरत निरत की छड़ी, अमी का भोग धराई ।
सेत चँदरवा[5] तान, सेत की तान[6] सुनाई ।।3।।
कर्म रेख मिट गई, सुन्न में बजी बधाई ।
स्वामी किरपा करी, रूप अद्भुत दरसाई ।।4।।
सत्तनाम धुन अगम, हिये बिच आन समाई ।
काया नगर मँझार, पुरुष की फिरी दुहाई ।।5।।
छोड़ कुटुम्ब और तोड़ जगत से, पोढ़[7] परम पद पाई ।
राधास्वामी राधास्वामी, निस दिन रटना लाई ।।6।।
प्रेम मगन मन हुआ, कहा अब कछू न जाई ।
सतसंगी मिल आरत गावें, तन मन सुध बिसराई ।।7।।
स्वामी किरपा करी, सुरत अब लीन जगाई ।
शब्द अगम का भेद, दीन सतगुरु दरसाई ।।8।।

---

1. वार दिये गये । 2. परोतियां । 3. देखा । 4. मूल । 5. चंदोआ । 6. राग । 7. मज़बूत ।

उमँग उमँग कर उमँग उमँग कर, आरत गाई।
पंच शब्द धुन पंच शब्द धुन, पूरन आई।।9।।

।। शब्द सातवाँ ।।

करूँ आरती राधास्वामी, तन मन सुरत लगाय।
थाल बना सत शब्द का अलख जोत फहराय।।1।।
हंस सभी आरत करे, सन्मुख दर्शन पाय।
राधास्वामी दया कर, दीन्हाँ अगम लखाय।।2।।
अनहद धुन घंटा बजे संख बजे मिरदंग।
ओंकार मँडल बँधा, मेघनाद[1] गरजंत।।3।।
सुन्न मँडस धुन सारँगी, किंगरी बजे अनूप[2]।
कोटि भान छबि रोम इक, ऐसा पुरुष स्वरूप।।4।।
कँवलन की क्यारी बनी, भँवर करें गुंजार।
सेत सिंहासन बैठ कर, देखें पुरुष सम्हार।।5।।
बीन बाँसरी मधुर धुन, बाजें पुरुष हुज़ूर।
सुन सुन हंसा मगन होयँ, पिवें अमीरस मूर[3]।।6।।
रंग महल सतपुरुष का, शोभा अगम अपार।
हंस जहाँ आनँद करें, देखें बिमल[4] बहार।।7।।
अब आरत पूरन भई, मन पाया बिसराम।
राधास्वामी चरन पर, कोटि कोटि परनाम।।8।।

।। शब्द आठवाँ ।।

सुरत सखी आज करत आरती। शब्द गुरु मन अपने धारती।।1।।
निरत[5] दीप का किया उजाला। रोई माया झुर गया काला।।2।।
बिरत[6] बिबेक थाल लिया हाथा। मद और मोह झुकाया माथा।।3।।
दीन गरीबी आन समाई। कुटिल कपट अब दूर बहाई।।4।।

---

1. बादल की गरज। 2. उपमा रहित। 3. मूल, सार। 4. निर्मल।
5. आन्तरिक प्रकाश। 6. वृत्ति।

प्रेम भक्ति की जोत जगाई । लेकर सन्मुख स्वामी आई ।।5।।
फेरत आरत घेरत मन को । टेरत[1] राधास्वामी चली धुन घन को ।।
घोर[2] उठा घट भीतर भारी । उमँगा हिरदा चोट करारी ।।7।।
जिगर फटा दिल टुकड़े हुआ । तब राधास्वामी का दर्शन हुआ ।।8।।
ऐसे कठिन स्वामी दर्शन पाये । कर्म भर्म सब दूर नसाये ।।9।।
प्रेम भक्ति की धारा छूटी । काम क्रोध की गठरी लूटी ।।10।।
मान मनी की मटकी फूटी । जगत बासना सबही छूटी ।।11।।
तत्व पाँच परकिर्त पचीसा । गुन तीनों धर पटके सीसा ।।12।।
सुरत छूट चढ़ी गगन मँडल को । घेर लिया जाय काल मँडल को ।।13।।
जीत लिया गढ़ सुन्न मँडल को । धार लिया मन अगम मँडल को ।।14।।
मैं लोहा पारस राधास्वामी । पारस परस गई निज धामी ।।15।।
मैं भुवंग[3] तुम हो मणि मेरे । तेज[4] तुम्हारे सूक्ख घनेरे[4] ।।16।।
मैं कंवला तुम सूर प्रकासी । दरस तुम्हारे पाउं हुलासी ।।17।।
मैं सरवर तुम कंवल अनूपा । शोभा पाउँ मैं तुम्हरे रूपा ।।18।।
तुम सरवर मैं भइ हुँ हंसला[6] । मोती चुगूं और देखूं लीला ।।19।।
मैं प्यासी तुम अमृत धारा । मैं भूखी तुम्हरा अगम भंडारा ।।20।।
अगम आरती ऐसी गाई । विरह भाव की धार बहाई ।।21।।
कूड़ा करकट[7] सभी जलाया । महल आपना साफ़ कराया ।।22।।
मुझ सी विरहन और न कोई । मैं सब अपनी गति मति खोई ।।23।।
घर फूंका और लीन्हा लूका[8] । तीन लोक को छिन में थूका ।।24।।
सत्तलोक का पाया कूका[9] । अब कीन्हा मैंने काल का टूका[10] ।।25।।
पाया सतगुरु चरन निवासा । होत सदा अब बिमल बिलासा ।।26।।
महिमा ताँकी कही न जाई । गूँगे का गुड़ हो गया भाई ।।27।।

---

1. पुकारती हुई । 2. शोर । 3. सर्प । 4. प्रकाश । 5. अधिक । 6. हंस ।
7. कूड़ा । 8. पलीता, जिसमे आग लगाइ जावे । 9. आवाज । 10. काट गिराया ।

।। शब्द नवाँ ।।

भर भर प्रेम आरती गाऊं । नई उमँग अब चित्त समाउं ।।1।।
भक्ति सिंध अति लहर उठाई । प्रीत रीत मोती उपजाई ।।2।।
सुरत चंबेली घट में खिलाई । निरत रंगीली संग मिलाई ।।3।।
शब्द गुरु गल हार पिन्हाया । गगन मँडल धुन अजब सुनाया ।।4।।
पीत सेत और लाल बखाना । हरा श्याम पचरंगी बाना ।।5।।
पाँच रंग फ़ुलवार खिलानी । देख देख दृष्टी हरखानी ।।6।।
जोत जगी हिये भया उजाला । श्याम निरख फिर सेत सम्हाला ।।7।।
अनहद बानी सुनी गगन में । मगन हुई सुर्त पहुंची धुन में ।।8।।
घंटा शंख सूर दिस[1] छाँटा । बंक नाल का खोला घाटा ।।9।।
आरत एक करी त्रिकुटी में । गुरु स्वरूप निरखा अब घट में ।।10।।
दूसर आरत सतगुरु कीन्ही । सत्तलोक गइ सुरत प्रबीनी ।।11।।
तीसर आरत राधास्वामी । निज कर करी देख निज धामी ।।12।।
महिमा उनकी क्योंकर गाऊं । चरन शरन में निस दिन धाऊं ।।13।।
राधास्वामी धाम दिखाई । अद्‌भुत शोभा कही न जाई ।।14।।
राधास्वामी पुरुष अपारा । कहूं कहा[2] कुछ अजब बहारा ।।15।।

।। शब्द दसवाँ ।।

सुरत आज लगी चरन गुरु धाय । श्याम तज सेत ग्राम ठहराय ।।1।।
देख निज नाली बंक समाय । त्रिकुटी चढ़ कर पहुंची आय ।।2।।
हिये बिच पंकज[3] अजब खिलाय । सेत पद धजा अगम फहराय ।।3।।
हंस जहाँ बाजे रहे बजाय । गुरु अस लीला दई दिखाय ।।4।।
रागिनी नइ नइ नित्त सुनाय । भेद सब अक्षर[4] दीन बताय ।।5।।
घाट निःअक्षर[5] पाया जाय । गुफा में धुन इक सुनी बनाय ।।6।।

---

1. सूरज की दिशा यानी दाहिनी तरफ। 2. क्या करूं। 3. कँवल। 4. सुन्न।
5. महसुन्न।

पदम सत निरखा भरम नसाय । बीन धुन पाई सुरत लगाय ।।7।।
अलख और अगम रहा दरसाय । परे तिस राधास्वामी धाम मिलाय ।।8।।
जहां अब आरत साज सजाय । लिये मैं राधास्वामी ख़ूब रिझाय ।।9।।
कहूँ क्या महिमा बरनी न जाय । सुरत मेरी छिन छिन रही मुसकाय[1] ।।
राधास्वामी लीला कहूं छिपाय । लिया मोहि अपने अंग लगाय ।।11।।
आरती पूरी कीन्ही आय । कहूं क्या अस्तुत[2] राधास्वामी गाय ।।12।।
परम पद पाया काल भजाय[3] । वेद भी रहा बहुत शरमाय ।।13।।
भेद यह मिला न अब तक काय । दया कर राधास्वामी दिया जनाय ।।14।।
करूं अब आरत उनकी गाय । सुरत मेरी राधास्वामी लीन जगाय ।।15।।
जोग और ज्ञान रहे मुरझाय । संत कोई विरले दिया सुझाय ।।16।।
राधास्वामी अचरज खेल दिखाय । चरन में राधास्वामी गई समाय ।।17।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

चरन गुरु हिरदे धार रही ।। टेक ।।
भौ की धार कठिन अति भारी । सो अब उलट बही ।।1।।
गुरु बिन कौन सम्हारे मन को । सुरत उमँग अब शब्द गही ।।2।।
कोटिन जन्म भरमते बीते । काहु मोरी आन न बाँह गही ।।3।।
अब के सतगुरु मिले दया कर । शब्द भेद उन सार दई ।।4।।
नौ[4] को छोड़ द्वार दस लागी । अक्षर मथ नवनीत[5] लई ।।5।।
नौका पार चली अब गुरु बल । अगम पदार्थ लीन सही ।।6।।
क्या क्या कहूं कह गति नाहीं । सुरत शब्द मिल एक हुई ।।7।।
रहन गहन की बात नियारी । संत बिना कोइ नाहिं कही ।।8।।
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख । भँवरगुफा पर ठाट ठई[6] ।।9।।
सत्तनाम सत धाम निरख धुर । अलख अगम गति पाय गई ।।10।।
सुरत निरत सँग चली अगाड़ी । राधास्वामी राधास्वामी चरन मई[7] ।।11।।

1. हँसती हुई। 2. स्तुति। 3. दूर करके, भगा कर। 4. नौ द्वार। 5. मक्खन। 6. मुकाम किया। 7. मिल गई।

अब आरत सिंगार सुधारी । प्रेम उमंग मी बहुत चही ।।12।।
काल कला सब दूर बिडारी[1] । दयाल सरन अब आन लई ।।13।।
पचरँग बाना[2] पहन बिराजे । शोभा धारी आज नई ।।14।।
जीव काज निज भवन छोड़ कर । जमा दूध फिर होत दही ।।15।।
मथ मथ माखन काढ़ निकारा । बिरले गुरुमुख चाख चखी ।।16।।
राधास्वामी दीन अवाज़ा । चढ़ो अधर निज धाम पई ।।17।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

अपने स्वामी की मैं करत आरती । कुल कुटुम्ब सब अपना तारती ।।1।।
काल कर्म सिर धौल[3] मारती । ममता चादर छिन में फाड़ती ।।2।।
हस हस स्वामी हिये में धारती । रोग दोष सब छिन में जारती ।।3।।
थाल सजाया उमँग प्रेम का । दीपक बाला दरस नेम का ।।4।।
भोग धराया भाव भक्ति का । राग सुनाया ध्यान जुक्ति का ।।5।।
दृष्टि जोड़ कर दर्शन करती । नैनन में ज्यों पुतली धरती ।।6।।
छवि स्वामी की बड़ी चहीती[4] । मैं दरबारी स्वामी दर की ।।7।।
लौ[5] लगाय चरनन मैं रहती । लउआ[6] नाम मैं अपना धरती ।।8।।
श्याम कंज मैं त्यागा येही । सेत पदम में सूरत देई ।।9।।
सुरत चढ़ाय गई आकाशा । खिल खिल देखूँ बिमल तमाशा ।।10।।
राधास्वामी चरन निहारूं । तन अपना उन पर वारूं ।।11।।
आरत पूरन भई है हमारी । पहुँच गई सतगुरु दरबारी ।।12।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

आरत गावे दरसो[7] अपनी । छिन छिन राधास्वामी राधास्वामी रटनी ।।
थाल इल्म[8] का जोत अमल[6] की । पढ़ पढ़ आयो राधास्वामी की सरनी ।।
क़लम लगन और प्रेम दवाता । लिखलिख राधास्वामी हिये बिच गाता ।।

1. निकाल दी। 2. वस्त्र। 3. थप्पड़। 4. प्यारी। 5. ध्यान। 6. जो लिव लगावे। 7. जिसको दर्शन की इच्छा है। 8. विद्या। 9. अभ्यास।

पढ़ी फ़ारसी पढ़ी अंगरेज़ी । हुई मेहर बुध पाई तेली ।।4।।
देखा सब जग झूठ पसारा । पाया नाम राधास्वामी का सारा ।।5।।
सुरत चढ़ी खुला शब्द अपारा । कुमत हरी[1] और मनको गारा[2] ।।6।।
प्रेम बदरिया घुमड़न[3] लागी । बरस बरस अनहद धुन जागी ।।7।।
चाँद सुरज दोउ गये छिपाई । सुखमन नदी उमँड़ कर आई ।।8।।
खुला द्वार फूटा घट गगना । सुन्न शिखर देखत मन मगना ।।9।।
बाल अवस्था खेल कूद की । खेल दिखाया साँचा अब की ।।10।।
दया हुई अब स्वामी भारी । आरत पूरन हुई हमारी ।।11।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

एक आरती कहूं बनाई । राधास्वामी हुए सहाई ।।1।।
शान्ति थाल और सत मत जोती । समता सील[4] धरे जहाँ मोती ।।2।।
रत्नन माल परोई भाई । गल में स्वामी आन चढ़ाई ।।3।।
हीरे लाल थाल भर लाई । माणिक पन्ना भेंट धराई ।।4।।
गहने कपड़े बहु पहिनाई । चोआ चन्दन अंग[5] लगाई ।।5।।
अस अस सब सिंगार बनाई । कँवल देख ज्यों मधुकर[6] आई ।।6।।
स्वामी सन्मुख ठाढ़ी भई । आरत थाली कर[7] में लई ।।7।।
आरत कर कर अति हरखाई । राग रागिनी नइ नइ गाई ।।8।।
बाजे बजें गगन के द्वार । उमँग बढ़ी सुन सुन झनकार ।।9।।
अग्नि पवन और जल भंडार । तीनों पाये छोड़े वार ।।10।।
इनके पार सुरत जब भई । चाँद सूर तज सुखमन गही ।।11।।
जोत निहारत मन हुलसाना । रूप निरंजन अलख पहिचाना ।।12।।
घंटा नाद सुनी और पहुंची । संख नाद फिर सूरत खैंची ।।13।।
यहाँ से हटी बंक[8] पट खोला । त्रिकुटी जाय ओंग धुन तोला[9] ।।14।।

---

1. दूर हुई। 2. गला दिया। 3. छा जाना। 4. शीतल स्वभाव। 5. देह। 6. भँवरा। 7. हाथ। 8. बंकनाल। 9. समझ।

गरज गरज आकाश पुकारी । आओ सुरत मैं तुझ पर वारी ।।15।।
लीला देखत चली अगाड़ी । सुन्न सरोवर कँवलन बाड़ी[1] ।।16।।
हंसन साथ महा सुख पाई । महा सुन्न में जाय समाई ।।17।।
भँवरगुफा गइ सोहं पास । मुरली धुन सुन करे बिलास ।।18।।
यहाँ से चढ़ पहुँची सतपुर में । सतगुरु पूरे मिले अधर में ।।19।।
नाना[2] धुन सुन बीन बजाई । सतपुरुष दुरबीन लखाई ।।20।।
द्वारे धस गइ अलख लोक में । अगम लोक फल पाया छिन में ।।21।।
राधास्वामी पद दरसाना । क्या कहुँ महिमा अजब ठिकाना ।।22।।
कहना था सो अब कह चुकी । आरत पूरन अब मैं करी ।।23।।
राधास्वामी हुए दयाल । दे परशादि किया निहाल[3] ।।24।।
हीरे लाल[4] न्योछावर करती । तन मन धन तो तुच्छ समझती ।।25।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

आरत करूँ आज सतगुरु की । तन मन भेंट चढ़ाऊँ अब की ।।1।।
ममता छोड़ूँ मैं अब सब की । प्रीत करूँ राधास्वामी चरनन की ।।2।।
सुमिरन नाम नेम से करूँ । प्रेम सहित अनहद धुन सुनूँ ।।3।।
सुन सुन धुन फिर आगे चढ़ूँ । सहसकंवल दल बानी पढ़ूँ ।।4।।
श्याम सेत तक आगे चलूँ । बंकनाल के भीतर धसूँ ।।5।।
वहाँ से त्रिकुटी धाम सम्हारूँ । ओंग ओंग संग बहुत पुकारूँ ।।6।।
ररंकार धुन सरवर तीर । हंसन की जहाँ देखी भीड़ ।।7।।
सेत सेत पद जहाँ गंभीर । सुरत निरत धस धारी धीर ।।8।।
जन्म जन्म की काटी पीड़ । छान करी जहाँ नीर और खीर ।।9।।
आतम अक्षर निरख निहारी । महासुन्न की करी तयारी ।।10।।
अंध घोर जहाँ अति कर भारी । सतगुरु बल से पार सिधारी ।।11।।

---

1. बग़ीचा । 2. कई तरह की । 3. प्रसन्न । 4. सुन्न और त्रिकुटी के शब्द ।

भँवर गुफा पहुंची इक छिन में । बंसी की धुन पड़ी श्रवन में ।।12।।
सोहं सोहं सुनी पुकार । हंसन रूप देख उजियार ।।13।।
वहाँ से चली अमर पद आई । सत्तनाम धुन बीन सुनाई ।।14।।
अलख अगम का नाका[1] लीया । जहाँ अमी रस अद्‌भुत पीया ।।15।।
आगे को फिर सूरत धाई । राधास्वामी धाम समाई ।।16।।
अभेद आरती करी बनाई । भेद तासु कोई संत जनाई ।।17।।
नहिं वहाँ थाल न दीपक बाती । सदा आरती बहु बिधि गाती ।।18।।
चरन सेव चरनामृत पीती । उमँग सहित परशादी लेती ।।19।।
छिन छिन राधास्वामी रूप निहारूँ । पल पल राधास्वामी हिरदे धारूँ ।।
सुरत शब्द सँग आई जाग । राधास्वामी मिले बड़े मेरे भाग ।।21।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

राधास्वामी दया प्रेम घट आया । बंधन छूटे भर्म गँवाया ।।1।।
सीतल शब्द जोत लख पाई । गगन मँडल में सुरत समाई ।।2।।
उमंगा हिरदा सुधि बिसराई । तन मन धन सब भेंट चढ़ाई ।।3।।
अब रक्षा मेरि तुम्हरे हाथा । चरन तुम्हार मोर रहे माथा ।।4।।
सुमिरन नाम करूँ निस[2] बासर[3] । शब्द जोग का पाया औसर[4] ।।5।।
देखत रहूं रूप गुरु प्यारा । काम बाम[4] को धर धर मारा ।।6।।
आरत करूँ प्रेम रंग पूरी । पास रहूं गुरु के तज दूरी ।।7।।
प्रेम उमँग धारा घट बढ़ती । सुरत निरत नित उँचे चढ़ती ।।8।।
भूल भरम धोखा सब भागा । राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा ।।9।।

।। शब्द सतारहवाँ ।।

प्रेम प्रीत घट धार । आरती राधास्वामी कीजे ।।1।।
मन माधो[6] तन बास । सुरत चरनन में दीजे ।।2।।
थाल उमँग और जोत बिरह । घट परगट कीजे ।।3।।

---

1. हद, सीमा । 2. रात । 3. दिन । 4. मौका । 5. माया । 6. माया के पीछे दौड़ने वाला ।

सतगुरु होयँ दयाल । दान फिर शब्द मिलीजे ।।4।।
शब्द शब्द चढ़ गगन । सुन्न में अमृत पीजे ।।5।।
मानसरोवर बास । हंस संग खेल खिलीजे[1] ।।6।।
कँवल द्वार धस जाय । सेत पद आस धरीजे ।।7।।
महासुन्न का घाट । दया सतगुरु से लीजे ।।8।।
भँवरगुफा धुन बाँसरी । आश्चर्य्य सुनीजे ।।9।।
सत्तनाम धुन बीन । ताहि में सूरत दीजे ।।10।।
अलख अगम दरबार । देख घट प्रेम भरीजे ।।11।।
सुरत सुहागिन हुई । काल बल सब ही छीजे ।।12।।
धोखा सब ही मिटा । पूरूष संग छिन छिन रीझे[2] ।।13।।
संत कृपा जब होय । सुरत अपने घर सीझे[3] ।।14।।
सतसँग करो बनाय । अमी का छींटा लीजे ।।15।।
राधास्वामी नाम । हिये में आन धरीजे ।।16।।
रोम रोम मन मगन । आरती पूरन कीजे ।।17।।

।। शब्द अठारहवाँ ।।

तिल भीतर दिल जोड़ । कँवल[4] में आसन करिये ।।1।।
दृष्टि उलट असमान । जोत फुलवारी खिलिये ।।2।।
बाजे शब्द अनाहदी । घट मंगल भरिये ।।3।।
सुरत शिखर चढ़ गई । बंक में छिन छिन धरिये ।।4।।
कँवल त्रिकुटी पाय । भँवर मन कारज सरिये ।।5।।
ररंकार धुन सुनी । काल दल मार गिरइये ।।6।।
संत कृपा अब हुई । घाट घट सब ही खुलिये ।।7।।
यह मारग निज पीव का । बिन भाग न मिलिये ।।8।।
कौतुक[6] क़ुदरत[7] धार । प्रेम का खेल खिलइये ।।9।।
घट पट लीला देख । अमी रस धार बहइये ।।10।।
निज भक्तन के काज । पंथ यह नया चलइये ।।11।।

---

1. खेलिये। 2. मोहित होवे। 3. पहुंचे। 4. सहंस दल कँवल। 5. प्यारा। 6. खेल। 7. शक्ति, ताकत।

वेद न जाने भेद । कर्म बस योंही बहिये ।।12।।
यह मारग निज संत का । सतसँग से पइये ।।13।।
सतगुरु की कर आरती । उन बहुत रिझइये ।।14।।
राधास्वामी दया से । पूरन पद पइये ।।15।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

उमँग आज हुई हिये में भारी । सरन में राधास्वामी जाय पुकारी ।।1।।
करूँ अब आरत विवध प्रकारी । होय जो मेहर अपार तुम्हारी ।।2।।
वहीँ राधास्वामी दृष्टि निहारी । कहा कर आरत लेकर थारी ।।3।।
सुरत से निरखो तिल कर यारी[1] । खोल यह खिड़की पार सिधारी ।।4।।
गई नभ अन्दर जोत लखारी । देख कर तारा शब्द सुना री ।।5।।
बंक चढ़ त्रिकुटी आन पुकारी । सुन्न में अक्षर धुन धर धारी ।।6।।
महासुन्न पहुंची खोल किवाड़ी । भँवर का राग सुना अति भारी ।।7।।
सत्त पद आई अमर अटारी[2] । अलख और अगम जाय परसा[3] री ।।
कही यह आरत राधास्वामी सारी[4] । करे कोई सज्जन सुरत सम्हारी ।।9।।
प्रेम की धारा बही नियारी । शब्द घट पाया सुरत कारारी ।।10।।
नाम रंग लागा अजब बहारी । मगन होय बैठी काज सँवारीं ।।11।।
संत बिन सब ही पच पच हारी । मिला नहिं भेद रहे सब वारी[5] ।।12।।
दई राधास्वामी वस्तु अपारी । मेहर अब हो गइ मुझ पर न्यारी ।।13।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

सुरत आज चली आरती धार । गुरुन पै चली आरती धार ।।1।।
नाना विधि के भूषण पहिने । कर अपना सिंगार ।।2।।
मन के मोती चित की चुन्नी । विरह नथनिया डार ।।3।।
नेह[6] नौगरी[7] चेतन चुटकी[8] । बिछुआ[7] पहिर बिचार ।।4।।

---

1. प्रीति । 2. महल । 3. छुआ । 4. खास, सार । 5. इस पार, माया की हद में । 6. सन्नेह, प्रति । 7. नाम गहने का ।

पाँच मुन्दरा[1] मुन्दरी[5] पहिरी । हिरदे हार सँवार ।।5।।
करनफूल[5] कारूणा गुरु पाई । पहुंची गुरु दरबार ।।6।।
छन्न[5] पछेली[5] छान ज्ञान की । नौनग तज नौ द्वार ।।7।।
पाँच तत्त पचलड़ी[5] बनाई । सीसफूल[5] लख गगन मँझार ।।8।।
बैना[5] बैन[2] सुने अनहद के । अधर चन्द्र[5] का खोल द्वार ।।9।।
जुगनी[5] जुग[3] बाँधा सतगुरु से । चली आरसी पार ।।10।।
अनवट[5] बाट[4] खुली अंदर में । मन्दिर जोत निहार ।।11।।
झूमर[5] अमर नगीना देखा । झूमी झुमके[5] साल सम्हार ।।12।।
सुमिरन नाम गुलूबंद[5] डाला । हँसली[5] सील सम्हार ।।13।।
मोह तोड़ तोड़ा[5] गल डारा । सतलड़[5] हुई सत की लार[2] ।।14।।
घुंघरू झाँझ[5] बजे घट भीतर । शोभा पयज़ेब[5] उजियार ।।15।।
बाँक[5] बंक के द्वार समानी । टीका टेक अधार ।।16।।
तिल के छल्ले[5] पिलकर पहिरे । कड़े[5] कड़क[7] धुन सार ।।17।।
चंपाकली[5] कंवल की कलियाँ । दल पर अजब बहार ।।18।।
चौकी[5] चौक निहार सुन्न का । चमक दामिनी पार ।।19।।
मन इन्द्री बस छब्बा[5] पहिना । लटकन[5] लटक[6] सम्हार ।।20।।
बेसर[5] सरवर सुरत लगाई । हंसन साथ किया जाय प्यार ।।21।।
महासुन्न चढ़ भँवरगुफा पर । भँवरकली[5] मुरली झनकार ।।22।।
सुन सुन धुन सतलोक सिधारी । मिली पुरुष से नार सुनार[8] ।।23।।
सत्तपुरुष संग रत कीन्ही । हाथ लिया सत सोहं थार ।।24।।
कोटि चन्द्रमा सूर करोड़ों । जोत जगाई अधिक सुधार ।।25।।
पूरन पद पूरन परशादी । दई राधास्वामी निरख निहार ।।26।।
हीरे लाल निछावर कीन्हे । उमंग बढ़ी जाका वार न पार ।।27।।

---

1. चाचरी, भूचरी, खेचरी, अगोचरी उनमुनी। 2. बानी, आवाज। 3. जोड़। 4. रास्ता। 5. नाम ज़ेवरों के। 6. भाव, ज़जबा। 7. ज़ोर दार आवाज। 8. उत्तम स्त्री।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

गुरुमुख प्यारा गुरु अधारा[1] । आरत धारा[2] री ।।1।।
चरन निहारा सरन सम्हारा । शब्द सिंगारा री ।।2।।
राग[3] निकारा बिरह पुकारा । सुरत संवारा री ।।3।।
काल बिडारा[4] मन को मारा । इन्द्री जारा री ।।4।।
गगन सिधारा नाम सिहारा[5] । सुन्न मंझारा री ।।5।।
रूप अपारा नैन उघाड़ा । देख पसारा[6] री ।।6।।
खोल किवाड़ा पाट उघाड़ा । श्याम दुआरा री ।।7।।
कर दीदार सेत अखाड़ा । कर्म पछाड़ा री ।।8।।
निरमल धारा अगम अगारा[7] । अमी अहारा री ।।9।।
चौक अपारा अजब बहारा । कीन बिहारा[8] री ।।10।।
धुन धधकार छाँटी सारा । गुरु दरबारा री ।।11।।
मनुआ हारा लीन किनारा । शब्द कटारा[9] री ।।12।।
गुरु दुलारा नाम चितारा[10] । सूर करारा री ।।13।।
धुन ओंकारा सूर आकारा[11] । बजत चिकारा[12] री ।।14।।
तुम दीन दयारा फाँसी टारा । कर उपकारा री ।।15।।
मैं नीच निकारा अति नाकारा । औगुन भारा री ।।16।।
तन अहंकारा काम लबारा[10] । पड़ा उजाड़ा री ।।17।।
लोभ गंवारा मोह बिजारा[14] । कुछ न विचारा री ।।18।।
हुआ तुम्हारा सब से न्यारा । सीस चरन पर डारा री ।।19।।
चाह चमारा नहिं अचारा[15] । तौ भी पार उतारा री ।।20।।
सहस कंवल दल त्रिकुटी चढ़चल । खोला दसवाँ द्वारा री ।।21।।

---

1. आसरे। 2. धारण। 3. संसारी। 4. दूर किया। 5. परखिया देखना। 6. पर्दा खोला। 7. रोशन, अबिनासी। 8. बिलास। 9. कटार खन्डा। 10. चिताया गया। 11. आकार। 12. एक प्रकार का बाज़ा। 13. झूठा। 14. सांड, बैल। 15. शुद्ध करम।

सुन्न परे महासुन्न अंधारा[1] । देखा भँवर ऊजारा री ।।22।।
गुफा परे सतपुरुष हमारा । पाया अब पद चारा री ।।23।।
अलख अगम को जाकर निरखा । तन मन उन पर वारा री ।।24।।
सुरत निरत दोउ चले अगाड़ी । धाम मिला निज सारा री ।।25।।
आरत कर कर प्रेम बढ़ाऊं । धृग धृग सब संसारा री ।।26।।
राधास्वामी सतगुरु पाये । उन पर मैं बलिहारा री ।।27।।
कहा कहूं कुछ कहत न आवे । मैं अब उन की लारा[2] री ।।28।।

।। शब्द बाईसवाँ ।।

जीव चिताय रहे राधास्वामी । सतपुर निजपुर अगम अधामी[3] ।।1।।
भाग उदय उन जीवन भारी । राधास्वामी जिन घर चरन पधारी ।।2।।
कौन कहे महिमा इस औसर[4] । हारे ब्रह्मा विष्णु महेशर ।।3।।
इक इक जीव काज किया अपना । गुरु आरत कर हुए अति मगना ।।4।।
गुरु संग हंस फौज़ चल आई । कर सन्मान हार पहिनाई ।।5।।
भोजन वस्त्र देख सब हरखे । अति कर प्रीत भाव इन परखे ।।6।।
हुए प्रसन्न सतगुरु अविनाशी । दिया दान किया सतपुर वासी ।।7।।
अन धन और संतान भोग रस । जगत भोग और मिला जोग रस ।।8।।
पर किरपा सतगुरु अस रहई । मोह न व्यापे जग नहिं फंसई[5] ।।9।।
रहे सुरत निरमल गुरु साथा । शब्द मिले रहे चरनन माथा ।।10।।
अपनी दया से गुरु दियो दाना । सेवक तो कुछ माँग न जाना ।।11।।
दया करें जब सतगुरु अपनी । बिना माँग करवावें करनी ।।12।।
नाम अनाम पदारथ न्यारा । सो सतगुरु दीन्हा कर प्यारा ।।13।।
अब देवे को कुछ न रहाई । सतगुरु री तेरे हुए भाई ।।14।।
राधास्वामी कहा बनाई । सदा रहे सतनाम सहाई ।।15।।

---

1. अँधेरा । 2. नाल, साथ । 3. अनामी पद पर आरूढ़ । 4. समय ।
5. बन्धन में पड़े ।

।। बचन सातवाँ ।।

बिनती और प्रार्थना परम पुरुष धनी

राधास्वामी के चरन कँवलो में

।। शब्द पहिला ।।

करूँ बेनती दोउ कर जोरी । अर्ज़[1] सुनो राधास्वामी मोरी ।।1।।
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता । सब जीवन के पितु और माता ।।2।।
दया धार अपना कर लीजे । काल जाल से न्यारा कीजे ।।3।।
सतयुग त्रेता द्वापर बीता । काहु न जानी शबद की रीता ।।4।।
कलियुग में स्वामी दया विचारी । परगट करके शब्द पुकारी ।।5।।
जीव काज स्वामी जग में आये । भौ सागर से पार लगाये ।।6।।
तीन[2] छोड़ चौथा[3] पद दीन्हा । सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा ।।7।।
जगमग जोत होत उजियारा । गगन सोत[4] पर चन्द्र निहारा ।।8।।
सेत सिंहासन छत्र बिराजे । अनहद शब्द गैब[5] धुन गाजे ।।9।।
क्षर[6] अक्षर[7] निःअक्षर पारा । बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा ।।10।।
लोक अलोक पाउं सुख धामा । चरन सरन दीजे बिसरामा ।।11।।

।। शब्द दूसरा ।।

रोम रोम मेरे तुम आधार । रग रग मेरी करत पुकार ।।
अंग अंग मेरा करे गुहार[9] । बन्द बन्द से करूं जुहार[9] ।।
हे राधास्वामी अधम अधार । मैं किंकर[10] तुम दीन दयार ।।1।।
इन्द्री मन मेरे भरे बिकार । तन भी बंधा जगत की लार ।।
मैं सब विधि बहता भौ धार । तुमही पार उतारनहार ।।

---

1. प्रार्थना । 2. त्रिलोकी । 3. सत्तलोक । 4. भंडार यानी दसवाँ द्वार ।
5. गुप्त । 6. त्रिकुटी । 7. सुन्न । 8. पुकार । 9. बंदगी । 10. दास ।

हे राधास्वामी सुख भंडार । मैं अति दीन फंसा संसार ।।2।।
काढ़ि निकारो मोहिं दातार । दात तुम्हारी अगम अपार ।।
दया सिन्ध जीवन आधार । तुम बिन कोइ न स्महारन हार ।।
हे राधास्वामी सरन तुम्हार । गही आन मैं नीच नकार[1] ।।3।।
सदा रहूँ तुम चरन अधार । कभी न बिछड़ूँ यही पुकार ।।
निस दिन राखूं हिये सम्हार । चरन तुम्हार मोर आधार ।।
हे राधास्वामी अपर अपार । मोहिं दिखाओ निज दरबार ।।4।।
मम करनी कहिं को विचार । तो मैं ठहरन जोग न द्वार ।।
तुम गंभीर धीर जग पार । मैं डूबत हूँ भौजल वार ।।
हे राधास्वामी लगाओ किनार । तुम खेवटिया सबसे न्यार ।।5।।
चोर चुग़ल बरतू अहंकार । कपट कुटिलता बड़ा लबार ।।
काम क्रोध और मोह पियार । क्या क्या बरनूं भरा विकार ।।
हे राधास्वामी छिमा सम्हार । लीजे मुझ को भी उबार ।।6।।
तुम महिमा का बार न पार । शेष गनेश रहे सब हार ।।
माया ब्रह्म नहीं औतार । कर न सके बहे काली धार ।।
हे राधास्वामी सब के पार । इन सब के तुमहीं आधार ।।7।।
मैं तुम चरन जाउं बलिहार । देख न सकूं रूप उजियार ।।
तेज पुंज[2] तुम अगम अपार । चाँद सूर की जहाँ न शुमार[3] ।।
हे राधास्वामी तुम दीदार । बिना मेहर को करे अधार ।।8।।
राधास्वामी राधास्वामी नाम तुम्हार । यही मेरा कुल और यही परिवार ।।
राधास्वामी राधास्वामी बारम्बर । कहत रहूँ और रहूँ हुशियार ।।
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार । तुम्हरी दया से पाऊं सार ।।9।।
गुरु स्वरूप धर लिया औतार । जीव उबारन आये संसार ।।
नर स्वरूप धर किया उपकार । तुम सतगुरु मेरे परम उदार[4] ।।
हे राधास्वामी शब्द दुवार[5] । खोल दिया तुम बज्र किवाड़ ।।10।।

---

1. नकारा । 2. समूह । 3. गिनती । 4. सखी । 5. दरवाज़ा रज़ीआ ।

लीला तुम्हरी अजब बहार । कह न सके कोइ वार न पार ।।
जिसे दिखाओ सो देखनहार । तुम बिन कोई न परखनहार ।।
हे राधास्वामी गुरु हमार । तुम बिन कौन करे निरवार ।।11।।

।। शब्द तीसरा ।।

करूं बेनती राधास्वामी आज । काज करो अर राखो लाज ।।1।।
मैं किंकर तुम चरन नमामी । पाऊं अगमपुर और अनामी ।।2।।
कहाँ लग बिनती कह कर गाऊं । तुम्हरि सरन स्वामी मैं बल जाऊं ।।
बिनती करनी भी नहिं जानूं । तुम्हरे चरन को पल पल मानूं ।।4।।
तुम बिन और न दूजा कोई । सेवक मुझ सा और न होई ।।5।।
मैं जंगी तुम हो राधास्वामी । जोड़ मिलाया तुम अंतर जामी ।।6।।

।। शब्द चौथा ।।

स्वामी सुनो हमारी बिनती । मैं करूँ तुम्हारी बिनती ।।1।।
मेरे औगुन मत करो गिनती । मैं तन मन अपना हनती[1] ।।2।।
मैं किंकर कुटिल कुपंथी । मैं हीन करूँ अति चिंती ।।3।।
महिमा अगम तुम्हारी सुनती । तुम दयाल दाता निज संती ।।4।।
नित कुमति जाल उरझंती[2] । तुम समरथ पुरष महाँ सतवंती ।।5।।
मैं विरह अगिन बिच रहुं जलंती । क्यों कर भौसागर पार परंती ।।6।।
मेरी सुरत करो सतवंती[3] । तुम चरन सरन की रहुं दृढ़वंती ।।7।।
सब कर्म धर्म ज्यों दाल दलंती । मुझे करो भक्त कुलवंती ।।8।।
रोग सोग दुख रहूं सहंती । दूर करो ऐसी मान महंती[3] ।।9।।

---

1. मारती । 2. फंसती । 3. बढ़ाई ।

।। बचन आठवाँ ।।

महिमा सतगुरु स्वरूप राधास्वामी की

।। शब्द पहिला ।।

गुरु गुरु मैं हिरदे धरती । गुरु आरत की सामाँ[1] करती ।।1।।
गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता । नित चरनन पर मन मेरा राता[2] ।।2।।
गुरु हैं अगम अपार अनामी । गुरु बिन दूसर और न जानी ।।3।।
नहिं ब्रह्म नहिं विष्णु महेशा । नहिं ईश्वर परमेश्वर शेषा ।।4।।
राम कृष्ण नहिं दस औतारी । व्यास वशिष्ठ न आदि कुमारी ।।5।।
ऋषि मुनि देवी देव न कोई । तीरथ बर्त धर्म नहिं होई ।।6।।
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी । जनक सनक संन्यास विचारी ।।7।।
आतम परमातम नहिं मानूं । अक्षर निःअक्षर नहिं जानू ।।8।।
सत्तनाम जानूं न अनामी । लिख ग्रन्थ सब करत बखानी ।।9।।
सब को करूं प्रनाम जोड़ कर । पर कोई नहिं सतगुरु सम सर[4] ।।10।।
सतगुरु कृपा सबन को जाना । बिन सतगुरु कैसे पहिचाना ।।11।।
सतगुरु भेद दिया इक इक का । तब जाना इन सब का ठेका ।।12।।
सतगुरु सब का भेद बखानें । अब किसको गुरु से बढ़ जानें ।।13।।
गुरु ने सब का पद दरसाई । जस जस जिनकी गति तस गाई ।।14।।
ताँते सतगुरु सब के करता । सतगुरु ही हैं सब के हरता ।।15।।
याते सतगुरु का पद भारी । सतगुरु सम नहिं कोइ बिचारी ।।16।।
जब जिव सरन गुरु की आवे । कर्म धर्म और भर्म नसावे ।।17।।
जो गुरु मारग देहिं लखाई । सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई ।।18।।
गुरु आज्ञा से जो शिष करई । वह करतूत भक्ति फल देई ।।19।।
ताते प्रथमे गुरु को खोजो । शब्द बतावें सो गुरु सोधो[5] ।।20।।

---

1. सामान। 2. मोहित। 3. देवी, माया। 4. बराबर। 5. धारण करो।

अस गुरु सम कोइ और न आना[1] । गुरु मिले फिर कहा कमाना[2] ।।21।।
या ते मो मत निश्चय येही । गुरु बिन दूसर और न सेई ।।22।।
जाके हिरदे गुरु परतीती । काल कर्म वा से नहिं जीती ।।23।।
सब के सिर पर इन का डंका । काहू की उसके नहिं संका ।।24।।
बड़े बड़े उधरें उस संगा । गुरुमुख है इन सब से चंगा[3] ।।25।।
गुरुमुख की गति सब से भारी । गुरुमुख कोटिन जीव उबारी ।।26।।
कहाँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ । कोई न जाने किस समझाऊँ ।।27।।
जग में पड़ा काल का घेरा । जीव करें चौरासी फेरा ।।28।।
जो चौरासी छूटन चावें । तो गुरुमुख सेवा चित लावें ।।29।।
और काम सब देहिं बहाई । शब्द गुरु की करें कमाई ।।30।।
कोटिन जन्म रहे कोइ काशी । वेद पाठ और तीरथ बासी ।।31।।
जप तप संजम बहु विधि कराई । भेख बनावे विद्या पढ़ई ।।32।।
पिछलों की जो धारें टेका । जिन को कभी आँख नहिं देखा ।।33।।
पोथिन में सुनी उनकी महिमा । टेक बाँध मन सब का भरमा ।।34।।
अब इन को जो कोइ समझावे । टेक छोड़ते जिव सा जावे ।।35।।
कोई शिव और कोई विष्णु की । कोइ राम और कोई कृष्ण की ।।36।।
कोइ देवी कोइ गंगा जमना । कोइ मूरत कोइ चारों धामा[4] ।।37।।
कोइ मथुरा कोइ टेक मुरारी । मदन मोहन कोइ कुँज बिहारी ।।
कोइ गोकुल कोइ बलभाचारी । कोइ कंठी माला गल धारी ।।39।।
कोइ अचार कोइ संध्या तर्पन । गया गायत्री करें समर्पन ।।40।।
कोइ गीता कोइ भागवत पढ़ते । कथा पुरान नेम से सुनते ।।41।।
क्या दादू क्या नानकपंथी । क्या कबीर क्या पलटू संती ।।42।।
सब मिल करते पिछली टेका । वक्त गुरु का खोज न नेका[5] ।।43।।
बिन गुरु वक्त भक्ति नाहिं पावे । बिना भक्ति सतलोक न जावे ।।44।।

---

1. दूसरा। 2. कहने में रहना। 3. नीरोग, अच्छा। 4. चार तीरथ के स्थान यानी बद्रीनाथ, द्वारका , जगन्नाथ और रामेश्वर। 5. कुछ।

यह कहना उन जीवन कारन । जिनके विरह अनुराग की धारन ।।45।।
विषई संसारी और रागी । इन को टेक न चहिये त्यागी ।।46।।
इन को टेक सहारा भारी । टेक बिना कुछ नाहिं अधारी ।।47।।
उनको नहिं उपदेश हमारा । उनको जगत कामना मारा ।।48।।
कोइ कुटुम्ब कोइ धन आधीना । कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना ।।49।।
मारे डर के टेक न छोड़ें । वक्त गुरु में मन नहिं जोड़ें ।।50।।
जो अनुरागी बिरही भाई । भक्ति गुरु की उन प्रति गाई ।।51।।
वक्त गुरु जब लग नहिं मिलई । अनुरागी का काज न सरई ।।52।।
परिथम सीढ़ी भक्ति गुरु की । दूसर सीढ़ी सुरत नाम की ।।53।।
जब लग गुरु भक्ति नहीं पूरी । मन मनसा यह होयँ न चूरी ।।54।।
मन चूरे बिन सुरत न निर्मल । कैसे चढ़े और लगे शब्द चल ।।55।।
गुरु भक्ति अस कैसे आवै । सतसँग कर गुरु सेवा धावै ।।56।।
गुरु को पल पल माहिं रिझावै । गुरु प्रसन्नता नित्य कमावै ।।57।।
गुरु जब इसको प्यारे होई । गुरु को प्यारा जब यह होई ।।58।।
पूरन दया गुरु जब करईं । भक्ति पदारथ जबही मिलई ।।59।।
यह भी जोग मेहर से होगा । दया मेहर बिन जानो धोखा ।।60।।

।। दोहा ।।

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जन ।
गुरु भक्ति पूरन बिना, कोइ न पावे चैन ।।61।।

परिथम सीढ़ी है गुरु भक्ति । गुरु भक्ति बिन काज न रत्ती ।।62।।
और उपाय अनेकन करते । गुरु भक्ति को मुख्य न रखते ।।63।।
यही कसर है सब के मत में । सिद्धान्त[1] न पावें औछे चित में ।।64।।

।। दोहा ।।

गुरु भक्ति दृढ़ के करो, पीछे और उपाय ।
बिन गुरु भक्ति मोह जग, कभी न काटा जाय ।।65।।

---

1. असली मतलब ।

मोटे बंधन जगत के, गुरु भक्ति से काट।
झीने[1] बंधन चित्त के, कटें नाम परताप[2] ।।66।।
मोटे जब लग जायँ नहिं, झीने कैसे जायँ।
ताते सबको चाहिये, नित गुरु भक्ति कमायँ ।।67।।
एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्तिपद, चौथे में निज धाम ।।68।।

अब आरत गुरु करूँ सँवारा । काया थाल मन दीपक बारा ।।69।।
भक्ति जोत और भोग अनुरागा । दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा ।।70।।
यों आरत अब करी बनाई । सतगुरु पूरे रहें सहाई ।।71।।

।। शब्द दूसरा ।।

गुरु मिले परम पद दानी । क्या गतिमति उनकी करूँ बखानी ।।1।।
मैं अजान महिमा नहिं जानी । बिना मेहर क्योंकर पहिचानी ।।2।।
गति अति गोप[2] न जाने वेदा । ज्ञान जोग कर मिले न भेदा ।।3।।
पद उनका इन से रहे दूरी । यह तो थक रहे गाल हजूरी ।।4।।
वह दयाल पद अगम अपारा । तीन सुन्न आगे रहा न्यारा ।।5।।
संत बिना कोइ भेद न जाने । उस घर से वह आय बखानें ।।6।।
मैं भी उन चरनन कर दासा । भइ परतीत बँधी पद आसा ।।7।।
सुरत शब्द मारग मोहि दीन्हा । किरपा कर अपना कर लीन्हा ।।8।।
नित अभ्यास करूँ मैं ये ही । इक दिन पाऊँ शब्द विदेही[4] ।।9।।
सतगुरु मेरे परम दयाला । करूँ आरती होउँ निहाला ।।10।।
आतम थाल परमातम जोती । सत्तनाम पद पोया[5] मोती ।।11।।
भाव भक्ति से आरत कीनी । पद सतगुरु जल में भइ मीनी[6] ।।12।।
यह आरत अब पूरन भई । आगे कुछ कहनी नहिं रही ।।13।।

---

1. सूक्षम। 2. गुप्त। 3. हुई। 4. सूक्षम, देह रहित, माया से रहित।
5. परोया। 6. मच्छली।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु प्रीत बढ़ी चितवन में । सुर्त खैंच धरी चरनन में ।।1।।
मेरी दृष्टि हरी दर्शन में । अब प्रेम बढ़ा छिन छिन में ।।2।।
सतगुरु पर जाऊँ बलिहारी । सतगुरु मेरी सुधि सम्हारी ।।3।।
लीन्हा मोहिं भुजा पसारी । दीन्हीं मोहिं भक्ति करारी ।।4।।
आरत अब उनकी करहूं । तन मन धन सभी अरपहूं ।।5।।
बिन गुरु कोइ और न मानूं । बिन नाम ठौर नहिं जानूं ।।6।।
गुरु करें होयगा सोई । गुरु बिन कोइ और न होई ।।7।।
गुरु करता सब जग कारज । गुरु ही सब जीव अचारज ।।8।।
गुरु तो मेरे प्रान अधारा । गुरु ही मेरा करें उधारा ।।9।।
गुरु सम कोइ और न प्यारा । गुरु ही मोहिं लेयँ सुधारा ।।10।।
मेरे हिरदे गुरुहि बिराजें । जम काल लजावत भाजें ।।11।।
छाया घट गुरु परतापा । रद्द बलाया दूर त्रिया तापा[1] ।।12।।
आरत गुरु कर कर भींजूं । उमंग बढ़ाय प्रेम धुर खींचूँ ।।13।।
मीना सम लइ गुरु सरना । अब रहा न मोहिं कुछ करना ।।14।।
राधास्वामी गुरु हम पाये । पी चरन अंबु[2] तृप्ताये ।।15।।

।। शब्द चौथा ।।

आज मेरे आनन्द होत अपार । आरती गावत हूं गुरु सार ।।1।।
किया मैं अचरज प्रेम सिंगार । बिराजे सतगुरु बस्तर धार ।।2।।
दरस उन करूँ सम्हार सम्हार । गाउं गुन उनका बारम्बार ।।3।।
आओ री सखियो जुड़ मिल झाड़ । गाओ और दर्शन करो निहार ।।4।।
गुरु मेरे बैठे पलंग संवार । आज मेरा जागा भाग अपार ।।5।।
रही मैं गुरु के सनमुख ठाड़[3] । करूँ मैं उन चरनन आधार ।।6।।
चाहुं नहिं दूसर से उपकार । गुरु की बाँधी टेक सम्हार ।।7।।
गुरु पर डारूँ तन मन वार । बचन पर उन के रहुँ हुशियार ।।8।।

---

1. तीन ताप यानी आधि, व्याधि, उपाधि । 2. चरनामृत । 3. खड़ी ।

कर्म सब दीन्हे गुरु ने जार । उतारा नौका[1] दे भौ पार ।।9।।
सुरत को शब्द सुनाइ धार । गगन चढ़ पहुंची घर करतार ।।10।।
पिंड को छोड़ा चढ़ी मुनार[2] । हुई अति निरमल छुटा गुबार ।।11।।
नाम की सुनी जाय धधकार । बाँसुरी सुनी नई झनकार ।।12।।
सुरत और निरत लगाया तार । गई अब चौथे पद के पार ।।13।।
मिला राधास्वामी का दीदार । करूं अब निस दिन उन दरबार ।।14।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

आरत सतगुरु की अब करहूँ । छिन छिन सुरत शब्द में धरहूँ ।।1।।
आरत सामाँ सजूँ बनाई । थाल सुचेती कर[4] में लाई ।।2।।
जोत सुजानी लीन जगाई । रूप सुदर्शन घट में पाई ।।3।।
सतसंगी सब मीत सुमीता । घट परताप बढ़ा मन जीता ।।4।।
भक्ति भाव संग भोग लगाऊँ । अमी सिंध जल अमृत लाऊँ ।।5।।
बैठ सिंहासन सतगुरु गाजे । जोत निरंजन दोनों लाजे ।।6।।
अब आरत सनमुख में फेरी । कृपा दृष्टि से सतगुरु हेरी ।।7।।
कहाँ लग महिमा उनकी गाऊँ । बार बार चरनन बल जाऊँ ।।8।।
मैं अति दीन हीन आधीनी । वे दयाल किरपाल क़दीमी[5] ।।9।।
सुरत शब्द मारग दिया पूरा । घट में बजने लगा तँबूरा ।।10।।
नौबत छिन छिन झड़ने लागी । सुरत निरत चढ़ चढ़ अब जागी ।।11।।
घाट त्रिबेनी किये अस्नाना । सुन्न मँडल चित जाय समाना ।।12।।
आरत सब विधि पूरी धारी । राधास्वामी किरपा कीन्ही भारी ।।13।।

।। शब्द छटा ।।

गुरु की आरत ठानूँगी । गुरु की सरन सम्हारूँगी ।।1।।
गुरु की महिमा गाऊँगी । गुरु के चरन पखारूंगी[6] ।।2।।

---

1. शब्द रूपी नाव । 2. चोटी । 3. हुशियारी । 4. हाथ । 5. प्राचीन । 6. धोउँगी ।

गुरु पर मनुआ वारूंगी । गुरु संग सदही धारूंगी ।।3।।
काल को छिन छिन टारूंगी । कर्म को तुरत पछाड़ूँगी ।।4।।
ध्यान गुरु हिरदे लाऊंगी । रूप रस छिन छिन पाऊँगी ।।5।।
बचन सुन नित्त कमाऊंगी । सुरत फिर गगन चढ़ाऊंगी ।।6।।
सुन्न चढ़ शब्द जगाऊंगी । नाद दस द्वार बजाऊंगी ।।7।।
सत्त पद जाय समाऊंगी । उलट फिर जग में आऊंगी ।।8।।
कुटुम्ब को अपने लाऊंगी । गुरु के चरन लगाऊंगी ।।9।।
प्रीत की रीत सिखाऊंगी । आरती बहुत कराऊंगी ।।10।।
पित्र पुरखा तराऊंगी । गया की धूर उड़ाऊंगी ।।11।।
भर्म सब ही मिटाऊंगी । भटक सब ही छुड़ाऊंगी ।।12।।
बुद्धि निरमल कराऊंगी । संत मत अब दृढ़ाऊंगी ।।13।।
सुरत नैनन जमाऊंगी । सहंस दल कंवल आऊंगी ।।14।।
जोत दर्शन दिखाऊंगी । शब्द में जा समाऊंगी ।।15।।
बंक द्वार खुलाऊंगी । सारंगी धुन सुनाऊंगी ।।16।।
मानसर चढ़ अन्हाऊंगी । सारंगी धुन सुनाऊंगी ।।17।।
महासुंन पार पाऊंगी । गुफा धुन सर लगाऊंगी ।।18।।
सोहंग बंसी सुनाऊंगी । रौब[2] धुन भेद गाऊंगी ।।19।।
सत्त की राह धाऊंगी । नाम पद फिर जनाऊंगी ।।20।।
दूर दुरबीन लगाऊंगी । अलख को जा लखाऊंगी ।।21।।
अगम गढ़ चढ़ दिखाऊंगी । भेद वहाँ का छिपाऊंगी ।।22।।
आरती अब सजाऊंगी । प्रेम अपना बढ़ाऊंगी ।।23।।
सुरत जोती चिताऊंगी । थाल भक्ति धराऊंगी ।।24।।
आरती राधास्वामी गाऊंगी । परम पद आज पाऊंगी ।।25।।

---

1. तीर । 2. गुप्त ।

।। शब्द सातवाँ ।।

गुरु आरत बिधि दीन बताई । मोह नींद से लिया जगाई ।।1।।
शब्द अनाहद पता जनाई । सुरत इधर से उधर लगाई ।।2।।
दृष्टि खुली आर छबि दिखलाई । मगन होय कर निज घर आई ।।3।।
मानसरोवर थाल बनाया । जोत चन्द्रमा दीप धराया ।।4।।
लगन लाग से आरत साजी । नाद अनाहद घट में बाजी ।।5।।
मन बैरी से जीती बाज़ी । सुमत समाई दुरमत भाजी[1] ।।6।।
गुरु चरनन पर मैं बलि जाऊं । उनकी दया से सत पद पाऊ ।।7।।
डोर लगी और चढ़ी गगन को । उमंगा मन राधास्वामी कहन को ।।8।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु चरनन पर जाउँ बलिहार । जिन घट जोत दिखाई सार ।।1।।
गया तिमिर आया परकाश । गुरु संग करता परम बिलास ।।2।।
गुरु बिन और न जानूं कोई । कर्म भर्म दुबिधा सब खोई ।।3।।
ऐसे गुरु के चरन निहारूं । तन मन धन सब ही तज डारूं ।।4।।
क्या गुरु महिमा करूं बनाई । रात दिवस रहुं सुरत लगाई ।।5।।
गुरु शोभा भूषण नित घढ़ता । सुरत हथौड़ी मन अहरन[5] धरता ।।6।।
चित्त कुठाली मोह गलाता । विरह अग्नि मुख नाल फुकांता ।।7।।
प्रेम जंतरी[4] तार खिंचाता । सुरत निरत के पेच दिलाता ।।8।।
घढ़ तोड़ा[5] गल हार पिन्हाता । गुरु छबि देख मगन होय जाता ।।9।।
बाज़ूबन्द[5] प्रीत घढ़वाता । मन परतीत कड़े[5] पहिनाता ।।10।।
नाम रतन हीरा जड़वाता । अंग अंगुठी[5] गुरु पहिनाता ।।11।।
राधास्वामी दीन दयाल । करूं आरती चित्त सम्हाल ।।12।।

---

1. भागी। 2. जिस पर गहना वग़ैरा हथौड़ी से गढ़ा जाता है। 3. चाँदी सोना गालने का बर्तन, घरिया। 4. तार खींचने का यंत्र। 5. नाम गहने का।

॥ शब्द नवाँ ॥

गुइयाँ[1] री गुरु समझ सुनावें । प्रेम भरी सखियाँ मिल गावें ॥1॥
अगम देश का पता जनावें । सुरत शब्द मारग दरसावें ॥2॥
जिनके बिरह प्रेम अनुरागा । सो सुन सुन कर लगन बढ़ावें ॥3॥
सतगुरु प्यारा नाम रस पीवें । दर जाय निज भाग जगावें ॥4॥
कौन कहे महिमा अब उनकी । जिनको सतगुरु चरन लगावें ॥5॥
घट का भेद अनाहद बानी । सुन्न मँडल का शब्द सुनावे ॥6॥
जोगी जती नाथ सब थाके । सो पद अपने दास लखावें ॥7॥
सत्तनाम सत्तधाम पिया का । सुरत निरत कर ले दरसावें ॥8॥
अलख अगम का फोड़ निशाना । अकह अनामी सैन[2] जनावें ॥9॥
यह अभेद गत कोई न जाने । बिरले संत कोई मर्म पिछाने ॥10॥
सो पद मिला सहज में हमको । किस आगे हम बर्ण बखानें ॥11॥
अब आरत यह करी समापत । राधास्वामी सदा धियावें ॥12॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

प्रेमी सुनो प्रेम की बात ॥ टेक ॥
सेवा करो प्रेम से गुरु की । और दर्शन पर बल बल जात ॥1॥
बचन पियारे गुरु के ऐसे । जस माता सुत तोतरि बात ॥2॥
जस कामी को कामिन प्यारी । अस गुरुमुख को गुरु का गात[3] ॥3॥
खाते पीते चलते फिरते । सोवत जागत बिसर न जात ॥4॥
खटकत[4] रहे भाल ज्यों हियरे । दरदी के ज्यों दर्द समात ॥5॥
ऐसी लगन गुरु संग जां की । वह गुरुमुख परमारथ पात ॥6॥
जब लग गुरु प्यारे नहिं ऐसे । तब लग हिरसी जानो जात ॥7॥
मनमुख फिरे किसी का नाहीं । कहो क्योंकर परमारथ पात ॥8॥
राधास्वामी कहत सुनाई । अब सतगुरु का पकड़ो हाथ ॥9॥

---

1. सहेली । 2. इशारा । 3. शरीर । 4. चुभता ।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना ।
शब्द मेरा आधार, शब्द का मर्म पिछाना ।।1।।
क्या गुण गाऊँ शब्द, शब्द का अगम ठिकाना ।
बिना शब्द सब जीव, धुँध में फिरें भरमाना ।।2।।
जल पाषान पूजत रहें, रहें कागज़ अटकाना ।
मन मत ठोकर खाय, गये चौरासी खाना ।।3।।
बहु विधि बिपता जीव को, बिन शब्द सुनाना ।
सतगुरु की सेवा बिना, नहिं लगे ठिकाना ।।4।।
शब्द भेद बिन सतगुरु, क्या कहें अजाना ।
मन इन्द्री बस में नहीं, तो काल चबाना ।।5।।
राधास्वामी सरन ले, सब भाँति बचाना ।
मेहर दया छिन में करें, दें अगम ख़ज़ाना ।।6।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

गुरु चरन बसे अब मन में । मैं सेऊँ दम दम तन में ।।1।।
फिर प्रीत लगी घट धुन में । चढ़ पहुंची पहिली सुन में ।।2।।
अब सील क्षमा मन छाई । गइ तपन काम दुखदाई ।।3।।
फिर क्रोध लोभ भी भागे । अहंकार मोह सब त्यागे ।।4।।
धुन पाँच शब्द घट जागी । मन हुआ सहज बैरागी ।।5।।
गुरु किरपा सूर उगाना । अब हुआ जगत बेगाना ।।6।।
घट बैठी तारी[1] लाई । बाहर की किरिया[2] दूर बहाई ।।7।।
गुरु अद्‌भुत सुख दिखलाया । क्या महिमा जाय न गाया ।।8।।
जग जीव अभागी सारे । नर देही योंही[3] हारे ।।9।।

---

1. ध्यान । 2. करतूत । 3. अकार्थ ।

क्यों गुरु से प्रीत न करते । क्यों जम के किंकर रहते ।।10।।
मैं किस से कहूं सुनाई । फिर अपना मन समझाई ।।11।।
तू गुरुमत दृढ़ कर भाई । अब छोड़ो तात[1] पराई ।।12।।
चल रह तू त्रिकुटी घाटी । चढ़ सुन्न शिखर की बाटी[2] ।।13।।
महासुन्न की तोड़ो टाटी[3] । जा भँवरगुफा की हाटी[4] ।।14।।
फिर सत्तपुरुष घर पाया । धुन बीना जाय बजाया ।।15।।
सुनी अलख अगम की बतियाँ[5] । शशि सूर खरब जहाँ थकियाँ[6] ।।16।।
पिया परसे राधास्वामी । कुछ कहूं न पुरुष अनामी ।।17।।
मेरी आरत सब से न्यारी । कोई समझेगी पिया प्यारी ।।18।।
यह भेद अथाह बखाना । बिन संत न कोई जाना ।।19।।
करमी जीव जग के अंधे । सब फँसे काल के फँदे ।।20।।
उन से नहिं कहना चहिये । मत गूढ़ छिपाये रहिये ।।21।।
सुर्त शब्द कमाई करना । सुमिरन में तन मन देना ।।22।।
गुरु दर्शन बहुत निरखना । धुन अनहद नित्त परखना ।।23।।
सतसंग की चाहत रखना । जब डौल[7] बने तब करना ।।24।।
उपदेश किया यह टीका[8] । राधास्वामी नाम मैं सीखा ।।25।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे । कर्म जगात[9] चुकाय ।।1।।
भूल भरम में सब जग पचता । अचरज बात न काहु सुहाय ।।2।।
भागहीन सब जग माया बस । यह निरमल गति कोइ न पाय ।।3।।
जिन पर दया आदि करता की । सो यह अमृत पीवन चाहि ।।4।।
कहाँ लग महिमा कहुँ इस गति की । बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि ।।5।।
बिन गुरु चरन और नहिं भावे । इस आनँद में रहे समाय ।।6।।
दर्शन करत पिंड सुध भूली । फिर घर बाहर सुधि क्या आय ।।7।।

---

1. चिन्ता । 2. रस्ता । 3. परदा । 4. बाज़ार । 5. आवाज़ ।
6. लज्जित । 7. मौका । 8. सब से अच्छा । 9. मसूल, कर ।

ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी । तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय ।।8।।
जोग बैराग ज्ञान सब रूखे । यह रस उन में दीखे न ताय[1] ।।9।।
बड़ भागी कोइ बिरला प्रेमी । तिन यह न्यामत[2] मिली अधिकाय ।।10।।
राधास्वामी कहत सुनाई । यह आरत कोई गुरुमुख गाय ।।11।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

गुरु सरन आज मैं पाई । मेरे आनन्द अधिक बधाई ।।1।।
गुरु कृपासिंध मैं पाये । मेरे घर दर बजत बधाये ।।2।।
गुरु परम पुरुष सुखदाता । उन चरन मोर मन राता ।।3।।
गुरु भक्ति करूँ दिन राती । मन चित से अति गुन गाती ।।4।।
गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ । मन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ ।।5।।
गुरु मूरत नैनन ताकूँ । शशि भान कोटि छबि झाँकूँ ।।6।।
गुरु सम अब कोइ न दिखाई । मैं फेरूँ यही दुहाई ।।7।।
गुरु चरन पकड़ मेरे भाई । क्यों भरमे नर तन पाई ।।8।।
अब जन्म सुफल कर अपना । गुरु प्रेम करो जग सुपना ।।9।।
जग रैन अंधेरी भारी । गुरु मूरत चन्द्र उगा री ।।10।।
सीतलता हिरदे आई । गुरु बचन चाँदनी छाई ।।11।।
गुरु से कोइ बड़ा न मेरे । सब पड़े काल के घेरे ।।12।।
गुरुमुख कोइ सतगुरु हेरे[2] । मनमुख सब काल के चेरे ।।13।।
गुरु महिमा मुख से कहते । अंतर में प्रीत न धरते ।।14।।
भरमों में भटके फिरते । गुरु पद में चित्त न धरते ।।15।।
वह जीव अभागी जानूँ । मैं गुरु बिन और न मानूँ ।।16।।
अब आरत गुरु की करता । राधास्वामी चरन पकड़ता ।।17।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

गुरु चरन धूर कर अंजन । हिये नैन खुले मन मंजन ।।1।।

---

1. उसको। 2. उत्तम पदार्थ।

घट तिमिर[1] अनादि नाशन । गुरु रूप भान परकाशन ।।2।।
मेरे हिरदे प्रेम बढ़ावन । पल पल में उमंग समावन ।।3।।
सुर्त चढ़े गगन गुरु पावन । सतगुरु पद शब्द सुनावन ।।4।।
सो सतगुरु जग माहिं बिराजन । जग जीव अचेत चितावन ।।5।।
क्या महिमा सतगुरु गावन । जिव अधम नीच किये पावन[2] ।।6।।
मन माया ज़ोर चलावन । ठोकर दे दूर करावन ।।7।।
दासन का दास दसावन । सेवा पर तन मन वारन ।।8।।
मैं किंकर कुटिल अपावन[3] । गुरु गोद लिया और किया अपनावन ।।9।।
यह मानुष जन्म जितावन । गुरु रूप लखा मन भावन ।।10।।
यह आरत दोना गावन । राधास्वामी किया बखानन ।।11।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

मैं कौन कुमति उरझाना[4] । गुरु दर्श छोड़ घर जाना ।।1।।
अब कौन जतन अस करिये । गुरु चरन चित्त में धरिये ।।2।।
यह बचन कहां मैं पाऊँ । मन खेती बीज जमाऊँ ।।3।।
निस दिन रहे चित्त उदासी । क्यों छोड़ूं चरन बिलासी ।।4।।
नर देह न बारम्बारी । क्यों भौजल डूबे आ री ।।5।।
सतगुरु संग कभी न छोड़ूं । मन तन से नाता तोड़ूं ।।6।।
गुरु बल से करम निकारूं । सतसंग से काल पछाड़ूं ।।7।।
जो मेहर करें गुरु मुझ पर । यह बात बने अति दुस्तर[6] ।।8।।
मेरे मन में चाहत येही । गुरु चरन न छोड़ूं कबही ।।9।।
गुरु से कोई अधिक न राखा । पुनि संत वेद अस भाषा ।।10।।
गुरु महिमा सबहिन गाई । मैं दीन अधीन जनाई ।।11।।
मेरी लाग लगी गुरु चरनन । नख सोभा क्या करूं बर्णन ।।12।।

---

1. अँधेरा । 2. पवित्र । 3. अपवित्र । 4. जिस की यह आरती है उस का नाम । 5. फ़सा । 6. औखी ।

कोटिन रवि चन्द्र लजाई । उस नख की गति नहिं पाई ।।13।।
यह तिमिर बाहरी खोवें । वह अन्तर मोती पोवें[1] ।।14।।
हिरदे में सदा उजारी । गुरु नख पर जाऊँ बलिहारी ।।15।।
अब आरत उनकी करता । मन चरन कंवल में धरता ।।16।।
सुर्त फेरो सतगुरु मेरी । घर जाऊं करूं फिर फेरी[2] ।।17।।
राधास्वामी काटो बेड़ी । यह बिनती सुनिये मेरी ।।18।।
मैं दासन दास तुम्हारा । तुम बचन मोर निस्तारा ।।19।।

।। शब्द सतारहवाँ ।।

काल ने जगत अजब भरमाया । मैं क्या करूं बखान ।।1।।
जो साधन थे पिछले जुग के । सो कलजुग में किये प्रमान ।।2।।
मूरख प्रानी मन सैलानी । सो अटके जल और पाषान ।।3।।
बुद्धिमान अभिमानी जो नर । विद्या नारि के हुये गुलाम ।।4।।
बाक़ी जीव बीच के जितने । ना मूरख ना अति बुद्धिमान ।।5।।
जप तप व्रत संजम बहु धोखे । पंच अग्नि में जले निदान ।।6।।
देखो चरित्र काल करता के । कोई सिर कोई पैर रूंधान[3] ।।7।।
भटक भटक भटकाया सब जग । कोइ न लगाया ठौर ठिकान ।।8।।
ऐसी हालत देख जगत की । संत स तगुरु प्रगटे आन ।।9।।
गुरु सेवा और नाम महातम । सतसंग सतगुरु किया बखान ।।10।।
साधन तीन सार उन बरने । और साधन सब थोथे मान ।।11।।
वेद शास्त्र और स्मृत पुराना । पढ़ना इनका बिरथा जान ।।12।।
पंडित भेख पेट के मारे । वे संतन पर करते तान ।।13।।
हित कर संत उन्हें समझावें । वे मानी नहिं मानें आन ।।14।।
उनके चाह मान और धन की । परमारथ से खाली जान ।।15।।

---

1. परोते हैं। 2. अपने घर वापिस आते हैं। 3. कोई सिर से होड़े जाते है कोई पैरों से मले दले जाते हैं।

वे चौरासी चक्कर मारें । फिर फिर गिरते चारों खान ।।16।।
पिछले जुग की विद्या पढ़ते । कोई न्याय वेदान्त बखान ।।17।।
ना साधन अधिकार न परखें । पढ़ने का करते अभिमान ।।18।।
इस जुग की विद्या नहिं पढ़ते । तांते उलटे गिरें निदान ।।19।।
दीन गरीबी मत इस जुग का । और गुरु भक्ति कर परमाण ।।20।।
ताते निरमल निश्चल चित होय । गगन चढ़ाओ शब्द निशान ।।21।।
सुरत शब्द मारग अंतरमुख । पाँच शब्द का गहो ठिकान ।।22।।
शाब्द शब्द पौड़ी[1] पै चढ़ कर । पहुँचो सच्चखंड सतनाम ।।23।।
ताते पहले गुरु को ध्याओ । और काम सब पीछे जान ।।24।।
गुरु की मूरत हृदे बसाओ । चंद्र चकोर प्रीत घट आन ।।25।।
जब लग ऐसी प्रीत न होवे । तब लग साधन यही बखान ।।26।।
गुरु भक्ति जब पूरन हो ले । तब सुर्त चढ़े अधर असमान ।।27।।
गुरु भक्ति बिन शब्द में पचते । सो भी मानुष मूरख जान ।।28।।
शब्द खुलेगा गुरु मेहर से । खैंचे सुरत गुरु बलवान ।।29।।
गुरुमुखता बिन सुरत न चढ़ती । फूटे गगन न पावे नाम ।।30।।
गुरुमुखता है मूल सबन की । और साधन सब शाखा जान ।।31।।
माता को जस पुत्र प्यारा । और कामी को कामिन जान ।।32।।
मछली को जस नीर अधारा । चात्रिक[2] को जस स्वाँति समान ।।33।।
ऐसा गुरु प्यारा जब होगा । तब कुछ आगे पंथ चलान ।।34।।
कहना था सो सब कह दीन्हा । अब तू चाहे मान न मान ।।35।।
यह आरत गुरुमुख की गाई । गुरुमुख होय सो करे प्रमाण ।।36।।
राधास्वामी भक्ति बताई । गुरु की भक्ति करो यह जान ।।37।।
और भक्ति सब दूर बहाओ । क्यों पड़ते चौरासी खान ।।38।।
गुरु भक्ति सम और न कोई । राधास्वामी किया बखान ।।39।।
गुरु का ध्यान करो तुम निस[3] दिन । गुरु का शब्द सुनो नित कान ।।40।।

---

1. मंजल । 2. पपीहा । 3. रात ।

नैन श्रवण और हिरदा तीनों । शीश महल सम निरमल जान ।।41।।
राधास्वामी ज़ोर देय कर । गुरु भक्ति को कहें प्रमाण ।।42।।

।। बचन नावां ।।

महिमा शब्द स्वरूप सतगुरु की

।। शब्द पहिला ।।

धन्य धन्य धन धन्य पियारे । क्या कहुं महिमा शब्द की ।।1।।
जो परचे[1] हैं शब्द से । सो जाने महिमा शब्द की ।।2।।
छिन छिन रक्षा हो रही । क्या उपमा कहुं मैं शब्द की ।।3।।
बिन शब्द फिरे भरमतियाँ । नहिं जानी गति मति शब्द की ।।4।।
जिन गुरु पाया शब्द का । और प्रीति करी जिन शब्द की ।।5।।
बड़ भागी वह जीव हैं । जो करें कमाई शब्द की ।।6।।
बिना शब्द मन बस नहीं । तुम सुरत करो अब शब्द की ।।7।।
वह क्यों आये इस जगत में । जिन मिली न पूँजी शब्द की ।।8।।
धुन घट में हर दम हो रही । क्यों सुने न बाणी शब्द की ।।9।।
तू बैठ अकेला ध्यान धर । तो मिले निशानी शब्द की ।।10।।
तज आलस निंद्रा काहिली[2] । तू लगन लगा ले शब्द की ।।11।।
पाँच शब्द घट में बजें । यह निर्णय करले शब्द की ।।12।।
गुरु ज्ञान बताया शब्द का । तू होजा ध्यानी शब्द की ।।13।।
मैं शब्द शब्द बहुतक कहा । कोई न माने शब्द की ।।14।।
जन्म अकारथ खो दिया । जो चढ़े न घाटी शब्द की ।।15।।
राधास्वामी कह कह चुप हुए । बिन भाग न धारा शब्द की ।।16।।

---

1. मेल किया । 2. सुस्ती ।

॥ शब्द दूसरा ॥

शब्द ने रची त्रिलोकी सारी । शब्द से माया फैली भारी ॥1॥
शब्द ने अंड ब्रह्मंड रचा री । शब्द से सात दीप नौखंड बना री ॥
शब्द ने गुण तीनों और परजा धारी । शब्द से धरनि अकाश खड़ा री ॥3॥
शब्द ने जीव और ब्रह्म किया री । शब्द से चाँद और सूर भया री ॥4॥
शब्द ने सुन्न महासुन्न सँवारी । शब्द ने चौथा लोक करा री ॥5॥
शब्द ही घट घट करे पुरानी । शब्द फिर अलख अगम से न्यारी ॥
शब्द से खाली कोइ न रहा री । शब्द सब ठौर ठिकान भरा री ॥7॥
शब्द की महिमा क्या कहुं गा री । शब्द को जैसे बने तैसे पा री ॥8॥
गुरु अब कहते हेला[1] मारी । शब्द बिन कोइ न करे उपकारी ॥
शब्द में सुरत लगा कर यारी । शब्द ही चेतन करे उजारी ॥10॥
शब्द की करनी करो सदा री । शब्द बिन ख़ुदी[2] न जाय तुम्हारी ॥
शब्द का शग़ल[3] करो मन मारी । शब्द से काल कर्म सब हारी ॥12॥
शब्द में सुरत लगा सुन प्यारी । शब्द बिन होय न कभी उबारी ॥
शब्द तेरे तन में बोल रहा री । सुरत से सुन सुन करो बिचारी ॥
सुरत को गगन शिखर लेजा री । धुनों की होत जहाँ झनकारी ॥
शब्द की विरह लगे जो कारी[4] । सभी रस लगें तोहि फिर खारी ॥
शब्द को निज कर कोइ न सुना री । भोगते फिरें जन्म मरना री ॥17॥
शब्द का मारग संत निकारी । संत बिन कोई न मर्म लखा री ॥
शब्द बिन होगा बहुत ख़ुवारी । शब्द ही पकड़ो क्यों झख मारी[6] ॥
सुरत को बाँध लगा दे तारी[7] । भेद यह राधास्वामी खोल कहा री ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

सब की आदि शब्द को जान । अंत सभी का शब्द पिछान ॥1॥
तीन लोक और चौथा लोक । शब्द रचे यह सब ही थोक ॥2॥

---

1. पुकार कर । 2. अहंकार । 3. अभ्यास । 4. गहरी । 5. ख़राबी ।
6. वृथा मेहनत करना । 7. ध्यान, लौ ।

शब्द सुरत दोउ धार समान । पुरुष अनामी के यह प्राण ।।3।।
चेतनता सब इनकी मान । शब्द बिना कोइ और न आन ।।4।।
शब्द गुप्त तब हुआ अनाम । शब्द प्रगट तब धरिया नाम ।।5।।
नाम अनाम शब्द परमान[1] । शब्द बिना होय सब की हान ।।6।।
जस अग्नि तदरूप पषान । तस तदरूपी[2] शब्द अनाम ।।7।।
शब्दहि कारण शब्दहि काज । शब्द रचाया सगला साज ।।8।।
शब्दहि अगम अलख फिर शब्द । शब्दहि सतनाम सत शब्द ।।9।।
शब्द निःअक्षर[3] अक्षर शब्द । सोहं शब्द ररं भी शब्द ।।10।।
ओअं शब्द निरंजन शब्द । ब्रह्म शब्द और माया शब्द ।।11।।
शब्दहि जीव सीव[4] भी शब्द । शब्द से सुरत सुरत से शब्द ।।12।।
ओतपोत[5] यों शब्दहि शब्द । ऊँच नीच दोउ शब्दहि शब्द ।।13।।
शब्दहि सेवक शब्दहि स्वामी । शब्दहि घट घट अंतरजामी ।।14।।
शब्द न मरे अमर भी शब्द । शब्द न जरे अजर भी शब्द ।।15।।
शब्द गुरु और शब्दहि दास । शब्द बिना झूँठी सब आस ।।16।।
शब्द न बिनसे बिनसे काया । शब्द बिना कुछ हाथ न आया ।।17।।
शब्द कहा सब संतन सार । शब्द बिना कैसे निरवार ।।18।।
शब्द गहीर शब्द गंभीर । शब्द बिना पद मिले न थीर[6] ।।
शब्द बिना कोइ होय न धीर[8] । शब्द बिना झूँठी तदबीर ।।20।।
शब्द तुड़ावे सब ज़ंजीर । शब्द मिटावे तन मन पीर ।।21।।
शब्दहि मछली शब्द नीर । शब्द बखानें सत्त कबीर ।।22।।
शब्द बतावें नानक पीर[8] । शब्द लखावें तुलसी धीर ।।23।।
शब्दहि बस्तर शब्दहि चीर । शब्दहि माखन शब्दहि हीर[9] ।।24।।
शब्द मिले तू खोज शरीर । शब्द बसे नभ त्रिकुटी तीर ।।25।।
शब्द बिना सब जीव असीर[10] । शब्द मिले कोइ मिले फ़क़ीर ।।26।।

---

1. सबूत। 2. वैसा ही रूप। 3. महासुन्न। 4. ईश्वर, जिसकी सेवा करता है। 5. उलट पलट। 6. स्थिर। 7. निश्चल। 8. गुरु। 9. सारंश। 10. क़ैदी।

शब्दहि बम[1] शब्द ही ज़ीर[2] । शब्द बिना सब मथते नीर ।।27।।
शब्द पकड़ सब तेरी सीर[3] । शब्द गहे जो वही अमीर ।।28।।
शब्द शाह और शबद वज़ीर । राधास्वामी कहें समझ मेरे वीर 29।।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु की दया ले शब्द सम्हार । गुरु के सँग कर शब्द अधार ।।1।।
शब्द लगावे तुझ को पार । बिना शब्द चौरासी धार ।।2।।
शब्द कमाई करनी सार । शब्द चड़ावे दसवें द्वार ।।3।।
शब्द गुरु सँग करले प्यार । और कर्म सब त्यागो झाड़ ।।4।।
शब्द बिना नहिं खेवनहार । शब्दहि करता सबकी सार ।।5।।
शब्द शब्द का भेद नियारा । सो गुरु तुझ से कहें सम्हार ।।6।।
तू तो सुरत जमा नभ द्वार । शब्द मिले छूटे जंजार ।।7।।
शब्द करे अब जग से पार । शब्द माहिं तुम रहो हुशियार ।।8।।
शब्दहि शब्द करो निरवार । शब्द बिना कोई बचे न यार ।।9।।
शब्द हटावे सब अहंकार । शब्द छुड़ावे सभी बिकार ।।10।।
शब्द बिना कुछ और न सार । मैं तोहि कहूं पुकार पुकार ।।11।।
शब्द लगो मत बैठो हार । शब्द नाव चढ़ पहुंचो पार ।।12।।
शब्द किया जिस घट उजियार । धन वे जन जिन शब्द अधार ।।13।।
तू भी सुन चढ़ शब्द पुकार । शब्द होय फिर गल का हार ।।14।।
शब्द पकड़ और सब तज डार । बिना शब्द नहिं होत उधार ।।15।।
शब्द भेद तू जान गँवार । क्यों भरमे तू मन की लार ।।16।।
सुरत ख़ैंच तक तिल का द्वार । दहिनी दिशा शब्द की धार ।।17।।
बाईं दिशा काल का जार । ताहि छोड़ कर सुरत सम्हार ।।18।।
घंटा शंख सुनो कर प्यार । तिस के आगे धुन ओंकार ।।19।।

---

1. बांयां, टीप। 2. दांयां, खरज। 3. ज़मीन जिस पर कर नहीं लगता।

सुन्न माहिं सुन रारंकार । भँवरगुफा मुरली झनकार ।।20।।
सत्तलोक धुन बीन सम्हार । अलख अगम धुन कहुं न पुकार ।।21।।
राधास्वामी भेद सुनाया झाड़ । पकड़ धरो अब हिये मँझार ।।22।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

शब्द बिना सारा जग अंधा । काटे कौन मोह का फंदा ।।1।।
शब्द बिना बिरथा सब धंधा । शब्द बिना जिव बंधन बंधा ।।2।।
शब्दहि सूर शब्द ही चंदा । शब्द बिना जिव रहता गंदा ।।3।।
शब्द बिना सबही मतिमंदा । शब्दहि नासिह[1] शब्दहि पंदा[2] ।।4।।
शब्द कमावे मिले अनंदा । शब्द बिना सबही की निन्दा ।।5।।
ताते शब्दहि शब्द कमाओ । शब्द बिना कोइ और न ध्याओ ।।6।।
शब्द भेद तुम गुरु से पाओ । शब्द माहिं फिर जाय समाओ ।।7।।
शब्द अधर में करे उजारा । शब्द नगर तुम झाँको द्वारा ।।8।।
शब्द रहे सबही से न्यारा । शब्द करे सब जीव गुज़ारा[3] ।।9।।
शब्द जानियो सब का सारा । शब्द मानियो होय उबारा ।।10।।
शब्द कमाई कर हे मीत । शब्द प्रताप काल को जीत ।।11।।
शब्द घाट तू घट में देख । शब्दहि शब्द पीव को पेख ।।12।।
शब्द कर्म की रेख कटावे । शब्द शब्द से जाय मिलावे ।।13।।
शब्द बिना सब झूठा ज्ञान । शब्द बिना सब थोथा ध्यान ।।14।।
शब्द छोड़ मत अरे अजान । राधास्वामी कहें बखान ।।15।।

।। शब्द छठवाँ ।।

शब्द की करो कमाई दम दम । शब्द सा और न कोई हमदम[4] ।।1।।
शब्द को सुनो बंद कर सरवन । शब्द की गहो जाय धुन झम झम ।।
शब्द तेरी दूर करे सब हमहम[5] । शब्द को पाय गहो वहाँ सम सम[9] ।।

---

1. उपदेशक। 2. उपदेश। 3. निर्वाह। 4. मित्र। 5. अहंकार। 6.एकता।

देखियो जोत उजाला चमचम । रहो फिर धुनमें छिन छिन रम रम ।।
भोग सब त्यागे हुआ मन उपसम[1] । सुनी अब चढ़कर धुन जहाँ घमघम[2] ।।
कहें गुरु रह तू उसमें जम जम । बहुरि सुन पाई इक धुन बमबम ।।6।।
सुरत फिर चढ़ी वहाँ से धम धम । सुन्न में पहुंची लई धुन छम छम ।।7।।
और भी सुनी एक धुन खम खम । कहूँ क्या महिमा शब्द अगम गम ।।8।।
करूं मैं जितनी ही सब कम कम । खोल कस कहू बात ये मुबहम[3] ।।9।।
सुरत को मिली अधर की गम गम । पिया सँग बैठी करत परम रम[4] ।।10।।
मिटा सब घटका अबही तम तम । बरसने लागीं झड़ियाँ रिम झिम ।।11।।
तेज अब फैला घट में इम इम[5] । अमीरस चुआ चुए ज्यों शबनम[6] ।।12।।
हुआ मन सभी जतन से बरहम[7] । सुरत के लागी अब धुन मरहम ।।13।।
गुरु पर तन मन करूँ समरपन । कहें अस राधास्वामी बचन दमादम[8] ।।

।। शब्द सातवां ।।

शब्द संग बाँध सुरत का ठाट । बहें मत जग का चौड़ा फाट ।।1।।
शब्द बिन मिले न घर की बाट । शब्द का परखो घट में घाट ।।2।।
शब्द संग बाँधो ऐसा ठाट । बहुरि तुम सोवो बिछाये खाट ।।3।।
गगन चढ़ शब्द अमी रस चाट । शब्द बिन और न सूधी बाट ।।4।।
शब्द संग भरलो मन का माट[9] । शब्द ही करे करम का काट ।।5।।
शब्द बिन हो गई बारह बाट[10] । शब्द संग जग से रही उचाट ।।6।।
शब्द ही खोले ब्रज कपाट । शब्द संग झाँका चौक सपाट[11] ।।7।।
शब्द की करो सदा तुम छाँट । शब्द रस पीवो और दो बाँट ।।8।।
काल की ठोको फिर तुम टाँट[12] । शब्द संग रहे न कोई आँट[12] ।।9।।
राधास्वामी कहते मार कुटाँट[14] । शब्द ही खोलै घटकी साँट[15] ।।10।।

---

1. उपराम। 2. एक प्रकार की आवाज़। 3. गुप्त। 4. बिलास। 5. इधर इधर। 6. धुन्ध, ओस। 7. बेज़ार। 8. बारम्बार। 9. घड़ा। 10. खराब। 11. समान। 12. सिर। 13. रूकावट। 14. ढोल बजाना। 15. गंड।

।। शब्द आठवाँ ।।

सुरत अब शब्द माहिं नित भरना । करो यह काम और नहिं करना ।।
गगन में देखो कँवल चमकना । दृष्टि पर देखो जोत दमकना ।।
सुरत मन वहाँ से अधर उलटना । घाट सुखमन का खोल पलटना ।।
इड़ा तज पिंगला घाटी चढ़ना । तान कर सूरत आगे बढ़ना ।।
पकड़ धुन जाय धुनी से लगना । मान मद त्याग भर्म सब तजना ।।
गुमठ[1] का खेल अजायब तकना । ओं धुन पाई सुनी गरजना ।।
सुन्न में पहुंची सरवर तटना[2] । हँस होय निसदिन मोती चुगना ।।
सुरत को मिला धाम यह अपना । मगन होय बैठी अब नहिं हटना ।।
अमी रस वहाँ का नितही चखना । मौज राधास्वामी यही निरखना ।।

।। शब्द नावाँ ।।

धुन सुन कर मन समझाई ।। टेक ।।
कोटि जतन से यह नहिं माने । धुन सुन कर मन समझाई ।।1।।
जोगी जुक्ति कमावें अपनी । ज्ञानी ज्ञान कराई ।।2।।
तपसी तप कर थाक रहे हैं । जती[3] रहे जत लाई ।।3।।
ध्यानी ध्यान मानसी लावें । वह भी धोक्खा खाई ।।4।।
पंडित पढ़ पढ़ वेद बखानें । विद्या बल सब जाई ।।5।।
बुद्धि चतुरता काम न आवे । आलिम[3] रहे पछताई ।।6।।
और अमल[4] का दख़ल नहीं है । अमल शब्द लौ लाई ।।7।।
गुरु मिले जब धुन का भेदी । शष्य विरह धर आई ।।8।।
सुरत शब्द की होय कमाई । तब मन कुछ ठहराई ।।9।।
हिर्स[5] हवस से हाथ न आवे । तन मन देव चढ़ाई ।।10।।
बुल्हवसी[6] और कपटी जन को । नेक[7] न धुन पतियाई[8] ।।11।।

---

1. गुंबज । 2. किनारा । 3. विद्वान् । 4. अभ्यास । 5. जो देखा देखी ख्वाहिश पैदा हो । 6. हिरसी । 7. ज़रा भी । 8. प्रतीत करना ।

यह धुन है धुर लोक अधर की । कोइ पकड़ें संत सिपाही ।।12।।
मन को मार करें असवारी । गगन कोट वह लेयँ घिराई ।।13।।
खाई सुन्न पार मैदाना । महासुन्न नाका[1] परमाना ।।14।।
भँवरगुफा का फाटक तोड़ा । शीश महल सतगुरु दिखलाई 15।।
अद्भुत लीला अजब वहाँ की । किरन किरन सूरज दरसाई ।।16।।
सूरज सूरज जोत निरारी । चन्द्र चन्द्र कोटिन छबि छाई ।।17।।
घट आकाश औघट परकाशा । लख आकाश कटिन परसाई ।।18।।
यह लीला कुछ अजब पेच की । उलट पलट कोइ गुरुमुख पाई 19।।
कहां लग बरनूँ भेद अगाधा । जो कोई लावे सुन्न समाधा ।।20।।
समझ बूझ गूँगे गुड़ खाई ।
अकथ अकह की बात निराली । क्योंकर कहूँ बनाई ।।21।।
राधास्वामी राज़[3] छिपे को । परगट कर सरसाई[4] ।।22।।

।। शब्द दसवाँ ।।

अनहद बाजे बजे गगन में । सुन सुन मगन होत अब मन में ।।1।।
गुरु सुनावें यह धुन तन में । सुरत लगा तू भी अब घन[5] में ।।2।।
मार सिंह को चढ़ी इस बन में । शब्द मिला अब जुगन जुगन में ।।3।।
सुरत लगाई उसी लगन में । धुन जागी अब रगन रगन में ।।4।।
सुन सुन शब्द गई सुन धुन में । दूर किये सब भूत और जिन में ।।5।।
सुरत न आवे अब कभी इन में । शब्द मिला गुरु दिया अपन में ।।6।।
शब्द प्रताप मिटाई तपन मैं । जाग उठी जग देख सुपन में ।।7।।
शब्द सुनूँ नित इसी भवन[6] में । छिन छिन पकड़ूँ यही जतन में ।।8।।
अंतर पाऊँ शब्द रतन में । शब्द शब्द संग करूं गवन[7] में ।।9।।
शब्द गहूँ अब मार मदन[8] मैं । राधास्वामी कहें पुकार सबन में ।।10।।

---

1. सीमा । 2. उलटा । 3. भेद । 4. दिखाया । 5. बादल की गरज ।
6. घर । 7. चलना । 8. काम ।

।। बचन दसवां ।।

निर्णय शब्द अथवा नाम का

।। शब्द पहिला ।।

रेख़ता

नाम निर्णय करूँ भाई । दुधा[1] विधि भेद बतलाई ।।1।।
वर्ण[2] धुनात्मक गाऊँ । दोऊ का भेद दरसाऊँ ।।2।।
वर्ण कहु चाहे कहु अक्षर । जो बोला जाय रसना[3] कर ।।3।।
लिखन और पढ़न में आया । उसे वर्णात्मक गाया ।।4।।
लखायक है यही धुन का । बिना गुरु फल नहीं किनका[4] ।।5।।
मिलें गुरु नाम धुन भेदी । सुरत धुन धुनी संग बेधी[5] ।।6।।
एकता नाम और नामी । करावें जो मिलें स्वामी ।।7।।
नाम वर्णात्मक गाया । नामी धुनआत्मक पाया ।।8।।
वर्ण से सुरत मन माँजो । बहुरि चढ़ गगन धुन साधो ।।9।।
धुनी धुन एक कर जानो । सुरत से शब्द पहिचानो ।।10।।
शब्द और सुरत भये एका । नाम धुन आत्मक देखा ।।11।।
गुरु बिन और बिना करनी । मिले कस कहो यह रहनी ।।12।।
चाह अनुराग जिस होई । भाग बड़ गुरुमुखी सोई ।।13।।
नाम नामी दोऊ गाया । अभेदी भेद समझाया ।।14।।
गुरु की मौज में सब कुछ । जिसे चाहें करें गुरुमुख ।।15।।
गुरुमुख होय तन धन से । करे फिर प्रीत निज मन से ।।16।।
लगे तब जाय धुन धुन से । गये तब तीन गुन तन से ।।17।।
वर्ण धुन भेद दोउ बरना । वाच[6] और लक्ष[7] इन कहना ।।18।।

---

1. दोनों। 2. अक्षर। 3. ज़बान। 4. बहुत कम। 5. प्रवेश करना।
6. प्रकट। 7. गुप्त।

वाच वर्णात्मक जानो । लक्ष धुन धुनी पहिचानो ।।19।।
वर्ण में भेष जग भूला । मर्म धुन संत कोइ तोला ।।20।।
वर्ण जप जप पचें भेषी । मिले कुछ फल नहीं नेकी[1] ।।21।।
भेद धुन का नहीं पाया । नाम फल हाथ नहिं आया ।।22।।
जपें नित सहस और लाखा । खुले नहिं नेक उन आँखा ।।23।।
तिमर संसार नहिं जावे । मोह मद काम भरमावे ।।24।।
धुनी धुन भेद नहिं चीन्हा । सुरत और शब्द नहिं लीन्हा ।।25।।
मिला नहिं गुरु धुन भेदी । लखावे धुन मिटे खेदी[2] ।।26।।
काल ने बुद्धि उन छेदी । मुफ़्त नर देह उन दे दी ।।27।।
दया कर संत गोहरावें । ज़रा नहिं चित्त में लावें ।।28।।
पाँच धुन भेद बतलावें । सुरत की राह दिखलावें ।।29।।
धुनों के नाम दरसावें । रूप अस्थान कह गावें ।।30।।
सुरत का जोग लखवावें । जीव नहिं कहन उन मानें ।।31।।
सुरत ले गगन चढ़वावें । पिंड में सार बतलावें ।।32।।
चढ़े ब्रह्मंड तब परखे । सहसदल मध्य कुछ निरखे ।।33।।
बंक चढ़ तिरकुटी धावे । सुन्न दस द्वार गति पावे ।।34।।
महासुन जाय हरखानी । भँवर में जा सुनी बानी ।।35।।
अमर पद मूल जा देखा । बीन धुन का मिला लेखा ।।36।।
अलख और अगम भी पेखा । नाम का मूल अब देखा ।।37।।
कहूं क्या खोल राधास्वामी । सैन यह समझ परमानी ।।38।।

।। शब्द दूसरा ।।

नाम रस चखा गुरु संग सार । काम रस छोड़ा देख असार ।।1।।
नाम रंग रंगी सुरत मन मार । क्रोध को जारा क्षिमा सम्हार ।।2।।
नाम का मिला आज भंडार । लोभ को टाला जान कंगार[3] ।।3।।
नाम गति पाई चढ़ आकाश । मोह तम गया देख परकाश ।।4।।

---

1. ज़रा । 2. दुख । 3. निरधन ।

नाम धन पाया गगन निहार । मगन होय बैठी तज अहंकार ।।5।।
नाम धुन सुनी सुन्न दस द्वार । नाम पद मिला महासुन्न पार ।।6।।
सुरत लिया भँवरगुफा आधार । सोहं और बंसी सुनी पुकार ।।7।।
पद चौथे चली नाम की लार । अलख में गई नाम को धार ।।8।।
अगम में पहुंची नाम सम्हार । मिला राधास्वामी नाम अगार[1] ।।9।।
करो अब सतसँग जग को जार । होय घट भीतर नाम उजार ।।10।।
मान मद बैठे दोनों हार । नाम पद हुई सुरत गल हार ।।11।।
भेद यह गावें संत पुकार । भेष नहिं मानें बड़े गँवार ।।12।।
रहे पंडित और जोगी वार । ज्ञान कर ज्ञानी मानी हार ।।13।।
संत कोई पहुंचे अगम निहार । तोड़िया जिन जिन तिल का द्वार ।।
नाम पद बरने देख विचार । रहा नहिं धोखा खोला झार[2] ।।15।।
नाम का परदा दिया उघाड़ । कहूं मैं तुम से कर अति प्यार ।।16।।
मिलैं कोई सतगुरु परम उधार । करो यह करनी तुम निरवार[3] ।।17।।
पाओ तब नाम कुल्ल करतार । बाँध कर चढ़ो सुरत का तार ।।18।।
मीन मति[4] चढ़ गइ उलटी धार । मकर[5] गति पकड़ा अपना तार ।।19।।
काल अब थका पुकार पुकार । शरम कर बैठी माया नार ।।20।।
सुरत अब पाया निज घर बार । मिले राधास्वामी पुरुष अपार ।।21।।

।। बचन ग्यारहवाँ ।।

सतसंग महिमा और भेद सत्तनाम का

।। शब्द पहिला ।।

कहाँ लग कहूं कुटिलता[6] मन की । कान[7] न माने गुरु के बचन की ।।1।।
प्रेम गया और भक्ति छिपानी । बैर ईर्षा की खुली खानी ।।2।।

---

1. सब के आगे। 2. कुल। 3. छुटकारा। 4. समान, मानिन्द। 5. मकड़ी।
6. दुष्टता, शरारत। 7. मर्यादा, क़ायदा।

माया लाई छलबल अपना । काल दिया कलमल[1] का ढकना ।।3।।
ज्ञान बुद्धि बल सतसंग भाई । क्षिमा मौज गुरु गई हिराई[2] ।।4।।
देखो अचरज कहा न जाई । कलियुग का परभाव[3] दिखाई ।।5।।
हैं गुर-भैहिन और गुर-भाई । तिन में निस दिन होत लड़ाई ।।6।।
काल दाव[4] अपना यों खेला । सतसंग में आय कीन्हों मेला ।।7।।
सेवा में घुस पैठ कराई । और तरह कोइ घात न पाई ।।8।।
सेवा में अस कीन्हा पेचा । मन को सब के धर धर ख़ैंचा ।।9।।
गुरु ताड़ें सतसंगी झींखें[5] । काल लगाई ऐसी लीकें[6] ।।10।।
गुरु समझावें सीख न मानें । मन मत अपनी फिर फिर ठानें ।।11।।
गुरु को देवें दोष लगाई । फिर फिर चौरासी भरमाई ।।12।।
इतने दिन सतसंग जो कीया । कुछ भी असर न उसका हुआ ।।13।।
सतगुरु से अब करूँ पुकारा । काल मार मन लेव सुधारा ।।14।।
तुम से काल ज़बर नहिं होई । काटो फंदा जम का सोई ।।15।।
तुम्हरे चरन प्रीत होय गाढ़ी । सतसंगियन मन शुद्धता बाढ़ी ।।16।।
हिल मिल कर सब करें अनन्दा । द्रोह घात[7] का काटो फंदा ।।17।।
सतसंगी सब मिल कर चालें । प्रीत परस्पर पल पल पालें ।।18।।
यही हुकुम अब सब को कीना । जो नहिं माने सो काल अधीना ।।19।।
जो कोई माने हुकुम हमारा । पहुंचे वह सतगुरु दरबारा ।।20।।
बुद्धि अपनी लेव सम्हारी । बचन गुरु यह मन में धारी ।।21।।
जिन के मन को काल सम्हारा । सो नहिं माने बचन हमारा ।।22।।
अब मन में चिन्ता मत राखो । सत्तनाम अब छिन छिन भाखो ।।23।।
दीन हीन जानो अपने को । निपट नीच मानो अपने को ।।24।।
अब अहंकार करो क्या किस से । मौत धार दम दम में बरसे ।।25।।
जैसे जग में महा भिखारी । दीन गरीबी उन सब धारी ।।26।।

1. अंधकार, मलीनता। 2. जाती रही। 3. असर। 4. पेंच। 5. दुखित होना। 6. दाग़। 7. शत्रुता और बैर।

कोई उसको कुछ कह लेवे । मन को अपने जरा न देवे ।।27।।
तुम सतसंग कर क्या फल पाया । उनका सा भी मन न बनाया ।।28।।
अब ऐसा तुम्हें करना चाहिये । अपने मन अधीनी धरिये ।।29।।
हाहा खाओ[1] चरन पखालो[2] । आपस में तुम हिल मिल चालो ।।30।।
जो कोइ जिस से रूठे भाई । सोई तिसको लेय मनाई ।।31।।
हाथ जोड़ बहु बिनती करे । करे खुशामद चरनन पड़े ।।32।।
इतने पै जो माने नाहीं । गुनहगार सतगुरु का भाई ।।33।।
जलन ईर्षा जिस घट आई । वह दुख कैसे जाय नसाई ।।34।।
कर विवेक मन को समझावे । या सतगुरु की दया समाई ।।35।।
सतगुरु दया बिना नहिं होई । बिन विवेक नहिं जावे खोई ।।36।।
जो सतगुरु निज दया विचारें । तब यह दुरमत मन से टारें ।।37।।
जो कोइ दीन कपट से होई । ता का रोग कहो कस जाई ।।38।।
कपटी को ऐसा अब चाही । करे सफ़ाई कपट नसाई ।।39।।
जो बल उसका पेश न जावे । तो सतगुरु से बिनती लावे ।।40।।
खोले कपट न राखे परदा । गुरु से खोले रख रख सरधा ।।41।।
अपने औगुन उन से भाखे[3] । बार बार बिनती कर आखे[4] ।।42।।
हे स्वामी मेरी कपट निकारो । मैं बलहीन मोहिं तुम तारो ।।43।।
तुम्हारी दया होय जब भारी । घट से निकसे कपट हमारी ।।44।।
और उपाय न इसका कोई । बिना दया कोई जुक्ति न होई ।।45।।
मन कपटी घट घट में पैठा । सब जीवन का पकड़ा फेंटा[5] ।।46।।
कर सतसंग भौ[6] भाव बसावे । गुरु की दया कपट नस[7] जावे ।।47।।
जो गुरु आगे कपट न खोले । निष्कपटी अपने को बोले ।।48।।
दोहरा कपट लिये है सोई । उसका जतन कभी नहिं होई ।।49।।
बह सतसंग के लायक नाहीं । वह असाध रोगी जग माहीं ।।50।।

---

1. दीनता के साथ छिमा मांगना । 2. धोओ । 3. बयान करे । 4. कहे । 5. कमरबन्द । 6. भय । 7. नाश ।

पर जो सतगुरु समरथ पावे । और चरनन पर सीस नवावे ।।51।।
पड़ा रहे सतसंग के माहीं । धीरे धीरे तो छुट जाई ।।52।।
सतसंग जल जो कोई पावे । सब मैलाई कट कट जावे ।।53।।
सतसंग महिमा कहा बखानूं । अस सम जत्न और नहिं मानूँ ।।54।।
कलजुग ख़ास यत्न कोई नाहीं । बिन सतसंग संत नहिं गाई ।।55।।
कर्म धर्म तप पूजा दाना । इस करनी से नित बढ़े माना ।।56।।
और ज्यों की त्यों होय न आवे । तौ फल उलटा उसका पावे ।।57।।
याते संतन काढ़ि निकारी । सतसंग की महिमा कहि भारी ।।58।।

।। दोहा ।।

सतसंग किसको कहत हैं, सो भी तुम सुन लेय ।
सत्तनाम सतपुरुष का, जहाँ कीर्तन होय ।।59।।

चौथा पद सचखंड कहावे । महासुन्न के पार रहावे ।।60।।
महासुन्न वह संतन भाखी । अक्षर से वह आगे ताकी ।।61।।
वह अक्षर है वेद को मूला[1] । ज्यों का त्यों ताहि वेद न तोला[2] ।।62।।
नेति नेति वाही को कहता । आगे की गत फिर कस लेता ।।63।।
वेद कतेब थके दोउ यहँ ही । अक्षर सुन के वार रहाई ।।64।।
आगे का इन मर्म[3] न जाना । संतन ने यह करी बखाना ।।65।।
जोगेश्वर वेदांती भाई । यह भी रहे अक्षर लख[4] माहीं ।।66।।
सत्तनाम संतन जो भाखा । सत्तलोक संतन जहाँ आखा ।।67।।
सो इन सब से आगे होई । बुद्धि से एक कहो मत कोई ।।68।।
संतन साफ़ साफ़ कह डाला । मत वेदांत काल कर जाला ।।69।।

।। दोहा ।।

काल मता वेदांत का, संतन कहा बनाय ।
सत्तनाम सतपुरुष का, भेद रहा अलगाय ।।70।।

---

1. जड़ । 2. विचारा, खोला । 3. भेद । 4. लखिया जाने वाला ।

कुल्ल मते संसार के, सभी काल के जान।
सत्तनाम सतपुरुष मत, यह दयाल पहिचान ।।71।।

सत्तनाम का भेद सुनाऊँ। वा की आदि अँत दरसाऊँ ।।72।।
तब नहिं रचा अंड ब्रह्मंडा। तीन लोक और नहि नौ खंडा ।।73।।
नहीं तब ब्रह्म नहीं तब आतम। नहिं तब पारब्रह्म परमातम ।।74।।
नहिं तब देवी नहिं तब देवा। सुर नर मुनि कोइ रचे न सेवा ।।75।।
काल और महाकाल नहिं दोई। सुन्न और महासुन्न नहिं होई ।।76।।
धरती गगन न वेद पुराना। कोई सिद्धांत वेदांत न जाना ।।77।।
कहाँ लग कहूं खोल कर भाई। किंचित[1] रचना नहिं प्रगटाई ।।78।।
तब रहे आप नाम अमाया[2]। अपने में रहे आप समाया ।।79।।
मौज उठी एक धुन भइ भारी। सत्तनाम सत शब्द पुकारी ।।80।।
सच्च खंड इस धुन से रचिया। जहाँ लग मंडल धुन का बंधिया ।।
हंस रचे और दीप रचाये। सोलह सुत[3] परगट होय आये ।।82।।
सत्तलोक यों रचन रचानी। सत्तनाम महिमा निज ठानी ।।83।।
जुग केते याही बिधि बीते। सत्तनाम रस सब मिल पीते ।।84।।
सत्य सत्य वहाँ रहा पसारा। फिर नीचे का किया विस्तारा ।।85।।
एक धार वहाँ से चल आई। धार दूसरी आन समाई ।। 86।।
सुन्न मँडल कीन्हा निज थाना। पुरुष प्रकृति रचा अरथाना ।।87।।
जोत निरंजन संतन गाया। माया ब्रह्म वही ठहराया ।।88।।
शिव शक्ति इस ही को कहते। केते जुग याही को बीते ।।89।।
ब्रह्म सृष्टि रचना इन ठानी। यह भी भेद न काहू जानी ।।90।।
ब्रह्म हुआ जब इनसे न्यारा। सत्तनाम का ध्यान सम्हारा ।।91।।
माया ने फिर रचना ठानी। तीन पुत्र लीन्हे उतपानी ।।92।।
नर सृष्टी इन से भई भारी। वेद रचे और कर्म पसारी ।।93।।
कर्मकांड में सब मन दीना। सुर नर मुनि भये काल अधीना ।।94।।

---

1. कुछ भी। 2. माया से रहित। 3. सोलह कला।

ज्ञानी जोगी पच पच हारे । कर्म भर्म से हुए न न्यारे ।।95।।
सत्तपुरुष का भेद न जाना । वेद मते का बंधन ठाना ।।96।।
संत मता इन से बहु दूरी । यह क्यों जाने वह पद मूरी[1] ।।97।।
याते संत संग अब कीजै । और संग सब परिहर[2] दीजै ।।98।।
सतसंग या का नाम कहावे । मिलें संत तब यह घर पावे ।।99।।
सत्तनाम धुन अब कहूँ खोली । बीन बाँसुरी धुन जहँ बोली ।।100।।
काल नगर जहाँ अनहद बाजा । बाइँ दिशा यह धुन उन साजा ।।101।।
संतन की धुन इन से न्यारी । पावेगा कोइ चढ़ पद चारी ।।102।।
छाँट छूँट कर मैं सब गाई । संत मता सब दिया लखाई ।।103।।
कहने मैं कुछ कसर न राखी । खुले दृष्टि तब देखे आँखी ।।104।।
संत मेहर से कोइ कोइ पावे । बिना संत कुछ हाथ न आवे ।।105।।

।। दोहा ।।

संत कही यह छान कर, मूरख माने नाहिं ।
बिना प्रीत परतीत के, कैसे पावे ठाहिं[3] ।।106।।
संतन से कर प्रीत अब , दृढ़ कर चित्त लगाय ।
कर्म भर्म सब छोड़ कर, सुरत शब्द समाय ।।107।।
राधास्वामी गाय कर, जन्म सुफल कर ले ।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले ।।108।।
भेद नाम का जब तू पावे ।
सतसंग में स्वामी के आवे ।।109।।

---

1. मूल । 2. त्याग । 3. ठिकाना ।

।। बचन बारहवां ।।

वर्णन महात्म भक्ति का

।। शब्द पहला ।।

भक्ति महात्म सुन मेरे भाई । सब संतन ने किया बखान ।।1।।
यही मता गुरु-मत पहिचानो । और मते सब झूठ भुलान ।।2।।
बिना भक्ति थोथे सब मानो । छिलका है मींगी[1] की हान[2] ।।3।।
ताते भक्ति दृढ़ कर पकड़ो । और सयानप तजो निदान ।।4।।
भक्ति इश्क़ प्रेम ये तीनों । नाम भेद है रूप समान ।।5।।
भक्ति भाव यह गुरु-मत जानो । और मते सब मन मत ठान ।।6।।
प्रेम रूप आतम परमातम । भक्ति रूप सतनाम बखान ।।7।।
भक्ति और भगवंत एक हैं । प्रेम रूप तू सतगुरु जान ।।8।।
प्रेम रूप तेरा भी भाई । सब जीवन को यों ही मान ।।9।।
एक भेद यामें पहिचानो । कहीं बुंद कहीं लहर समान ।।10।।
कहीं सिंध सम करे प्रकाशा । कहीं सोत और पोत कहान ।।11।।
कहीं इच्छा परबल होय बैठी । कहीं हुई माया बलवान ।।12।।
एक ठिकाने माया थोड़ी । सिन्ध प्रताप शुद्ध हुई आन ।।13।।
सोत पोत में माया नाहीं । वहाँ प्रेम ही प्रेम रहान ।।14।।
वह भंडार प्रेम का भारी । जाँ का आदि न अंत दिखान ।।15।।
बिना संत पहुंचे नहिं कोई । सतगुरु संत किया अस्थान ।।16।।
प्रेम भक्ति की ऐसी महिमा । ग्रहण करो यह अमृत खान[3] ।।17।।
तांते पहिले करो भक्ति गुरु । पीछे पाओ नाम निशान ।।18।।
आरत कर कर गुरु रिझाओ । पाओ उन से प्रेम निधान[4] ।।19।।
राधास्वामी कहत सुनाई । मिला तुझे अब भक्ति दान ।।20।।

---

1. मगज़ । 2. नष्ट हो जाना । 3. खज़ाना ।

॥ शबद दूसरा ॥

जगत भाव भय लज्जा छोड़ो । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥1॥
जाति बरन भय लज्जा त्यागो । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥2॥
शत्रु मित्र डर दूर हटाओ । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥3॥
मात पिता डर छोड़ गँवाओ । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥4॥
जोरू लड़के मत डर इनसे । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥5॥
भाई भतीजों का डर मत कर । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥6॥
सास ससुर डर मन से छोड़ो । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥7॥
बहू जमाई इन का डर तज । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥8॥
यार आशना[1] सब डर छोड़ो । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥9॥
नातेदार कुटुम्बी जितने । इनका डर तज कर भक्ति ॥10॥
भक्ति अंग में जब तू बरते । छोड़ झिझक[2] इन कर भक्ति ॥11॥
जो मूरख हैं मर्म न जानें । इनका डर क्या ? कर भक्ति ॥12॥
इनका डर कुछ मत कर मन में । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥13॥
भेष भेष को देख लजावे । सो भी कच्चा कर भक्ति ॥14॥
जब लग सब से निडर न होवे । तब लग कच्चा कर भक्ति ॥15॥
ज़िल्लत[3] इज़्ज़त[4] जो कुछ होवे । मौज विचारो कर भक्ति ॥16॥
गुरु का बल हिरदे धर अपने । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥17॥
यह बिगाड़ कुछ करें न तेरा । क्यों झिझके तू कर भक्ति ॥18॥
बिना मौज गुरु कुछ नहि होता । सुन प्यारे तू कर भक्ति ॥19॥
तू कच्चा यह करे कचाई । और कहूं क्या कर भक्ति ॥20॥
करते करते पक्का होगा । और उपाव न कर भक्ति ॥21॥
कच्ची से पक्की होय इक दिन । छोड़ कपट तू कर भक्ति ॥22॥
कपट भक्ति कुछ काम न आवे । सच्ची कच्ची कर भक्ति ॥23॥
राधास्वामी कहत सुनाई । जैसी बने तैसी कर भक्ति ॥24॥

---

1. दोस्त । 2. डर और लज्जा । 3. निरादर । 4. आदर ।

।। शब्द तीसरा ।।

धोखा मत खाना जग आय पियारे । धोखा मत खाना जग आय ।।1।।
कोई मीत न जानो अपना । सब ठग बैठे फाँसी लाय ।।2।।
जब सच्चा होय चले डगर[1] गुरु । तबही चौंकैं रोकैं आय ।।3।।
ऊँच नीच कहैं बचन तोख[2] के । मन को तेरे दें भरमाय ।।4।।
इनसे रहना समझ बूझ कर । हैं ये बैरी हित दिखलाय ।।5।।
तेरी हानि लाभ नहिं सोचैं । अपने स्वारथ रहें लिपटाय ।।6।।
तू भी चतुरा गुरु का प्यारा । उन संग रहु गुरु चरन समाय ।।7।।
उन को भी इस भाँति भलाई । तेरी भक्ति न थकती जाय ।।8।।
जो बेमुख गुरु भक्ति नाम से । कोई तरह क़ाबू नहिं पाय ।।9।।
तो जुक्ति से दीन विधि से । छोड़ चलो संग दोष न ताय ।।10।।
जो सन्मुख गुरु भक्ति नाम से । होयँ कदाचित[3] मेल मिलाय ।।11।।
राधास्वामी कहत बनाई । बहुरि बहुरि तू भक्ति कमाय ।।12।।
भक्ति न छूटे कोई जुक्ति से । नहिं तो बहु विधि रहो पछताय ।।13।।

।। बचन तेरहवाँ ।।

पहिचान पूरे गुरु की और सच्चे परमार्थी की

।। शब्द पहला ।।

गुरु सोई जो शब्द सनेही[4] । शब्द बिना दूसर नहिं सेई[5] ।।1।।
शब्द कमावे सो गुरु पूरा । उन चरनन की हो जा धूरा ।।2।।
और पहिचान करो मत कोई । लक्ष[6] अलक्ष[7] न देखो सोई ।।3।।
शब्द भेद लेकर तुम उन से । शब्द कमाओ तुम तन मन से ।।4।।

---

1. रास्ता । 2. तान । 3. शायद, कभी । 4. प्रेमी । 5. सेवन करना ।
6. लक्षण पूरा । 7. बे-लक्षण, अधूरा ।

।। सार उपदेश ।।

।। पहिचान परमार्थी की ।।

।। सोरठा ।।

अनुरागी जो जीव, तिन प्रति अब ऐसी कहूं।
सुनो कान दे चीत, बचन कहूं विस्तार कर ।।5।।

विषयन से जो होय उदासा । परमारथ की जा मन आसा ।।6।।
धन संतान प्रीत नहिं जाके । जगत पदारथ चाह न ता के ।।7।।
तन इन्द्री आसक्त न होई । नींद भूख आलस जिन खोई ।।8।।
बिरह बान जिन हिरदे लागा । खोजत फिरे साध गुरु जागा ।।9।।
साध फ़क़ीर मिले जो कोई । सेवा करे करे दिलजोई[1] ।।10।।
भेष धार पाखंडी होई । साधु जान करे हित सोई ।।11।।
भेष नेष्ठा[2] नित प्रति धारे । ले परशादी चरन पखारे[3] ।।12।।
ऐसी करनी जा की देखें । आप आय सतगुरु तिस मेलें ।।13।।
सतगुरु बचन सुने जब काना । उमगे हिरदा प्रेम समाना ।।14।।
सतगुरु से जब प्रीत लगावे । दया मेहर उनकी कुछ पावे ।।15।।

।। विधि दर्शन की ।।

नित प्रति दर्शन परसन करे । रूप अनूप चित्त में धरे ।।16।।
चरनामृत परशादी लेवे । मान मनी तज तन मन देवे ।।17।।

।। विधि सेवा की ।।

सेवा कर तन मन धन अरपे । सत्त पुरुष सम सतगुरु थरपे[4] ।।18।।

।। प्रथम तन की सेवा ।।

आरत सेवा नित ही करे । काम क्रोध मद चित से हरे ।।19।।
चरन दबावे पंखा फेरे । चक्की पीसे पानी भरे ।।20।।

---

1. खातिरदारी। 2. धारना। 3. धोवे। 4. माने।

मोरी धो झाड़ू को धावे । खोद खदाना[1] मिट्टी लावे ।।21।।
हाथ धुला दातन करवावे । काट पेड़ से दातन लावे ।।22।।
बटना मल असनान करावे । अंग पोंछ धोती पहिनावे ।।23।।
धोती धोय अंगोछा धोवे । कंघा करे बाल बल खोवे ।।24।।
वस्त्र पहिनावे तिलक लगावे । करे रसोई भोग धरावे ।।25।।
जल अचवावे कमंडल भरे । पलंग बिछावे बिनती करे ।।26।।
नाना विधि की सेवा करे । नीच ऊँच जो जो आ पड़े ।।27।।
कोइ टहल में आर[2] न लावे । जो गुरु कहें सो कार कमावे ।।28।।

।। दूसरे धन की सेवा ।।

धन की सेवा यह है भाई । गुरु सेवा में ख़र्च कराई ।।29।।
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का । उन पै धन है भक्ति नाम का ।।30।।
पर तेरा उपकार करावें । भूखे प्यासे को दिलवावें ।।31।।
उनकी मेहर मुफ्त तू पावे । जो उनको परसन्न करावे ।।32।।
उनका ख़ुश होना है भारी । सत्त पुरुष निज किरपा धारी ।।33।।

।। तीसरे मन और बुद्धि की सेवा ।।

दर्शन करे बचन पुनि[3] सुने । फिर सुन सुन नित मन में गुने ।।34।।
गुन गुन छाँट लेय उन सारा । सार धार तिस करे अहारा ।।35।।
कर अहार पुष्ट[4] हुआ भाई । जग भौ लाज अब गई नसाई ।।36।।
गुरु भक्ति जानो इश्क़ गुरु का । मन में धसा सुरत में पक्का ।।37।।
पक पक घट में गाढ़ा थाना । थान गाढ़ अब हुआ दिवाना ।।38।।
गुरु का रूप लगे अस प्यारा । कामिन पति मीना जल धारा ।।39।।
सतसंग करना ऐसा चहिये । सतसंग का फल येही सही है ।।40।।

।। दोहा ।।

जब सतगुरु प्रसन्न होय, देयँ नाम का दान ।
दीन होय हिरदे धरे, करे नाम पहिचान ।।41।।

---

1. मिट्टी का खान । 2. शर्म । 3. फिर । 4. मज़बूत, बलवान ।

चौथे सुरत और निरत[1] की सेवा
यानी अंतर अभ्यास

अंतरमुख बैठे एकान्त । अभ्यास करे पावे मन शान्त ।।43।।
दो दल उलट गगन को धावे । मगन होय और नाद बजावे ।।44।।
जोत देख फिर देखे सूर । चन्द्र निहारे पावे नूर[2] ।।45।।
सत्तलोक पहुंचे और बसे । सुन सुन धुन तब सूरत हँसे ।।46।।
तब सतगुरु की जानी महिमा । जिन प्रताप बाजी धुन बीना ।।47।।
अलख अगम और मिला अनामी । अब कहुं धन धन राधास्वामी ।।48।।

।। शब्द दूसरा ।।

घर आग लगावे सखी । सोई सीतल समुँद समावे ।।1।।
जड़ चेतन की गाँठ खुलानी । बुन्दा सिन्ध मिलावे ।।2।।
सुरत शब्द की क्यारी सींचे । फल और फूल खिलावे ।।3।।
गगन मँडल का ताला खोले । लाल ज्वाहिर[3] पावे ।।4।।
सुन्न शिखर[4] का मन्दिर झाँके । अद्‌भुत रूप दिखावे ।।5।।
मानसरोवर निरमल धारा । ता बिच पैठ अन्हावे ।।6।।
हंसन साथ हाथ फल लेवे । धृग धृग जगत सुनावे ।।7।।
महासुन्न का नाका तोड़े । भँवरगुफा ढिंग जावे ।।8।।
सत्तनाम पद परस[4] पुराना । अलख अगम को धावे ।।9।।
राधास्वामी सतगुरु पावे । तब घर अपने आवे ।।10।।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु चेला व्योहार जगत में । झूठा बरत रहा ।।1।।
का से कहूं खोज नहिं काहू । धोखे धार बहा ।।2।।
गुरु तो लोभ प्रतिष्ठा[6] चाहत । शिष स्वारथ सँग आन बँधा ।।3।।
सच्चा मारग सुरत शब्द का । सो अब गुप्त भया ।।4।।

---

1. निर्गुण करने वाली शक्ति । 2. प्रकाश । 3. रतन । 4. चोटी । 5. स्पर्श करके । 6. आदर ।

गुरु चेला पाखंडी कपटी । चौरासी में दोउ गया ।।5।।
शब्द सरूपी शब्द अभ्यासी । अस गुरु मिले तो पार हुआ ।।6।।
सुरतवन्त[1] अनुरागी सच्चा । ऐसा चेला नाम कहा ।।7।।
गुरु भी दुर्लभ[2] चेला दुर्लभ । कहीं मौज से मेल मिला ।।8।।
शब्द सुरत बिन जो गुरु होई । ता को छोड़ो पाप कटा ।।9।।
राधास्वामी यों कह गाई । बूझ बचन तब काज सरा ।।10।।

।। शब्द चौथा ।।

सतगुरु खोजो री प्यारी । जगत में दुर्लभ रतन यही ।।1।।
जिन पर मेहर दया सतगुरु की । उनको दर्श दई ।।2।।
दर्श पाय सतलोक सिधारी । सत्तनाम पद कौन सही ।।3।।
सही नाम पाया सतगुरु से । बिन सतगुरु सब जीव बही ।।4।।
जीव पड़े चौरासी भरमें । खान पान मद मान लाई ।।5।।
मान मनी का रोग पसरिया[3] । बड़े बने जिन मार सही ।।6।।
छोटा रहे चित्त से अंतर । शब्द माहिं तब सुरत गई ।।7।।
शब्द बिना सारा जग अन्धा । बिन सतगुरु सब भर्म मई[4] ।।8।।
शब्द भेद और शब्द कमाई । जिन जिन कीन्ही सार लई ।।9।।
शब्द रता सतगुरु पहिचानो । हम यह पूरा पता दई ।।10।।
खोलो आँख निकट हो देखा । अब क्या खोलूँ खोल कही ।।11।।
आगे भाग तुम्हारा प्यारी । नहिं परखो तो जून[5] रही ।।12।।
कहना था सोई कह डाला । राधास्वामी खूब कही ।।13।।

---

1. संस्कारी । 2. कामयाब । 3. फैला । 4. भरा हुआ । 5. योनि ।

।। बचन चौदहवाँ ।।

।। चितावनी भाग पहिला ।।

।। शब्द पहिला ।।

धुन से सुरत भइ न्यारी रे । मन से बँधी कर भारी रे ।।1।।
भौजाल फँसी झख मारी रे । घट छूटा फिर उजाड़ी रे ।।2।।
गुरु ज्ञान नहीं चित धारी रे । विष भोगे विषय विकारी रे ।।3।।
सिर भार उठावत भारी रे । जम दंड सहे सरकारी[1] रे ।।4।।
दुख विपता बहुत सहारी रे । अब सतगुरु कहत पुकारी रे ।।5।।
सुन मान बचन मेरा प्यारी रे । घट उलटो लख उजियारी रे ।।6।।
शब्द रस पियो अपारी रे । चढ़ खोलो गगन किवाड़ी रे ।।7।।
गुरु बिन नहिं और अधारी रे । राधास्वामी काज सुधारी रे ।।8।।

।। शब्द दूसरा ।।

सुरत तू कौन कहाँ से आई ।। टेक ।।
जगत जाल यह मन रच राखा । क्यों या में भरमाई ।।1।।
पुरुष अंस तू सतपुर बासी । फाँसी काल लगाई ।।2।।
सतगुरु दया साध की संगत । उलट चलो घर पाई ।।3।।
अनहद शब्द सुनो घट भीतर । राधास्वामी कहत बुझाई ।।4।।

।। शब्द तीसरा ।।

झँझरिया झाँको विरह उमगाय ।। टेक ।।
मन इन्द्री घर बास बिगाना[2] । या में रहो अलसाय ।।1।।
पूरे सतगुरु मर्म लखावें । भर्म देयँ छुटकाय ।।2।।
अब के दाव पड़ा तेरा सजनी । फिर औसर[3] नहिं पाय ।।3।।
तिल को पेल तेल अब काढ़ो । लो घट जोत जगाय ।।4।।
राधास्वामी कहा बुझाई । एक ठिकाना गाय ।।5।।

---

1. काल का । 2. पराया । 3. मौका ।

।। शब्द चौथा ।।

करो री कोई सतसंग आज बनाय ।। टेक ।।
नर देही तुम दुर्लभ पाई । अस औसर फिर मिले न आय ।।1।।
तिरिया सुत धन धाम बड़ाई । यह सुख फिर दुख मूल दिखाय ।।2।।
या से बचो गहो गुरु सरना । सतसंग में तुम बैठो जाय ।।3।।
यह सब खेल रैन का सुपना । मैं तुम को अब दिया जगाय ।।4।।
झूठी काया झूठी माया । झूठा मन जो रहा लुभाय ।।5।।
सतसंग सच्चा सतगुरु सचा । नाम सचाई क्या कहुँ गाय ।।6।।
मान बचन मेरा तू सजनी । जन्म मरन तेरा छुट जाय ।।7।।
नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो । राधास्वामी कहत बुझाय ।।8।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सुरत तू क्यों न सुने धुन नाम ।
भूल भूलइयाँ आन फँसानी । क्या समझा आराम ।।1।।
भला तू समझ चेत चल धाम ।। टेक ।।
मन इन्द्री संग भोग विलासा । यह जमराय बिछाया दाम[1] ।।2।।
इन से निकर भाग अब प्यारी । सतगुरु मर्म लखावें ताम[2] ।।3।।
अब की बार पड़ो गुरु सरना । फिर न बने अस काम ।।4।।
यहाँ तो चार दिवस रहे बासा । फिर भटको चौरासी ग्राम ।।5।।
ता ते बचन हमारा मानो । तजो मोह और काम ।।6।।
मन बौरा यह कहा न माने । लगा भोग रस खाम[3] ।।7।।
जीव निबल क्या करे बिचारा । जब लग राधास्वामी करें न सहाम[4] ।।

।। शब्द छठा ।।

जाग चल सूरत सोई बहुत । काहे को पूँजी अपनी खोत ।।1।।

---

1. जाल । 2. तमाम । 3. पागल । 4. सहायता ।

पकड़ ले सतगुरु की तूं ओट । नाम गहि दूर करो सब खोट[1] ।।2।।
काल अब मारे छिन छिन चोट । शब्द संग डार[2] कर्म की पोट ।।3।।
मैल मन क्यों नहिं अब तू धोत । शब्द संग सूरत क्यों नहिं पोत[3] ।।4।।
निरख ले घट में अद्‌भुत जोत । खोलिया राधास्वामी भक्ति सोत ।।5।।

।। शब्द सातवाँ ।।

हित कर कहता सुन सुर्त बात । ग़ोता मत खा मूरख साथ ।।1।।
काम संग बहती दिन और रात । मिला तोहि भटक भटक यह गात[4] ।।2।।
लगा ले नौका सतगुरु घाट । मिटा ले प्यारी जम की घात ।।3।।
छोड़ दे मन से सब उत्पात । रखो नहिं मन में जात और पाँत ।।4।।
विघ्न यह भारी बुद्धि भरमात । कहूं क्या कौन सुने मेरी तात[5] ।।5।।
करैं कोइ सतगुरु तोहि निज दात । नाम का भेद लखा धुन पात ।।6।।
कहैं यह राधास्वामी अचरज बात । मिले जब सतसंग सरन समात ।।7।।

।। शब्द आठवाँ ।।

हे सहेली अब गुरु के मारग चलना । मन मारग छिन छिन तजना ।।1।।
कामादिक भोग बिसरना । धुन सुन कर नभ पर चढ़ना ।।2।।
जग भट्टी में क्यों जलना । मद मान मोह नहिं पचना ।।3।।
धीरे धीरे नाम रसायन[6] जरना । भौजल से यों ही तरना ।।4।।
राधास्वामी बचन पकड़ना । फिर जम से काहे को डरना ।।5।।

।। शब्द नावाँ ।।

क्यों फिरत भुलानी जगत में, दिन चार बसेरा ।।1।।
स्वारथ के संगी सभी, जिन तुझ को घेरा ।।2।।
मात पिता सुत इस्तरी, कोइ संग न हेरा ।।3।।
बिन गुरु सतगुरु कौन है, जो करे निबेड़ा[7] ।।4।।
नाम बिना सब जीव, करे चौरासी फेरा ।।5।।

---

1. कसर। 2. फेंक दे। 3. गूथता, परोता। 4. शरीर। 5. प्यारा।
6. कीमिया। 7. छुटकारा।

मन दुलहा गगना चढ़े, सज सुरत सेहरा ।।6।।
धुन दुलहिन को पाय कर, बसे जाय त्रिकुटी देहरा[1] ।।7।।
राधास्वामी ध्यान धर, तू साँझ सबेरा ।।8।।

।। शब्द दसवाँ ।।

सुरत तू दुखी रहे हम जानी ।। टेक ।।
जा दिन से तुम शब्द बिसारा । मन संग यारी ठानी ।।1।।
मन मूरख तन साथ बँधानी । इन्द्री स्वाद लुभानी ।।2।।
कुल परिवार सभी दुखदाई । इन संग रहत भुलानी ।।3।।
तू चेतन यह जड़ सब मिथ्या । क्यों कर मेल मिलानी ।।4।।
ताते चेत चलो यह औसर । नहिं भरमो तुम खानी ।।5।।
सतसंग करो सत्त पद खोजो । सतगुरु प्रीत समानी ।।6।।
नाम रतन गुरु देयँ बुझाई । उलट चलो असमानी ।।7।।
इतना काम करो तुम अब के । फिर आगे की सतगुरु जानी ।।8।।
राधास्वामी कहन सम्हारो । दुख छूटे सुख मिले निशानी ।।9।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

सुरत तू कौन कुमति उरझानी ।। टेक ।।
मन के साथ फिरे भरमानी । गुरु की सुने न बानी ।।1।।
कनिक[2] कामिनी लागी प्यारी । रैन दिवस इन सँग लिपटानी ।।2।।
मोह जाल यह काल बिछाया । दानां डाला जीव फंसानी ।।3।।
तू अंजान पड़ी लालच में । बहुत होत तेरी हानी ।।4।।
मैं समझाय कहूं अब तोसे । गुरु बिना कौन बचानी ।।5।।
गुरु से प्रीत करो जग जारो । तन मन दशा भुलानी ।।6।।
नाम रसायन गुरु से पावो । छूटे सब हैरानी ।।7।।
फिर तू चढ़े गगन के नाके । तन से होय अलगानी ।।8।।
जम की घात बचा ले प्यारी । राधास्वामी कहत बखानी ।।9।।

---

1. डेरा ।   2. सोना ।

।। शब्द बारहवाँ ।।

जग में घोर अँधेरा भारी । तन में तम का भंडारा ।।1।।
स्वप्न जाग्रत दोनों देखी । भूल भुलइयाँ धर मारा ।।2।।
जीव अजान भया परदेसी । देस बिसर गया निज सारा ।।3।।
फिरे भटकता खान खान में । जोनि जोनि बिच झख मारा ।।4।।
दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे । सुने कौन अब बहु हारा ।।5।।
करे पुकार कारगर[1] नाहीं । पड़े नर्क में जम धारा ।।6।।
भटक भटक नर देही पाई । इन्द्री मन मिल यहाँ मारा ।।7।।
सतगुरु संत कहें बहुतेरा । राह बतावें दस द्वारा ।।8।।
बचन न माने कहन न पकड़े । फिर फिर भरमे नौ वारा ।।9।।
फोकट[2] धर्म पकड़ कर जूझे । बूझे न शब्द जुगत पारा ।।10।।
पानी मथे हाथ कुछ नाहीं । क्षीर[3] मथन आलस भारा ।।11।।
जीव अभाग कहूं मैं क्या क्या । बाहर भरमे भौ जारा ।।12।।
अंतरमुख जो शब्द कमाई । ता में मन को नहिं गारा[4] ।।13।।
वेद शास्त्र स्मृत और पुराना । पढ़ पढ़ सब पंडित हारा ।।14।।
बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त । कोइ न उतरे भौ पारा ।।15।।
यही बात भाखी मैं चुन कर । अब तो मानो गुरु प्यारा ।।16।।
राधास्वामी कहा बुझाई । सुरत चढ़ाओ नभ द्वारा ।।17।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

चल री सुरत अब गुरु के देश । जहाँ न काया कर्म कलेश ।।1।।
तन मन इन्द्री यह परदेश । छोड़ो भेष भवन का लेश[5] ।।2।।
सुनो कान से गुरु संदेश । सुरत शब्द ले धाओ शेष[6] ।।3।।
ब्रह्मा विष्णु न गौर गनेश । जहाँ न नारद सारद[7] शेष ।।4।।
संत सुरत जहाँ किया प्रवेश । सतगुरु दया मिला वह देश ।।5।।

---

1. असर-दार । 2. खाली । 3. दूध । 4. गाल्या । 5. पिंड की प्रीति । 6. अन्त पद । 7. सारदा, सरस्वती ।

काल कर्म की गई न पेश । तोड़े दाँत और काटे नेश[1] ।।6।।
सतगुरु को अब करूँ अदेश[2] । राधास्वामी पूरे धनी धनेश[2] ।।7।।

।। बचन पन्द्रहवाँ ।।

।। चितावनी भाग दूसरा ।।

।। शब्द पहिला ।।

चेत चलो यह सब जंजाल । काम न आवे कुछ धन माल ।।1।।
गुरु चरन गहो लो नाम सम्हाल । सतसंग करो धरो अब ख्याल ।।2।।
काम क्रोध संग मन पामाल[4] । भर्म भुलाना कर्मन नाल[5] ।।3।।
कहां कहूं यह मन का हाल । रोग सोग संग होत बेहाल ।।4।।
जीव गिरासे[6] जम और काल । देखत जग में यह दुख साल[7] ।।5।।
तो भी चेत न पकड़े ढाल । छिन छिन मारे काल कराल ।।6।।
राधास्वामी गुरु जब होयं दयाल । चरन सरन दे करें निहाल ।।7।।

।। शब्द दूसरा ।।

लाज जग काज बिगाड़ा री । मोह जग फन्दा डारा री ।।1।।
कुटुम्ब की यारी ख्वारी[8] री । काल संग व्याही क्वारी री ।।2।।
कर्म ने फाँसी डारी री । करे जम हाँसी भारी री ।।3।।
मरन की सुद्ध बिसारी री । देह अब लागी प्यारी री ।।4।।
मान में खप गइ सारी री । पोट[9] सिर भारी धारी री ।।5।।
जीत कर बाज़ी हारी री । चाह जग की नहिं मारी री ।।6।।
राधास्वामी कहत पुकारी री । करो कोई जतन विचारी री ।।7।।
गुरु संग करो सुधारी री । नाम रस पियो अपारी री ।।8।।

।। शब्द तीसरा ।।

मत देख पराये औगुन । क्यों पाप बढ़ावे दिन दिन ।।1।।

---

1. डंक । 2. बन्दगी । 3. भारी धनाडय । 4. अधीन किया हुआ । 5. संग (पंजाबी बोली) । 6. निगले । 7. तकलीफ़ । 8. भयंकर । 9. बोझा ।

पर[1] जीव सतावे खिन[2] खिन । छोड़ अपने औगुन गिन गिन ।।2।।
मक्खी सम मत कर भिन भिन । नहिं खावे चोट तू छिन छिन ।।3।।
देखा कर सब के तू गुन । सुख मिले बहुत तोहि पुन पुन ।।4।।
मैं कहूं तोहि अब गुन गुन[3] । तू मान बचन मेरा सुन सुन ।।5।।
गति गाई मैं यह हंसन । यों वर्ण सुनाई संतन ।।6।।
अब कान धरो इन बचनन । नहिं रोवोगे सिर धुन धुन ।।7।।
यह बात कही मैं चुन चुन । कर राधास्वामी चरन स्पर्शन[4] ।।8।।

।। शब्द चौथा ।।

मुसाफिर रहिना तुम हुशियार । ठगों ने आन बिछाया जाल ।।1।।
अकेले मत जाना इस राह । गुरु बिन नहिं होगा निरबाह ।।2।।
जमा सब लेंगे तेरी छीन । करेंगें तुझ को अपना दीन ।।3।।
ठगों ने रोका सब संसार । गुरु बिन पड़ गइ सब पर धाड़[5] ।।4।।
मान लो कहना मेरा यार । संग इन तजना पकड़ किनार ।।5।।
गुरु बिन और न कोइ रखवार । कहूं मैं तुम से बारम्बार ।।6।।
होयगी मंज़िल तेरी पार । गुरु से कर ले दृढ़ कर प्यार ।।7।।
गुरु के चरन पकड़ यह सार । इन्द्री भोग भुलावत झाड़ ।।8।।
यही हैं ठगिया करत ठगार । कहें राधास्वामी तोहि पुकार ।।9।।
सरन में आ जा लेउँ सम्हार । नाम संग होजा होत उधार ।।10।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में । पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में ।।1।।
चेत कर प्रीत करो सतसंग में । गुरु फिर रंग दें नाम अरँग[6] में ।।2।।
धन सम्पत तेरे काम न आवे । छोड़ चलो यह छिन में ।।3।।
आगे रैन अंधेरी भारी । काज करो कुछ दिन में ।।4।।
यह देही फिर हाथ न आवे । फिरो चौरासी बन में ।।5।।
गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ । आओ तुम इस ढंग में ।।6।।

---

1. पराया । 2. छिन छिन । 3. विचार कर । 4. छूना । 5. लूट । डाका ।
6. निर्मल ।

गुरु बिन तेरा और न कोई । धार बचन यह मन में ।।7।।
जगत जाल में फँसो न भाई । निस दिन रहो भजन में ।।8।।
साध गुरु का कहना मानो । रहो उदास जगत में ।।9।।
छल वल छोड़ो और चतुराई । क्यों तुम पड़ो कुगति[1] में ।।10।।
सुमिरन करो गुरु को सेवो । चल रहो आज गगनमें ।।11।।
कल की ख़बर काल फिर लेगा । वहाँ तुम जलो अगिन में ।।12।।
अबही समझ देर मत करियो । ना जानूँ क्या होय इस पन[2] में ।।13।।
यों समझाय कहें राधास्वामी । मानो एक बचन में ।।14।।

।। शब्द छठा ।।

मौत से डरत रहो दिन रात ।। टेक ।।
एक दिन भारी भीड़ पड़ेगी । जम खूंदेंगे[3] धर धर लात ।।1।।
वा दिन की तुम याद बिसारी । अब भोगन में रहो भुलात ।।2।।
एक दिन काठी बने तुम्हारी । चार कहरवा[4] लादे जात ।।3।।
भाई बन्धु कुटुम्ब परिवारा । सो सब पीछे भागे जात ।।4।।
आगे मरघट जाय उतारा । तिरिया रोए बिखेरे लाट[5] ।।5।।
वहाँ जमपुर में नर्क निवासा । यहाँ अग्नि में फूँके जात ।।6।।
दोनों दीन बिगाड़े अपना । अब नहीं सुनता सतगुरु बात ।।7।।
वा दिन बहु पछतावा होगा । अब तुम करते अपनी घात[6] ।।8।।
ज्वानी गई वृद्धता आई । अब कै दिन का इन का साथ ।।9।।
चेत करो मानो यह कहना । गुरु के चरन झुकाओ माथ ।।10।।
राधास्वामी कहत सुनाई । अब तुमको बहुबिधि समझात ।।11।।

।। शब्द सातवाँ ।।

बँधे तुम गाढ़े[7] बंधन आन ।। टेक ।।
पहिले बंधन पड़ा देह का । दूसर तिरिया जान ।।1।।

---

1. बुरी हालत। 2. अवस्था, उमर। 3. पाओं के नीचे दलेंगे। 4. काठी उठाने वाले लोग। 5. बाल खोले हुए। 6. नुक़सान। 7. मज़बूत।

तीसर बंधन पुत्र बिचारो । चौथा नाती मान ।।2।।
नाती के कहिं नाति होवे । फिर कहो कौन ठिकान ।।3।।
धन सम्पत्ति और हट हवेली । यह बंधन क्या करूँ बखान ।।4।।
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी[1] । बाँध लिया अब बहु विधि तान[2] ।।5।।
कैसे छूटन होय तुम्हारा । गहरे खूँटे गड़े निदान ।।6।।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं । जीते जी तुम सुनो न कान ।।7।।
जगत लाज और कुल मर्यादा । यह बंधन सब ऊपर ठान ।।8।।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो । जो छोड़ो तो जग की हान ।।9।।
क्या क्या कहूं बिपत मैं तुम्हारी । भटको जोनी भूत मसान ।।10।।
तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा । क्योंकर पावो नाम निशान ।।11।।
बेड़ी तौक़[3] हथकड़ी बाँधे । काल कोठरी कष्ट समान ।।12।।
काल दुष्ट तुम्हें बहु विधि बाँधा । तुम ख़ुश होके रहो गलतान[4] ।।13।।
ऐसे मूरख दुख सुख जाना । क्या कहूं अजब सुजान ।।14।।
शरम करो कुछ लज्या ठानो । नहिं जमपुर का भोगो डान ।।15।।
राधास्वामी सरन गहो अब । तो कुछ पाओ उनसे दान ।।16।।

।। शब्द आठवाँ ।।

चेत चल जगत से बौरे । कपट तज गहो गुरु सरना ।।1।।
फिरे गाफ़िल तू मद माता । अंत सिर पीट कर मरना ।।2।।
लगे नहिं हाथ कुछ तेरे । कुटुम्ब के साथ क्यों पिलना[5] ।।3।।
चार दिन के सँगाती यह । बटाऊ[6] फिर नहीं मिलना ।।4।।
रहो हुशियार जग ठग से । बचा पूँजी कमर कसना ।।5।।
मुसाफ़िर हो गुरु संग लो । नाम शमशेर[7] कर[8] गहना ।।6।।
सुरत को तान गगना में । पकड़ धुन बान घट रहना ।।7।।
काल की घात से बच कर । गहो राधास्वामी के चरना ।।8।।

---

1. रस्सी । 2. कस कर । 3. गले का बन्धन । 4. डूबे हुए, भुले हुए ।
5. पचना । 6. मुसाफिर । 7. तलवार । 8. हाथ ।

।। शब्द नावाँ ।।

तजो मन यह दुख सुख का धाम । लगो तुम चढ़ कर अब सत्तनाम ।।1।।
दिना चार तन संग बसेरा । फिर छूटे यह ग्राम ।।2।।
धन दारा[1] सुत नाती कहियन[2] । यह नहिं आवें काम ।।3।।
स्वाँस दुधारा नित ही जारी । इक दिन खाली चाम ।।4।।
मशक समान जान यह देही । बहती आठों जाम ।।5।।
तू अचेत गाफ़िल हो रहता । सुने न मूल कलाम[3] ।।6।।
माया नारि पड़ी तेरे पीछे । क्यों नहिं छोड़त काम ।।7।।
बिन गुरु दया छुटो नहिं या से । भजो गुरु का नाम ।।8।।
गुरु का ध्यान धरो हिरदे में । मन को राखो थाम ।।9।।
वे दयाल तेरी दया विचारें । दम दम करें सहाम[4] ।।10।।
छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे[5] । या में नहिं आराम ।।11।।
गुरु का कहना मान पियारे । तो पावे विश्राम ।।12।।
दुख तेरा सब दूर करेंगे । देंगे अचल मुक़ाम ।।13।।
राधास्वामी कहत सुनाई । खोज करो निज नाम ।।14।।

।। शब्द दसवाँ ।।

देखो सब जग जात बहा ।। टेक ।।
देख देख मैं गति या जग की । बार बार यों वर्ण कहा ।।1।।
चारों जुग चौरासी भोगी । अति दुख पाया नर्क रहा ।।2।।
जन्म जन्म दुख पावत बीते । एक छिन कहीं न चैन लहा[6] ।।3।।
पाप पुण्य बस बिपता भोगी । नहिं सतगुरु का चरन गहा ।।4।।
अब यह देह मिली किरपा से । करो भक्ति जो कर्म दहा[7] ।।5।।

---

1. स्त्री । 2. कहावे । 3. शब्द । 4. सहायता । 5. खरीदना । 6. मिला ।
7. जलें ।

अब की चूक माफ़ नहिं होगी । नाना विधि के कष्ट सहा ।।6।।
गफ़लत छोड़ भुलाओ जग को । नाम अमल अब घोट पिया ।।7।।
मन से डरो करो गुरु सेवा । राधास्वामी भेद दिया ।।8।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

कोइ मानो रे कहन हमारी ।। टेक ।।
जो जो कहूं सुनो चित देकर । गौं[1] की कहूं तुम्हारी ।।1।।
जग के बीच बँधे तुम ऐसे । जैसे सुवना[2] नलनी[3] धारी ।।2।।
मरकट[4] सम तुम हुए अनाड़ी । मुट्ठी दीन फँसा री ।।3।।
और मीना[5] जिह्वा रस माती[6] । काँटा जिगर छिदा री ।।4।।
गज[7] सम मूरख हुए इस बन[8] में । झूठी हथनी देख बँधा री ।।5।।
क्या क्या कहूं काल अन्याई । बहुविधि तुमको फाँस लिया री ।।6।।
तुम अंजान मर्म नहिं जाना । छल बल कर इन फाँस लिया री ।।7।।
छूटन की विधि नेक न मानो । क्यों कर छूटन होय तुम्हारी ।।8।।
सतगुरु संग हुए उपकारी । उनका संग करो न स्महारी ।।9।।
वे दयाल अस जुगत लखावें । कर दें तुम छुटकारी ।।10।।
पाँच तत्व गुन तीन जेवरी[6] । काटें पल पल बंधन भारी ।।11।।
उनकी संगत करो मर्म तज । पावो तुम गति न्यारी ।।12।।
जगत जाल सब धोखा जानो । मन मूरख संग कीन्ही यारी ।।13।।
इसका संग तजो तुम छिन छिन । नहिं यह लेगा जान तुम्हारी ।।14।।
अपने घर से दूर पड़ोगे । चौरासी के धक्के खा री ।।15।।
बड़ी कुगति में जाय पड़ोगे । वहाँ से तुम को कौन निकारी ।।16।।
ता ते अब ही कहना मानो । राधास्वामी कहत विचारी ।।17।।

---

1. मतलब । 2. तोता । 3. पकड़ने की कला । 4. बन्दर । 5. मछली ।
6. मस्त । 7. हाथी । 8. संसार । 9. रस्सी ।

।। शब्द बारहवाँ ।।

अटक तू क्यों रहा जग में । भटक में क्या मिले भाई ।।1।।
खटक तू धार अब मन में । खोज सतसंग में जाई ।।2।।
विरह की आग जब भड़के । दूर कर जगत की काई ।।3।।
लगा लो लगन सतगुरु से । मिले फिर शब्द लौ लाई ।।4।।
छुटेगा जन्म और मरना । अमर पद जाय तू पाई ।।5।।
भाग तेरा जगह सोता । नाम और धाम मिल जाई ।।6।।
कहूं क्या काल जग मारा । जीव सब घेर भरमाई ।।7।।
नहीं कोई मौत से डरता । ख़ौफ जम का नहीं लाई ।।8।।
पड़े सब मोह की फाँसी । लोभ ने मार धर खाई ।।9।।
चेत कहो होय अब कैसे । गुरु के संग नहिं धाई ।।10।।
काम और क्रोध बिच बिच में । जीव से भाड़[1] झोंकवाई ।।11।।
गुरु बिन कोइ नहीं अपना । जाल यह कौन तुड़वाई ।।12।।
कुटुम्ब परिवार मतलब का । बिना धन पास नहिं आई ।।13।।
कहाँ लग कहूं इस मन को । उन्हीं से मास नुचवाई ।।14।।
गुरु और साध कहें बहु विधि । कहन उनकी न पतियाई[2] ।।15।।
मेहर बिन क्या कोई माने । कही राधास्वामी यह गाई ।।16।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

मिली नर देह यह तुम को । बनाओ काज कुछ अपना ।।1।।
पचो मत आय इस जग में । जानियो रैन का सुपना ।।2।।
देह और ग्रेह[3] सब झूठा । भर्म में काहे को खपना ।।3।।
जीव सब लोभ में भूले । काल से कोई नहीं बचना ।।4।।
तृष्णा[4] अग्नि जग जारा । पड़ा सब जीव को तपना ।।5।।
नहीं कोइ राह बचने की । जले सब नर्क की अगिना ।।6।।

---

1. भट्टी । 2. प्रतीत करना । 3. घर

जलेंगे आग में निसदिन । बहुरि[1] भोगें जनम मरना ।।7।।
भटकते वे फिरें खानी । नहीं कुछ ठीक उन लगना ।।8।।
कहूं क्या दुक्ख वह भोगें । कहन में आ नहीं सकना ।।9।।
दया कर संत और सतगुरु । बतावें नाम का जपना ।।10।।
न माने जुक्ति यह उनकी । सुरत और शब्द का गहना[2] ।।11।।
बिना सतगुरु बिना करनी । छुटे नहिं खान का फिरना ।।12।।
कहाँ लग मैं कहूँ उनको । कोई नहिं मानता कहना ।।13।।
हुये मनमुख फिरें दुख में । वचन गुरु का नहीं माना ।।14।।
पुजावें आप को जग में । गुरु की सेव नहिं करना ।।15।।
फ़िकर नहिं जीव का अपने । पड़ेगा नर्क में फुकना ।।16।।
समझ कर धार लो मन में । कहें राधास्वामी निज बचना ।।17।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना ।। टेक ।।
यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी । मन के साथ न पड़ना ।।1।।
भौजल धार बहे अति गहरी । बिन गुरु कैसे पार उतरना ।।2।।
गुरु से प्रीत करो तुम ऐसी । जस कामी कामिन संग धरना ।।3।।
संग करो चेटक[3] चित राखो । मन से गुरु के चरन पकड़ना ।।4।।
छल वल कपट छोड़ कर बरतो । गुरु के बचन समझना ।।5।।
डरते रहो काल के भय से । ख़बर नहीं कब मरना ।।6।।
स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे । पल पल नाम सुमिरना ।।7।।
यहाँ की गफ़लत बहुत सतावे । फिर आगे कुछ नहिं बन पड़ना ।।8।।
जो कुछ बने सो अभी बनाओ । फिर का कुछ न भरोसा धरना ।।9।।
जग सुख की कुछ चाह न राखो । दुख में इसके दुखी न रहना ।।10।।
दुख की घड़ी गनीमत[4] जानो । नाम गुरु का छिन छिन भजना ।।11।।

1. फिर । 2. पकड़ना । 3. चाह । 4. अच्छी, उत्तम ।

सुख में गाफ़िल[1] रहत सदा नर । मन तरंग में दम दम बहना ।।12।।
ता ते चेत करो सतसंगत । दुख सुख नदियाँ पार उतरना ।।13।।
अपना रूप लखो घट भीतर । फिर आगे को सूरत भरना ।।14।।
राधास्वामी कहें बुझाई । शब्द गुरु से जाकर मिलना ।।15।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

मन रे क्यों गुमान अब करना ।। टेक ।।
तन तो तेरा ख़ाक मिलेगा । चौरासी जा पड़ना ।।1।।
दीन गरीबी चित में धरना । काम क्रोध से बचना ।।2।।
प्रीत प्रतीत गुरु की करना । नाम रसायन घट में जरना[2] ।।3।।
मन मलीन के कहे ना चलना । गुरु का बचन हिये बिच रखना ।।4।।
यह मतिमंद गहे नहिं सरना । लोभ बढ़ाय उदर[3] को भरना ।।5।।
तुम मानो मत इसका कहना । इसके संग जगत बिच गिरना ।।6।।
इस मूरख को समझ पकड़ना । गुरु के चरन कभी न विसरना ।।7।।
गुरु का रूप नैन मैं धरना । सुरत शब्द से नभ पर चढ़ना ।।8।।
राधास्वामी नाम सुमिरना । जो वह कहें चित में धरना ।।9।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

जोड़ो री कोई सुरत नाम से ।। टेक ।।
यह तन धन कुछ काम न आवे । पड़े लड़ाई जाम[3] से ।।1।।
अब तो समय मिला अति सुन्दर । सीतल हो बच घाम[4] से ।।2।।
सुमिरन कर सेवा कर सतगुरु । मनहि[5] हटाओ काम से ।।3।।
मन इन्द्री कुछ बस कर राखो । पियो घूँट गुरु जाम[6] से ।।4।।
लगे ठिकाना मिले मुक़ामा । छूटो मन के दाम[7] से ।।5।।
भजन करो छोड़ो सब आलस । निकर चलो कलि ग्राम[8] से ।।6।।
दम दम करो बेनती गुरु से । वही निकारें तन चाम से ।।7।।

---

1. भूला हुआ। 2. बनाना। 3. यमराज। 4. संसार की तपन। 5. मन को।
6. प्याला। 7. जाल। 8. काल के देश से निकालो।

और उपाव न ऐसा कोई । रटन करो सुबह शाम से ।।8।।
प्रीत लाय नित करो साध संग । हट रहो जग के ख़ासो आम से ।।9।।
राधास्वामी कहें सुनाई । लगो जाय सतनाम से ।।10।।

।। शब्द सतारहवाँ ।।

जगत से चेतन किस विधि होय । मोह ने बाँध लिया अब मोहिं ।।1।।
बेड़ियाँ भारी पड़ती जायँ । फाँसियां करड़ी लगी आयँ ।।2।।
जाल अब चौड़े बिछ गये आय । चाट[1] अब सुख की कुछ कुछ पाय ।।3।।
दुक्ख अब पीछे होगा आय । ख़बर नहिं उसकी कौन बताय ।।4।।
पड़ेगी भारी इक दिन भीड़ । सहेगा नाना विधि की पीड़ ।।5।।
करेगा पछतावा जब बहुत । अभी तो सुनता नहिं दिन खोत ।।6।।
याद नहीं लाता अपनी मौत । रात दिन गफ़लत में पड़ा सोत ।।7।।
कहे में मन के चलता बहुत । भरे है दिन भर जग का पोत[2] ।।8।।
रात को सोता खाट बछाय । होश नहिं कल को क्या हो जाय ।।9।।
काल ने मारा कर कर ज़ेर[3] । कर्म ने खूँदा धर धर पैर ।।10।।
तमोगुण छाय गया घट माहिं । ख़बर सब भूल गया यहाँ आय ।।11।।
संत और सतगुरु रहे चिताय । बचन उन मन में नहीं समाय ।।12।।
भजन और सुमिरन दिया बिसराय । प्रीत भी उन चरनन नहिं लाय ।।13।।
कहो कस छूटे जम की घात । भोग और सोग लगे दिन रात ।।14।।
गुरु बिन कौन छुड़ावे ताय । हुआ यह क़ैदी बहु विधि आय ।।15।।
बिना सतसंग और बिन नाम । न पावे कबही अपना धाम ।।16।।
कही राधास्वामी यह गति गाय । सरन ले संत की तू जाय ।।17।।

।। शब्द अठारहवाँ ।।

कुमतिया बैरन पीछे पड़ी । मैं कैसे हटाऊँ जान ।।1।।
सतगुरु बचन न माने कबही । उन संग धरे गुमान ।।2।।

---

1. मज़ा, चसका । 2. कर, लगान । 3. नीचे, अधीन । 4. कुचला ।

काम क्रोध की सनी बुद्धि से । परखा चाहे उन का ज्ञान ।।3।।
सेवा करे न सरधा लावे । उलट करावे उनसे मान ।।4।।
अपनी गति हालत नहिं बूझे । कैसे लगे ठिकान ।।5।।
लोभ मोह की सूखी नदियाँ । ता में निस दिन रहे भरमान ।।6।।
संत मता कहो कैसे बूझे । अपनी मति के दे परमान ।।7।।
तिन से संत मौन होय बैठे । सो जिव करते अपनी हान ।।8।।
कुमति अधीन हुए सब प्रानी । क्या क्या उनका करूँ बखान ।।9।।
जिन पर मेहर पड़े आ सरना । वे पावें सतगुरु पहिचान ।।10।।
अपनी उक्ति[1] चतुरता छोड़ें । अपने को जानें अनजान ।।11।।
तब सतगुरु प्रसन्न होय कर । देवें पता निशान ।।12।।
कुमति हटाय छुड़ावें पीछा । सुरत लगावें शब्द ध्यान ।।13।।
बिना शब्द उद्धार न होगा । सब संतन यह किया बखान ।।14।।
सोई गावें राधास्वामी । जो कोइ माने सोइ सुजान ।।15।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

सोता मन कस जागे भाई । सो उपाव मैं करूँ बखान ।।1।।
तीरथ करे बर्त भी राखे । विद्या पढ़ के हुए सुजान ।।2।।
जप तप संजम बहु बिधि धारे । मौनी हुए निदान ।।3।।
अस उपाव हम बहुतक कीन्हे । तो भी यह मन जगा न आन ।।4।।
खोजत खोजत सतगुरु पाये । उन यह जुक्त कही परमान ।।5।।
सतसंग करो संत को सेवो । तन मन करो क़ुरबान ।।6।।
सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़ । चेत लगाओ अपना ध्यान ।।7।।
जागत जागत अब मन जागा । झूठा लगा जहान ।।8।।
मन की मदद मिली सूरत को । दोनों अपने महल समान[2] ।।9।।
बिना शब्द यह मन नहिं जागे । करो चाहे कोइ अनेक विधान ।।10।।

---

1. अक्ल, ख़याल । 2. समा जायें, मन ब्रह्म में समा जायें सुरत सत्पुरुष में ।

यही उपाव छाँट कर गया । और उपाय न कर परमान ।।11।।
बिरथा बैस[1] बितावें अपनी । लगे न कभी ठिकान ।।12।।
संत बिना सब भटके डोलें । बिना संत नहिं शब्द पिछान ।।13।।
शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ । तू भी सुरत लगा दे तान ।।14।।
घर पावे चौरासी छूटे । जन्म मरन की होवे हान ।।15।।
राधास्वामी कहें बुझाइ । बिना संत सब भटके खान ।।16।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

खोज री पिया को निज घर में ।। टेक ।।
जो तुम पिया से मिलना चाहो । तो भटको मत जग में ।।1।।
तीरथ बर्त कर्म आचारा । ये अटकावें मग[2] में ।।2।।
जब लग सतगुरु मिलें न पूरे । पड़े रहोगे अघ[3] में ।।3।।
नाम सुधा रस कभी न पाओ । भरमो जोनी खग[4] में ।।4।।
पंडित क़ाजी भेख शेख सब । अटक रहे डग डग[5] में ।।5।।
इन के संग पिया नहिं मिलना । पिया मिले कोइ साध समग[6] में ।।6।।
यह तौ भूले विषय बास में । भर्म धसे इन की रग रग में ।।7।।
बिना संत कोइ भेद न पावे । वे तोहि कहें अलग में ।।8।।
जब लग संत मिलें नहिं तुम को । खाय ठगौरी तू इन ठग में ।।9।।
राधास्वामी सरन गहो तो । रलो जोत जगमग में ।।10।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

गुरु कहें पुकार पुकार । समझ मन करलो सुमिरनियाँ ।।1।।
स्वाँसो स्वाँस घटे तेरी पूँजी । चली जाय यह उमरनियाँ ।।2।।
वक्त मिला यह तख़्तनशीनी । छोड़ बान[7] अब घुरबिनियाँ[8] ।।3।।

---

1. उमर । 2. रास्ता । 3. पाप । 4. पंछी । 5. क़दम क़दम । 6. संग ।
7. आदत । 8. मुरग़ी जो घूरा (कूड़ा) चुगती है ।

यह मारग अब गुरु बतावें । पकड़ गहो तुम उर[1] धनियाँ ।।4।।
शब्द संग तुम सुरत लगाओ । रहो नित्त गुरु मुजरनियाँ[2] ।।5।।
दया लेव तुम हरदम उनकी । सरन पड़ो उन चरननियाँ ।।6।।
वह तो भेद बतावें घट का । पकड़ शब्द भौ तरननियाँ ।।7।।
लागी लगन बहुरि नहिं सूझे । सुरत अजर में जरननियाँ ।।8।।
जिन जिन संग करा गुरु पूरे । छुटा जन्म और मरननियाँ ।।9।।
जगत जार तज सार समझ तू । मिटे चौरासी भरमनियाँ ।।10।।
सतसंग करो प्रीत घट धारो । देख रूप चढ़ दर्पनियाँ[3] ।।11।।
गगन गिरा[4] परखो धुन बानी । यही कमाई करननियाँ ।।12।।
पहुंचो जाय अधर में प्यारी । गाँठ खुले तब तन मनियाँ ।।13।।
या जग में कोइ सुखी न देखो । गहो गुरु के बचननियाँ ।।14।।
दुख के जाल फँसे सब मूरख । तू क्यों उन संग फँसननियाँ ।।15।।
मैं तू मोर तोर सब त्यागो । गहो राधास्वामी सरननियाँ ।।16।।

।। बचन सोलहवाँ ।।

।। चितावनी भाग तीसरा ।।

।। उपदेश सतगुरु भक्ति का ।।

।। शब्द पहिला ।।

यह तन दुर्लभ तुमने पाया । कोटि जन्म भटका जब खाया ।।1।।
अब या को बिरथा मत खोवो । चेतो छिन छिन भक्ति कमावो ।।2।।
भक्ति करो तो गुरु की करना । मारग शब्द गुरु से लेना ।।3।।
शब्द मारगी गुरु न होवे । तो झूठी गुरुवाई लेवे ।।4।।
गुरु सोई जो शब्द सनेही । शब्द बिना दूसर नहिं सेई ।।5।।

---

1. अन्तरी । 2. हाज़िर । 3. आईना, शीशा । 4. वाणी, शब्द ।

शब्द कहा मैं गगन शिखर का । शब्द कहा मैं सुन्न शहर का ।।6।।
शब्द कहा मैं भँवर डगर का । शब्द कहा मैं अगम नगर का ।।7।।
गुरु पहिचान ख़ूब मैं गाई । धोखा या में कुछ न रहाई ।।8।।
शब्द कमावे सो गुरु पूरा । उन चरनन की होजा धूरा ।।9।।
और पहिचान करो मत कोई । लक्ष[1] अलक्ष[2] न देखो सोई ।।10।।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे । शब्द कमाओ तुम तन मन से ।।11।।
अपने जीव की कुछ दया पालो । चौरासी का फेर बचा लो ।।12।।
नहिं नर्कन में अति दुख पइहो । अग्नि कुंड में छिन छिन दहिहो ।।13।।
यह सुख चार दिनों का भाई । फिर दुख सदा होय दुखदाई ।।14।।
बार बार मैं कहूँ चिताई । दया तुम्हारी मोहिं सताई ।।15।।
मेरे मन करूणा[4] अस आई । चेतो तुम गुरु होयँ सहाई ।।16।।
बिन गुरु और न पूजो कोई । दर्शन कर गुरु पद नित सेई ।।17।।
गुरु पूजा में सब की पूजा । जस समुद्र सब नदी समाजा ।।18।।
देवी देवा ईश महेशा । सूरज शेष और गौर गनेशा ।।19।।
ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा । तीन लोक और चौथा धामा ।।20।।
गुरु सेवा में सब की सेवा । रंचक[4] भर्म न मानो भेवा[5] ।।21।।
ताते बार बार समझाऊँ । गुरु की भक्ति छिन छिन गाऊँ ।।22।।
गुरुमुख होय गुरु आज्ञा बरते । गुरु बरती इक छिन में तरते ।।23।।
गुरु महिमा मैं कहाँ लग गाऊँ । गुरु समान कोइ और न पाऊँ ।।24।।
गुरु अस्तुत है सब मत माहीं । गुरु से बेमुख ठौर[6] न पाई ।।25।।
भोग बिलास हुकूमत जग की । धन और हाकिम के बस रहती ।।26।।
हाकिम सेवा तुम कस करते । धन और मान बड़ाई लेते ।।27।।
आज्ञा उसकी अस सिर धरते । खान पान निंद्रा भी तजते ।।28।।
सो धन जोड़ किया क्या भाई । जगत लाज में दिया उड़ाई ।।29।।
सो जग की गति पहिले भाखी । चार दिनां फिर है नहिं बाकी ।।30।।

---

1. गुण, लक्षण । 2. औगुण, कुलक्षण । 3. दुख देती है । 4. दया । 5. भेद । 6. जगह ।

सो धन कारण हाकिम सेवा । ऐसी करते क्या कहुं भेवा[1] ।।31।।
गुरु सेवा जो सदा सहाई । ताको एसी पीठ दिखाई ।।32।।
दिन नहिं पक्ष मास नहिं बरसा । कभी न दर्शन को मन तरसा ।।33।।
कहो कैसे तुम्हारा उद्धारा । नर्क निवास दुक्ख चौ धारा ।।34।।
उस दुख में कहो कौन सहाई । गुरु से प्रीत न करी बनाई ।।35।।
जो इसकी परतीत न लाओ । तौ मन अपना यों समझाओ ।।36।।
रोग दुक्ख नित प्रती सताई । मौत पियादे हैं यह भाई ।।37।।
मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा । वह तो करे सकल जिव हिंसा ।।38।।
यह हिंसा तुम पर भी आवे । इक दिन काल सीस पर धावे ।।39।।
उस दिन का कुछ करो उपाई । धन हाकिम कुछ काम न आई ।।40।।
कारज लेना यह है भाइ । गुरु सेवा में ख़र्च कराई ।।42।।
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का । उन पै धन है भक्ति नाम का ।।43।।
पर तेरा उपकार करावें । भूखे प्यासे को दिलवावें ।।44।।
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे । जो उनको परसन्न करावे ।।45।।
उनका खुश होना है भारी । सत्तपुरुष निज किरपा धारी ।।46।।
गुरु प्रसन्न होयँ जा ऊपर । वही जीव है सब के उपर ।।47।।
गुरु राज़ी तो करता राज़ी । कर्म काल की चले न बाज़ी[2] ।।48।।
गुरु की आन[3] सभी मिल मानें । शुकदेव नारद व्यास बखानें ।।49।।
ताते गुरु को लेव रिझाई । औरन रीझे कुछ न भलाई ।।50।।
गुरु प्रसन्न और सब रूठे । तो भी उसका रोम न टूटे ।।51।।
औरन को प्रसन्न जो करता । गुरु से द्रोह[4] घात जो रखता ।।52।।
गुरु की निन्दा से नहिं डरता । गुरु को मानुष रूप समझता ।।53।।
सो नरकी जानो अपघाती[5] । उस संग दूत करें उतपाती ।।54।।
याते[6] समझो बूझो भाई । गुरु को प्रसन्न करो बनाई ।।55।।

---

1. भेद । 2. चाल । 3. पक्ष । 4. बैर । 5. अपने जीव की घात करने वाला । 6. इससे ।

कुल कुटुम्ब कुछ काम न आई । और बिरादरी करे न सहाई ।।56।।
यह तो चार दिना के संगी । इन निज स्वारथ में बुधि रंगी ।।57।।
लज्जा डर इन का मत करो । गुरु भक्ति में अब चित धरो ।।58।।
गुरु सहायता यहाँ वहाँ करें । उनसे करता भी कुछ डरे ।।59।।
कुल कुटुम्ब से कुछ नहिं सरे । इन के संग नर्क में पड़े ।।60।।
कार्य मात्र बरतो इन माहीं । बहुत मोह में बहु दुख पाई ।।61।।
ताते सतसंग सतगुरु सेवो । नाम पदारथ दम दम लेवो ।।62।।
गुरु समान और नाम समाना । तीसर सतसंग और न जाना ।।63।।
इन से सब कारज होयँ पूरे । कर्म काट पहुंचो घर मूरे[1] ।।64।।
यह कहना मेरा अब मानो । नहीं अंत को पड़े पछतानो ।।65।।
धन और मान काम नहिं आवे । हुकुम हाकिमी सभी नसावे ।।66।।
ता ते कुछ भक्ति कर लीजे । यह भी सुफल कमाई कीजे ।।67।।

।। शब्द दूसरा ।।

भेद आरती सुन सखि मो से । प्रगट बनाय कहूं अब तो से ।।1।।
सरधा थाल हाथ लो पहिले । सम[2] दम जोत प्रेम घी मेले ।।2।।
जगत भोग से कर बैरागा । काम क्रोध तब छिन में त्यागा ।।3।।
सुरत शब्द का गावो गीत । गुरु चरनन में जोड़ो चीत ।।4।।
दया करें तब राधास्वामी । इक दिन देवें पद निज नामी ।।5।।
दृष्टि जोड़ कर आरत फेरो । तन मन अपने दोनों घेरो ।।6।।
पूरन पद को करो पयाना[4] । सत्तनाम सब सुरत समाना ।।7।।
आरत गाई प्रेम भक्ति से । मन को मोड़ा शब्द जुक्ति से ।।8।।

।। शब्द तीसरा ।।

सोचत कहा सखि करले आरत । फिर नहिं ऐसा समय परापत ।।1।।

---

1. मूल । 2. मन का रोकना । 3. इन्द्रियों का रोकना । 4. चलने की तैयारी ।

कहा[1] करूँ सजनी[2] मैं बिन बल । तन मन मेरा है अति चंचल ।।2।।
कर धीरज मैं करूं उपाई । सतसंग कर स्वामी ढिंग[3] जाई ।।3।।
वे दयाल जब किरपा धारें । मन चंचल को छिन में मारें ।।4।।
शब्द थाल देवें स्रुत हाथा । प्रेम जोत जगवावें साथा ।।5।।
जब आरत तू करे बनाई । तबही मुक्ति पदारथ पाई ।।6।।
यह निश्चय कर साँची जानो । तुम स्वामी को समरथ मानो ।।7।।
भोग लगाय लेव परसादी । चरनामृत ले मन को साधी ।।8।।
राधास्वामी जप निज नामा । सत्तलोक पावे तब धामा ।।9।।

।। बचन सतारवाँ ।।

।। चितावनी भेखों को ।।

भाग चौथा

।। शब्द पहिला ।।

तुम साध कहावत कैसे । मैं पूछूँ तुम से ऐसे ।।1।।
मान न छोड़ो क्रोध न छोड़ो । कुटिल[4] बचन नहिं सहते ।।2।।
कोमल चित्त न कोमल बोली । दया भाव नहिं लेसे[5] ।।3।।
आप पुजावत काहु न पूजत । मांग मांग धन जोड़त पैसे ।।4।।
काम न छूटा लोभ न छूटा । मोह ईर्षा डारत पीसे ।।5।।
भजन भक्ति अभ्यास न करते । कभी न छूटो तुम इस जम से ।।6।।
घर छोड़ा उद्यम[3] पुनि छोड़ा । मेहनत कोई न करते ।।7।।
देश विदेश फिरो झख मारत । कफ़न[7] पहिन क्यों लाज लगाते ।।8।।
दंभ[8] कपट छल हिरदे बसता । गिरही[9] को आचार दिखाते ।।9।।
चौके से हम रोटी खावें । रोटी पूरी भेद समझते ।।10।।
बुद्धि विचार न गुरु मिला पूरा । गिरही की भय लज्जा करते ।।11।।

---

1. क्या। 2. सखी। 3. निकट। 4. सख्त, कड़वा। 5. ज़रा सा भी।
6. रोजगार। 7. कफ़नी, साधुओं का कपड़ा। 8. फरेब। 9. गृहस्थी।

साध चरन अठशठ[1] से उत्तम । भूमि पवित्र जहाँ पग धरते ।।12।।
तुम तो कर्म भर्म में भटके । साध नाम अपना क्यों धरते ।।13।।
भेख बनाय जगत को ठगते । काल ठगौरी[2] डाली तुम पै ।।14।।
अब कुछ समझ करो सतसंगत । डरो ज़रा नर्कन के दुख से ।।15।।
बिरह भाव बैराग सम्हालो । भक्ति करो और भागो जग से ।।16।।
मन को मारो इन्द्री बाँधो । सुरत लगाओ शब्द अधर से ।।17।।
तब चित्त कोमल बुद्धि निरमल । आप होय छूटो मन ठग से ।।18।।
अब क्या कहूं कहा मैं बहुतक । अधिकारी माने इक तुक[3] से ।।19।।
जो निलज्ज कपटी जग मारे । वह क्या जानें भूत पशू से ।।20।।
राधास्वामी कहत सुनाई । मानेंगे कोइ हंस बचन से ।।21।।

।। शब्द दूसरा ।।

शब्द की करी न कोई कमाई । फिर मर्म कहाँ से पाई ।।1।।
यह शब्द अधर से आता । तू सुन सुन कर क्या गाता ।।2।।
अंतर में सुरत लगाता । तौ भेद अधर का पाता ।।3।।
यह कहना सभी भुलाता । बिन शब्द न और सुहाता ।।4।।
तू शब्द न दृढ़ कर गहता । ता ते मन छिन छिन बहता ।।5।।
जो शब्द हाथ तेरे आता । तो होता मन रस माता[4] ।।6।।
बिन शब्द न और कमाता । इच्छा सब दूर बहाता ।।7।।
कोइ महिमा शब्द सुनाता । तू उस से प्रेम बढ़ाता ।।8।।
तैं क़दर शब्द नहिं जानी । तेरी बातें झूठ कहानी ।।9।।
जो शब्द का रसिया होता । तो मान प्रतिष्ठा खोता ।।10।।
तेरी दशा और ही होती । तेरी सुरत न कबही बहती ।।11।।
अब बात बना तू बहुती । पर शब्द कमाई न होती ।।12।।
जिन शब्द कमाया भाई । उन सुरत अगम रस पाई ।।13।।

---

1. अड़सठ तीर्थ । 2. ठगाई या फ़रेब । 3. कड़ी बचन । 4. मतवाला ।

सब जगत लगा उन फीका । इक शब्द सभी का टीका[1] ।।14।।
राधास्वामी गायें यह ठीका । जिन मानी तिन रस चीखा ।।15।।

।। बचन अट्ठारहवाँ ।।

उपदेश सतगुरु भक्ति का

।। शब्द पहिला ।।

गुरु करो खोज कर भाई । बिन गुरु कोइ राह न पाई ।।1।।
जग डूबा भौजल धारा । कोइ मिला न काढ़नहारा[2] ।।2।।
जग पंडित भेख बिचारे । क्या जोगी ज्ञानी हारे ।।3।।
संतन से प्रीत न धारी । क्यों उतरें भौजल पारी ।।4।।
तप तीरथ बर्त पचे रे । पढ़ विद्या मान भरे रे ।।5।।
भक्ति रस नेक न पाया । भक्तों की सरन न आया ।।6।।
भक्ति का भेद न जाना । गुरु को सतपुरुष न माना ।।7।।
गुरु सब को पार लगावें । जो जो उन चरन ध्यावें ।।8।।
गुरु से तू बेमुख फिरता । मन के नित सन्मुख रहता ।।9।।
करमों में पचता खपता । नर देही बाद[3] गँवाता ।।10।।
अब चेतो समझो भाई । कर प्रीत गुरु संग आई ।।11।।
कह कर राधास्वामी गाई । करनी कर मिले बड़ाई ।।12।।

।। शब्द दूसरा ।।

गुरु की कर हरदम पूजा । गुरु समान कोई देव न दूजा ।।1।।
गुरु चरन सेव नित करिये । तन मन गुरु आगे धरिये ।।2।।
गुरु दर्श करो आँखन से । गुरु बचन सुनो सरवन से ।।3।।
गुरु के बल मन को मारो । गुरु के बल काल संघारो[4] ।।4।।
गुरु ब्रह्म रूप धर आये । गुरु पारब्रह्म गति गाये ।।5।।

---

1. सब से बड़ा । 2. निकालने वाला । 3. निष्फल । 4. नाश करो ।

गुरु सत्तनाम पद खोला । गुरु अलख अगम को तोला ।।6।।
गुरु रूप धरा राधास्वामी । गुरु से बड़ नहीं अनामी ।।7।।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु ध्यान धरो तुम मन में । गुरु नाम सुमिर छिन छिन में ।।1।।
गुरु ही गुरु गावो भाई । गुरु ही फिर होयँ सहाई ।।2।।
जितने पद ऊँचे नीचे । गुरु बिन कोइ नाहीं पहूँचे ।।3।।
गुरु ही घट भेद लखाया । गुरु ही सुन शिखर चढ़ाया ।।4।।
महसुन्न भी गुरु दिखलाई । गुरु भँवरगुफा दरसाई ।।5।।
गुरु सत्तलोक पहुंचाया । गुरु अलख अगम परसाया ।।6।।
गुरु ही सब भेद बखाना । गुरु से राधास्वामी जाना ।।7।।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु चरन पकड़ दृढ़ भाई । गुरु का संग करो बनाई ।।1।।
गुरु बचन करो आधारा । गुरु दर्श निहारो सारा ।।2।।
गुरु की गति अगम अपारा । गुरु अस्तुति करो सँवारा ।।3।।
गुरु राखो हिरदे माहीं । तो मिटे काल परछाहीं[1] ।।4।।
भोगों की आसा त्यागो । मन्सा तज जग से भागो ।।5।।
आसा गुरु शब्द लगाओ । मन्सा गुरु पद में लाओ ।।6।।
आसा और मनसा मोड़ी । मन इन्द्री गुरु में जोड़ी ।।7।।
दिन रात रहे गुरु ध्याना । गुरु बिन कोई और न जाना ।।8।।
गुरु स्वाँस गिरास न बिसरे । तू पल पल गा गुरु जस[2] रे ।।9।।
गुरु हैं हितकारी तेरे । गुरु बिन कोइ मित्र न है रे ।।10।।
गुरु फंद छुड़ावे जम के । गुरु मर्म लखावें सम के ।।11।।
भौजल से पार उतारें । छिन छिन में तुझे सँवारें ।।12।।
ज्यों निज सेवे कच्छा[3] । त्यों गुरु राखैं तेरी पच्छा[4] ।।13।।

---

1. छाया । 2. महिमा । 3. कछुआ । 4. पक्ष ।

गुरु सम और नहीं को रक्षक । कुल कुटुम्ब सब जानो तक्षक[1] ।।14।।
ताते गुरु को कभी न छोड़ो । कनक कामिनी से मन मोड़ो ।।15।।
गुरु की भक्ति सदा सुखदाई । गुरु बिन मन बुद्धि भी दुखदाई ।।16।।
गुरु विश्वास चित्त में धरो । गुरु परशाद जगत से तरो ।।17।।
मान मोह मद गुरु सब हरें । काम क्रोध भी तुझ से डरें ।।18।।
लोभ लहर सब देयँ निकारी । माया ममता बाज़ी हारी ।।19।।
तुझ से जीत सके नहिं कोई । गुरु का बल जो मन में होई ।।20।।
गुरु से पावे नाम रसायन । घट से भागे तृष्णा डायन ।।21।।
गुरु चरनामृत गुरु परशादी । प्रीत सहित ले मिटे उपाधी[2] ।।22।।
गुरु पै तन मन दोनों वारो । हिरदे में गुरु रूप निहारो ।।23।।
गुरु हैं दाता गुरु हैं दानी । गुरु आराधो[3] छिन छिन प्रानी ।।24।।
सत्तपुरुष सतनाम गुरु हैं । अलख रूप और अगम गुरु हैं ।।25।।
राधास्वामी गुरु का नाम । निज पद पाय करो बिसराम ।।26।।
गुरु सब बिधि हैं अंतरजामी । गावो ध्यावो राधास्वामी ।।27।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सतगुरु का नाम पुकारो । सतगुरु को हियरे धारो ।।1।।
सतगुरु का करो भरोसा । फिर करो न कुछ अफ़सोसा ।।2।।
सतगुरु तोहि छिन छिन पोसें[4] । हँगता[5] तेरी सब विधि खोसें[6] ।।3।।
तू कर उन चरनन होशें । सतगुरु से मत कर रोसें[7] ।।4।।
सतगुरु गति अब सुन मो से । कहि जात न रंचक[8] मुँह से ।।5।।
दसवें में खैचें नौ से । फिर एक करें तोहि दो से ।।6।।
शब्दा रस तोहि पिलावें । जमपुर से फेर बचावें ।।7।।
घर अगम तोहि दरसावें । मारग सब तोहि लखावें ।।8।।

---

1. सांप । 2. झगड़ा । 3. पूजा करो । 4. रक्षा करें । 5. अहंकार ।
6. दूर करें । 7. हंसी । 8. थोड़ी ।

जो संगत उनकी करते । सो जग से कभी न डरते ।।9।।
जो बेमुख गुरु से फिरते । सो भौ सागर में गिरते ।।10।।
चौरासी चक्कर खावें । फिर जन्म जन्म दुख पावें ।।11।।
तुम सोचो अपने मन में । कोइ नाहिं गुरु सम जग में ।।12।।
जिन जिन गुरु भक्ति धारी । सो पहुंचे निज दरबारी ।।13।।
गुरु भक्ति न जिन को प्यारी । तिन जीती बाज़ी हारी ।।14।।
गुरु चरनन आशिक़ होना । यह बात बड़ी क्या कहना ।।15।।
गुरु लगें जिसे अति प्यारे । तिन कुल कुटुम्ब सब तारे ।।16।।
धन मात पिता उन जन के । जिन भक्ति करी कुल तज के ।।17।।
जिन सही मलामत[1] जग की । तिन मिली रास[2] सुख घर की ।।18।।
जो कुल लाज जगत से डरे । गुरु भक्ति से वह पुनि गिरे ।।19।।
सूरा रण से कभी न टरे । सती सदा मुरदे संग जरे ।।20।।
रण छोड़े कायर कहलाय । सती फिरे भंगी घर जाय ।।21।।
पपिहा अपना पन[3] नहिं त्यागे । जले पतंगा जोती आगे ।।22।।
मछली को जैसे जल धारा । गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा ।।23।।
जिन पर बख़्शिश गुरु की होई । गुरुमुख ऐसा बिरला कोई ।।24।।
राधास्वामी कही बनाय । सेवक को गुरु दिया जगाय ।।25।।

।। शब्द छठा ।।

सतगुरु कहें करो तुम सोई । मन के कहे चलो मत कोई ।।1।।
यह भौ में गोते दिलवावे । सतगुरु से बेमुख करवावे ।।2।।
काल चक्र में डाल घुमावे । मोह जाल में बहुत फँसावे ।।3।।
मित्र न जानो बैरी पूरा । गुरु भक्ति से डारे दूरा ।।4।।
दारा सुत सम्पति परिवारा । डारे काम क्रोध की धारा ।।5।।
इन्द्री भोग बास[4] भरमावे । भक्ति विवेक नाश करवावे ।।6।।
सतगुरु प्रीतम मिलें न जब तक । कभी न छूटें मन के कौतुक[5] ।।7।।

---

1. निन्दा। 2. भंडार, ढेरी। 3. प्रण, अहद। 4. बासना। 5. खेल।

छल बल मन के कहँ लग बरनूँ । ऋषि मुनी कोइ जाने न मरमूँ ।।8।।
ता ते सतगुरु खोजो निज के । बिन सतगुरु कोइ चले न बच के ।।9।।
सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई । मन मलीन को धोवें वोही ।।10।।
मेरा भाग उदय हुआ भारी । सतगुरु की मैं हुइ अति प्यारी ।।11।।
जगत जीव कहा[1] जानें महिमा । वेद कतेब न जानें मरमा ।।12।।
ज्ञानी जोगी सब थक हारे । सतगुरु महिमा कोई न विचारे ।।13।।
ता ते सतगुरु सरन पुकारूँ । आरत उनकी नित प्रति धारूँ ।।14।।
आरत करूँ प्रेम से जबही । कुल परिवार तरे मेरा तब ही ।।15।।
आरत बिधि अब करूँ सिंगारा । राधास्वामी मेरे हुए दयारा ।।16।।
राधास्वामी परम दयाल । कर आरत उन हुआ निहाल ।।17।।

।। शब्द सातवाँ ।।

अरे मन रंग जा सतगुरु प्रीत । होय मत और किसी का मीत ।।1।।
यही अब धारो हित कर चीत । विना गुरु जानो सभी अनीत[2] ।।2।।
गुरु से लेना जा उन सीत[3] । तजो सब कलमल रहो अतीत ।।3।।
मार लो मन को यही पलीत[5] । सुरत में धरो शब्द की रीत ।।4।।
चढ़ो तुम नभ में यह जग जीत । गहो अब संतन की यह नीत[6] ।।5।।
गुरु का नाम सम्हारो चीत । लगाओ छिन छिन उनसे प्रीत ।।6।।
गायें राधास्वामी यह निज गीत । तजो सब छल बल ममता तीत[7] ।।7।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु की मौज रहो तुम धार । गुरु की रज़ा[8] सम्हालो यार ।।1।।
गुरु जो करें सो हितकर जान । गुरु जो कहें सो चित धर मान ।।2।।
शुकर की करना समझ विचार । सुक्ख दुख देंगे हिकमत धार ।।3।।
ताढ़ और मार करें सोइ प्यार । भोग सब इन्द्री रोग निहार ।।4।।
कहूं क्या दम दम शुकर गुज़ार । बिना उन और न करनेहार ।।5।।

---

1. क्या कहे । 2. अन्याय । 3. सीत प्रशाद । 4. माया से परे । 5. मलीन । 6. नियम । 7. माया । 8. भाना ।

दुखी चित से न हो दुख लार । सुखी होना नहीं सुख जार ।।6।।
बिसारो मत उन्हें हर बार । दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार ।।7।।
गुरु और शब्द ये दोउ मीत । नहीं कोइ और इन धर चीत ।।8।।
यही सतपुरुष यही करतार । लगावें तोहि इक दिन पार ।।9।।
बिना उन कोइ नहीं संसार । देव मन सूरत उन पर बार ।।10।।
करें वह नित्त तेरी सार[1] । तेरे तन मन के हैं रखबार ।।11।।
शुकर कर राख हिरदे धार । मिटावें दुक्ख सबही झाड़ ।।12।।
करें क्या मन तेरा नाकार । नहीं तू छोड़ता विष धार ।।13।।
भोग में गिरें बरम्बार । न माने कहन उन की सार ।।14।।
इसी से मिले तुझ को दंड । नहीं तू मानता मतिमंद ।।15।।
सहो अब पड़े जैसी आय । करो फ़र्याद गुरु से जाय ।।16।।
पकड़ फिर उन्हीं को तू धाय । करेंगे वोही तेरी सहाय ।।17।।
बिना उन और नहीं दरबार । रहो उन चरन में हुशियार ।।18।।
गुनह तुम किये दिन और रात । गुरु की कुछ न मानी बात ।।19।।
इसी से भोगते दुख घात । बचावेंगे वही फिर तात ।।20।।
रहो राधास्वामी के तुम साथ । लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ ।।21।।

।। शब्द नावाँ ।।

आज सखी काज करो कुछ अपना । गुरु दर्श तको छोड़ो जग सुपना ।।1।।
नहिं पछितइहो सिर धुन रोइहो । जम की नगरिया अनेक दुख सहिहो ।।
मानो बचन सुनो धर कान । सुरत लगाय सुनो धुन तान ।।3।।
नहिं मर मर जन्मो चारों खान । मान मान अब मेरी कही मान ।।4।।
गुरु के चरन का कर तू ध्यान । शान[2] गुमान छोड़ अभिमान ।।5।।
गुरु बिन तेरा को न सहाई । नाम बिना को[3] पार लगाई ।।6।।
आज काज कर गुरु संग भाज । सूना पड़ा तेरा तख्त और ताज ।।7।।

---

1. खबरदारी। 2. शेखी, अकड़। 3. कौन।

शब्द पिछान सुरत निज साज[1] । छोड़ जगत और कुल की लाज ।।8।।
मन और सुरत गुरु संग माँज । नहिं फिर खुलि है तेरा पाज[2] ।।9।।
कूड़ पटक ले गुरु का छाज[3] । भोग बिलास छोड़ यह खाज[4] ।।10।।
राधास्वामी कही बनाई । जो नहिं मानो भुग्तो भाई ।।11।।

।। शब्द दसवाँ ।।

गुरु दरियाव चलो स्रुत सजनी । मन की लहर सम्हार ।।1।।
चित से चेत खेत को जीतो । यह औसर नहिं बारम्बार ।।2।।
तेरा भाग बढ़ा गुरु किरपा । न्हाओ अमृत धार ।।3।।
मोती चुनो हंस गति धारो । चढ़ो अंड[5] के पार ।।4।।
खंड खंड ब्रहमंड पसारा । निरखो नैन निहार ।।5।।
कँवल पार दल द्वार खोल कर । पहूंची सुन्न मंझार ।।6।।
दीपक हाथ चली घर अपने । मेटत घट आँधियार ।।7।।
धुन धधकार आदि की आई । पकड़ी ज्यों मक[6] तार ।।8।।
समुन्द पार सेता पद न्यारी । सुनत भँवर गुँजार[7] ।।9।।
सुन्न शब्द सतशब्द अधारी । पाया गुरु दरबार ।।10।।
सतगुरु प्रेम मगन लौ लाई । बिसरी सब संसार ।।11।।
सार शब्द जहँ तेज अनामी । नाम रूप से न्यारा ।।12।।
संत धाम निज अलख अगम पर । स्रुत पाया सिंगार ।।13।।
राधास्वामी अचल मुकामी । मैं उनके बलिहार ।।14।।
यही आरती करूं गुरु की । धसी वार से पार ।।15।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

नैन कंवल गुरु ताक अरे मन भँवर ।।1।।
तू निर्मल सीतल होय सुन अनहद घोरा ।।2।।
तेरा भाग बढ़ेगा भाई कर घट में दौरा ।।3।।

---

1. सँवार । 2. कलई । 3. छज्ज । 4. खुजली का रोग । 5. सहस्रदल कँवल ।
6. मकड़ी । 7. शब्द, आवाज़ ।

त्रिकुटी में मेघा गरजे, तू होजा मोरा ।।4।।
स्रुत तोड़ा नभ का द्वारा, वहाँ करती शोरा ।।5।।
स्रुत सेत पदम पर आई, गया काल का ज़ोरा ।।6।।
राधास्वामी रूप दिखाया, मन सूरत मोड़ा ।।7।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

सतसंग करत बहुत दिन बीते । अब तो छोड़ पुरानी बान[1] ।।1।।
कब लग करो कुटिलता गुरु से । अब तो गुरु को लो पहिचान ।।2।।
गुरु को तुम मानुष मत जानो । वे हैं सत्तुरुष की जान ।।3।।
जैसे तैसे मन समझाओ । धर परतीत करो उन ध्यान ।।4।।
दया मेहर से बचन सुनावें । वे हैं पूरन पुरुष अनाम ।।5।।
धरी देह मानुष की गुरु ने । ज्यों त्यों तेरा करें कल्यान ।।6।।
सेवा कर पूजा कर उनकी । उनही को गुरु नानक जान ।।7।।
वोही कबीर वोही सतनामा । सब संतन को वहीं पिछान ।।8।।
तेरा काज उन्ही से होगा । मत भटके तू तज अभिमान ।।9।।
चूके मत औसर अब पाया । बढ़कर इन से कोइ न मिलान ।।10।।
जो अब के तू गुरु से चूका । तो भरमेगा चारों खान ।।11।।
फिर ऐसे गुरु मिलें न कबही । मान मान तू अबही मान ।।12।।
पढ़ पढ़ पोथी गा गा साखी । क्यों मन में तू धरता मान ।।13।।
इसी मान ने ख्वार[2] किया है । यही मान अब करता हान ।।14।।
ता ते प्यारे कहूं बुझाई । यह इस्तिगना[2] भली न जान ।।15।।
जल्दी करो कपट को छोड़ो । सरधा भाव बढाओ आन ।।16।।
इतने पर मन कहा न माने । तो फिर अपनी तू ही जान ।।17।।
सिर पर तेरे हुकुम काल का । ताँ ते मन तेरा नहिं मान ।।18।।
एक बात जानी हम भाई । है तू बढ़का बे-ईमान ।।19।।

---

1. बेपर्वाही । 2. बेपर्वाही ।

लगा रहेंगा संग में गुरु के । सहज सहज शायद मन मान ।।20।।
राधास्वामी कहैं बुझाई । ऐसे जीव होयँ हैरान ।।21।।

।। बचन उन्नीसवाँ ।।

।। उपदेश गुरु और शब्द ।।

अथवा

।। नाम भक्ति का ।।

।।शब्द पहिला ।।

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूं ।।1।।
गुरु तो पूरा ढूँढ़ तेरे भले की कहूं ।।2।।
शब्द रता गुरु देख तेरे भले की कहूं ।।3।।
तिस गुरु सेवा धार तेरे भले की कहूं ।।4।।
गुरु चरनामृत पी तेरे भले की कहूं ।।5।।
गुरु परशादी खाव तेरे भले की कहूं ।।6।।
गुरु आरत करले तेरे भले की कहूं ।।7।।
तन मन भेंट चढ़ाव तेरे भले की कहूं ।।8।।
बचन गुरु के मान तेरे भले की कहूं ।।9।।
गुरु को कर प्रसन्न तेरे भले की कहूं ।।10।।
नित्त भजन कर नेम तेरे भले की कहूं ।।11।।
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूं ।।12।।
दुक्ख न दे तू काय तेरे भले की कहूं ।।13।।
बचन तान मत मार तेरे भले की कहूं ।।14।।
कड़ुवा तू मत बोल तेरे भले की कहूं ।।15।।
सब को सुख पहुंचाव तेरे भले की कहूं ।।16।।
नाम अमीरस पी तेरे भले की कहूं ।।17।।

सील क्षिमाचित राख तेरे भले की कहूं ।।18।।
संतोष विवेक विचार तेरे भले की कहूं ।।19।।
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूं ।।20।।
लोभ मोह को टार तेरे भले की कहूं ।।21।।
दीन गरीबी धार तेरे भले की कहूं ।।22।।
संतों से कर प्रीत तेरे भले की कहूं ।।23।।
भोजन बहुत न खाव तेरे भले की कहूं ।।24।।
सतसंग में तू जाग तेरे भले की कहूं ।।25।।
मान बढ़ाई छोड़ तेरे भले की कहूं ।।26।।
भोग वासना जार तेरे भले की कहूं ।।27।।
संम दम हिरदे धार तेरे भले की कहूं ।।28।।
बैराग भक्ति न छोड़ तेरे भले की कहूं ।।29।।
गुरु स्वरूप धर ध्यान तेरे भले की कहूं ।।30।।
गुरु ही का जप नाम तेरे भले की कहूं ।।31।।
गुरु अस्तुत कर नित्त तेरे भले की कहूं ।।32।।
गुरु से प्रेम बढ़ाव तेरे भले की कहूं ।।33।।
तीरथ मूरत भर्म तेरे भले की कहूं ।।34।।
ज़ात अभिमान बिसार तेरे भले की कहूं ।।35।।
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूं ।।36।।
वक्त गुरु को मान तेरे भले की कहूं ।।37।।
तीरथ गुरु के चरन तेरे भले की कहूं ।।38।।
गुरु की सेवा बर्त तेरे भले की कहूं ।।39।।
विद्या गुरु उपदेश तेरे भले की कहूं ।।40।।
और विद्या पाखंड तेरे भले की कहूं ।।41।।
लीक[1] पुरानी छोड़ तेरे भले की कहूं ।।42।।

---

1. मनमति ।

जो गुरु कहैं सो मान तेरे भले की कहूं ।।43।।
मारग ज्ञान न धार तेरे भले की कहूं ।।44।।
भक्ति पंथ सम्हार तेरे भले की कहूं ।।45।।
सुरत शब्द मति ले तेरे भले की कहूं ।।46।।
सुरत चढ़ा नभ माहिं तेरे भले की कहूं ।।47।।
गगन तिरकुटी जाव तेरे भले की कहूं ।।48।।
दसवें द्वार समाव तेरे भले की कहूं ।।49।।
भँवरगुफा चढ़ समाव तेरे भले की कहूं ।।50।।
सत्तलोक धस जाव तेरे भले की कहूं ।।51।।
अलख अगम को पाव तेरे भले की कहूं ।।52।।
राधास्वामी नाम धियाव तेरे भले की कहूं ।।53।।
भटक अटक सब तोड़ तेरे भले की कहूं ।।54।।
टेक पक्ष गुरु बाँध[1] तेरे भले की कहूं ।।55।।

।। शब्द दूसरा ।।

गुरु का ध्यान कर प्यारे । बिना इस के नहीं छुटना ।।1।।
नाम के रंग में रंग जा । मिले तोहि धाम निज अपना ।।2।।
गुरु की सरन दृढ़ कर ले । बिना इस काज नहिं सरना[2] ।।3।।
लाभ और मान क्यों चाहें । पड़ेगा फिर तुझे देना ।।4।।
करम जो जो करेंगा तू । वही फिर भोगना भरना ।।5।।
जगत के जाल से ज्यों त्यों । हटो मरदानगी[3] करना ।।6।।
जिन्हों ने मार मन डाला । उन्ही को सूरमा कहना ।।7।।
बड़ा बैरी यह मन घट में । इसी का जीतना कठिना ।।8।।
पड़ो तुम इसही के पीछे । और सबही जतन तजना ।।9।।

---

1. गुरु पर निश्चय रखकर, गुरु का पक्ष ले । 2. होना । 3. बहादुरी ।

गुरु की प्रीत कर पहिले । बहुरि घट शब्द को सुनना ।।10।।
मान दो बात यह मेरी । करें मत और कुछ जतना ।।11।।
हार जब जाय मन तुझ से । चढ़ा दे सुर्त को गगना ।।12।।
और सब काम जग झूठा । त्याग दे इसही को गहना[1] ।।13।।
कहैं राधास्वामी समझाई । गहो अब नाम की सरना ।।14।।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु बिन कौन उबारेगा । नाम बिन कौन सुधारेगा ।।1।।
भजन बिन को निस्तारेगा[2] । सरन बिन कौन सँवारेगा ।।2।।
बिरह बिन कौन पुकारेगा । दर्द बिन कौन चितारेगा ।।3।।
शब्द बिन कौन सिंगारेगा । संग बिन कौन निहारेगा ।।4।।
काल को कौन गारेगा[1] । कर्म किस भाँति हारेगा ।।5।।
संत कोइ आन मारेगा । भक्त कोइ दोऊ जारेगा ।।6।।
काम संतसंग सारेगा[4] । जोई तन मन बारेगा ।।7।।
सोई निज नाम धारेगा । जगत को आन तारेगा ।।8।।
जीव इक इक उबारेगा । मान मद मोह टारेगा ।।9।।
सरन सतगुरु सम्हारेगा[5] । सोई वह धाम पावेगा ।।10।।
राधास्वामी जो सरावेगा[5] । सोई वह धाम पावेगा ।।11।।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु बिन कभी न उतरे पार । नाम बिन कभी न होय उधार ।।1।।
संग बिन कभी न पावे सार । प्रेम बिन कभी न पावे यार ।।2।।
जुक्ति बिन चढ़े न गगन मँझार । दया बिन खुले न बज्र किवाड़ ।।3।।
सुरत बिन होय न शब्द सम्हार । निरत बिन होय न धुन आधार ।।4।।
गुरु से करना पहिले प्यार । नाम रस पीना मन को मार ।।5।।
काल घर जान तजा संसार । दयाल घर आई जन्म सुधार ।।6।।

---

1. ग्रहण करना, पकड़ना । 2. उद्धार करेगा । 3. निकालेगा । 4. बनावेगा । 5. स्तुति करेगा ।

संत गति पाई गुरु की लार । शब्द संग मिली मिला पद चार ।।7।।
कहा राधास्वामी अगम विचार । सुने और माने करे निरवार ।।8।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सुरत धुन धार री, तज भोग निकाम ।। टेक ।।
दारा सुत धन मान बड़ाई । यह सब थोथा काम ।।1।।
लोक प्रतिष्ठा जगत बड़ाई । इन में नहीं आराम ।।2।।
सतगुरु भक्ति नाम रस पीवे । तौ पावें तू अविचल धाम ।।3।।
तन मन साथ करो अब संगत । तब मिले नाम सतनाम ।।4।।
सुरत चढ़ाय चलो ऊपर को । होत यहाँ धुन आठों जाम ।।5।।
नर की देह सुफल होय तेरी । मिले शब्द बिसराम ।।6।।
स्वाँस नक़ारा कूँच पुकारी । बजे सुबह से शाम ।।7।।
राधास्वामी नाव लगाई । भौ उतरो बिन दाम ।।8।।

।। शब्द छठवाँ ।।

सुरत सुन बात री । तेरा धनी बसे आकाश।।1।।
तजो संग जार री । तू देख पिया परकाश ।।2।।
चलो गुरु की लार[1] री । तू पावे अजर निवास।।3।।
गहो सरन कोई साध री । जो मिले शब्द घर बास।।4।।
तन पिंजरा यह काल का । क्यों करें पराई आस ।।5।।
दस इन्द्री के भोग की । तेरे पड़ी गले में फाँस।।6।।
नौ द्वारन में बँध रही । अब चैन नहीं इक स्वाँस।।7।।
दसवीं खिड़की खोल री । कर परम बिलास ।।8।।
सतगुरु पूरे कह रहे । तू मान बचन विश्वास।।9।।
राधास्वामी नाम भज । होयँ कर्म सब नाश ।।10।।

---

1. संग।

।। शब्द सातवाँ ।।

सुरत क्यों हुई दीवानी । तेरी बिरथा बैस[1] बिहानी[2] ।।1।।
जग भोग रोग दिन बीते । तू जाय दोऊ कर रीते[3] ।।2।।
जमपुर होय धूमा धामी । तू पड़े चौरासी खानी ।।3।।
वहाँ कौन सहाई तेरा । तू बचन मान अब मेरा ।।4।।
कर गुरु से हित चित लाई । सुन मान बचन गुरु भाई ।।5।।
सूरत जा शब्द मिलाई । कर निस दिन यही कमाई ।।6।।
तेरा भाग बढ़त नित जावे । फिर काल न तोहि सतावे ।।7।।
रस अगम शब्द का पावे । मन भोग सहज छुट जावे ।।8।।
चढ़ चढ़ नभ ऊपर धावे । दल सहस कँवल गति पावे ।।9।।
तिल मोड़े बिजली चमके । सुन शब्द अनाहद धमके ।।10।।
फिर चाँद सुरज दोऊ दरसें । सुखमन मन सूरत परसें ।।11।।
गुरु मूरत अजब दिखाई । शोभा कुछ कही न जाई ।।12।।
नर रूप दिखावें तब ही । मन खैंच चढ़ावें जब ही ।।13।।
दे मदद बढ़ावें आगे । मन जुग जुग सोया जागे ।।14।।
चढ़ बंक चले त्रिकुटी में । फिर सुन्न तके सरवर में ।।15।।
जहँ शोभा हंसन भारी । वह भूमि लगे अति प्यारी ।।16।।
धुन किंगरी बजे करारी । सुन सुरत हुई मतवारी ।।17।।
फिर लगे महांसुन तारी । जहँ दीप अचिंत सम्हारी ।।18।।
लख भँवर गुफा हुई न्यारी । जहँ सेत सूर उजियारी ।।19।।
चौथे पद करी तयारी । धुन बीन सुनी अति भारी ।।20।।
लख अलख अगम्म लखा री । हुई राधास्वामी रूप निहारी ।।21।।
महिमा उनकी क्या कहुं भारी । मुझ गरीब की बहुत सुधारी ।।22।।

।। शब्द आठवाँ ।।

बिरहनी गुरु की सरन सम्हार ।। टेक ।।
या जग में कोइ मीत[4] न तेरा । करो नाम आधार[5] ।।1।।

---

1. उमर, आयु। 2. ब्यतीत हो गई। 3. दोनों हाथ खाली। 4. मित्र। 5. आसरा।

चेतन डोरी शब्द लगाओ । खुले घाट और द्वार ।।2।।
काम क्रोध की कीचड़ छूटे । न्हावो निरमली धार ।।3।।
गगन मंडल में अनहद गाजे । सुन सुन करो अधार ।।4।।
बिना संत कोई अंत न पावे । चलो संत की लार ।।5।।
राधास्वामी हित उपदेशी । कहते हेला मार[1] ।।6।।
जो समझे सो सार समावे । पावे भेद अपार ।।7।।

।। शब्द नवाँ ।।

सुरत संग सतगुरु धोवत मन को ।। टेक ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत छिन छिन । भेट चढ़ावत तन को ।।1।।
शुद्ध होय शब्दारस पावत । चढ़त उलट घट घन को ।।2।।
इन्द्री पाँच प्रकिर्त पचीसों । दूर हटावत तीनों गुन को ।।3।।
धुन रस पाय हुई मतवारी । कहत न काहू जन को ।।4।।
जिन यह भेद स्वाद नहिं जाना । कहूं कहा अब तिन को ।।5।।
पंडित ज्ञानी भेख भुलाने । तीरथ बरत करें करमन को ।।6।।
यह रस सार शब्द क्यों पावें । जाल बिछावें नित भरमन को ।।7।।
कौन कहे उनको समझाई । सुनें न संत बचन को ।।8।।
षट शास्त्र और सिमृत पुराना । लीक पीट छोड़ें नहिं पन को ।।9।।
शिव और शक्ति गनेश मनावें । कौन कहे अब उनको ।।10।।
विष्णु सूर और देव अनेका । पुजवावें सबहिन को ।।11।।
गुरु भक्ति संतन की महिमा । नेक न जानें वह इस गुन को ।।12।।
हित कर कहें कोई नहि माने । कौन गरज़ अब हम को ।।13।।
राधास्वामी भेद बतावें । पकड़ रहो तुम अब घट धुन को ।।14।।

।। शब्द दसवाँ ।

गुरु घाट चलो मन भाई । सुरत चदरिया लेव धुवाई ।।1।।

---

1. ऊँची आवाज़ से ।

सेवा साबन दर्शन मंजन । प्रेम का नीर भराई ।।2।।
बचन की रेह[1] भाव की भाठी । विरह की अगिन जराई ।।3।।
भक्ति नदी जहँ निस दिन बहती । मल मल ता में मैल गँवाई ।।4।।
उज्जवल निर्मल हुई सुरत जब । ओढ़त मन अब अति हरखाई ।।5।।
चला गगन पर मिला शब्द संग । चढ़त चढ़त त्रिकुटी ढिग आई ।।6।।
सुन्न शिखर चढ़ हंस रूप धर । महासुन्न छवि औरहि पाई ।।7।।
भँवरगुफा पर सोहं सोहं । राधास्वामी चरनन जाय समाई ।।8।।
अलख अगम को देखत देखत । राधास्वामी चरनन जाय समाई ।।9।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

तू देख उलट कर मन में । क्यों फिरे भटकता बन में ।।1।।
गुरु कहें तोहि छिन छिन में । तू सिमर नाम निस दिन में ।।2।।
गुरु मूरत धार अँदर में । मन चंचल रोक मँदर में ।।3।।
फिर सुरत लगा सुन्न-दर[3] में । तू धस जा ब्रह्म रन्ध्र[4] में ।।4।।
चुप बैठो गगन कँदर[5] में । मन खैंच धरो धुन धर[6] में ।।5।।
तुम सुरत जमाओ सुन में । भरमो मत तीनों गुन में ।।6।।
क्यों पड़ो जाय औगुन में । मत गिरो जाय दोषन में ।।7।।
तेरा जन्म गया धोखन में । अब खोज करो शब्दन में ।।8।।
नित कर बिलास संतन में । मत पचो मान और धन में ।।9।।
मन इन्द्री बस कर तन में । तू लग रहो इसी जतन में ।।10।।
बस आवें यह कोई दिन में । फिर सुनो नाद सरवन में ।।11।।
फिर देर न होय जागन में । तू मगन रहो रागन में ।।12।।
अब गिर राधास्वामी चरनन में । तेरा काज करें पल छिन में ।।13।।

---

1. कपड़ा धोने की मिट्टी । 2. पहिनता । 3. सुन्न का दर यानी द्वारा । 4. छिद्र, द्वार । 5. गुफ़ा । 6. धुन की धार ।

।। शब्द बारहवाँ ।।

सुन रे मन अनहद बैन । घट में मठ[1] निरखो नैन ।।1।।
गुरु शब्द गहो उपदेशा । रस पी पी करो प्रवेशा ।।2।।
चक्कर अब फेरो आई । धुन शब्द तभी खुल जाई ।।3।।
बिन नाम नहीं गति पाई । सतगुरु यों[2] कहैं बुझाई ।।4।।
सतसंग अब करो बनाई । गुरु गहो आन सरनाई ।।5।।
जग भोग रोग सम जानो । धन माल चाह दुख मानो ।।6।।
भौ सागर फाट[3] अपारा । डूबे सब उसकी धारा ।।7।।
गुरु बिन कौइ पार न पाया । बिन नाम न धीरज आया ।।8।।
अब सुरत सम्हालो आई । जो शब्द हाथ लग जाई ।।9।।
मन ईन्द्री तन भरमाई । दुख सुख में गये भुलाई ।।10।।
हौं हौं कर[4] जन्म बिताई । करता की बूझ न आई ।।11।।
अब सोच करो तुम मन में । कुछ रोको मन निज तन में ।।12।।
राधास्वामी कहत बुझाई । तब सुरत शब्द घर पाई ।।13।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

गुरु कहें जगत सब अंधा । कोई गहै न घट की संधा[5] ।।1।।
बाहर-मुख भरमें सारे । अंतर-मुख शब्द न धारे ।।2।।
मन जगत भोग रस बंधा । नित करे कर्म बस धंधा ।।3।।
फँस मरे काल के फंदा । अब हुआ जीव अति गंदा ।।4।।
गुरु कहैं नित्त समझाइ । कर खोज शब्द घट जाई ।।5।।
यह सुने न गुरु के बैना । कस खुलैं हिये के नैना ।।6।।
बिरला कोइ जिव अधिकारी । गुरु बचन करे आधारी ।।7।।
जो बचन सम्हारे गुरु के । मन फंद लगावे छल के ।।8।।

---

1. मन्दिर । 2. इस प्रकार । 3. चौड़ाई । 4. अहंकार ।
5. निशान यानी शब्द ।

ज्यों त्यों कर जीव भुलावे । काल अपने खेल खिलावे ।।9।।
गुरु भक्ति न करने पावे । बहु भाँति उपाधि लगावे ।।10।।
कभी मित्र होय भरमावे । कभी वैरी बन धमकावे ।।11।।
कभी रोगन माहिं झुमावे । नाना बिधि जाल बिछावे ।।12।।
शब्दा रस लेन न पावे । यों जीव सदा दुख पावे ।।13।।
गुरु मेहर करें जिस जन पर । सो बचे शब्द धुन सुन कर ।।14।।
तब गहे शब्द रस जाँची । फिर जले न जग की आँची[1] ।।15।।
सब बात लगी अब काँची । गुरु भक्ति मिली अब साँची ।।16।।
राधास्वामी की लीन्ही सरनी । सो जीव लगे भौ तरनी[2] ।।17।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

सुरत नहिं चढ़े कहा करिये । पिंड नहिं तजे झुरत रहिये ।।1।।
मन कहा न करे कुमति भरिये । इन्द्री रस भोग अधिक जरिये ।।2।।
गुन तीन कर्म बस नित डरिये । दुख सुख संतापे बहु सहिये ।।3।।
कोई और उपाव नहीं चहिये । गुरु चरन सरन में सिर धरिये ।।4।।
जब नाम अमीरस घट भरिये । स्रुत खैंच गगन को अब चढ़िये ।।5।।
संतन मत साँचा यह कहिये । स्रुत शब्द लखावें सो गहिये ।।6।।
मन चढ़े गगन पर जा रहिये । स्रुत लगे शब्द से रस पइये ।।7।।
सुन जाँच करो और घर अइये । फिर मौज करो आनंद लहिये[3] ।।8।।
गुरु नाम रटो तब मन हरिये । सतलोक चलो कारज सरिये ।।9।।
घर अलख अगम जाकर लखिये । राधास्वामी चरन में फिर पकिये ।।10।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

गुरु तारेंगे हम जानी । तू सुरत काहे बौरानी[4] ।।1।।
दृढ़ पकड़ो शब्द निशानी । तेरी काल करे नहिं हानि ।।2।।

---

1. अग्नि । 2. संसार से पार होने लगे । 3. लो । 4. बांवरी, पागल ।

तू होजा शब्द दीवानी । मत सुनो और की बानी ।।3।।
सब छोड़ो भर्म कहानी । गुरु का मत लो पहिचानी ।।4।।
चढ़ बैठो अगम ठिकानी । राधास्वामी कहत बखानी ।।5।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

गुरु क्यों न सम्हार । तेरा नर तन बीता भर्म में ।।1।।
दारा सुत परिवार । ठगियन संग क्यों खोवही ।।2।।
क्यों नहिं करत विचार । जग मिथ्या यह है सही ।।3।।
मन है बड़ा गँवार । मोह रहा कर प्यार । छूटे कैसे जार से ।।4।।
बिन गुरु चले न दाव । थाके सभी उपाय कर ।।5।।
नाम सम्हारो मीत । धीरज धर घट में रहो ।।6।।
मौज निहारो पीव । जो करिहैं सो सब भला ।।7।।
तेरी बुद्धि मलीन । मन चंचल घाटा गहे ।।8।।
तू नहिं जाने भेद । भर्म जाल में फँस रहा ।।9।।
या ते कर विश्वास । गुरु बिन और न दूसरा ।।10।।
गुरु का घाट निहार । सुरत बाँध निज शब्द में ।।11।।
शब्द बिना कोइ नाहिं । जो काढ़े इस फंद से ।।12।।
ता ते शब्द किवाड़ । खोलो गुरु कुँजी पकड़ ।।13।।
महल माहीं धस जाय । गुरुमुख को रोकें नहीं ।।14।।
मनमुख भटका खाय । चढ़ उतरे गिर गिर पड़े ।।15।।
ठीका[1] ठौर न पाय । क्यों कर गुरु समझावहीं ।।16।।
मन मत छोड़े नाहिं । गुरु को दोष लगावहीं ।।17।।
गुरु जो कहें उपाय । उस में मन बांधे नहीं ।।18।।
क्योंकर होय निबाह । जम धक्के खावत फिरे ।।19।।
राधास्वामी कहत सुनाय । मन बैरी को मीत कर ।।20।।

---

1. असली ठिकाना ।

मन मारो तन को जारो । इन्द्रि रस भोग बिसारो ।।1।।
तुम निद्रा आलस टारो । गुरु के संग शब्द पुकारो ।।2।।
सतसंग तुम नित ही धारो । गुरु दर्शन नित्त निहारो ।।3।।
मन से क्यों दम दम हारो । जग आसा दूर निकारो ।।4।।
यह भर्म सभी अब टारो । फिर परखो तुम घर न्यारो ।।5।।
खोलो चढ़ गगन किवाड़ो । धस बैठो दसवें द्वारो ।।6।।
फिर महासुन्न होय पारो । तहँ देखो भँवर उजारो[1] ।।7।।
सतनाम मिला अति प्यारो । जा अलख अगम को धारो ।।8।।
राधास्वामी धाम अपारो । दिया सतगुरु परम उदारो ।।9।।

।। शब्द अट्ठारहवाँ ।।

धाम[2] अपने चलो भाई । पराये देश क्यों रहना ।।1।।
काम अपना करो जाइ । पराये काम नहिं फँसना ।।2।।
नाम गुरु का सम्हाले चल । यही है दाम गँठ बँधना ।।3।।
जगत का संग सब मैला । धुला ले मान यह कहना ।।4।।
भोग संसार कोई दिन के । सहज में त्यागते चलना ।।5।।
सरन सतगुरु गहो दृढ़ कर । करो यह काज पिल[3] रहना ।।6।।
सुरत मन थाम अब घट में । पकड़ धुन ध्यान धर गगना ।।7।।
फँसे तुम जाल में भारी । बिना इस जुक्ति नहि खुलना ।।8।।
गुरु अब दया कर कहते । मान यह बात चित धरना ।।9।।
भटक में क्यों उमर खोते । कहीं नहिं ठीक तुम लगना ।10।।
बसो तुम आय नैनन में । सिमट कर एक यहँ होना ।।11।।
दुई यहँ दूर हो जावे । दृष्टि जोत में धरना ।।12।।
श्याम तज सेत को गहना । सुरत को तान धुन सुनना ।।13।।

---

1. उजाला, रौशनी । 2. स्थान । 3. तकड़े होकर लगना ।

बंक के द्वार धस बैठो । तिरकुटी जाय कर लेना ।।14।।
सुन्न चढ़ जा धसो भाई । सुरत से मानसर न्हाना ।।15।।
महासुन चौक अँधियारा । वहाँ से जा गुफा बसना ।।16।।
लोक चौथे चलो सज[1] के । गहो[2] वहँ जाय धुन बीना ।।17।।
अलख और अगम के पारा । अजब इक महल दिखलाना ।।18।।
वहीं राधास्वामी से मिलना । हुआ मन आज अति मगना ।।19।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

समझ कर चल जगत खोटा । मान मद त्याग मन मोटा ।।1।।
खुदी[3] को छोड़ नहिं टोटा[4] । भक्ति कर खाय क्यों सोटा ।।2।।
करो सतसंग गुरु केरा[5] । सुरत से लो गगन झोटा[6] ।।3।।
मगन होय बैठ फिर घट में । फ़तह कर तिरकुटी कोटा[7] ।।4।।
कुटुम्ब संग चार दिन नाता । मोह संग क्यों पड़ा लोटा ।।5।।
करो कुछ भजन अंतर में । गहो गुरु चरन की ओटा[8] ।।6।।
गुरु बिन कोइ नहीं संगी । उन्हीं सँग बैठ मन घोटा[9] ।।7।।
करेंगे काज वह तेरा । उतारें पाप की पोटा[10] ।।8।।
मिले तब नाम की रंगत । शब्द की सेज जा लोटा ।।9।।
भाग तेरा बड़ा जागा । हुआ मन अर्श का तोता ।।10।।
उठा फिर जाग इक छिन में । जुगन जुग से पड़ा सोता ।।11।।
जगत को देख तू मथ कर । नहीं कुछ सार है थोथा ।।12।।
उलट कर दिल मथो अपना । अमोलक वक्त क्यों खोता ।।13।।
गुरु ने अब करी किरपा । दिया अब काल को गोता ।।14।।
कहें राधास्वामी यह तुम को । चलो सतलोक दूँ न्योता[12] ।।15।।

---

1. त्यार हो कर । 2. पकड़ो । 3. अहंकार । 4. हानि । 5. का । 6. झोका झूले का । 7. क़िला । 8. सरन । 9. रगड़ा । 10. बोझ । 11. विचार कर, बिलो कर । 12. बुलावा ।

।। शब्द बीसवाँ ।।

अरे मन देख कहाँ संसार । झूठे भर्म हुआ बीमार ।।1।।
भरे तेरे मन में सभी विकार । जतन से इनको दूर निकार ।।2।।
होय फिर झूठा जगत असार[1] । गहो फिर गुरु के चरन सम्हार ।।3।।
मिले तब उन से नाम अपार । देख फिर घट में मोक्ष दुवार ।।4।।
चलो फिर शब्द विचार विचार । पाओ इक शब्द सार का सार ।।5।।
पड़े क्यों भटको नैनन बार । झाँक तिल खिड़की उतरो पार ।।6।।
गुरु से लेना जुक्ति यार । गुरु बिन नहीं खुले यह द्वार ।।7।।
कमाना जुक्ति तुम कर प्यार । लगाना सुरत सहज मन मार ।।8।।
चले फिर सूरत धुन की लार । चुए जहँ पल पल अमृत धार ।।9।।
नाम रस पियो रहो हुशियार । ऋद्धि और सिद्धि रहें तेरे द्वार ।।10।।
करो मत उनको अंगीकार । वहाँ से आगे धरो पियार ।।11।।
चलो और देखो घट का सार । पहुंचना राधास्वामी के दरबार ।।12।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

अब बही सुरत मँझधार । गुरु बिन कौन लगावे पार ।।1।।
जकड़ कर पकड़ा इन संसार । नाम बिन कौन करे निरवार ।।2।।
नाम का किया न कुछ आधार । गुरु संग किया न अब के प्यार ।।3।।
कर्म का बहुत उठाया भार[2] । काल ने खाया सब को झाड़ ।।4।।
साध कोइ किया न अपना यार । देह में किया बहुत अहंकार ।।5।।
कुमति बस भरमें बारम्बार । सुमति का किया न नेक विचार ।।6।।
देह संग रही न कुछ हुशियार । हुई अब ग़ाफ़िल भोगन लार ।।7।।
बिछाया जग में मन ने जार[3] । पड़ी अब मन के क़ाबू हार ।।8।।
कहैं राधास्वामी तोहि पुकार । पकड़ अब चरन सम्हार सम्हार ।।9।।

---

1. थोथा । 2. बोझ । 3. जाल ।

।। बचन बीसवाँ ।।

।। उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का ।।

।। शब्द पहिला ।।

चलो री सखी आज पिया से मिलाऊँ । तन मन धन की प्रीत छुड़ाऊँ ।।1।।
पुत्र कलित्र[1] जाल छुटकाऊँ । सुन्न मंडल धुन अजब सुनाऊँ ।।2।।
गगन तख़्त पर जाय बिठाऊँ । तीन लोक का राज दिलाऊँ ।।3।।
तिरबेनी तीरथ परसाऊँ । मन माधो[2] से खूंट[3] छुड़ाऊँ ।।4।।
काल चक्र से तुरत बचाऊँ । कर्म काट निज घर पहुंचाऊँ ।।5।।
महासुन्न और भँवरगुफ़ा से । सत्तपुरुष दीदार कराऊँ ।।6।।
दीन[4] दुरबीन पुरुष इक ऐसी । अलख अगम के पार समाऊँ ।।7।।
राधास्वामी पद हम जाना । कहन सुनन का लगा ठिकाना ।।8।।

।। शब्द दूसरा ।।

जागो री सुरत अब देर न करो । चालो री सुरत अब गगन चढ़ो ।।1।।
भागो री सुरत अब पिया से मिलो । लागो री सुरत अब शब्द रलो ।।2।।
ताको री सुरत अब निरत[5] करो । झाँको री सुरत अब मूरत लखो ।।3।।
न्हाओ री सुरत और नीर भरो । धाओ री सुरत और ध्यान धरो ।।4।।
गाओ री सुरत और गवन[6] करो । भोगो री सुरत सुख सहज बरो[7] ।।5।।
झँझरी निरख फिर नाम भजो । बंक छोड़ धुन गगन गहो ।।6।।
सुन्न तजो महासुन्न रहो । भँवरगुफा पर जाय अड़ो ।।7।।
सत्तलोक सतनाम रसो[8] । अलख अगम के पार बसो ।।8।।
राधास्वामी राधास्वामी रटन करो । बहुत कहा अब ख़तम करो ।।9।।

।। शब्द तीसरा ।।

भक्ति अब करो मेरे भाई । प्रीत अब धरो मेरे भाई ।।1।।
अजब यह औसर पाई । मिले अब राधास्वामी आई ।।2।।

---

1. स्त्री । 2. जिसका झुकाव माया की तरफ़ हो । 3. पल्ला, दामन । 4. दी । 5. भीतर के दृश्य देखो । 6. यात्रा । 7. पिया का । 8. भीगो ।

सेवा दर्शन बाड़[1] धराई। पौद अब शब्द खिलाई॥3॥
सुरत शमशेर[2] चलाई। काल सिर काट गिराई॥4॥
धमक अब सुन्न समाई। चमक जहँ चन्द्र दिखाई॥5॥
श्याम तज सेत मिलाई। हेत कर नेत[4] घर आई॥6॥
महासुन तार मिलाई। भँवर का द्वार तुड़ाई॥7॥
शब्द पद जाय समाई। अलख और अगम सराई[8]॥8॥
राधास्वामी अगम सुनाई। सरन अब पूरी पाई॥9॥

॥ शब्द चौथा ॥

चेतो रे जम जाल बिछाया। काल कुल चक्र चलाया॥1॥
सरन गहो सतगुरु केरी[6]। बचे चौरासी फेरी॥2॥
उलट कर घट में आवो। सुई के द्वार समावो॥3॥
पकड़ मन खैंचो तानी। सुनो फिर अनहद बानी॥4॥
जोत की गहो निशानी। निरंजन रूप पहिचानी॥5॥
बंक चढ़ त्रिकुटी फोड़ी। सुन्न में आतम जोड़ी॥6॥
काल की हद्द छुड़ानी। दयाल पद लिया अगवानी[7]॥7॥
संत संग नाता जोड़ा। गगन का नाका[8] तोड़ा॥8॥
सुरत का घोड़ा दौड़ा। निरत का चाबुक छोड़ा॥9॥
सुरत का बान चलाया। भँवर का चक्र फिराया॥10॥
शब्द से शब्द समाया। परम पद अपना पाया॥11॥
बीन धुन अजब सुनाई। सुरत जहँ दीन तनाई॥12॥
मिला अब प्रीतम प्यारा। सुरत मत रूप निहारा॥13॥
अलख का लखा उजाला। अगम पद जाय सम्हाला॥14॥
राधास्वामी कीन्ह निहाला। सीस उन चरनन डाला॥15॥

---

1. रोक। 2. तलवार। 3. प्रेम। 4. दसवाँ द्वार। 5. महिमा गाई।
6. की। 7. आगे का। 8. हद, सीमा।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

भजन कर मगन रहो मन में ।। टेक ।।
जो जो चोर भजन के प्रानी । सो सो दुक्ख सहें ।।1।।
आलस नींद सतावे उनको । नित नित भर्म बहें ।।2।।
काम क्रोध के धक्के खावें । लोभ नदी में डूब मरें ।।3।।
गुरु संग प्रीत करें नहिं पूरी । नाम न डोर गहें ।।4।।
तृष्णा अग्नि जलें निस बासर । नर्कन माहिं पड़ें ।।5।।
संतन साथ विरोध बड़ावें । उलटी बात कहें ।।6।।
सतसंग महिमा मूल न जानें । भेड़ चाल में नित्त पचें ।।7।।
धन और मान भोग रस चाहें । रोग सोग में आन फसें ।।8।।
भाग हीन मत हीन पराणी । नर देही बरबाद करें ।।9।।
ऐसी दशा माहिं नित बरतें । हम क्योंकर समझाय सकें ।।10।।
साध गुरु का कहा न मानें । मनमत अपनी ठानठनें[1] ।।11।।
खर[2] कूकर सम वे नर जानो । बिरथा उदर भरें ।।12।।
जमपुर जाय बहुत पछतावें । व्हाँ फिर उनकी कौन सुने ।।13।।
जन्म जन्म चौरासी भोगें । यह शरीर फिर नाहिं धरें ।।14।।
दुर्लभ देह मिली यह औसर । ऐसी कर जो बात बने ।।15।।
सतगुरु सरन पकड़ ले अबकी । तो सब काज सरें[3] ।।16।।
हित का बचन दया कर बोलें । तू नहिं कान सुने ।।17।।
अंधा बहरा फिरे जगत में । कुल कुटुम्ब तेरी हानि करें ।।18।।
कर सतसंग मान यह कहना । कान आँख फिर दोऊ खुलें ।।19।।
देखे घट में जोत उजाला । सुने गगन में अजब धुनें ।।20।।
सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे । हीरे मोती लाल चुने ।।21।।
महासुन्न में सुरत चढ़ावे । तब सतगुरु तेरे संग चलें ।।22।।

---

1. हठ करके रखते है। 2. गधा। 3. बनें।

भँवरगुफा की बंसी बाजी । महाकाल भी सीस धुने[1] ।।23।।
अब चढ़ गई पुरुष दरबारा । वहाँ जाय धुन बीन गुने ।।24।।
ले दुरबीन चली आगे को । लख अगम का भेद भने[2] ।।25।।
य्हाँ से आगे चली उमँग से । तब राधास्वामी चरन मिलें ।।26।।
मिला अधार पार घर पाया । लीला यहाँ की कहे न बने ।।27।।

।। शब्द छठवाँ ।।

कोइ सुनो हमारी बात । कोइ चलो हमारे साथ ।।1।।
क्यों सहो काल की घात । जम धर धर मारे लात ।।2।।
तुम चढ़ो गगन की बाट । तो खुले अधर का पाट[3] ।।3।।
घट बाँधो दृढ़ कर ठाट । छूटे यह औघट घाट[4] ।।4।।
शब्द रस भरो सुरत के माट[5] । बंक चढ़ खोलो सुखमन घाट ।।5।।
नाम की मिली अपूरब[6] चाट । अब सोऊँ बिछाये खाट ।।6।।
चेतन की जड़ से खोली साँट[7] । उलट मन कला खाय ज्यों नाट[8] ।।7।।
मानसर देखा चौड़ा फ़ाट । गया फिर परदा सुन का फाट[10] ।।8।।
काल की डारी गर्दन काट । कर्म की खुल गई भारी आँट[11] ।।9।।
सुन्न का लिया अमी रस बाँट । शब्द की खुली हिये में हाट ।।10।।
मोह मद हो गये बारह बाट[12] । मिले अब सतगुरु मेरे तात[13] ।।11।।
बाल ज्यों पावे पित और मात । कहूँ क्या खोल यह विख्यात ।।12।।
अब चले न माया घात । झड़ पड़ी वृक्ष ज्यों पात ।।13।।
कर्म की कीन्ही बाज़ी मात । लखी जाय सुन में धुन की भाँत[14] ।।14।।
टूट गया पिंड से मेरा नात । दिखाई गुरुने अचरज क्रान्त[15] ।।15।।
पाइ अब मैंने ऐसी शांत । अब रही न कोई भ्रांत[16] ।।16।।
गुरु करी प्रेम की दात । सुरत अब हुई शब्द की ज़ात ।।17।।

---

1. सिर पटके। 2. वर्णन करती है। 3. पट, किवाड़। 4. उल्टा घाट। 5. घड़ा। 6. अचरज। 7. पेंच, लपेट। 8. नट। 9. पाट, चौड़ाई। 10. फट गया। 11. गिरह, गाँठ। 12. नष्ट। 13. प्यारे। 14. छवि। 15. प्रकाश। 16. भ्रम।

सुरत रहे लागी दिन और रात । शब्द रस अब नहिं छोड़ा जात ।।18।।
गुरु का दम दम अब गुन गात । अमर पद पाया छूटा गात[1] ।।19।।
नाम धुन चली अधर से आत । अर्श[2] का चरख़ा डाला कात ।।20।।
राधास्वामी धरा सीस पर हाथ । मैं तजूँ न उनका साथ ।।21।।

।। शब्द सातवाँ ।।

नाम धुन सुनो, शब्द धुन गुनो[3] ।
गगन चढ़ चलो, प्रेम लौ लाय ।।1।।
गुरु सँग करो, साध संग रलो ।
चेत कर रहो, सदा चित लाय ।।2।।
बाँध मन धरो, सरन गुरु तको ।
चरन गहि[4] चखो, अगम रस आये ।।3।।
धीर पुनि गहो, सील घर रहो ।
क्रोध को दहो, शान्त घर आय ।।4।।
काल कुल दलो, दयाल पद चलो ।
मगन होय रहो, परम पद पाय ।।5।।
घाट घट खुले, बाट तब चले ।
द्वार तिल धसे, श्याम पद पाय ।।6।।
सेत पहिचान, जोत लख आन ।
सुखमना जान, बंक धस जाय ।।7।।
संख धुन मिले, सुरत फिर पिले[5] ।
भेद तब खुले, नाद धुन गाय ।।8।।
सुन्न चढ़ आय, मानसर न्हाय ।
हंस गति लाय, चन्द्र में धाय ।।9।।

---

1. तन । 2. आसमान । 3. विचारो । 4. पकड़ कर । 5. इकट्ठी होवे ।

खोज कर चली, महासुन मिली।
पाय निज गली, विहंग[1] हो जाय ।।10।।
भँवर गढ़ तोड़, बाँसरी घोर।
सोहं का शोर, सुना रस खाय ।।11।।
पाय पद चार, पुरुष घर प्यार।
बीन धुन सार, सुनी निज आय ।।12।।
अलख घर मिला, अगम गुल[2] खिला।
चाल धुर चला, लिया सब काज बनाय ।।13।।
एक पद रहा, गुप्त सो कहा।
सीस अब धरा, चरन राधास्वामी जाय ।।14।।

।। शब्द आठवाँ ।।

खोल री किवड़ियाँ, चढ़ो री अटरियाँ।
सुरत नटरियाँ, करो शब्द सँग रलियाँ ।।1।।
पावो री मरमियाँ, छुटे री मरनियाँ।
जन्म सुफलियाँ, झाँको री निरत गुरु गलियाँ ।।2।।
धावो री धरनियाँ[4], गहो री सरनियाँ।
होवो री मगनियाँ, भइलो[5] नाम दिवनियाँ ।।3।।
खोजो री अमनियाँ[6], टले री जमनियाँ[7]।
छुटे री गुननियाँ[8],राधास्वामी शब्द जुगनियाँ[9] ।।4।।

।। शब्द नवाँ ।।

लोभ री खुवनियाँ[10], काम री दलनियाँ।
क्रोध री दगनियाँ[11], मन संतोष मिलनियाँ ।।1।।

---

1. पक्षी। 2. फूल। 3. विलास। 4. संसारी सुरत। 5. होवो। 6. निर्मल, शुद्ध। 7. जमराज। 8. गुनावन। 9. योग। 10. खो देना। 11. जलाना।

काटो री मलनियाँ[1], चढ़ो री गगनियाँ।
जाय री तपनियाँ, पकड़ो गुरु चरनियाँ।।2।।
हौंमें री टलनियाँ, भाजत[2] गुननियाँ[3]।
बढ़े री लगनियाँ, रहो निस बास जगनिया।।3।।
गावो री गुननियाँ,[4] धावो री धुननियाँ[5]।
बुझे री अगिनियाँ, राधास्वामी शान्ति दिवनियाँ[6]।।4।।

।। शब्द दसवाँ ।।

गुरु कहे खोल कर भाई। लग शब्द अनाहद जाई।।1।।
बिन शब्द उपाव न दूजा। काया का छुटे न कूज़ा[7]।।2।।
घर में घर गुरु दिखलावें। धुन शब्द पाँच बतलावें।।3।।
धुन में अब सुरत लगावो। इस घर से उस घर जावो।।4।।
वह घर है अगम अपारा। दसवें के पार निहारा।।5।।
दस द्वारा घट चढ़ खोलो। सत शब्द अधर पै तोलो।।6।।
बिन मेहर गुरु नहिं पावे। बिन शब्द हाथ नहिं आवे।।7।।
सुर्त खैंच चढ़ावो गगनी। धुन शब्द सुनो यह करनी।।8।।
मन चंचल थिर न रहावे। चित निर्मल कस होय आवे।।9।।
सुर्त शब्द कमाई करना। सब जतन दूर अब धरना।।10।।
निश्चय दृढ़ इस पर धरना। आलस कर कभी न फिरना।।11।।
यह सार सार सब गाया। संतन मत भाख सुनाया।।12।।
राधास्वामी भेद लखाया। सुन मान सार समझाया।।13।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

चढ़ झाँको गगन झँझरिया। धस देखो श्याम सुन्दरिया[8]।।1।।
फिर तको जोत झिलिमिलिया। मध मान मोह दल मलिया[9]।।2।।

---

1. मैल। 2. भागे। 3. तीनों गुन। 4. महिमा। 5. धुन को पकड़ कर चढ़ो। 6. देता है। 7. बरतन। 8. तीसरा तिल। 9. मिटा दिया।

सब दूर होयँ कलमलिया[1]। धुन शब्द सुरत जा रलिया[2]।।3।।
त्रिकुटी चढ़ देख कँवलिया। धुन परखो सुन्न मँडलिया।।4।।
तब सुरत होय निर्मलिया। तुम धारो यही अमलिया[3]।।5।।
भागे फिर माया छलिया। सुर्त पकड़ा शब्द अटलिया[4]।।6।।
यह अगम भेद अब मिलिया। राधास्वामी कहन सम्हलिया।।7।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

घुमर[5] चल सुरत घोर सुन भारी। अरी सतगुरु संत पियारी।।1।।
जग रहना है दिनचारी[6]। क्यों भार उठावो भारी।।2।।
गुरु कहें पुकार पुकारी। धुन संग करो चल यारी।।3।।
ममता सब झाड़ निकारी। सुर्त अगम देश पग धारी।।4।।
यह काम नहीं संसारी। कोई गुरुमुख बूझ सम्हारी।।5।।
मनमुख सब बाज़ी हारी। सतसंग कर छुटे विकारी।।6।।
इक नाम सार सब खारी। तू होजा नाम अधारी।।7।।
यह जुक्ति बताई न्यारी। नहिं वेद कतेब विचारी।।8।।
अब मानो बात हमारी। ग़फ़लत तज हो हुशियारी।।9।।
कामादिक काढ़ निकारी। फिर न्हावो सीतल धारी।।10।।
मन माया दोनों मारी। तब काल करम दोउ हारी।।11।।
फिर मुरत करे असवारी। सतगुरु के महल सिधारी।।12।।
तू अगम पुरुष की नारी। सब की अब हुई दुलारी।।13।।
सतगुरु संग प्रेम बढ़ा री। देखे घट शब्द उजारी।।14।।
सरबर[7] की धारा जारी। राधास्वामी कह पुकारी।।15।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

चढ़ सुरत गगन की घाटी। क्यों जले भरम की भाठी।।1।।

---

1. काल का मैल। 2. रल मिल गई। 3. अभ्यास। 4. निश्चल। 5. घूम कर। 6. आयु की चार अवस्था-लड़कपन, जवानी, अधेड़, बुड़ापा। 7. मानसरोवर।

क्यों चले काल की बाटी[1] । तू खोल कपट की टाटी[2] ।।2।।
तुझे पड़ी बिषय रस चाटी । तू रले एक दिन माटी ।।3।।
सौदा कर सतगुरु हाटी[3] । चल खोलो घट की टाटी ।।4।।
अब बाँध सुरत संग ठाठी । तब छूटे कर्म प्रपाटी[4] ।।5।।
फिर खोलो चढ़ कर साँटी[5] । नभ चढ़ जा खोल कपाटी ।।6।।
घट देखो चौक सपाटी[6] । जग छूटा हुई उचाटी[7] ।।7।।
मन माना छोड़ लपाटी[8] । मैं मारा काल झपाटी[9] ।।8।।
घट बली जोत की लाटी[10] । मैं राधास्वामी दर की भाटी[11] ।।9।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

मन घोटो घट में लाई । मन आसा सब मिट जाई ।।1।।
धुन शब्द सुनो गगनाई । सुर्त लगे होय मगनाई ।।2।।
चंचलता चित्त भगाई । निर्मलता मिलि सफ़ाई ।।3।।
भोगों की आस छुटाई । सुमिरन मन अधिक लगाई ।।4।।
मल बास[12] हृदे[13] से जाई । अमृत रस पिया अघाइ ।।5।।
महिमा कुछ कही न जाई । मन मारा सुरत समाई ।।6।।
घट अनहद घोर बजाई । गुरु सतगुरु लीन रिझाई ।।7।।
घट भान उदय होय आई । चन्दा की जोत जगाई ।।8।।
संतन मत कहूँ बड़ाई । श्रुति सिमृति सभी लजाई ।।9।।
आरत की बात चलाई । फिर सामां सब ले आई ।।10।।
गुरु आगे धरे बनाई । गुरु मेहर करी अति भाई ।।11।।
मैं भी फिर आरत गाई । गुरु मुझ पर हुए सहाई ।।12।।
गुरु चरनन दास कहाई । मैं शोभा अद्भुत पाई ।।13।।
राधास्वामी नाम धियाई । लीला कुछ अगम दिखाई ।।14।।

---

1. रास्ता । 2. परदा । 3. दुकान । 4. सिलसिला । 5. गाँठ । 6. साफ़ । 7. उदास । 8. लपेट की बात । 9. जल्द । 10. लौ । 11. भाट याने महिमा गानेवाला । 12. मलीन वासना । 13. हृदय ।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

घन गर्ज सुनावत गहरी । अब सुरत सुन सुन ठहरी ।।1।।
मन छोड़त सब विष लहरी । तू चढ़ चल और वहाँ रह री ।।2।।
वह सुन्न बड़ी अति गहरी । लीला व्हाँ देख अँधेरी ।।3।।
फिर सेत कँवल सुर्त ठहरी । घट शब्द गुरु हुइ चेरी ।।4।।
व्हाँ संत करें नित फेरी । सुन बात सखी अब मेरी ।।5।।
सत शब्द जाय धुन हेरी । अब फिरी दुहाई तेरी ।।6।।
जिन राधास्वामी चरन गहे री । उन मिटी चौरासी फेरी ।।7।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

सुरत तू चढ़ जा तुर्त गगन को । लखो जाय पहिले जोत निर्गुन को ।।1।।
छोड़ चल सकल पसार सर्गुन को । काट अब जड़ से फाँस त्रिगुन को ।।2।।
निर्गुन छोड़ चलो आगे को । पकड़ो जाय महा निर्गुन को ।।3।।
या को त्याग सुनो सुन धुन को । यों तुम धारो संत बचन को ।।4।।
व्हाँ से चल पहुंचो महासुन को । देखो आगे धाम सोहं को ।।5।।
सत्तनाम पद मिला सुरत को । अलख अगम जा पर्स चरन को ।।6।।
राधास्वामी कहत भेद निज घर को । मेट दिया अब आवागवन को ।।7।।

।। शब्द सत्तरहवाँ ।।

त्याग चल सजनी जग की धार । बहे मत या में दुक्ख अपार ।।1।।
सुरत से होजा सतगुरु लार । शब्द में तन मन दोनों गार[1] ।।2।।
लगी रहु आठों पहर सम्हार । अमी रस पीती रहु हुशियार ।।3।।
गगन का पकड़े रहु तू द्वार । नाद संग कर ले अब के प्यार ।।4।।
कहें राधास्वामी हेला मार । सोच कर चढ़ना त्रिकुटी द्वार ।।5।।

।। शब्द अठारहवाँ ।।

सुरत अब चढ़ो नाम रंग लाग । जगत सब सोवे तू उठ जाग ।।1।।

---

1. गला दे ।

बड़े फिर तेरा अचरज भाग । सुने तू चढ़ कर अनहद राग ।।2।।
मिले तोहि प्यारी परम बैराग । लगे तेरा धुन से अति अनुराग ।।3।।
मिटे सब मन का द्वेष और राग[1] । मार ले नभ चढ़ काला नाग ।।4।।
खेल नित सतगुरु संग तू फाग । बासना टूटे सब ज्यों ताग ।।5।।
हुई अब निर्भय जम भौ भाग । हंस संग मिली उड़ाया काग ।।6।।
हुई अब निर्मल छूटे दाग़ । राधास्वामी दीन्हा शब्द सुहाग ।।7।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

हंसनी क्यों पीवे तू पानी ।। टेक ।।
सागर क्षीर भरा घट भीतर । पीवो सूरत तानी ।।1।।
जग को जार धसो नभ अंदर । मंदर परख निशानी ।।2।।
गुरु मूरत तू धार हिये में । मन के संग क्यों फिरत निमानी[2] ।।3।।
तेरा काज करें गुरु पूरे । सुन ले अनहद बानी ।।4।।
कर्म भर्म बस सब जग बौरा । तू क्यों होत दिवानी ।।5।।
सुरत सम्हार करो सतसंगत । क्यों विष अमृत सानी ।।6।।
तेरा धाम अधर में प्यारी । क्यों धर[3] संग बंधानी ।।7।।
जल्दी करो चढ़ो ऊँचे को । राधास्वामी कहत बख़ानी ।।8।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

हंसनी छानो दूध और पानी ।। टेक ।।
छोड़ो नीर पियो पय[4] सारा । निस दिन रहो अघानी[5] ।।1।।
जुक्ति जतन से घट में बैठो । सुरत शब्द समानी ।।2।।
खान पान निद्रा तज आलस । सुन ले अधर कहानी ।।3।।
फिर औसर नहिं हाथ पड़ेगा । भरमो चारों खानी ।।4।।
गुरु का कहना मान सखी री । देत सिखापन[6] जानी ।।5।।
पाँचो इन्द्री उलटी तानो । इच्छा मार भवानी[7] ।।6।।

---

1. नफ़रत और रग़बत । 2. हीन । 3. देह । 4. अमृत, दूध । 5. तृप्त ।
6. शिक्षा । 7. संसार में लाने वाली ।

मन को साध चढ़ो गगनापुर । सुनो अनाहद बानी ।।7।।
शोर होत तेरे घट के भीतर । तू क्यों रहे अलसानी ।।8।।
राधास्वामी टेरत तो को । कह कर अमृत बानी ।।9।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

सुरत को साध, छबीली हो मगनी ।
चदरिया धोय, अधर में जा रंगनी ।।1।।
करम सब जार, लगा ले घर अगनी ।
मान मद छोड़, दूर कर सब विघनी ।।2।।
सोवना छोड़, रैन का रहो जगनी ।
गुरु यों कहैं, बात ले मान, करो लगनी ।।3।।
सरन में आय, चरन उर धार, सुनो सजनी ।
कहें राधास्वामी, मानो आज, धरन धरनी[1] ।।4।।

।। शब्द बाइसवाँ ।।

सुरत अब सार सम्हालो नाम ।। टेक ।।
चेत चलो तुम जग से अब के । फिर औसर नहिं पाम[2] ।।1।।
गुरु की भक्ति प्रेम चित धारो । वही सुधारें काम ।।2।।
नाम भेद दे सुरत चढ़ावें । पहुंचावें निज धाम ।।3।।
तू सुख साथ सहज रस भोगे । पावे फिर आराम ।।4।।
राधास्वामी कहें सुनाई । सेत मिला और छूटा श्याम ।।5।।

।। शब्द तेईसवाँ ।।

चमन[3] को चीन्ह री बुलबुल । खिले जहँ बहुत से गुल गुल[4] ।।1।।
गुरु संग चल रहो हिल मिल । चढ़ाओ सुरत मन मिल मिल ।।2।।
लगाओ खैंच कर दिल दिल । समाओ जोत में तिल तिल ।।3।।

---

1. जो पिंड को धारण कर रही है यानी सुरत । 2. पावेगी । 3. फुलवाड़ी ।
4. फूल ।

सहसदल कँवल लख खिल खिल । हटा कर देख दो सिल सिल[1] ।।4।।
झाँक वह घाट रहु खुल खुल । उतर जा पार चढ़ पुल पुल ।।5।।
सुगन्धें महकतीं संदल । धुलें तब सुर्त मन कल मल ।।6।।
हटे फिर काल की किल किल[2] । लगे तब शब्द में पिल पिल ।।7।।
छुटाई कर्म की दल दल । मिलो राधास्वामी से चलचल ।।8।।

।। शब्द चौबीसवाँ ।।

धुन में अब सुरत लगाओ । शब्दा रस पी त्रिप्ताओ ।।1।।
इन्द्री सब घट उलटाओ । मन फैला खैंच मिलाओ ।।2।।
गुनना विष छोड़ समाओ । आलस तज शौक़ बड़ाओ ।।3।।
लय[3] होय न मन समझाओ । विक्षेप[3] विघन यह दूर कराओ ।।4।।
इक शब्द पकड़ और सब बिसराओ । यह मारग नित्त कमाओ ।।5।।
बिन सुरत शब्द कुछ और न गाओ । मन रोको नभ पर धाओ ।।6।।
तिल पर भी सुरत जमाओ । पिल कर दलसहस खुलाओ ।।7।।
जहँ जोत निरंजन पाओ । फिर शब्दहि शब्द सुनाओ ।।8।।
चढ़ बंकनाल में आओ । गढ़ त्रिकुटी फ़तह कराओ ।।9।।
सुन्न में धस खेल खिलाओ । व्हाँ का भी शब्द जगाओ ।।10।।
महासुन्न निरखते जाओ । फिर भँवरगुफा पर छाओ ।।11।।
आगे सतलोक घुमाओ । व्हाँ से भी अलख चढ़ाओ ।।12।।
फिर अगम देश धस जाओ । राधास्वामी संग मिल जाओ ।।13।।

।। शब्द पच्चीसवाँ ।।

दुलहनी करो पिया का संग ।। टेक ।।
दुलहा तेरा गगन बसेरा[4] । तू बसे नइहर[5] अंग ।।1।।
गुरु के साथ चलो उस नगरी । चढ़े प्रेम का रंग ।।2।।
यह जोबन तेरा उतर जायगा । फिर तू होगी तंग ।।3।।

---

1. परदे । 2. शोर । 3. विघ्न अभ्यास के-लय, विक्षेप, कषाय, रसास्वाद । 4. बसता है । 5. माँ बाप का घर (पिंड देश) ।

ताते अभी सम्हारो मग[1] को । धारो ढंग उमंग ।।4।।
नाम रँगीला दुलहा तेरा । उड़ो गगन जस चंग[2] ।।5।।
सूरत डोर बाँध दे गुरु से । त्यागो सभी उचंग ।।6।।
पिया के द्वार तेरे नौबत[3] झड़ती । बिच बिच बजे मुँहचंग[4] ।।7।।
राधास्वामी पता बताया । चढ़ चल पकड़ तरंग ।।8।।

।। शब्द छब्बीसवाँ ।।

घट में चढ़ खेल कबड्डी । स्वान[5] ज्यों चूसे मत विष हड्डी ।।1।।
मार मन चढ़ो काल की चढ्ढी[6] । नाम गह पाला[7] छोड़ तिगड्ढी[8] ।।2।।
चलो घर चढ़ कर सूरत गड्डी[9] । बनो तुम मीरी[10] हो मत फड्डी[11] ।।3।।
तरंगें रोको बाँधों गड्डी[12] । उखाड़ो ममत पुरानी गड्डी ।।4।।
पकड़ कर मूँड काल की डढ्ढी[14] । विषय सब त्यागो खा मत बड्डी[15]।।5।।
सुरत मैं गुरु चरनन पर अड्डी[18] । जगत की सभी वासना कढ्ढी[17] ।।6।।
राधास्वामी नाम चढ़ो यह सिढ्ढी[18] । काल की बातहोय सब फिड्डी[19]।।7।।

।। शब्द सत्ताईसवाँ ।।

कोमल चित्त दया मन धारो । परमारथ का खोज लगाना ।।1।।
इन्द्री थान विषय को त्यागो । सुर्त शब्द में नित्त लगाना ।।2।।
सार पदारथ गुरु से पाओ । चरन कँवल में प्रीत बढ़ाना ।।3।।
धारा अगम पकड़ सुर्त जोड़ो । इस सतसंग में सदा समाना ।।4।।
चलो सुरत नभ द्वारा झाँका । अंडा तीन लोक दरसाना ।।5।।
परे जाय ब्रह्मण्ड समानी । सुन्न सरोवर कँवल खिलाना ।।6।।
अब तो काल कला सब हारा । मानसरोवर पैठ अन्हाना ।।7।।
अक्षर रूप निरखती चाली । छोड़ दिया अब देश बिगाना ।।8।।
सूरत साफ़ ऊड़ी ऊँचे को । छूट गया सब महल पुराना ।।9।।

---

1. रास्ता, मार्ग । 2. पतंग । 3. नक्क़ारा । 4. एक बाजा । 5. कुत्ता । 6. सवारी । 7. हद । 8. तीन गुनों का । 9. गाड़ी । 10. अव्वल । 11. सब से पीछे । 12. गठरी । 13. गाड़ी हुई । 14. डाढ़ी । 15. रिशवत, घूस । 16. ठहराई, टिकाई । 17. निकाली । 18. सीढ़ी, ज़ीना । 19. फीका ।

आगे चढ़ चढ़ अधर समानी । शब्द शब्द का मर्म पिछाना ।।10।।
संत बिना कोइ समझे नाहीं । आगे जो जो भेद दिखाना ।।11।।
कहने में आवे नहिं पूरा । उलटा सुलटा करत बखाना ।।12।।
बाचक अपनी उक्ति लगावें । अमल बिना नहिं बूझ बुझाना ।।13।।
संतन की गति संतहि जाने । और कहो कैसे पहिचाना ।।14।।
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो । संत बचन को करो प्रमाना ।।15।।
वह कहते देखो निज अपनी । तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ।।16।।
राधास्वामी सब से कहते । संत भेद कोइ भेदी जाना ।।17।।

।। शब्द अट्ठाईसवाँ ।।

गुरु बचन कहें सो सुन रे । अब सतसंग में चित धर रे ।।1।।
तुझे नाम मिला है अजर रे । तू सुरत सम्हार पकड़ रे ।।2।।
गुरु खैंचे तोहि अधर रे । उनके संग बाँध कमर रे ।।3।।
तू फैला बहुत पसर[1] रे । गुरु खोवें तेरी कसर से ।।4।।
और मारें काल पकड़ रे । फिर खोवें सभी अकड़[2] रे ।।5।।
तू सुरत लगा दे जकड़ रे । तेरा मिटे चौरासी चकर रे ।।6।।
मन माला फेर सुमिर रे । गुरु कुंजी हाथ पकड़ रे ।।7।।
ले अनहद शब्द ख़बर रे । घट फोड़ो गगन अबर[3] रे ।।8।।
तू छोड़ विरह के सर[4] रे । सुन घोर मानसर चल रे ।।9।।
कर सुन्न शिखर पर घर रे । धुन सुनता चल सतपुर रे ।।10।।
फिर अलख अगम जा तर रे । राधास्वामी धाम अमर रे ।।11।।
यह आरत नित ही कर रे । गुरु करें दया तुझ पर रे ।।12।।

।। शब्द उन्तीसवाँ ।।

सुरतिया गगन चढ़ाइलो मीत । मिटाइलो सकल भरम भौ भीत[5] ।।1।।
भवन[6] तज गइलो अधर मसीत[7] । बाँग[8] सुन ध्याइलो अजर अजीत ।।2।।

---

1. फैलकर। 2. ऐंठ, अहंकार। 3. बादल। 4. तीर। 5. भय। 6. घर। 7. मसजिद। 8. नमाज के लिये बुलारे की आवाज़।

नाम रस पाइलो गुरु की नीत[1] । शब्द धुन गाइलो अचरज गीत ।।3।।
समाइलो मनुवाँ गह गुरु रीत । लगाइलो घट में छिन छिन प्रीत ।।4।।
भगाइलो काल करम दल जीत । मिटाइलो मन से भरम अनीत[2] ।।5।।
बजाइलो सुन में शब्द अतीत[3] । मेहर से पाइलो संतन सीत[4] ।।6।।
बजाइलो राधास्वामी सरन पुनीत[5] । धारिलो नाम रसायन चीत ।।7।।

।। शब्द तीसवाँ ।।

सुन री सखी चढ़ महल विराज । जहँ तेरे प्रीतम बैठे आज ।।1।।
कर बिलास और जग से भाज । तख़्त बैठ और कर व्हाँ राज ।।2।।
हंसन का जहँ जुड़ा समाज । तू उन मिल कर अपना काज ।।3।।
गुरु चरन पकड़ तज कुल की लाज । मन दर्पन बहु विधि कर माँज ।।4।।
सुरत निरत का लेकर छाज[6] । छाँट फटक[7] डालो धुन नाज[8] ।।5।।
बड़े भाग पाया सब साज । सतगुरु बख़्शा तख़्त और ताज[9] ।।6।।
तीन लोक का खुल गया पाज[10] । चार लोक चढ़ भोगूँ राज ।।7।।
राधास्वामी दिया मोहिं यह दाज[11] । अब मेरा होय न कभी अकाज ।।8।।

।। बचन इक्कीसवां ।।

हिदायतनामा[12]

बीच बयान सुहबत और ख़िदमत-गुज़ारी[13] मुर्शिद-कामिल[14] के और शहर[15] दरजात फ़क़ीरी के और जिसमें उपदेश शब्द के अभ्यास का और भेद शब्द मार्ग और उस के मुक़ामात का भी वर्णन किया है ।

जिन लोगों को शौक़ मिलने मालिक कुल का है और तहक़ीक़ात मज़हब की मंज़ूर है कि कौनसा मज़हब सब से बाला[16] है और तरीक़[17]

---

1. रीत, तरीक़ा । 2. अन्याय । 3. निरमाया । 4. प्रसाद । 5. पवित्र । 6. सूप, छाजन । 7. साफ़ करलो । 8. अनाज । 9. मुकुट । 10. क़लई, मुलम्मा । 11. जहेज़ यानी बखशिश । 12. अनुदेश, उपदेश । 13. सेवा । 14. पूरे सतगुरु । 15. बयान । 16. ऊँचा । 17. रास्ता ।

भी उस का बहुत सीधा चाहते हैं, उन के वास्ते यह कलाम[8] कहा जाता है। उन को चाहिये कि कुछ दुनिया की मुहब्बत कम करें यानी ज़र और ज़न और औलाद की चाह तक़दीर[2] के हवाले करके अव्वल सुहबत फक़ीरों को मुक़द्दम[3] रक्खें। फ़कीरों में सुहबत उस फ़कीर की करें जो शाग़िल[4] शग़ल[5] सुल्तानुल अज़कार[6] का होवे या शग़ल-नसीरा[7] करता होवे, यानी अनहद शब्द के मार्ग को जानता होवे और दृष्टि की साधना जिसने करी होवे और मदुर्मक-चश्म[8] याने दोनों तिलों को खींच कर शग़ल की मदद से एक किया होवे और आवाज़े-आसमानी को सुन कर रूह को चढ़ाता होवे और जो ऐसा फ़कीर कम्याब[9] हो तो ज़िकरूल्क़लूब[10] पासे-अनफ़ास[11] वालों को तलाश करे, उसकी सुहबत से भी सफाई-दिल और कमज़ोरी-नफ़्से-अम्मारा[12] की होगी और कुछ लज़्ज़त अंदरूनी हासिल होगी लेकिन जो फ़ायदा कि रूह के चढ़ाने का है वह तो तरीक़ सुल्तानुल-अज़कार हासिल होगा।

अब चाहिये कि ऐसे फ़कीर की ख़िदमत में जा कर उन से मुहब्बत पैदा करो और उनकी ख़िदमत-गुज़ारी में चुस्त व चालाक रहो और तन से, मन से, धन से ब-हर-सूरत उनको अपने ऊपर मेहरबान और मुतवज्जह कर लो और दर्शन उनका दिल और दीदा[13] से घंटे दो घंटे बराबर करते रहो यानी अपनी आँखों से उनकी आँखो को ताकते रहो और जिस कदर ताक़त अपनी देखो पलक से पलक न लगाओ और इस कसरस[15] को रोज़ ज़्यादा करते रहो। जिस रोज़ और जिस वक्त नज़र-मेहर-आलूद[15] उनकी तुम पर पड़ेगी उसी दिन सफ़ाई दिल की फ़ौरन होगी और जब वह मेहर करके अपनी मौज व

---

1. बचन। 2. प्रारब्ध। 3. मुख्य। 4. अभ्यासी। 5. अभ्यास। 6. सुरत शब्द योग। 7. दृष्टि का साधन। 8. आँख की पुतली। 9. दुर्लभ। 10. नाम की ज़रब (चोट) दिल पर लगाना। 11. स्वाँसा का अभ्यास। 12. मलीन मन। 13. आँख। 14. अभ्यास। 15. भरी हुई।

मरज़ीसे शग़ल बाला[1] का उपदेश करें तो रूह तुम्हारी आवाज़े-आसमानी को पकड़ेगी और मुनासिब है कि तुम भी इस शग़ल को रोज़मर्रा बिला-नागा[2] चार बार दो बार जिस क़दर फुरसत मिले करते रहो और जो दिल तुम्हारा क़बूल न करे और वसवसा[3] और ख़दशा और गुनावन बे-फ़ायादा उठावे तो फ़र्याद[5] मुर्शिद के आगे करो और फिर उसी शग़ल में मेहनत रक्खो। उनकी तवज्जह और तुम्हारी मेहनत से रोज़-बरोज़ तरक्क़ी होगी और जल्दी और इज़्तिराबी[6] करना नहीं, क्योंकि 'ताजील कारे शयातीं बुवद'[7] –आहिस्ता आहिस्ता हासिल होना मुफ़ीद पड़ेगा और जल्दी जो कुछ होगा, वह क़ायम नहीं रहेगा, क्योंकि वह शैतान की तरफ़ से होगा। जो मुर्शिद रहमान[8] की मदद से होगा, वह हमेशा क़ायम रहेगा। ज़ाहिर लवाज़मा[9] जो कुछ चाहिये सो मैं कह चुका। अब बातिनी[10] हाल कि जो दरजे फ़क़ीरों को हासिल हैं, उस को ब्यान करता हूं – कि

जिस वक्त निगाह तुम्हारी दिमाग़ के भीतर उलट कर आसमान को देखेगी और रूह तुम्हारी जिस्म[11] को छोड़कर उपर को चढ़ेगी तो तुम को आकाश नज़र पड़ेगा कि जिस में थाना सहसदल कँवल का है और हज़ारों पंखड़ियाँ उस की जुदा जुदा काम तीनों लोक का दे रही हैं। उस की सैर को देख कर तुम बहुत ख़ुश होंगे और तीन लोक के मालिक का दर्शन पाओगे। और बहुत से मज़हब इसी मुक़ाम को पाकर और इसी को मालिक-कुल गरदान कर[12] धोखा खा गये, और नूर और तजल्ली[13] इस जगह की देख कर तृप्त हो गये, आगे चलने का रास्ता बंद हो गया, मुर्शिद आगे का उनको न मिला, जो मुर्शिद मिलता तो आगे का रास्ता खुलता, सो इस से आगे का हाल सुनो।

---

1. ऊपर बयान किये हुए। 2. नित्त नेम से। 3. भरम। 4. चिंता। 5. पुकार। 6. बेचैनी। 7. जल्दी शैतान का काम है। 8. दयालु। 9. सामान। 10. अंतरी। 11. देह। 12. मान कर। 13. प्रकाश।

इस आकाश के ऊपर एक दरवाज़ा ऐसा बारीक और झीना है कि जैसे रौज़न[1] सुई के नाके का होता। चाहिये कि उस रौज़न में अपनी रूह को प्रवेश करो[2] और आगे उस के बंकनाल, टेढ़ा रास्ता, कुछ दूर तक सीधा गया और फिर नीचा पड़ा और फिर ऊँचे को चढ़ा, उस नाल को पार करके दूसरे आसमान पर सुरत पहुँची।

उस आसमान पर एक मुक़ाम त्रिकुटी कि उस को मुसल्लसी[3] कहते हैं, लाख जोजन वसीअ[4] और लाख जोजन तवील[5] है। उस में लीला और तमाशे तरह-ब-तरह के हैं। शरह[6] उसकी कहाँ तक करूँ, मगर कुछ कहता हूँ कि हज़ार आफ़्ताब[7] और हज़ार माहताब[8] उसकी रोशनी से ख़जिल[9] हैं और आवाज़ "ओं ओं" और "हू हू" और बादल की सी गर्ज बहुत सुहावनी आठ पहर होती रहती है। उस मुक़ाम को पा करके रूह को बहुत सरूर[10] हासिल होता है और रूह भी बहुत पाक और लतीफ़[11] हो जाती है। आलमे रूहानी[12] की ख़बर उस जगह से पड़नी शुरू होती है। कोई दिन उस जगह की सैर करके फिर ऊपर को चढ़ती है।

चढ़ते चढ़ते करोड़ जोजन ऊपर चढ़ कर तीसरा पर्दा फोड़ कर सुन्न में पहुंची कि जिस को फ़ुकरा ने आलमे-लाहूत कहा है। उसकी तारीफ़ क्या कहूं उस मुक़ाम पर रूहें बहुत विलास करती हैं और रोशनी वहाँ की ऐसी है कि बारह बारह हिस्सा ज़्यादा रोशनी त्रिकुटी से मालूम पड़ती है तालाबे-ज़ुलाली[13] व हौजे-कौसरी[14] पुर-अज़-आबे-हयात[15] कि हिन्दी में उसको मानसरोवर कहते हैं, जा-ब-जा[16] मौजूद हैं और कितने ही गुलशन[17] और चमन[18] खिले हुये नज़र पड़ते हैं और अकसर रूहें ब-सुरते-नाज़नीनाँ[19] मुक़ामाते मुख़्तलिफ़[20] पर रक़्स[21] कर रही हैं व ग़िज़ाहाय लतीफ़अज़-बस-शीरीं[22] व ख़ुशनुमा[23] तरोताज़ा तैयार हैं

---

1. छिद्र। 2. धसाओ। 3. त्रिकोन। 4. चौड़ा। 5. लम्बा। 6. विस्तार। 7. सूरज। 8. चन्द्रमा। 9. लज्जित। 10. आनन्द। 11. सूक्षम। 12. चैतन्य। 13. निर्मल, साफ़। 14. अमृत कुंड। 15. अमृत। 16. जगह जगह, हर जगह, इधर उधर। 17. फुलवारी। 18. बाग़। 19. खूबसूरत। 20. ज़ुदा। 21. नृत्य। 22. उम्दा खाना और मिठाई। 23. सुहावनी।

और नग्महा[1] व तरानहा[2] हर जानिब को हो रहे हैं। उस आनन्द व सरूर को रूह रसीदा[3] जानती है। कहने में आ नहीं सक्ता, और हर एक जगह झिरने आबे-हयात के जारी हैं यानी अमी सरोवर भरे हैं, अमृत की धारा चल रही हैं। रोनक़[4] और ज़ेबाइश[5] उस मुक़ाम की क्या कहूँ, हीरों के चबूतरे, पन्नों की क्यारियाँ, जवाहिरात के पौदे, लाल और चुन्नियाँ जड़े हुए नमूदार[9] हो रहे हैं। मछलियाँ मुरस्सा[7] उन तालाबों में तैर रही हैं। दम दम पर झलक दिखाती हैं। पल पल पर चमक उनकी दिल को पकड़ती है। आगे उसके अनन्त शीश महल बने हुए हैं और रूहें अपने अपने मुक़ामों पर मुवाफ़िक़ हुक्म मालिक अपने के मुक़ाम[8] हैं और कैफ़ियत और बिलास नये नये परस्पर देखती हैं और दिखाती हैं कि हिन्दी में उन्हीं रूहों को हंस मंडली करके बयान किया है। नक़्शाबंदी[9] उन मुक़ामों की देखने ही के ताल्लुक़ है। कुल कारख़ाना उस जगह का रूहानी है यानी चैतन्य लतीफ़[10] –कसीफ़[11] और जड़ नहीं है-और वहाँ की रूहों में लताफ़त[12] और पाकी[13] अज़-बस[14] है, कसाफ़त[15] और मलीनता जिसमानी याने बदन की नहीं है, और शरह उस सैरगाह की फ़क़ीर जानते हैं। ज़्यादा खोलना उस का मुनासिब नहीं। मुद्दत कसीर[16] उस जगह रूह इस फ़क़ीर की ने सैर की, फिर मुरशिदों की हिदायत से आगे को चली।

चलते चलते पाँच अरब पछत्तर करोड़ जोजन उँची गई। आलमे हाहूत[17] का नाका तोड़ा। उस आलम की सैर की। उस मुक़ाम का बयान क्या करूँ, दस नील तक ज़ुलमात याने अँधेरा है। गहराई उस तिमिर-खँड की कहाँ तक वर्णन करूँ खरब जोजन तक रूह नीचे उतर गई, और थाह उसकी हाथ न लगी, फिर उलट कर ऊपर चढ़ आई और जो निशाना कि मुर्शिदों ने बताया था, उसकी सुध लेकर उसी रास्ते पर

---

1. राग। 2. रागनी। 3. पहुंची हुई। 4. शोभा। 5. सजावट। 6. दिखलाई देते हैं। 7. जड़ाऊ। 8. ठहरी। 9. चित्रकारी और बनावट। 10. सूक्ष्म। 11. स्थूल, नापाक। 12. सूक्ष्मता। 13. निर्मलता। 14. बहुत। 15. गंदगी। 16. बहुत ज़्यादा। 17. महासुन्न।

चली और अंत लेना उस मुक़ाम का अनसब[1] न समझा। आगे को बढ़ी। यह मैदान महासुन्न का है। इस जगह चार मुक़ाम निहायत गुप्त हैं और किसी संत ने खोले नहीं। उस जगह रूहें बे-शुमार जो कि मरदूद[2] दरबार सच्चे ख़ुदा की हैं, उनके बन्दी-खाने बने हुए हैं। रोशनी में अपना अपना कारज करती रहती हैं लेकिन दर्शन मालिक का उनको नसीब नहीं होता। दर्शन के न मिलने से अलबत्ता बे-कली है मगर एक सूरत मुआफ़ी की उनके वास्ते भी मुक़र्रर रक्खी गई है कि जब जब संत उस रास्ते से गुज़र करते हैं और जो रूहें नीचे के लोकों में से संतों के वसीले से जाती हैं, जिन जिन रूहों को कि इत्तिफ़ाक़ उन संतों के दर्शनों का हो जावे, इन रूहों के ले जाने की जो ख़ुशी कि संतों को होती है और उस सच्चे ख़ुदा की निहायत मेहरबानी और अल्ताफ़[3] इन रूहों पर होता है, संत उन रूहों को बख़्शा कर फिर सच्चे ख़ुदा के पास बुलवा लेते हैं और हाल उस जगह का बहुत से बहुत है मगर कहाँ तक कहूं।

उस मुक़ाम को छोड़ कर आलमे-हूतलहूत में पहुंची कि जिसको हिन्दी में भँवरगुफा कहते हैं कि वहाँ एक चक्कर कि जिसको हिंडोलना कहते हैं, ऐसा लतीफ़ फिर रहा है और रूहें उस जगह सदा झूलती रहती हैं और गिर्द उस के अनन्त दीप रूहानी बने हुए हैं और उन दीपों में से आवाज़, “अनाहू अनाहू” सदा उठ रही है और रूहें और हंस उन्हीं धुनों से हमेशा बिलास करते रहते हैं और जो जो सिफ़त[5] इस मुक़ाम पर और है वह ज्यों की त्यों लिखने में नहीं आती। देखते ही के ताल्लुक़ है। जब रूह इस मार्ग को कमाती कमाती पहुंचेगी, तब आप

---

1. मुनासिब। 2. निकाली हुई। 3. दया। 4. आवाज़। 5. तारीफ़।

देख लेवेगी, इस वास्ते मुनासिब है कि इस तरीके की कमाई करे जाओ। यह शग़ले आवाज़ है। इस को मत छोड़ो। अब यहाँ की सैर देख कर रूह आगे को चढ़ी।

आकाश मार्ग हो कर यानी ऊँचे को चढ़ती चली जाती है, दूर से सुगंधें मलया-गिर की और क़िस्म क़िस्म के इतरियात की सी लपटें चली आती हैं और धुनें बाँसरियों की अनंत सुनाई देती हैं। उन को सुनती और सूँघती हुई रूह यानी सुरत आगे को चढ़ती चली जाती है। जब इस मैदान के पार पहुंची, नाका सत्तलोक का हासिल हुआ कि वहाँ से आवाज़ "सत्त सत्त" और "हक़ हक़" बीन के बाजे में से निकलती सुनाई दी कि उसको सुन कर रूह मस्ताना-वार[1] धसी चली जाती है। और वहाँ नहरें सुनहरी और रूपहरी पुर-अज-आबे-ज़ुलाल[2] दीखने लगीं और बाग़ बड़े बड़े नज़र आये। एक एक दरख़्त उसका करोड़ करोड़ जोजन की बुलंदी[3] रखता है और सूरज और चाँद करोड़ों बजाये फूल और फलों के लगे हुए हैं और अनेक रूहें और हंस उन दरख्तों पर बजाय जानवरों के चहचहे और बिलास कर रहे हैं। अजब लीला उस मुक़ाम की है कि कहने में नहीं आ सक्ती। यह लीला देखती हुई रूह यानी सुरत सतलोक में दाख़िल हुई और सत्तपुरुष का दर्शन पाया।

अब सत्तपुरुष के स्वरूप का वर्णन करता हूँ कि एक एक रोम उस का इस क़दर मुनव्वर[4] है कि करोड़ों सूरज और चाँद शरमिंदा हैं। जब कि एक रोम की ऐसी सिफ़त है तो तमाम रोमों की क्या सिफ़्त लिखने में आवे और जिस्म की तारीफ़ की कहाँ गुंजाइश, नैन नासिका और श्रवण मुख और हाथ और पाँव का क्या वर्णन करूँ, महज़[5] नूर[6] है, नूर का समुद्र कहूँ तो नहीं बनता।

---

1. मतवाली। 2. अमृत से भरी हुई। 3. ऊँचाई। 4. रौशन, प्रकाशवान। 5. बिलकुल। 6. प्रकाश।

एक पदम पालंग घेर सत्तलोक का है और पालंग की शुमार यह है कि यह त्रिलोकी एक पालंग है। पद दराज़ी[1] और वुसअत[2] सत्तलोक की किस क़दर बड़ी हुई कि क़यास[3] काम नहीं कर सक्ता, और रूहें पाक कि जिन को हंस कहते है, वहाँ बसती हैं और सत्तपुरुष का दर्शन करती हैं और नवाय[4] बीना जा-ब-जा सुन रही हैं व ग़िज़ाय[5] अमी हमेशा खाती रहती हैं।

इस मुक़ाम का भी बिलास देख कर रूह आगे को चली और अलख लोक में पहुँची। अलख पुरुष का दर्शन पाया। एक संख का घेर उस लोक का है और अरब खरब सूरजों का उजाला एक एक रोम में अलख पुरुष के है।

फिर वहाँ से ऊपर को चली। अगम लोक को पाया कि जिस का घेर महासंख पालंग का है और करोड़ संख की काया[6] अगम पुरुष की है और वहाँ के हंसों के रूप भी अद्भुत हैं और बिलास भी वहाँ के अचरज रूप हैं। इस जगह बहुत मुद्दत विश्राम किया।

इससे आगे राधास्वामी यानी अनामी पुरुष का दीदार किया और उस में समाई। वह बे-इन्तिहा[7] और बे-शुमार और बे-अंत है और फ़क़ीरों का निज स्थान वही है। उस को पाकर के सब संत चुप हो गये और मैं भी अब चुप होता हूँ। इतनी बड़ी भारी गति फ़क़ीर और संत की है। और जो लोग कि पहले ही मुक़ाम पर थक गये और उसको बे-इन्तिहा[7] और बे-अन्त कहने लगे, पस उनके मुरीदों और सेवकों को कैसे इन मुक़ामात का निश्चय कराया जाय ? सिवाय संत और फ़क़ीर कामिल के कोई नहीं जान सक्ता और यक़ीन भी इन मुक़ामों का उन्हीं को होगा कि जिन को संत और फ़क़ीर भेदी इन मुक़ामों के मिले होंगे। उन को इन के बचन पर एतक़ाद[8] होगा तो यक़ीन लायेंगे। यह मुक़ाम न पैग़म्बर साहिब पर खुले और न व्यास और वशिष्ठ को मालूम

---

1. लम्बाई। 2. चौड़ाई। 3. समझ, अनुमान। 4. आवाज़। 5. आहार। 6. जिस्म। 7. अपार। 8. निश्चय।

हुए, पस हिन्दू और मुसलमान कोई इसका यक़ीन कर नहीं सक्ता। उन को इस हाल का सुनाना भी ज़रूर नहीं क्योंकि वे पैग़म्बर और कुरान के पाबन्द हैं और हिन्दू व्यास वशिष्ठ और वेद के कैदी हैं। इनसे यह बचन सुने भी नहीं जावेंगे।

इससे मुनासिब है कि जिस किसी को एतक़ाद फ़क़ीर और संत पर ऐसा है कि इन सब से आगे संत पहुँचे हैं और संतों की महिमा बहुत भारी है और ख़ुदा और परमेश्वर दोनों के पैदा करने वाले संत हैं और इनकी गति को वे दोनों नहीं जान सक्ते, ऐसा एतक़ाद संत और फ़क़ीर पर जिस किसी का है, उसको सुनना और कहना इस हाल का फ़ायदा करेगा। इस वास्ते हर एक को यह सुनाना न चाहिये जब तक कि एतक़ाद उस का ऐसा परख न लिया जावे जैसा कि ऊपर मैंने बयान किया है।

।। ग़ज़ल फ़ारसी व तरजुमा ।।

बीच बयान चढ़ने रूह के अर्श यानी आसमान
पर और पहुँचना मुक़ाम हूत यानी सत्तलोक
और सैर मुक़ामात रास्ते के

।। ग़ज़ल पहली ।।

मुर्शिदा आशिक़े दीदारे जमालत गश्तम।
हे सतगुरु मैं तुम्हारे स्वरूप के दर्शन का आशिक हुआ हूँ।
दिल ख़स्ता व जाँबाख़्ता अज़ ख़ुद रफ़्तम ।।1।।
मन मुरझाया हुआ और जान से खोया हुआ और आपे से बाहिर हूँ।
यक निगाहे तो मरा चाक गिरेबां करदा।
आप की एक नज़र ने मुझ को दीवाना और परेशान कर दिया।

हमचो मजनूँ पए लैला चे परेशां करदा ।।2।।

जैसे मजनूँ लेला के वास्ते हुआ।

दर्दमन्देम दिगर हेच न दरमाँ दारेम।

मैं दुखिया हूँ और मेरा कोई इलाज नहीं है।

लुत्फ़े गुफ़्तारे जिगर रेश चो मरहम दारेम ।।3।।

आप के बचन मेरे ज़ख़मी दिल के लिये मरहम हैं।

रूए ज़ेबाय तो तारे दिले मन नूराँ कर्द।

आप के शोभायमान मुखड़े ने मेरे अंधेरे मन को ऐसा रौशन किया।

माह व ख़ुरशैद हज़ाराँ ब फ़लक ख़िजलाँ कर्द ।।4।।

कि हज़ारों जाँद सूरज आसमान पर शरमिन्दा हैं।

दौरे अफ़लाक चुनाँ गरदिशे दौराँ करदा।

आसमानी चक्र ने ऐसी गरदिश ज़माने की की है।

आशिकाँ रा ज़े क़दमबोसिये महबूब नुमायाँ करदा ।।

कि प्रेमियों के प्रीतम के चरनों में लगने से मशहूर और ज़ाहिर किया।

हिर्से दुनिया ज़े दरूनम हमा बेरूँ गरदीद।

संसार की चाह मेरे अन्तर से बिलकुल निकल गई।

शोक़े दीदार दिलम रा हमा सर पुर पेचीद ।।6।।

और दर्शनों के शौक़ ने मेरे मन को भर कर फेर दिया।

मरहबा बख़्ते सफ़ेदम क़दमे यार गिरिफ़्त।

धन्य है मेरे भाग कि मैंने प्रीतम के चरन पाए।

रूहे मन शक़्के क़मर कर्दो फ़लक रा बिगिरिफ़्त ।।7।।

और मेरी सुरत चाँद को चीर कर आसमान पर पहुँच गई।

नग़्महा नेक शुनीदम व निदाहा वाफ़िर।

वहाँ राग और रागिनी और आवाजें सुहावनी सुनी।

काबा बुतख़ाना ब निज़्दम शुदा हर दो क़ाफ़िर ।।8।।

और मेरे नज़दीक मसजिद और मंदिर दोनों काफ़िर मालूम हुए।

।। ग़ज़ल दूसरी ।।

अंदरूँ अर्श रफ़्ता दीदम नूर।

अर्श यानी आसमान पर पहुँच कर मैंने नूर देखा।

कुश्ता शैताँ व हम दमीदम सूर।।1।।

और शैतान यानी काल को मार कर सूर को फूंका।

(प्रलय यानी क़्यामत का बाजा बजाया।)

होशे तन रफ़्त रूह बाला शुद।

तन का होश न रहा और रूह यानी सुरत ऊँचे को गई।

जा गिरिफ़्ता ब जा कि साबिक़ बूद।।2।।

और जहाँ कि पहिले थी वहाँ पहुँच कर ठहरी।

दर्द मंदाने इश्क़े कूए वहीद।

अब जो कोई दरदी प्रीतम एक मालिक की गली के हैं।

मेकशम अज़ जमा बसूए फ़रीद।।3।।

उन को मैं भीड़ भाड़ से एकान्त में यानी बाहर से अन्तर में लाता हूँ।

हर्चे गोयम शुनो बगोशे तमीज़।

अब जो कुछ कि मैं कहता हूँ उस को कान देकर सुनो।

रूह रा कश रसाँ ब सौते अज़ीज़।।4।।

कि अपनी सुरत को उस प्यारी आवाज़ में खैंच कर लगाओ।

दर दिमाग़े तो गुलशनो मजलिस।

तुम्हारे मस्तक में बाग़ व महफ़िल मौजूद हैं।

सैर कुन तेज़ रौ ज़े मुर्शिद पुर्स।।5।।

सतगुर से पूछ कर जल्दी चलो और उस की सैर करो।

चश्म बंदो व मदुर्मक दर कश।

अपनी आँखें बंद करके पुतली को चढ़ाओ।

बर फ़लक रौ कुशादा कुन तो दरश।।6।।

और आसमान पर पहुँच कर उस का दरवाजा खोलो।

अन्दरूनश रवाँ चो रूह नमूद।
जब आसमान के अन्दर सुरत चलने लगे तब वहाँ की सैर करो।
कुन तो सुरैश निगर बहारे वजूद।।7।।
और इस शरीर में बहार देखो।
दर वजूदत अजब तमाशाए।
तुम्हारी देह में अजब तमाशा है।
आसमाँ ज़ेरो अर्ज़ बालाए।।8।।
कि आसमान नीचे और ज़मीन ऊपर है।
कज नए दाद राह रूहम रा।
बंकनाल के रास्ते से हो कर सुरत चली।
दर रसीदम मुसल्लसी हर जा।।9।।
और त्रिकुटी स्थान पर पहुँची।
शम्स दीदम बरंगे सुर्ख़ आँ जा।
वहाँ सूरज लाल रंग का देखा।
ख़ुर हज़ाराँ न हमसरत ज़ेबा।।10।।
कि जिसकी बराबरी हजारों सूरज भी नहीं कर सकते।
मुल्के लाहूत पेश अज़ाँ याबी।
उस के आगे लाहूत का मुक़ाम है।
सुन्न मेगोयंद ओरा दर हिन्दी।।11।।
कि जिसको हिन्दी में सुन्न कहते हैं।
सौते आँजा निदा हमीं दारद।
वहाँ की आवाज का यह सरूप है।
हम्चो किंगरी व सारँगी आयद।।12।।
जैसे कि सारंगी और किंगरी बजती है।
हौज़े आबे ज़ुनान दीदम पुर।
और अमृत के कुण्ड भरे दिखलाई दिये।
मेख़ुरंद आमिलाँ दराँजा दुर।।13।।
और अभ्यासी वहाँ मोती चुगते हैं।

चूँ गुज़श्तम ज़े आलमे लाहूत।

जब मुक़ाम लाहूत यानी सुन्न से आगे चला।

दर रसीदम ब आलमे हाहूत।।14।।

तो मुक़ाम हाहूत यानी महासुन्न में पहुँचा।

हाले आँजा बकै बुगोयं बाज़।

वहाँ का हाल किस से और कैसे कहा जावे।

रूह रफ़्ता हर कि दानद आँ आवाज़।।15।।

जिस की सुरत वहाँ पहुँची है वही उस को और उस की आवाज़ को जाने।

सौते पोशीदा हस्त तर बारीक।

वहाँ आवाज़ निहायत गुप्त और झीनी है।

साख़्त राहश ब क़ुदरते तारीक।।16।।

और उस का रास्ता क़ुदर्ती अंधेरा बनाया गया है।

मुरशिद हमराह शुद दराँ मैदाँ।

उस मैदान में सतगुरु आप संग हुए।

शुदा हैराँ बराय ओ शैताँ।।17।।

और उन को देख कर शैताने अज़ीम यानी महाकाल हैरान हो गया।

रूह आँ जा गुज़श्त बाला रफ़्त।

फिर सुरत उस मुक़ाम को भी छोड़ कर ऊपर को गई।

सौत अनाहू शुनीद दीद गिरफ़्त।।18।।

और वहाँ आवाज़ अनाहू यानी भँवर गुफा के स्थान की सुनी और देखी और पकड़ी।

हूतल्हूत आलमे अजायब याफ़्त।

आगे मुक़ाम हूतल्हूत यानी भँवर गुफा अचरज रूप पाया।

रूह रा अन्दरूँ दरीचा ताख़्त।।19।।

और रूह को खिड़की के अन्दर से दौड़ाया।

पस बिरफ़्तो रसीद आलमे हूत।

फिर चल कर मुक़ाम हूत यानी सत लोक में पहुँची।

याफ़्त आबे हयात दम दम क़ूत ।।20।।

और वहाँ अमृत का दम दम पर आहार किया।

पेश अज़ाँ हर्चे हस्ती हस्त।

अब इसके आगे जो है वह केवल सत्य ही है।

लबे मन शुद ख़मोश बाहम बस्त ।।21।।

और अब यहाँ मैं होंट बंद करके चुप होता हूँ।

जुज़ फ़क़ीरे कसे न याफ़्त मुक़ाम।

सिवाए संत के यह मुकाम किसी ने नहीं पाया।

राधास्वामी न गुफ़्त आँ रा नाम ।।22।।

और राधास्वामी भी उसको अनामी कहते हैं।

।। गज़ल तीसरी ।।

आशिक़म ज़ाते मुर्शिदे कामिल।

मैं सतगुर पूरे के निज सरूप का प्रेमी हूँ।

दिले मन शूद ब क़ौले शाँ माइल ।।1।।

और मेरा मन उनके बचन का आशिक है।

चूँ गिरिफ़्तम क़दम व ख़ाके क़दम।

अब से मैनें उनके चरन पकड़े और चरन धूर ली।

ज़ुलमते दिल शुदा हमा ज़ाइल ।।2।।

तब से मेरे मन का अंधेरा बिलकुल दूर हो गया।

रूए ज़ेबा व क़द्दे सर्वे रवाँ।

और सतगुरु के सुहावने सरूप और खूबसूरत क़द्द।

नूर दर सीना नफ़्स रा क़ातिल ।।3।।

और नूर ने सीने में काल अंग को काट डाला।

सोहबते मुर्शिदो कलामे रशीद।

सतगुर के संग और उनके पहुँचे हुए बचन ने।

कर्द दुनिया व दीन रा बातिल ।।4।।

दीन व दुनिया को झूठा दिखला दिया।

राज़े पिनहाँ वजूद शुद ज़ाहिर।

और देह के अन्तर का भेद सब खुल गया।

याफ़्तम लुत्फ़े मुर्शिदे आमिल ।।5।।

और मुझ पर सतगुर पूरे की मेहर हुई।

रूहे मि चूँ गिरिफ़्त आवाज़े।

और जिस वक़्त मेरी सुरत ने आवाज़ को पकड़ा।

बर फ़लक दर रसीद शुद क़ाबिल ।।6।।

उसी वक़्त आसमान पर पहुँची और समझ वाली हो गई।

दीद नौरस बहार रफ़्त खिज़ाँ।

और वहाँ नई बहार देखी और खिजाँ (पतझड़) दूर हुई।

इल्मे अर्शी बयाफ़्त शुद फ़ाज़िल ।।7।।

और आकाशी (परा) विद्या पढ़ कर महा ज्ञानी हो गई।

कुलफ़ते मौतो रंजे पैदाइश।

जन्म मरन के दुखों पर पर्दा पड़ गया।

बर रूख़े हर दो परदा शुद हाइल ।।8।।

यानी दूर हो गया।

राज़े बातिन शुदा व मन ज़ाहिर।

अन्दर का भेद मुझ पर उसी वक़्त प्रगट हो गया।

चूँ शुदम पेशे पीरे ख़ुद साइल ।।9।।

जब कि मैं अपने सतगुर का मङ्गता हुआ।

जिस्मे ख़ाकी गुज़ाश्तम बिलफ़ेल।

और इस खाक़ी देह की करतूत मैं ने फौरन छोड़ दी।

शुदा शैताँ बराय मन काहिल ।।10।।

और शैतान यानी काल मेरे वास्ते मुरझा गया।

रूह परवाज़ कर्द जानिबे अर्श।

सुरत उड़ कर गगन को चली।

फ़ेलो मफ़ऊल रफ़्त शुद फ़ाइल ।।11।।

कारण व कार्य को छोड़ कर आप कर्ता हो गई ।

नज़रे मेहर कर्द मुर्शिदे मन ।

जो मेरे सतगुर ने मेहर की दृष्टि की ।

हिज्र बुगुज़श्त मन शुदम वासिल ।।12।।

तो वियोग जाता रहा और संयोग हो गया ।

ज़ाहिदो मुत्तक़ी नमाज़ी पंज ।

जती तपी और नेमी धर्मी और पाँचो वक़्त नमाज़ी ।

कस न दानद चुनाँ बजुज़ शाग़िल ।।13।।

इस कैफ़ीयत व आनन्द को नहीं जानते हैं पर अभ्यासी जानें ।

रूबरू आमिलाने बातिन फ़हम ।

अन्तर-मुख अभ्यासी और अनुभवी पुरूषों के सामने ।

आलिमाँ इल्मे ज़ाहिरी जाहिल ।।14।।

विद्यावान और बाहिर-मुखी ज्ञानी मूर्ख हैं ।

हमा दुनिया फ़ितादा दर शुबहात ।

तमाम संसार संश्य और शकों (भ्रमों) में पड़ा है ।

हर कि हादी न याफ़्त शुद नाक़िल ।।15।।

जिस को सतगुर पूरे न मिले वही वाचक ब नक़ली रहा ।

जुमला रा कर्द जिहल ज़ेरो ज़बर ।

ये सब मूर्खता के चक्र में हैरान व परेशान हो रहे हैं ।

मुर्शिदे याफ़्त शुद हमा आक़िल ।।16।।

जिस को सतगुर पूरे मिलें उसी को समझ आई और अनुभव हुआ ।

याफ़्ता राधास्वामी मेहरे फ़क़ीर ।

राधास्वामी कहते हैं कि संतों की मेहर हुई ।

हम शुदा लुत्फ़े एज़िदी शामिल ।।17।।

और कुल मालिक की दया भी शामिल हुई ।

।। बचन बाईसवाँ ।।

भेद काल मत और दयाल मत का और वर्णन हाल भूल भर्म संसारियों का और महिमा सतगुरु भक्ति और सुरत शब्द मार्ग की

।। शब्द पहला ।।

चार खान चौपड़ जग रची । अंड[1] जेर[2] सेतज[3] उतभुजी[4] ।।1।।
माया ब्रह्म पुरुष प्रकृति । मन इच्छा खेलें शिव शक्ति ।।2।।
सुरत नर्द[5] ता में बहु पची । धूम खेल की अति कर मची ।।3।।
तीन गुनन का पांसा लीन्ह । रजोगुन तमोगुन सतोगुन चीन्ह ।।4।।
कर्म हाथ से पांसे डारे । भोग अंक ता में बिस्तारे ।।5।।
झूँठी बाज़ी जानी सच्ची । कोइ पक्की कोई मारे कच्ची ।।6।।
नर्द सुरत चौरासी घर में । भरमत फिरे दुक्ख और सुख में ।।7।।
हारे ब्रह्म और जीते माया । जीव नर्द बहु विधि दुख पाया ।।8।।
कभि कभि ब्रह्म जीत जो होई । नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई ।।9।।
चौपड़ से बाहर नहिं होई । निज घर अपना पाये न कोई ।।10।।
माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई । खेलें इन नरदन से सोई ।।11।।
भरमे नर्द पिटे और कुटे । दुख उनका कोई नहिं सुने ।।12।।
सभी नर्द पछतावें दम दम । कैसे छूटें इन से अब हम ।।13।।
करें फ़र्याद दाद[6] नहिं पावें । रोवें झीखें और चिल्लावें ।।14।।
बार बार भरमें चौरासी । कोई न काटे उनकी फाँसी ।।15।।
श्रुति सिमृत और वेद पुरान । सबही मारें इनकी जान ।।16।।
माया काल बिछाया जाल । अपने स्वारथ करें बेहाल[7] ।।17।।
कोई गोट न जावे घर को । य्हाँ ही खेल खिलावें सब को ।।18।।
सत्त पुरुष देखा यह हाल । काल हुआ जीवन का काल ।।19।।

---

1. अन्डज यानी जो अन्डे से पैदा होते है। 2. जेरज यानी जो झिल्ली से पैदा होते है। 3. स्वदेज यानी जो पसीने से पैदा होते है। 4. उद्भिज यानी जो मिट्टी या खान से पैदा होते हैं। 5. गोट। 6. इनसाफ़। 7. परेशान, दुखी।

अपने स्वाद जीव भरमावे । पता हमारा काहु न जनावे ।।20।।
पुरुष दयाल दया उमगाई । संत रुप धर जग में आई ।।21।।
नर्दन को बहु विधि समझाया । काल निर्दई तुम को खाया ।।22।।
अब मैं कहूं करो तुम सोई । जाल जाल[1] कर न्यारे होई ।।23।।
सतगुरु संग बाँध जुग चलो । चोट न खावो काल बल दलो ।।24।।
यह घर काल बसाया आन । तुम को लाया हमसे माँग ।।25।।

दोहा

यह तो घर है काल का, घर अपना मत मान ।
निश्चय करके मानियो, जो अब करूँ बखान ।।26।।

निज घर तुम्हरा हमरे देश । अब मैं कहूं देश सन्देश ।।27।।
सत्तनाम सतपुरुष कहाई । चौथा लोक संत कहें भाई ।।28।।
ता के परे अलखपुर बसा । संत सुरत बिन कोई न धसा ।।29।।
अगम लोक रचना तिस परे । बिन वहाँ पहुंचे काज न सरे[2] ।।30।।
आगे ता के निज घर जान । राधास्वामी धाम पिछान ।।31।।
इन लोकन की शोभा भारी । देखे सो जिन जुक्ति सम्हारी ।।32।।
अब जुक्ति का भेद सुनाऊँ । सुरत शब्द की राह लखाऊँ ।।33।।
मन इन्द्री उल्टो घट माहीं । सुरत निरत दोउ नैन जमाई ।।34।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आओ । सुन्न के परे महासुन पाओ ।।35।।
भँवरगुफा सतलोक निहारो । अलख अगम के पार सिधारो ।।36।।
राधास्वामी कही बनाय । चौपड़ खेली अद्‌भुत आय ।।37।।
पौ पर बाज़ी अटकी आय । गुरु बिन पौ का दाव न पाय ।।38।।
संत सतगुरु जो जन पाय । चौपड़ से बाहर हो जाय ।।39।।
निज घर अपने जाय समाय । राधास्वामी दर्शन पाय ।।40।।

---

1. जला कर । 2. बने ।

।। शब्द दूसरा ।।

सुरत बुन्द सत सिंध तज । आई दसवें द्वार ।।1।।
व्हाँ से उतरी पिंड में । बसी आय नौ वार ।।2।।
मन इन्द्री सम्बन्ध कर । पड़ी जगत को लार[1] ।।3।।
जन्म जन्म दुख में रही । बही चौरासी धार ।।4।।
सुध भूली घर आदि की । सत्तपुरुष दरबार ।।5।।
नर देही जब जब मिली । किया न सतगुरु प्यार ।।6।।
संशय सोग भरमत रही । क्यों कर उतरे पार ।।7।।
सतगुरु संत दया करी । आये धर औतार ।।8।।
बहु विधि अब समझावहीं । मारग शब्द पुकार ।।9।।
काल बिछाया जाल अस । गुप्त किया मत सार ।।10।।
करम भरम पाखंड का । कीन्हा बहुत पसार ।।11।।
विद्या रस ज्ञानी ठगे । बाचक अति अहंकार ।।12।।
जड़ चेतन ग्रन्थी[2] बँधे । थोथा करें विचार ।।13।।
सुरत शब्द की राह को । करें न अंगीकार ।।14।।
मन बैरी धोखा दिया । तजे न मूल विकार ।।15।।
इन की संगत मत करो । यह मारें घेरा डार ।।16।।
खोजी कोइ कोइ होयगा । बादी[4] सब संसार ।।17।।
रोज़गारी भेखी सभी । मानी मान अधार ।।18।।
राधास्वामी गाइया । इन से रहो हुशियार ।।19।।
संत सरन दृढ़ कर गहो । काल का बड़ा बरियार[5] ।।20।।
सुरत न पावे शब्द रस । तब लग रहे ख़ुवार[6] ।।21।।
ता ते सतगुरु संग कर । पहुंची निज घर बार ।।22।।

।। शब्द तीसरा ।।

काल मत जग में फैला भाई । दयाल मत भेद न काहू पाई ।।1।।

---

1. संग । 2. गाँठ । 3. खाली । 4. झगड़ा करने वाले । 5. बलवान ।

बेद पुरान शास्त्र और सिमृत । इन सब रूँधा[1] मारग आई ।।2।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति । दस औतार जाल फैलाई ।।3।।
ज्ञानी जोगी और संन्यासी । ब्रह्मचार तपसी भरमाई ।।4।।
कहा कहूं सारा जग भूला । कोइ बिरले संत जनाई ।।5।।
पंडित भेख टेक में भूले । सब भौ धार बहाई ।।6।।
साहेब कबीर और तुलसी साहेब । दयाल मता इन आन चलाई ।।7।।
राधास्वामी खोल सुनाई । मैं भी इन संग मेल मिलाई ।।8।।

।। शब्द चौथा ।।

इक पुरुष अजायब पाया । कोई मर्म न उसका गाया ।।1।।
बिन संत हाथ नहिं आया । ऋषि मुनि सब धोखा खाया ।।2।।
क्या व्यास वशिष्ठ भुलाया । क्या शेष महेश भ्रमाया ।।3।।
पारासर जोगी नारद । श्रृंगी ऋषि ग़ोता खाया ।।4।।
हंम कहें कौन समझाई । परतीत न कोई लाया ।।5।।
संतन यह भाख सुनाया । कोइ गुरुमुख बूझ बुझाया ।।6।।
घट घट में काल समाया । श्रुति सिमृत जाल बिछाया ।।7।।
खट शास्तर बुद्धि चलाया । अंधे मिल धूल उड़ाया ।।8।।
कुछ हाथ न उनके आया । बिन सतगुरु भटका खाया ।।9।।
संतन वह देश जनाया । तब तुच्छ जीव भी पाया ।।10।।
नीचों को घाट लगाया । ऊँचों को काल बहाया ।।11।।
राधास्वामी पता बताया । खोजी की कमर बँधाया ।।12।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

मैं कहूँ कौन से भाई । कोइ मेली नज़र न आई ।।1।।
जो बात संत बतलाई । काहू से मेल न खाई ।।2।।
तिरलोकी सभी सुनाई । चौथे का मर्म न गाई ।।3।।
जिस चौथा लोक जनाई । सो अचरज करते भाई ।।4।।

---

1. बन्द किया ।

कोई माने न बहुत मनाई । अब क्यों कर करूँ लखाई ।।5।।
मैं समझ यही चित लाई । बिन मेहर न सरधा आई ।।6।।
जो सतगुरु होयँ सहाई । तो सभी बात बन आई ।।7।।
ता ते यह गिनत[1] मिटाई । राधास्वामी चुप्प रहाई ।।8।।

।। शब्द छठा ।।

कहूं अब गोपी कृष्ण विहार[2] ।। टेक ।।
मन है कृष्ण इन्द्रियाँ गोपी । लीला भोग विकार ।।1।।
कामादिक सब ग्वाल बाल सँग । बिन्द्रावन तन करत खिलार ।।2।।
नंद अनंद रूप पित अपना । छोड़ तिरकुटी द्वार ।।3।।
नाद धाम तज जगत सम्हारा । आय फँसा नौ वार ।।4।।
कंस रूप अज्ञान निशाचर[3] । पड़ गया इस मन लार ।।5।।
नाद ज्ञान ले करी चढ़ाई । मारा कंस गँवार ।।6।।
राधा सुरत मिली जिस मन को । वही कृष्ण पहुंचा दस द्वार ।।7।।
आगे का गुरु निला न उसको । रहा काल के जार[4] ।।8।।
यह दोउ लीला कृष्ण सम्हारी । कभी नौ में और कभी दस द्वार ।।9।।
संत धाम इन भेद न पाया । काल हुआ यह कृष्ण मुरार ।।10।।
ता ते संतन वर्ण सुनाया । कृष्ण काल दोउ एक विचार ।।11।।
जब लग सुरत न पावे सतपुर । रहे काल के वार[5] ।।12।।
ता ते सतगुरु कहत जनाई । छोड़ो कृष्ण दुआर ।।13।।
आगे चलो संत मत परखो । जाकी ऊँची धार ।।14।।
चौथा लोक संत गुहरावें । सत्त नाम पद सार ।।15।।
सुरत शब्द का मारग धारो । पहुंचो निज घर बार ।।16।।
राधास्वामी कहत बुझाई । त्यागो काल लबार[6] ।।17।।
यही हाल तुम राम विचारो । दोनों हैं इकतार[7] ।।18।।

---

1. खयाल । 2. खेल । 3. राक्षस । 4. जाल । 5. द्वार । 6. झूठा । 7. एक से ।

राम कृष्ण दोउ जग में आये । काल धरे औतार ।।19।।
वही रावन को मार राम ने । सीता सुमत सुधार ।।20।।
आय अजुध्या तन के भीतर । राज लिया दस द्वार ।।21।।
पहिले विपता बहुतक भोगी । जब लग चढ़े न त्रिकुटी पार ।।22।।
संत मता इनहूं नहिं जाना । रहे काल के गार[1] ।।23।।
राधास्वामी कह समझावें । कृष्ण राम दोनों तज डार ।।24।।
दस औतार काल के जानो । सब ही से तुम गहो किनार[2] ।।25।।
चौथा पद जो संत बतावें । सुरत शब्द ले उतरो पार ।।26।।

।। शब्द सातवाँ ।।

देखो गगन बीच, श्याम कंज खिल रहा ।
भँवरा गया लुभाय, वहीं चढ़ के मिल रहा ।।1।।
धोखे का वह मुक़ाम, उसे देखता रहा ।
बहु सिद्ध नाथ जोगी, उन्हें पेखता[3] रहा ।।2।।
काल अपना जाल एक, जुदा ही बिछा रहा ।
जो जो गये वहाँ, उन्हें उलटावता रहा ।।3।।
नाना कला[4] दिखाय, वहीं मोहता रहा ।
सब की कमाई आप, खड़ा खोसता[5] रहा ।।4।।
क्या क्या कहूं, अनर्थ बहुत भाँति कर रहा ।
बिन संत सतगुरु , वह सभी को निगल रहा ।।5।।
आगे न कोइ जाय, इसी में भुला रहा ।
माया का झूला डाल, मुनन को झुला रहा ।।6।।
द्वारे के पार काहु को, जाने न दे रहा ।
फिर भेद व्हाँ के पार का, सबही ढका रहा ।।7।।
क्या शेष क्या महेश, सभी हार कर रहा ।

---

1. मुँह । 2. अलेहदगी । 3. देखता । 4. लीला । 5. छीनता ।

बिन संत उसके पार, कोई भी न जा रहा ।।8।।
सो भेद राधास्वामी, सभी को सुना रहा।
जिस पर है मेहर उनकी, वह परतीत ला रहा ।।9।।

।। शब्द आठवाँ ।।

पिया बिन प्यारी कैसे होय निबाह ।। टेक ।।
तू तो अचेत फिरे बौरानी । कस पावे सच शाह ।।1।।
जगत भाड़ में क्यों तू भुनती । पावे निस दिन दाह ।।2।।
छोड़ उपाधि करो सत संगत । ले सतगुरु से राह ।।3।।
इन्द्री भोग विसारो मन से । छोड़ो सब की चाह ।।4।।
चेतन रूप विचारो अपना । फिर लगो शब्द घट आय ।।5।।
कहना मान पियारी मेरा । अब तै[1] पाया दाव ।।6।।
अब के चूके ठौर न पइहो । रहो बहुत पछताय ।।7।।
ता ते पहिले सोधो[2] आपा । फिर सतनाम समाय ।।8।।
राह रकाना[3] गुरु से लेना । सरन पड़ो उन जाय ।।9।।
बिन सरना उन काज न सरिहै । ठग संग काहे ठगाय ।।10।।
पंडित भेख देह अभिमानी । जग संग रहे गठियाय[4] ।।11।।
करम भरम संग हुए बावरे । तीरथ बरत पचाय ।।12।।
गंगा जमना मूरत मंदिर । माला तिलक लगाय ।।13।।
जप तप संजम और अचारा । जाति बरण लिपटाय ।।14।।
शिखा[5] सूत[6] और धोती पोथी । नेम धरम अटकाय ।।15।।
चौका दे दे करे रसोई । कच्ची पक्की छूत लगाय ।।16।।
पानी साथ शुद्धता मानें । नाम महातम चित न समाय ।।17।।
चौके बैठे मछली खावें । भक्तन साथ उपाधि लगाय ।।18।।
विद्या पढ़ पढ़ मानी होवें । पत्थर पानी जगत पुजाय ।।19।।

---

1. तू, तुम । 2. साफ करो । 3. तरकीब । 4. गठ रहे । 5. चोटी । 6. जनेऊ ।

दान पुण्य की महिमा गावें । देवी देवा रहे भुलाय ।।20।।
मथुरा काशी गया द्वारका । पित्तर पूजा दाग़ दग़ाय[1] ।।21।।
चारधाम[2] पृथवी परिकर्मा । धूर फाँक फिर घर को आय ।।22।।
करम चढ़ाये भरम भुलाये । दुख भोगें कुछ लाभ न पाय ।।23।।
जड़ बुद्धि अभिमानी भारी[3] । सतसंग बचन न चित ठहराय 24।।
गंगा जमना पाप कटावें । गोबर बछिया मूत पिलाय ।।25।।
पशु होय पशुवन को पूजें । पीपल तुलसी पेड़ लगाय ।।26।।
नर देही की सार न जानें । चौरासी में ग़ोता खाय ।।27।।
संत सीत[4] और गुरु परशादी । चरनामृत को दोष लगाय ।।28।।
ऐसे मूरख भटका खावें । तुम उन संग करो मत भाय[5] ।।29।।
कथा पुरान सुनावत डोलें । जिवका कारण भटका खाय ।।30।।
जीव अकाज न सोचें कबही । मान लोभ में रहे लिपटाय ।।31।।
सुनत सुनावत मरम न पावत । अहंकार में रहे भुलाय ।।32।।
भक्ति भाव की सार न जानत । जगत ठगौरी[6] निस दिन खाय 33।।
माया जाल बिछाया भारी । ऋषि मुनी सब धर धर खाय 34।।
दस औतार जती और जोगी । पंडित ज्ञानी रहे पछताय ।।35।।
संत मते की सार न जानें । काल मते में अवधि[7] बिहाय[8] 36।।
सतगुरु बिन सब धोखा खावें । निज घर अपने कोई न जाय ।।37।।
जगत जाल में रहे फँसाई । बार बार चौरासी धाय ।।38।।
सुरत शब्द मारग अति सूधा । ता का मरम न को कोई पाय 39।।
ऐसी भूल पड़ी जग माहीं । हम किस किस को कहें बुझाय 40।।
जो जो संत सरन में आवें । सो सो पावें घर की राह ।।41।।
अब आरत सतगुरु की करहूं । बहुत कहा यह झगड़ा गाय़ ।।42।।
सुरत चढ़ाय चलूँ नभ ऊपर । सहसकँवल में बैठूँ जाय ।।43।।

---

1. बदन पर गरम लोहे से द्वारका में दाग़ लगवाना। 2. जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम्। 3. बढ़के। 4. परशादी। 5. भाव, प्रीत। 6. धोखा। 7. अवस्था, उमर। 8. बिताया।

वहां से बंक तिरकुटी छेदूँ । सुन्न शिखर में आसन लाय ।।44।।
महासुन्न और भंवरगुफा पर । सत्तलोक में पहुंची धाय ।।45।।
अलख अगम के पार सिधारी । वहाँ आरती कीन्ही जाय ।।46।।
प्रेम ख़जाना मिला अपारा । राधास्वामी लिये रिझाय ।।47।।

।। शब्द नवाँ ।।

मैं भूली सतगुरु स्वामी । मैं चूकी अंतरजामी ।।1।।
क्या क्या कहूं बिथा[1] बखानी । सब जग को पंडियन कीन्ह दीवानी ।।2।।
ब्राह्मण और भेखन बहु भरमानी । ऊभट[2] में पड़े भटक भटकानी ।।3।।
मारग जो सीधा दीन्ह छिपानी । तीरथ और बरतन माहिं भुलानी ।।4।।
गया गायत्री राह खुलानी । यह कर्म प्रवृत्ति[3] करें करानी ।।5।।
उलटे गिर भौजल ग़ोता खानी । यह साधन पिछले हुए पुरानी ।।6।।
श्रुति सिमृति व्यास आदिक करें बखानी ।
यह साधन मुक्ति निमित्त न जानी ।।7।।
निरवृत्ति[4] साधन यों कह गानी । कलजुग में एक नाम निधानी ।।8।।
सतगुरु सेवा सतसँग ठानी । अब निरवृति पर जिन मन मानी ।।9।।
तिन जीवन प्रति कहूँ बुझानी । सतगुरु पूरा खोज ख़ुजानी ।।10।।
जब लग पूरा मिले न मिलानी । तब लग खोजत रहे जहानी ।।11।।
खोजन में जो दिवस बितानी । वह साधन में वृथा न जानी ।।12।।
सतगुरु पूरे जभी भिटानी[5] । प्रेम प्रीत से सेवा आनी[6] ।।13।।
तब वह भेद नाम दें दानी । नाम जुक्ति तुम रहो कमानी ।।14।।
नाम प्रताप मुक्ति गति पानी । बिना नाम नहिं ठौर ठिकानी ।।15।।
कलजुग में बिन नाम निशानी । मुक्ति न होगी निश्चय ठानी ।।16।।
करमी धरमी जोगी ज्ञानी । यह सब पिल रहे मनकी घानी ।।17।।
सतगुरु संत मिले नहिं आनी । भूले पढ़ पढ़ पिछली बानी ।।18।।
सब से करी काल ठग हानि । संत बिना कोइ बचे न बचानी ।।19।।

---

1. विपत्ति । 2. बुरी राह । 3. संसार में फँसाने वाले । 4. संसार से छुड़ाने वाले । 5. भेटें यानी मिलें । 6. करो ।

बिरले संत नाम गति गानी । चौथे लोक चढ पता जनानी ।।20।।
राधास्वामी कहा भेद सब छानी । उनकी दया से महुं[1] पुनि जानी ।।21।।
भर्म मिटा भइ नाम दीवानी । आरत उन की सजँ सजानी ।।22।।

।। शब्द दसवाँ ।।

धोखे में सब जग जात पचा ।। टेक ।।
अपनी अपनी बुधि दौड़ावें । सार भेद नहिं हाथ लगा ।।1।।
कहाँ कहाँ की बरन सुनाऊँ । साहेब सच्चा काहु न मिला ।।2।।
बुधि चतुराई सबहिन कीन्ही । थकी बुद्धि तब हार रहा ।।3।।
दसअष्टी[2] कुछ और बखानें । छः शास्तर कुछ और कहा ।।4।।
चार वेद मिल नेति पुकारें । संत बिना कोइ नाहिं कहा ।।5।।
सुरत चढ़ाय शब्द संग पहुंचे । अगम देश में राज किया ।।6।।
तिन का बचन न कोई माने । मूरखता में बहक गया ।।7।।
बिन मिलाप सतगुरु पूरे के । जन्म जुए में हार दिया ।।8।।
हिरसी जीव मिले बहुतेरे । उन से कहो क्या काज सरा ।।9।।
मेहनत करें न मन को मारें । कैसे छूटे जाल बड़ा ।।10।।
काल शिकारी सिर पर ठाढ़ा । जीव अनाड़ी फाँस फँसा ।।11।।
राधास्वामी कहत विचारी । बिना सरन अब कौन बचा ।।12।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

सुन गुरु बचन कहें जो तुझ से । कर परतीत मान हित चित से ।।1।।
चौथा लोक बतावें सतगुरु । तीन लोक भाखें सब ही गुरु ।।2।।
वेद पुरान सिमृत और शास्तर । सबही मिल भाखें चौदह पुर ।।3।।
उन के बचन सभी मिल मानें । कर परतीत झूठ लहिं जानें ।।4।।
प्रत्यक्ष तो दो लोक दिखावें । और लोक सुन सुन सभ गावें ।।5।।
जिन जिन केमन में उनका निश्चा । सो रखते सब उनकी दृढ़ता ।।6।।

---

1. मैं । 2. अट्ठारह पुरान ।

तू सतगुरु का सेवक कैसा । उनका बचन न माने वैसा ।।7।।
एक लोक आगे वह कहें । इन से ऊँचा ता में रहें ।।8।।
सो परतीत न लावो भाई । यह अजरज मेरे मन आई ।।9।।

दोहा

महिमा सतगुरु संत की, करते सब मिल झाड़ ।
कहें संत सब से बड़े, कोई न पावत पार ।।10।।
गगन सात के ऊपरे, सतगुरु का निज धाम ।
सुरतवंत कोई पावई सत्त शब्द बिसराम ।।11।।

गगन सात का भेद सुनाऊँ । भिन्न भिन्न निर्णय कर गाऊँ ।।12।।
प्रथम गगन में दो दल बासा । श्याम सेत का वहीं निवासा ।।13।।
दूसर गगन तिरकुटी थाना । कँवल चार दल ओं ठिकाना ।।14।।
तीसर गगन सुन्न परमाना । दसवाँ द्वारा संत बखाना ।।15।।
चौथा भँवरगुफा पहिचानो । महासुन्न के ऊपर जानो ।।16।।
पंचम सत्तलोक सतनामा । खष्टम अलख लोक परमाना ।।17।।
सप्तम अगम लोक स्रुत पाया । संतन यह पद ऊँच सुनाया ।।18।।
तिस पर आदि अनाम समाना । आदि अंत तिसका नहिं जाना ।।19।।
सो पद भेद संत कोइ पावें । राधास्वामी कह समझावें ।।20।।

दोहा

गगन भेद निर्णय किया, सैन[1] बैन के संग ।
नैन उलट स्रुत मोड़ कर, चढ़े पुकारें संत ।।21।।
पद अनाम जो भाख्या, सो सतगुरु का ठाम[2] ।
शब्द शब्द को बेंधती , पहुंची मूल मुक़ाम[3] ।।22।।

संत दया बिन कोई न पावे । बिना संत कुछ हाथ न आवे ।।23।।
करनी भी सब संत बताई । बिना मेहर पचना है भाई ।।24।।
ताते मुख्य मेहर अब रही । सरन पड़ो राधास्वामी कही ।।25।।

---

1. इशारा । 2. धाम । 3. स्थान ।

।। बचन तेईसवाँ ।।

हाल उत्पत्ति प्रलय रचना का और महिमा सुरत शब्द मार्ग की वास्ते पहुँचने निज स्थान के

।। शब्द पहला ।।

बंझा[1] ने बालक[2] जाया । जिन सकल जीव भरमाया ।।1।।
अज्ञानी नाम कहाया । जिन माया सबल[3] उपाया[4] ।।2।।
ब्रह्मा और विष्णु महेशा । नारद और सारद शेषा ।।3।।
ऋषि मुनि और जोगी ज्ञानी । सब को उन ले धर खाया ।।4।।
वेद पुरान शास्त्र परमाना । दे दे जीवन अधिक भुलाया ।।5।।
जीव अजान मर्म नहिं जानै । काल दुष्ट जंजाल लगाया ।।6।।
रहट[5] घड़ी सम ऊँचे नीचे । भरमत फिरैं कुछ चैन न पाया ।।7।।
कोई ज्ञान कर ब्रह्म समाने । कोइ उपाश[6] बैराट समाया ।।8।।
कोइ करमी स्वर्गन में पहुंचे । कोइ विषई नर्कन भोगाया ।।9।।
मुक्ति पदारथ बढ़ कर जाना । ज्ञानी ऐसा धोखा खाया ।।10।।
कोई काल मुक्ती रस भोगा । फिर नर देही आन बँधाया ।।11।।
कर्म करे जैसे देही में । फिर तैसा फल पाया ।।12।।
करमी विषई और उपाशक । इन तो सदही[7] चक्कर खाया ।।13।।
काल जाल से कोइ न बाचा । निज घर अपने कोई न आया ।।14।।
तब सतपुरुष दया चित आई । कलि में संत रूप धर आया ।।15।।
सब जीवन को दिया संदेसा । सत्तलोक का भेद जनाया ।।16।।
बिरले जीव बचन उन माना । उनको ले सतपुर पहुँचाया ।।17।।
बहुतक जीव बँधे श्रुति सिमृत । संत बचन परतीत न लाया ।।18।।
फिर फिर माँगें वेद प्रमाना । उन उस घर को नेति सुनाया ।।19।।
जब नहिं वेद वेद का करता । तब का भेद संत गुहराया ।।20।।

---

1. जिस स्त्री को संतान न होती हो, माया। 2. मन। 3. बलवान। 4. पैदा किया। 5. पानी खींचने का चक्कर। 6. भक्त। 7. सदा, हमेशा।

उस घर मर्म वेद नहिं जाने । फिर क्यों कर परमान सुनाया 21।।
यह तो बात अगम गति न्यारी । संत बिना कोइ नेक न गाया ।।22।।
ताते संत बचन को मानो । यह परतीत प्रमान दृढ़ाया ।।23।।
संत बिना कोइ मर्म न जाने । वेद कतेब कहाँ से लाया ।।24।।
वह तो तीन गुनन में बरते । काल बचन क़ानून सुनाया ।।25।।

दोहा

वेद बचन त्रैगुन विषय, तीन लोक की नीत ।
चौथे पद के हाल को, वह क्या जाने मीत ।।26।।
अब उत्पति वर्णन करूँ, जस संतन मत माहिं ।
पुनि परलय भी कहत हूं, ताते भर्म नसाय ।।27।।

सब की आदि कहूं अब स्वामी । अकह अगाध[1] अपार अनामी ।।28।।
तिन से अगम पुरुष प्रगटाये । अगम लोक में आसन लाये ।।29।।
अलख पुरुष का हुआ उजाला । अलख लोक उन चौकी डाला ।।30।।
फिर सतनाम पुरुष मत सोई । सत्य सत्य रचना जहँ होई ।।31।।
सत्त लोक वह धाम सुहेला[2] । हंस करें जहँ अचरज केला[3] ।।32।।
इन लोकन की महिमा भारी । कहूं कहा अद्भुत बिस्तारी ।।33।।
सहस अठासी दीप निवास । हंस करें जहँ सदा बिलास ।।34।।
सुख का धाम सदा सुख जहाँ । दुख कलेश का नाम न वहाँ ।।35।।
नइ नइ लीला सदा अनंद । हंस करें नित परमानन्द ।।36।।
अमी अहार भोग परचंड[4] । सच्चखंड वह धाम अखंड ।।37।।
तहँ से भँवरगुफा रच राखी । सोहं पुरुष नाम कह भाखी ।।38।।
महासुन्न इक रचा ठिकाना । दीप अचिंत महा मैदाना ।।39।।
तिस के नीचे सुन्न बिलास । अक्षर दीप रकार प्रकास ।।40।।
व्हाँ से रचा तिरकुटी धाम । ओंकार का जहँ विश्राम ।।41।।
वेद कतेब का यही मुक़ाम । तिरलोकी का कारन धाम ।।42।।

---

1. अथाह । 2. सुहावन, सुन्दर । 3. किलोल । 4. प्रबल ।

झँझरी दीप[1] की रचन रचाई । निर्गुन काल की जहँ ठकुराई[2] ।।43।।
गुन तीनों य्हाँ से उतपाने । ब्रह्मा विष्णु महेश कहाने ।।44।।
यहाँ से सरगुन रचा पसारा । चार खान उत्पति विस्तारा ।।45।।
जन्में मरें जीव चौरासी । काल निरंजन डाली फाँसी ।।46।।
वह दयाल पद कोई न पावे । निरगुन सरगुन चक्कर खावे ।।47।।
अब परलय का भाखू लेखा[3] । जस सिमटाव जगत का देखा ।।48।।
काल आय जीवन को ग्रासा[4] । जीव समाने काल की स्वाँसा ।।49।।
देही कारज पृथवी होई । पृथवी ने गिरसी पुनि सोई ।।50।।
पृथवी घोली जल ने आय । जल को सोखा अग्नि धाय ।।51।।
अगनि मिली पवन के रूप । पवन हुई आकाश सरूप ।।52।।
आकाश समाना माया माहिं । तम रूपा दीखे कुछ नाहिं ।।53।।
माया रली ब्रह्म में जाय । शक्ती[5] शिव में गई समाय ।।54।।
शिव[6] पहुंचे ओंकार मंझार । ओंकार समाने सुन्न का बास ।।55।।
सुन्न किया महासुन्न निवास । भँवरगुफा महासुन्न का बास ।।56।।
यहाँ तक परलय कभि कभि होई । सत्तलोक का द्वारा सोई ।।57।।
परलय गति आगे नहिं भाई । सत्तलोक में कभी न जाई ।।58।।
काल त्रिलोकी कीन्ही नास । महाकाल पुनि काल गिरास ।।59।।
महाकाल पहुंचा सत द्वार । आगे गति[7] नहिं ठिटका[8] वार ।।60।।
परलय महापरलय गति गाई । पिंड प्रलय अब कहूं बुझाई ।।61।।
काल किया जब तन परवेश । जीव चला तज यह परदेश ।।62।।
मूलद्वार[9] पृथ्वी का बास । खिंचा वहाँ से स्वाँस और भास[10] ।।63।।
खिंच कर आया इन्द्री द्वार । व्हाँ से पहुंचा नाभि मँझार ।।64।।
नाभी से खिंच हिरदे आया । हिरदे से फिर कंठ समाया ।।65।।
पृथवी जल अग्नी और पौन । कंठ माहिं रूँधन लगी होन ।।66।।
चारों तत्त्व भास और स्वाँस । यहाँ से चले खिंचे आकाश ।।67।।

---

1. सहसदल कँवल । 2. हुकूमत, राज । 3. कैफ़ियत, विवरण । 4. खाया ।
5. जोत । 6. निरंजन । 7. पहुँच । 8. ठहर गया । 9. गुदा चक्र ।
10. चैतन्य का प्रकाश, सत्ता ।

दो दल कँवल काल के देश । कर्म अनुसार खान परवेश ।।68।।
इस विधि काल जीव को खाय । जन्मे मरे बहुत दुख पाय ।।69।।
सतगुरु बिन नहिं लगे ठिकाना । ता ते सतगुरु सरन समाना ।।70।।
सतगुरु कहें भेद दरसाई । मारग घर का देयँ बुझाई ।।71।।
पिरथम सरन गहो सतगुरु की । दुतिये बाड़[1] धरो सतसंग की ।।72।।
गुरु जो भेद बतावें तुम को । धारो बचन कमाओ उनको ।।73।।
तन मन इंद्री सुरत समेटो । चढ़ आकाश शब्द गुरु भेटो ।।74।।
सुनो नित्य तुम अनहद बानी । देखो अद्‌भुत जोत निशानी ।।75।।
जोत फाड़ फिर सुन्न समाओ । सुखमन होय बंक में आओ ।।76।।
बंक पार त्रिकुटी सुन गीत । काल कर्म दोउ लीन्हे जीत ।।77।।
सुन्न शिखर चढ़ी सूरत घूम । मानसरोवर पहुंची झूम ।।78।।
महा सुन्न जहँ अति अँधियार । गुप्त चार धुन बानी सार ।।79।।
भँवरगुफा जाय लीन्ही चीन्ह । आगे सत्तलोक चढ़ लीन्ह ।।80।।
अलख अगम को जाकर परसा । शब्द पकड़ मन सूरत सरसा[2] ।।81।।
राधास्वामी नगर निहारा । देखा जहाँ अगर उजियारा ।।82।।
उत्पति परलय मारग भेद । जो जो सुने मिटे भ्रम खेद ।।83।।
यह उत्पति कर भली सुनाई । वेद शास्त्र ताहि जाने न भाई ।।84।।

सोरठा

संतन का मत गूढ़[3], बिना संत को जानई ।
राधास्वामी किया ज़हूर[4], माने सतसंगी कोई ।।85।।

।। बचन चौबीसवाँ ।।

।। माया संवाद ।।

भेद वेदांत और हाल वाचक ज्ञानियों का और यह कि सिद्धांत पद वेदांत का सुरत शब्द मार्ग की कमाई से प्राप्त होगा

---

1. ओट। 2. आनन्द पाया। 3. गुप्त। 4. प्रकाश।

।। शब्द पहला ।।

चढ़ो री सखी अब अगम अटारी । खोल दई मेरे हिये की पिटारी ।।1।।
हाथ लई मैंने बिरह कटारी । काल दुष्ट का सीस कटा री ।।2।।
तिल का परदा तुरत फटा री । गुरु से लिखाया अमर पटा[1] री ।।3।।
देख लिया अब मूल अटारी । बाँध लई मैंने प्रेम जटा री ।।4।।
छोड़ दिया जग देख मठा[2] री । काम क्रोध अब दूर हटा री ।।5।।
लोभ मोह मेरा आज घटा री । करम भरम सब आप लटा[3] री ।।6।।
मन करे मेरा खेल नटा री । भर गया मेरा प्रेम घटा[4] री ।।7।।
दुख सुख संशय सभी घटा री । छाय गई अब बिरह घटा री ।।8।।
मानसरोवर पाया तटा री । फ़तह किया गढ़ झटापटा री ।।9।।
अमल किया जाय अगम पुरी में । झाँक रही अब सुन झँझरी में ।।10।।
धुन धधकार उठी जहँ भारी । तीन लोक से हो गइ न्यारी ।।11।।
धड़की छाती काल शिकारी । धर धर रोवे माया पुकारी ।।12।।
इन मेरा अब देश उजाड़ी । क्या ऐसी अब मन में धारी ।।13।।
बिनती करूँ अब राधास्वामी पै । और उपाय नहीं अब मो पै ।।14।।
और जीव कोइ अब न चितावें । घर मेरा जो चाहें बसावें ।।15।।
बहुतक जीव लिए हैं उबारी । एक जीव यह सब पर भारी ।।16।।
बंद करो अब अपना रस्ता । बहुत किया तुम मारग सस्ता ।।17।।
सुन लो स्वामी बिनती मोरी । मैं आई अब सरना तोरी ।।18।।
और जीव तेरे मैं हूं किस की । मैं भी पकड़ी ओटा अब की ।।19।।
सुन कर बचन सुआमी बोले । छल बल तेरे सब हम तोले ।।20।।
जीव हमारा तू नहिं पावे । अमर लोक को सीधा जावे ।।21।।
सिमृत शास्तर बेद पुराना । इन में सब जिव आय फँसाना ।।22।।

---

1. पट्टा। 2. छाछ। 3. निरबल हो गया। 4. घड़ा।

संत पंथ का मारग छूटा । तीरथ बर्त नेम कर लूटा ।।23।।
बहुत पुजाया पत्थर पानी । करम भरम में जिव लिपटानी ।।24।।
ज्ञान ध्यान सब बाचक फैला । जोग जुक्ति में ठेलमठेला[1] ।।25।।
साधन चारों[2] सब के ढीले । जो समझाओ तो करें दलीलें ।।26।।
मन अभिमानी जैसे फ़ीले[3] । संत पंथ में ढीले ढीले ।।27।।
ना गुरु भक्ति न नाम सनेहा । कहो तो कहें हम आगे कीया ।।28।।
पिछले जन्म का धोखा दे हैं । विषई जीव को ले भरमैं हैं ।।29।।
बालपने से विषय कमाये । विद्या पढ़ पढ़ बुद्धि बढ़ाये ।।30।।
बुद्धि विलास किया अब सब ने । मान बड़ाइ में लागे खपने ।।31।।
देखो न्याव कर मन में अपने । बुधि से जग को कहते सुपने ।।32।।
मन तरंग में छिन छिन बहते । तब जग को जागृत सम करते ।।33।।
कोइ उन का ज़रा करे अपमाना । या कोइ का वह देखें माना ।।34।।
करें इर्षा उसकी भारी । क्रोध करें अति छाती जारी ।।35।।
बाहर सूरत बहुत बनावें । अंतर में तलवार चलावें ।।36।।
यह उनके है मन की रहनी । परख परख मैं सब कह दीनी ।।37।।
ज्ञान मते को दाग़[4] लगाया । ऐसाहि मत क्या व्यास चलाया ।।38।।
वह तो भये जोग मत सूरे । ज्ञान ध्यान उन पाय पूरे ।।39।।
ब्रह्म देश उन बासा कीना । मन और सुरत करी वहिं लीना ।।40।।
इतना पद उनका है पूरा । इनका कहना सब है कूड़ा ।।41।।
बिना जोग कीई ज्ञान बखाने । सम दम साधन कैसे आने ।।42।।
या ते सुरत योग अब कीजै । सम दम साधन वाते लीजै ।।43।।
बिन सम दम नहिं आत्म अनंदा । गाँठ खुली नहिं झूठा धन्धा[5] ।।44।।
जैसे बुलबुल बाँधे पेटी । गई बाग़ में गुल[6] पर बैठी ।।45।।
छिन में खैंच खिलाड़ी लीना । मिट गया आनंद दुख भया दूना ।।46।।

---

1. बे-परवाही, ढीला । 2. वैराग, विवेक, षट सम्पति और मुमोक्षता ।
3. हाथी । 4. धब्बा । 5. करतूत । 6. फूल ।

ऐसे ग्रन्थ बग़ीचे माहीं । करें सैर यह ज्ञानी भाई ।।47।।
पढ़ते पढ़ते आनंद भोगें । फिर पीछे मन के बस होवें ।।48।।
जो कोइ कहे चितावन कारन । मिथ्या कह कह मुख से भाखन ।।49।।
रोग सोग में हालत बदली । जानो गाँठ बँधी नहिं खोली ।।50।।
ऐसे ज्ञान का नहीं भरोसा । फिर साधो मन खाया धोखा ।।51।।
सुरत शब्द का साधन करिये । तब सम दम छिन माहीं पइये ।।52।।
जो मन शब्द में ठहरे नाहीं । तब ही जानो सम नहिं भाई ।।53।।
जो सम होता उन के हाथा । तौ छिन में मन शब्द समाता ।।54।।
मन चंचल तौ ज्ञान भी चंचल । क्यों सुख पावे आतम निश्चल ।।55।।
आतम सुख की क्या कहूं महिमा । जिन्हें परापत तिनही जाना ।।56।।
आतम में वह हरदम बरते । कहो तुम कितनी बिरती[1] धरते ।।57।।
जो बिरती आतम नहिं माने । तो सम ही का घाटा[2] जाने ।।58।।
जो बिरती आतम को परसे । दिन दिन आनंद बढ़ता दरसे ।।59।।
जगत भोग सब छिन में फेंके । बान दशा होय जग को छेके[3] ।।60।।
अन्तर बरिती ऐसी रहई । बाहर से कुछ काज न सरई ।।61।।
आप आप को आप पिछानो । कहा और का नेक न मानो ।।62।।
ज्ञानी के प्रारब्ध न रहती । देही उसकी विदेही में बरती ।।63।।
यह जो गति तुम में नहिं आई । झूठा ज्ञान तुम्हारा भाई ।।64।।
बिना जोग ज्ञानी नहिं होई । जनम मरन से छुटे न कोई ।।65।।
पिछला जोग कभी नहिं पाई । ताते सुरत जोग ठहराई ।।66।।
संत मता अब धारो नीका[4] । सुरत शब्द यह सब का टीका[5] ।।67।।
वह तो धर्म जुगन पिछले का । इन जीवन का बल नहिं बूता ।।68।।
जब थे जिव सब ईश्वर कोटी । अब जीवों की बुद्धि है खोटी ।।69।।
जीव कोटि में इनकी गिन्ती । यह नहिं धारें उनकी जुगती ।।70।।

---

1. आचरन, मन का झुकाव । 2. कमी । 3. दूर करे । 4. अच्छे तौर से । 5. सार, सिरमौर ।

या ते ज्ञान जोग दोउ खंडन । भक्ति भाव संतन कियो मंडन[1] ।।71।।
सुरत शब्द की अब करो करनी । तो उनकी सी हो जाय रहनी ।।72।।
ईश्वर पद जब घट में पाओ । ईश्वर कोटी तुम हो जाओ ।।73।।
जब वह ज्ञान सफल होय तुम को । नहिं अधिकार ज्ञान का सब को ।।74।।
जब लग निश्चल चित्त न होई । ज्ञान बचन को सुनो न कोई ।।75।।
बिन उपाशना चित नहिं ठहरे । शब्द बिना कोइ उपाश न है रे ।।76।।
जो उपाशना कहे हम कीन्ही । पिछले जन्म भुगत हम लीन्ही ।।77।।
तो मन निश्चल आतम माहीं । होना चहिये अचरज नाहीं ।।78।।
जो मन आतम रंग न राचा[2] । तो जानो सब कहना काचा ।।79।।
अब चहिये फिर करें उपाशन । जासे कटें सभी मन बासन[3] ।।80।।
जो तुम कहो कदाचित[4] ऐसी । ज्ञानी को करनी नहिं रहती ।।81।।
लक्ष[5] गियानी की यह बातें । बाचक को शोभा नहिं याते ।।82।।
अब मन में तुम ख़ूब विचारो । बाचक तुमहीं हो अस धारो ।।83।।
धोखा मत खाओ पढ़ पोथी । क्यों ऐसी बातें करों थोथी[6] ।।84।।
भक्ति भाव को मन में धारो । कलजुग का यह धर्म सम्हारो ।।85।।
सत्तपुरुष ने धारा रूपा । संत स्वरूप भये जग भूपा ।।86।।
हुक्म दिया क़तई अब ऐसा । भक्ति बिना तरना कहो कैसा ।।87।।
गुरु भक्ति बिन तरे न कोई । बिन गुरु ज्ञान पार नहिं होई ।।88।।
शब्द ज्ञान गुरु ज्ञान पिछानो । और गुरु सब झूठे जानो ।।89।।
धुन का नाम शब्द है भाई । द्वार दसम से जो नित आई ।।90।।
जब तक सुरत न पकड़े धुन को । मार न सक्ता कोई मन को ।।91।।
बिन मन मारे कभी न तरना । जनम जनम भौसागर पड़ना ।।92।।
सुरत शब्द से मन को मारो । और जतन कोई मत धारो ।।93।।
काल पड़ा जीवन के पाछे । दूध छिपाय पिलावे छाछे[7] ।।94।।
खट शास्तर और चारों वेदा । यह संतन ने किये निषेधा ।।95।।

---

1. स्थापित । 2. भीना, भीगा हुआ । 3. बासना । 4. कभी । 5. प्रत्यक्ष । 6. खाली । 7. मट्ठा, लस्सी ।

बानी अपनी जुदी बनाई । मूरख उन से विधि मिलाई ।।96।।
संग पंडितन जिस ने कीन्हा । बुद्धि हरी भये काल अधीना ।।97।।
काल दूत तुम उन को जानो । उन की बात जरा मत मानो ।।98।।
संतन का मत उन से न्यारा । गुरु पूरे संग करो विचारा ।।99।।
बिन गुरु पूरे हाथ न आवे । गुरु पूरा जो शब्द बतावे ।।100।।
शब्द अर्थ जो और लगावे । धुन के बिना झूठ वह गावे ।।101।।
शब्द कहो चाहे धुन अनहद । और अर्थ नहिं येही अद्‌भुत ।।102।।
बार बार मैं कहा बनाई । शब्द बिना नहिं और कमाई ।।103।।
जो तुम चाहो अपन उधारा । पकड़ो शब्द करो मत बारा[1] ।।104।।
मैं अपनी सी सब कह दीनी । आगे साहेब मौज अधीनी ।।105।।
जिन पर किरपा उन की होई । शब्द भेद जानेगा सोई ।।106।।
धुन अंतर मन राखो अपना । बार बार कहुं मानो बचना ।।107।।
काल बड़ा बरियार[2] कहावे । या से कोइ न बचने पावे ।।108।।
बिना संत कभी नाहिं उबारा । तीन लोक से होय न पारा ।।109।।
चौथा लोक संत दरबारा । व्हाँ पहुंचे संतन का प्यारा ।।110।।
सुरत शब्द का मारग लीजै । सत्तलोक को प्याना[3] कीजै ।।111।।
और मते सब काल पसारे । हिन्दू मुसलमान सब सारे ।।112।।
जैनी और अंगरेज़ बिचारे । ईसा पारसनाथ पुकारे ।।113।।
वह ईसा को बेटा मानें । वह तीरथंकर उनको जानें ।।114।।
यह तो बात सही मैं मानूं । पर इस में इक भेद बखानूं ।।115।।
तिरलोकी का नाथ जो कहिये । ईसा उनका बेटा सही है ।।116।।
तीरथंकर भी उसको जाना । नाम निरंजन कहें निरबाना ।।117।।
पद निर्वाण कहें हैं जैनी । उनके मत की सब हम चीन्ही 118।।
राम ब्रह्म हिंदू कर बोले । अल्ला ख़ुदा मुसलमाँ तोले ।।119।।

---

1. देरी। 2. ज़बरदस्त, बलवान्। 3. कूँच, रवानगी।

खुद खुदाय[1] का मर्म न जाना । राम ब्रह्म का बाप छिपाना ।।120।।
राम ब्रह्म से वह पद आगे । चौथा लोक संत जहँ लागे ।।121।।
नानक और कबीर बखाना । तुलसी साहेब निज कर जाना 122।।
उन की बानी वह पद गावे । सच्चखंड सतलोक लखावे ।।123।।
अब संशय कुछ करो न भाई । सत्तलोक की आसा लाई ।।124।।
निश्चय कर आसा दृढ़ राखो । सुरत शब्द का मारग ताको ।।125।।
सब विद्या और करमा धरमा । दूर बहाओ यह सब भरमा ।।126।।
जीव उबार न इन से होई । सुरत शब्द अब धारो सोई ।।127।।
चारों मत को यह उपदेशा । पकड़ शब्द जाओ उस देशा ।।128।।
चौथा लोक अगम है भाई । शोभा व्हाँ की बरनी न जाई 129।।
सत्तपुरुष जहँ सदा बिराजैं । कँवल सिंहासन ता पर गाजैं 130।।
कोटि सूर और चंद्र करान्ती[2] । रोम रोम प्रति[3] सदा लजाती 131।।
हंसन दीप जुदे रच राखे । अमी अहार सभी नित चाखे 132।।
अमृत कुंड भरे जहँ भारी । सच्च खंड की शोभा न्यारी ।।133।।
और बिलास अनेकन भाई । भिन्न भिन्न कुछ कहा न जाई 134।।
हीरे मोती लाल अपारा । भरे जहाँ अचरज भंडारा ।।135।।
राग रागिनी सदा बसंता । महिमा कहूं कहा नहिं अंता ।।136।।
अंतवंत[4] तिरलोकी जानो । वह अस्थान सदा थिर[5] मानो 137।।
शोभा हंसन कहा कहूं भाई । सूर चंद बहु देख लजाई ।।138।।
नाना विधि जहँ उठें सुगंधा । कोटि मलय[6] जहँ मानो मंदा 139।।
हंस करें जहँ सदा बिलासा । पुरुष दर्श दूजी नहिं आसा ।।140।।
हंस करें जहँ सदा अनंदा । काल कष्ट नाहीं कुछ धन्धा ।।141।।
देखें अचरज भोगें अचरज । कहूं कहा सब अचरज अचरज 142।।
बुधिवानों की बुद्धि हिराई । विद्यावान नहीं कुछ पाई ।।143।।

---

1. सच्चे मालिक। 2. प्रकाश। 3. एक एक, हरेक। 4. नाश होनेवाली। 5. ठहराऊ। 6. मलयागिर चंदन। 7. मंद, तुच्छ।

बुधि और विद्या दोनों हारें। संत मते पर सिर धुन मारें।।144।।
बुधि विचार से समझा चाहें। कभी न पावें भटका खावें।।145।।
या ते बुधि बल सबही छोड़ो। मन और सुरत शब्द में जोड़ो 146।।
करो कमाई निस दिन भाई। बुद्धि से कुछ भेद न पाई।।147।।

दोहा

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करनी करो, तो पावो कुछ सार।।148।।

।। शब्द दूसरा ।।

घट कपट दूर कर भाई।। टेक।।
सरधा भाव चरन में राख़ो। प्रीत प्रतीत बढ़ाई।।1।।
मुँह के कहे काज नहिं होगा। जब लग मन में प्रेम न आई।।2।।
बाचक सूर कहें अपने को। बिन रन देखे करत बड़ाई।।3।।
बैरी सन्मुख होत कदाचित। ऐसे भागें खोज न पाई।।4।।
छाया तिमिर बुद्धि पर ऐसा। अपनी गति की बूझ न लाई।।5।।
जैसे मूसा बिल का सूरा। बिल्ली का भय चित न समाई।।6।।
बिल में बैठे बातें मारें। बिल्ली को हम मार गिराई।।7।।
बिल्ली बिल पर आन पुकारी। आओ सूरमा बड़े सिपाही।।8।।
सुन कर म्याउँ च्याउँ घबराये। इक इक भागे ख़बर न पाई।।9।।
ऐसे ज्ञानी बाचक जग में। निज बैराग की करत बड़ाई।।10।।
भाग हीन माया नहिं पूछे। मन जाने हम त्याग कराई।।11।।
धन वालों को ढूँढत डोलें। काहू के उपदेश समाई।।12।।
जो संयोग बने कहिं ऐसा। विषय परापत होता जाई।।13।।
तो भोगी पूरे बन जावें। कहवें मन का धर्म सुनाई।।14।।
अथवा प्रारब्ध सिर डालें। तरह तरह की बात बनाई।।15।।

राग द्वेष[1] में छिन छिन बरतें । अब बैराग कहाँ गया भाई ।।16।।
अन मिलते के त्यागी जानो । ज्ञान लखौटा[2] कहत सुनाई ।।17।।
यों तो सख़्त कड़ा पत्थर सा । अग्नि आगे पिघला जाई ।।18।।
मुख से मान अपमान समाना । बरतन[3] में निज मानहि चाही ।।19।।
जो अपमान करे कोई उनका । क्रोध करें बैरी बन जाई ।।20।।
मान करें मन की सी बोलें । प्रीत करें स्वारथ लिपटाई ।।21।।
और कर्म सबही नित करते । भक्ति भाव में रहें अलसाई ।।22।।
जो भक्ति संतन ने भाखी । ता का मर्म नेक नहिं पाई ।।23।।
खान पान बस्तर तन किरिया । सब करते इक भक्ति हटाई ।।24।।
व्यवहारिक जग सत्त बतावें । भक्ति का व्यवहार छुड़ाई ।।25।।
तीरथ भरत नेम खट करमा । पूजा पाठ करें नित आई ।।26।।
पोथी पुस्तक विद्या नाना । पढ़ें पढ़ावें बहु विधि भाई ।।27।।
सैर तमाशा देश दिशंतर । मेला ठेला जात भ्रमाई ।।28।।
यह करतूत न छोड़ें कबही । भक्ति से पुन[4] जन्म बताई ।।29।।
ज्ञान मता मारग ठहारया । जो भक्ति का फल था भाई ।।30।।
भक्ति दीनता करें न आदर । अपनी भक्ति करन सिखाई ।।31।।
धन और माल देय जो कोइ । तो पाखँड संग लेत गठाई ।।32।।
और व्यवहार करें सब जग का । इक भक्ति से विरोध जनाई ।।33।।
भक्ती की परवाह न राखें । हानि समझ मानो डरहि लगाई ।।34।।
गुरु भक्ति सुपने का सिंह कहें । ता को छोड़त देर न लाई ।।35।।
और कर्म और भोग जगत के । यह नहिं छोड़ें बरतें जाई ।।36।।
काग विष्ट सम मुख से कहते । सो नहिं छूटे विषठा खाई ।।37।।
भक्ति भाव को छिन में छोड़ा । और करम दम साथ निबाही ।।38।।
जिन बातों में मन मरता था । सो मिथ्या कर दूर कराई ।।39।।

1. रग़बत, नफ़रत। 2. लाखका, (बनावटी)। 3. बरताव करने में।
4. पुनर्जन्म।

और कर्म कोई किया न मिथ्या । सब फ़ेलों[1] में नित्त खपाई ।।40।।
ऐसे मूरख मन के मौजी । निर्भय बरतें ख़ौफ़ न लाई ।।41।।
सुरत शब्द मारग नहिं धारें । संत बचन परतीत न आई ।।42।।
राधास्वामी कहत सुनाई । ऐसा मत कोई गहो न भाई ।।43।।

।। शब्द तीसरा ।।

हे विद्या तू बड़ी अविद्या । संतन की तैं[2] क़द्र न जानी ।।1।।
संत प्रेम के सिंध भरे हैं । तैं उलटी बुधि कीचड़ सानी ।।2।।
संतन प्रेम लगा प्यारे से। उनकी सूरत शब्द समानी ।।3।।
तू धन मान प्रतिष्ठा चाहे । और चतुरता में लिपटानी ।।4।।
कलि में जीव बहुत तैं घेरे । बिरले गुरुमुख बचे निदानी ।।5।।
उनकी प्रेम अनुभवी बानी । तू बुद्धि संग रहत खपानी ।।6।।
विद्या पढ़ पढ़ बहुत पचे हैं । प्रेम बिना कुछ हाथ न आनी ।।7।।
अर्थ संप्रदा[3] कर कर फूलें । अनुभव की उन सार न जानी ।।8।।
बानी बन में रहे भुलाने । पढ़ पढ़ पोथी जन्म बतानी ।।9।।
घट के भीतर नेक न ठहरें । मन चंचल की गति न पिछानी।।10।।
बाहरमुखी ग्रन्थ नित पढ़ते । घट की पोथी पढ़ें न पढ़ानी ।।11।।
घट का भेद कहो जो उनसे । तो उनका मन देत न हामी[4] ।।12।।
संत गगन में सुरत चढ़ावें । वे सुनते नित व्हाँ की बानी ।।13।।
उनकी गति मति अगम अपारा । तू लोगन को रीझ रिझानी ।।14।।
प्रेमी जीव न मानें तेरी । तू अपनी सी कहत कहानी ।।15।।
अस्तुति के भूखे तुम निस दिन । मान अस्तुती चाह भरानी ।।16।।
अपने औगुन आप विचारो । और काढ़न की जुगत कमानी ।।17।।
धोखे में क्यों जनम बिताओ । सुरत शब्द में नित्त चढ़ानी ।।18।।
विद्या छोड़ करो यह करनी । तो पावो सतनाम निशानी ।।19।।

---

1. कामों । 2. तूने । 3. टीका । 4. मानना ।

विद्या पढ़ मन से नहिं जीतो । विरथा थोथे तीर चलानी ।।20।।
संत मता विद्या से न्यारा । विद्या ठगनी जीव ठगानी ।।21।।
भक्ति भाव प्रेम नहिं उनके । प्रेमी वे मूरख जानी ।।22।।
विद्या के बल रहैं अभिमानी । संतन से उन प्रीत न ठानी ।।23।।
जीव अकाज सोच नहिं मन में । जगत बड़ाई मन में समानी ।।24।।
मुँह से मिथ्या जग को कहते । बरतन में सो सच्चा मानी ।।25।।
मान अपमान समान न कीन्हा । बाचक विद्या रहे भुलानी ।।26।।
ताते विद्या सभी भुलाओ । संत सरन पकड़ो अब आनी ।।27।।
वे विद्या के जो नर प्रेमी । सो संतन के संग लिपटानी ।।28।।
विद्यावान एक नहिं ठहरे । ताते विद्या विघन पिछानी ।।29।।
संत न विद्या पढ़ते कोई । उनके अनुभन समुँद समानी ।।30।।
उनका प्यार लगा प्यारे से । विद्या क्यो कर याद रहानी ।।31।।
तन मन की सब सुध बिसरानी । विद्या बुधि फिर क्यों ठहरानी ।।32।।
सब परकार प्रेम की महिमा । विद्या अविद्या दोनों हानी ।।33।।
जिनका प्रेम शब्द में नाहीं । उनको विद्या ख़्वार[1] करानी ।।34।।
जनम मरन से छुटें न भाई । चौरासी में वहें बहानी ।।35।।
विद्या भूल चढ़ो अब घट में । सुरत शब्द में लाओ तानी ।।36।।
विद्या भी बुधि विषय पिछानो । यह आशक्ती[2] भली न जानी ।।37।।
कथनी बदनी[3] काम न आवे । भक्ति बिना जम के सहे डानी[4] ।।38।।
गुरु भक्ती बिन सब जग चूका । अनेक सियानप[5] में भरमानी ।।39।।
और जतन मिथ्या सब जानो । यही जतन मैं कहा प्रमानी ।।40।।
शब्द कमाई करो प्रेम से । राधास्वामी कहत बखानी ।।41।।

।। बचन पच्चीसवां ।।

वर्णन भूल वेदान्त मत और वेदान्तियों का जो कि काल पुरुष के लक्ष

---

1. खराब । 2. पकड़ । 3. बहस मुबाहसा । 4. दंड । 5. चतुरता ।

स्वरूप को अनामी रूप और सिद्धान्त समझ कर उस में समाये और सिन्ध स्वरूप राधास्वामी की प्रतीत नहीं करते और उस की ख़बर न पाई

॥ शब्द पहला ॥

सतगुरु आरत लीन्ह सिंगारी । जड़ चेतन से सुरत निकारी ॥1॥
जीव चैतन्य देश अब छोड़ा । शब्द चैतन्य देश किया पोढ़ा[1] ॥2॥
सहस कँवल दल लिया आकाश । चढ़ कर पहुंची गिर[2] कैलाश ॥3॥
द्वारा सुखमन नाका बंक । तोड़ा फोड़ा उलटी गंग[3] ॥4॥
गंगा जमुना सरस्वती तीन । धार त्रिवेनी लीन्ही चीन ॥5॥
त्रिकुट जाय लंका गढ़ घेरा । रावन ब्रह्म राम मन हेरा[4] ॥6॥
सीता धुन ले सूरत साधी । पहुंची जाय अवधपुर[5] आदी[6] ॥7॥
राज किया घर अजर बसाया । रावन सीता राम समाया ॥8॥
गिर सुमेर परवत कंचन धर । भान उलट फेरा शशि[7] मंदर ॥9॥
सुन्न नगर बस्ती जहँ अक्षर । दीप अचिंत लखा निःअक्षर ॥10॥
अक्षर निःअक्षर धुन पारा । महासुन्न का ताका द्वारा ॥11॥
द्वारे धस गई भँवरगुफा में । धारा सोहं सुरत सफ़ा में ॥12॥
उलटी पहुंची सत्त नगर में । धाई दौड़ी अलख डगर में ॥13॥
अगम लोक जाय अधर सिधारी । अगम पुरुष दीदार करा री ॥14॥
संतन उनमुन[8] देश बखाना । बिस्मादी[9] हैरत[10] अस्थाना ॥15॥
सोई अनामी अकह कहाया । रूप न रेख[11] न रंग धराया ॥16॥
यह पद संतन निज कर थापा । बिन जाने सब कहते आपा ॥17॥
इतने ऊँचे जो कोई चढ़े । रूप रंग रेखा ते टरे ॥18॥

---

1. मज़बूत। 2. पर्वत। 3. सुरत की धार। 4. देखा। 5. दसवां द्वार। 6. इब्तदाई, शुरू का। 7. चन्द्रमा। 8. अपने में आप मगन। 9. विशेष समाधि। 10. अचरज रूपी। 11. चिन्ह।

सत्तलोक तिरलोकी चारी । रूप रंग रेखा सब धारी ।।19।।
चार लोक के जो होय पार । रूप रंग रेखा तज न्यार ।।20।।
सिंध बुन्द तज आतम आया । पिंड अंड ब्रह्मंड समाया ।।21।।
आतम लक्ष[1] ज्ञान लिया जिसने । रूप रंग रेखा नहिं तिस में ।।22।।
बुन्द ज्ञान तृप्त हुए मन में । सिंध ज्ञान पाया नहिं सुपने ।।23।।
बुन्द देश है अति ही नीचा । सिंध देश है सब से ऊँचा ।।24।।
बुन्द सिंध को एक मिलावें । बुन्द देश को सिन्ध बतावें ।।25।।
सिंध देश जहँ संत बखाने । संत बचन परतीत न आने[2] ।।26।।
रूप रंग रेखा से न्यारा । सिंध देश को संत पुकारा ।।27।।
बुन्द माहिं रंग रूप न रेखा । बीज रूप था इन नहिं देखा ।।28।।
यह पद वह पद एक न होई । बुधि से विधी[3] मिलावें सोई ।।29।।
मेरे मत मूरख यह ज्ञानी । कैसे इन को कहूं बखानी ।।30।।
यह परमान वेद का मानें । संतन की परतीत न आनें ।।31।।
संत देश इन सुना न देखा । सब को दिया काल ने धोखा ।।32।।
सिन्ध छिपाय बुन्द दिखलाई । बुन्द देख सब गये भलाई ।।33।।
सिंध भेद जो संत बताबें । बुन्द माहिं ले सभी घटावें ।।34।।
अब इनको क्योंकर समझाऊँ । हार मान अब चुप्प रहाऊँ ।।35।।
आरत करूँ और प्रेम बढ़ाऊँ । इनका झगड़ा अब नहिं गाऊँ ।।36।।
सुरत शब्द ले खैंच चढाऊँ । सिंध माहिं अब सहज समाऊँ ।।37।।
राधास्वामी सतगुरु पाये । महिमा उनकी अगम अथाये ।।38।।
बार बार जाऊँ बलिहारी । चरन सरन पर तन मन वारी ।।39।।

सोरठा

वार पार का भेद, आदि अंत सबही लखा ।
पाया अगम अभेद, भूल भरम सबही थका ।।40।।

---

1. प्रतयक्ष । 2. लावे । 3.मेल ।

।। शब्द दूसरा ।।

जग जाग्रत भौ दुख मूल । सुपना भी दुख सुख सूल[1] ।।1।।
सुषपति कुछ घर आराम । वह भी नहिं ठहरन धाम ।।2।।
तीनों में भरमत आठों जाम । पूरा नहीं कहीं बिसराम ।।3।।
अब करिये कौन उपाय । का से अब पूछूँ जाय ।।4।।
तड़पूँ और तरसूँ निस दिन । विरह अग्नि जलूँ मैं दिन दिन ।।5।।
कोइ राह न सुख की गावैं । सब करम भरम भरमावैं ।।6।।
कोइ तीरथ बरत बतावें । कोइ जप तप माहिं लगावैं ।।7।।
निज भेद कहे नहिं कोई । बिरथा नरदेही खोई ।।8।।
यह सोच करा मैं भारी । तब सतगुरु आन सम्हारी ।।9।।
कर दया भेद बतलाया । तुरिया[2] पद मारग गाया ।।10।।
तुरिया से आगे बरना । फिर उस्से आगे चलना ।।11।।
तिस के भी परे लखाया । उस के भी पार सुनाया ।।12।।
तिस परे और समझाया । कुछ आगे और बुझाया ।।13।।
व्हाँ से पुनि आगे भाखा । निज धाम मुख्य यह राखा ।। 14।।
संतन गति अगम सुनाई । जहँ वेद कतेब न जाई ।।15।।
तुरिया में सब थक बैठे । आगे कोई मर्म न देखे ।।16।।
इतने पद संत बताई । बिन सुरत शब्द नहिं पाई ।।17।।
सतगुरु फिर भेद बतावें । अब खुलकर तोहि सुनावें ।।18।।
तुरिया पद सहसकँवल में । तिस आगे चढ़ त्रिकुटी में ।।19।।
दस द्वारा सुन्न चढ़ खोलो । फिर महासुन्न चढ़ तोलो ।।20।।
चढ़ भँवरगुफा तब आई । फिर सत्तनाम पद पाई ।।21।।
व्हाँ से भी चली अगाड़ी । हुइ अलख पुरुष दरबारी ।।22।।
जाय अगम लोक को लीन्हा । लीला सब व्हाँ की चीन्हा ।।23।।

---

1. कष्ट । 2. सहसदल कँवल ।

राधास्वामी धाम लखाया । अब यही ठीक घर पाया ।।24।।
वह तुरिया भी नहिं पावें । बातों की तुरिया गावें ।।25।।
तीनों[1] में चेतन बरते । वाही को तुरिया कहते ।।26।।
बाचक यह बड़े अन्याई । अवस्था चौथी सोऊ गँवाई ।।27।।
जोगेश्वर ज्ञानी पिछले । चढ़ मूरधनी[2] घट खेले ।।28।।
उन चार अवस्था गाई । पंचम कहा चेतन भाई ।।29।।
चारों से न्यारा गाया । ताहि आतम भाख सुनाया ।।30।।
इन मूरधनी[2] घर त्यागा । मन अकाश आतम कह भाखा ।।31।।
क्यों कर इन कहूं बुझाई । इन बहुतहि धोखा खाई ।।32।।
राधास्वामी कहत सुनाई । तुम बचियो इन से भाई ।।33।।

।। शब्द तीसरा ।।

सुरत मेरी दुविधा[2] आन छली । बान अस मारा काल बली ।।1।।
कौन उपाय करूँ अब सजनी । संशय अगिन में जात जली ।।2।।
इक गुरु ज्ञान वेदान्त सुनावें । इक गुरु भाखें शब्द गली ।।3।।
मैं अजान कुछ मर्म न जानूँ । कौन राह को कहूं भली ।।4।।
शब्द कमाई होय न मो से । यही खटक अब चित्त खली[4] ।।5।।
ज्ञान बचन भी समझ न आवे । दोउ में एक न मोहिं मिली ।।6।।
अब क्या करूँ हार कर बैठी । मौज बिना क्या पेश चली ।।7।।
राधास्वामी कहत बुझाई । छोड़ो दुबिधा शब्द पिली ।।8।।
ज्ञान मता यह काल पसारा । सब जीवन को खात दली[5] ।।9।।
सुरत शब्द मत दयाल सुनाया । पकड़ गहूं अब नाहिं टली ।।10।।

।। बचन छब्बीसवाँ ।।

।। सुरत संवाद ।।

जिस में कुल भेद संत यानी राधास्वामी मत

---

1. जगृत, स्वप्न, सुषुप्ति । 2. ओंकार पद । 3. संशय । 4. दुख देती रही । 5. टुकड़े करके ।

का और और मतों का जो संसार में प्रवृत हैं
और जुक्ति इसमें सुरत शब्द मार्ग की और
निज भेद मुक़ामात का वर्णन किया है

।। प्रश्न पहला ।।

अब सूरत पूछे स्वामी से । भेद कहो अपना तुम मोसे ।।1।।
बास तुम्हारा कौन लोक में । य्हाँ आये तुम कौन मौज में ।।2।।
देश तुम्हारा कितनी दूर । खोजे सुरत न जानैं मूर[1] ।।3।।
मैं बिछड़ी तुम से कहो कैसे । देश पराये आई जैसे ।।4।।
मेरा हाल भिन्न कर गाओ । देश आपना मोहिं लखाओ ।।5।।
मन तन संग पड़ी मैं कब से । दुख पाये बहुतक मैं जब से ।।6।।
क्यों भूली मैं देश तुम्हारा । आय पड़ी परदेश निहारा ।।7।।
पाताल बसो कि मृत्यु लोक में । स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में ।।8।।
विष्णु लोक बैकुंठ धाम में । इन्द्रपुरी या शिव मुक़ाम में ।।9।।
कृष्ण लोक या राम लोक में । प्रकृत लोक या पुरुष लोक में ।।10।।
या तुम व्यापक सभी लोक में । चार खान चर अचर[2] थोक में ।।11।।
क्यों मोहिं डाला काल लोक में । अति भरमाया हर्ष शोक[3] में ।।12।।
अब क्यों आये मोहिं चितावन । रूप धरा तुम अति मन भावन ।।13।।
मैं दासी तुम चरन निहारे । भेद देवो तुम अपने सारे ।।14।।

।। उत्तर अंग पहला ।।

तब हँस शब्द सुवामी बोले । सुनो सुरत तुम मैं कहुं खोले ।।15।।
जो तू पूछे भेद हमारा । कहूं सभी अब कर विस्तारा ।।16।।
मैं हूं अगम अनाम अमाया । रहूं मौज में अधर समाया ।।17।।
मेरा भेद न कोई पावे । मैं ही कहूं तो कहन में आवे ।।18।।

---

1. मूल । 2. चेतन्य और जड़ । 3. भंडार ।

पिरथम अगम रूप मैं धारा । दूसर अलख पुरुष हुआ न्यारा ।।19।।
तीसर सत्त पुरुष मैं भया । सत्तलोक मैं ही रच लीया ।।20।।
इन तीनों में मेरा रूप । य्हाँ से उतरीं कला[1] अनूप[2] ।।21।।
य्हां तक निज कर मुझ को जानो । पूरन रूप मुझे पहिचानो ।।22।।
अंस दोय सतपुरुष निकारी । जोत निरंजन नाम धरा री ।।23।।
यह दो कला उतर कर आईं । झँझरी दीप में आन समाईं ।।24।।
यहाँ बैठ तिरलोकी रची । पाँच तीन की धूम अब मची ।।25।।
तीन लोक से मैं रहुं न्यारा । चार पाँच छः में बिस्तारा ।।26।।
तीन लोक एक बुन्द पसारा । सिंध रूप मैं अगम अपारा ।।27।।
मैं न पताल स्वर्ग नहिं मिरता[3] । ब्रह्मा बिष्णु महेश न जुगता[4] ।।28।।
नहिं गोलोक[5] नहीं साकेत[6] । इन्द्रपुरी नहिं ब्रह्म समेत ।।29।।
तीन लोक व्यापक मैं नहीं । बुन्द एक मेरी य्हाँ रही ।।30।।
उसी बुन्द का सकल पसारा । वेद ताहि कहैं ब्रह्म अपारा ।।31।।
वेदान्ती याहि ब्रह्म बखानें । सिद्धान्ती याहि शुद्ध पुकारें ।।32।।
इसके आगे भेद न पाया । सतगुरु बिन उन धोखा खाया ।33।।
जितने मत हैं जग के माहीं । इसी बुन्द को सिंध बताहीं ।।34।।
सिंध असल रहा इन से न्यारा । वेद कतेब न ताहि बिचारा ।।35।।
ब्रह्मादिक सब वेद भुलाये । ऋषि मुनि करम भरम लिपटाये ।।
पीर पैग़म्बर क़ुतुब औलिया[7] । बुन्द भेद पूरा नहिं मिलिया ।।37।।

।। उत्तर अंग दूसरा ।।

सुनो सुरत तुम अपना भेद । तुम हम में थी सदा अभेद ।।38।।
काल करी हम सेवा भारी । सेवा बस होय कुछ न विचारी ।।39।।
तुम को माँगा हम से उस ने । सौंप दिया तुम्हें सेवा बस में ।।40।।
काल लाय तन मन में घेरा । दुख सुख पाय तुम बहुतेरा ।।41।।
दुख में देखा तुम को जबही । दया उठी हम आये तबही ।।42।।

---

1. अंश । 2. जिस की उपमा न कर सके । 3. मृत्यु लोक । 4. माया ।
5. कृष्ण लोक । 6. राम लोक । 7. ईश्वर भक्त ।

आय किया हम शब्द उपदेशा । शब्द माहिं तुम करो प्रवेशा ।।43।।
शब्द शब्द पौड़ी[1] हम रची । चढ़ चढ़ पहुंचो नगरी सच्ची ।।44।।
बुन्द देश को छोड़ो अबही । सिंध देश चल खेलो तबही ।।45।।
बुन्द देश तिरलोकी जानो । रचन मुरक्कब[2] य्हाँ पहिचानो ।।46।।
मुफ़रद[3] रचना हमरे देश । सत्त सत्त जहँ सत्त संदेश ।।47।।
य्याँ रचना तरकीबी[4] हुई । सो मैं खोल सुनाऊं सही ।।48।।
मुफ़रद बुन्द हमारी आई । दूसर माया आन मिलाई ।।49।।
पाँच तत्त्व तीनों गुन मिले । यह सब दस आपस में रले ।।50।।
रल मिल कर इन रचना ठानी । तीन लोक और चारों खानी ।।51।।

।। उत्तर अंग तीसरा ।।

वेदान्ती अब किया विचार । नौ[5] को छाँट लिया दस सार ।।52।।
दसवीं वही बुन्द मम अंस । छाँट ताहि लीन्हा होय हंस ।।53।।
जहाँ मिलौनी तहाँ विचार । एक एक में कहा विचार ।।54।।
हमरे देश एक सतनाम । वहाँ विचार का कुछ नहिं काम ।।55।।
कर विचार इन धोखा खाया । बुन्द माहिं यह जाय समाया ।।56।।
चलना चढ़ना इन के नाहीं । ता ते सिंध न पाया इनहीं ।।57।।
सिंध भेद जो इन से कहते । तो परतीत न चित में धरते ।।58।।
करें दलील बुद्धि से भारी । हँसी उड़ावें बचन न धारी ।।59।।
बुधि बल से वह करते तोल । कभी न पावें डावाँ डोल ।।60।।
यह मारग है प्रेम भक्ति का । चलना चढ़ना सुरत शब्द का ।।61।।
संत मते पर नहिं परतीत । सुरत शब्द नहिं धारें चीत ।।62।।
पाँच शब्द मारग नहिं चले । सिंध पता कहो कैसे मिले ।।63।।

।। उत्तर अंग चौथा ।।

विद्या पढ़ जो करें विचार । बुन्द भेद भी मिला न सार ।।64।।

---

1. सीढ़ी चढ़ने की। 2. मिलौनी की। 3. बे मिलौनी की। 4. मिलौनी की।
5. पाँच तत्त्व तीन गुन और माया।

सार बुन्द है त्रिकुटी पार । जोगेश्वर चढ़ करें विचार ।।65।।
प्राण जोग कर पहुंचे तहाँ । बुँद ज्ञान उन पाया वहाँ ।।66।।
आगे का गुरु मिला न उनको । व्हाँ का ज्ञान सुनाया सबको ।।67।।
जोग बिना विद्या पढ़ कहते । विद्या बुधि से तिरपत रहते ।।68।।
यह तो निपट अहंकार में भूले । इधर न उधर जमपुरी झूले ।।69।।
तू तो सुरत अब सुन मम बचन । चढ़ और चल सुन सुन्न की धुन ।।70।।
सुन सुन धुन चल देश हमारे । हम तुझको अब किया अपना रे ।।71।।

।। प्रश्न दूसरा ।।

यह कि जो सुरत अपने देश को लौट जावे तो फिर
काल देश में आवेगी या नहीं

चलने की तो करी तयारी । स्वामी से यों बचन उचारी ।।72।।
संशय एक उठा मोहिं भारी । सो निरवार कहो विस्तारी ।।73।।

दोहा

सेवा बस तुम काल को, सौंप दिया जब मोहिं ।
तो अब कौन भरोस है, फिर भी ऐसा होय ।।74।।

।। उत्तर ।।

तब स्वामी हँस कर यों बोले । कहूं बचन मैं तुम से खोले ।।75।।
जान बूझ हम लीला ठानी । मौज हमारी हुई सुन बानी ।।76।।
काल रचा हम समझ बूझ के । बिना काल नहिं ख़ौफ़ जीव के ।।77।।
क़दर[1] दयाल नहिं बिना काल के । मौज उठी तब अस दयाल के ।।78।।
दिया निकाल काल को व्हाँ से । दख़ल काल अब कभी न य्हाँ से ।।79।।
मैं समरथ हूं सब विधि जान । बचन मोर तू निश्चय मान ।।80।।
काल न पहुंचे उसी लोक में । अब न करूं कभी ऐसी मौज में ।।81।।
एक बार यह मौज ज़रूर । अब मतलब नहिं डाली दूर ।।82।।

---

1. महिमा ।

तू शंका अब मत कर चित में । चलो देश हमरे रहो सुख में ।।83।।

।। प्रश्न तीसरा ।।

यह कि जो जीव संत मार्ग पर नहीं चलते और कर्म और भर्म में पड़े हैं, उन को इस करनी का क्या फल प्राप्त होगा

।। अंग पहिला ।।

सुन कर सुरत मगन होय बोली । निश्चय किया बचन हम तोली ।।84।।
मेरे मन अब दया समाई । प्रश्न करूँ जीवन हित लाई ।।85।।
जग में सुरत अनेकन आई । काल जाल में गई भुलाई ।।86।।
कोई करे जप कोई तीरथ दाना । कोई मूरत कोई तप अभिमाना ।।87।।
कोई अचार[1] कोई नेमी धरमी । कोई विद्या पढ़ करते करनी ।।88।।
कोई वैराग त्याग सब देते । बन परबत में जा कर रहते ।।89।।

।। अंग दूसरा ।।

प्राण योग कर मुद्रा साधें । पाँच मुद्रा धरें समाधें ।।90।।
चाचरी भूचरी खेचरी भाई । और अगोचरी उनमुनि लाई ।।91।।
चक वेध घट खैंचे प्राण । सहसकँवल चढ़ लावें ध्यान ।।92।।

।। अंग तीसरा ।।

कोई ज्ञानी बाचक कोई लक्ष । कोई खट शास्तर करते पक्ष ।।93।।
मीमान्सा वैशेषिक न्याय । पातंजली जोग ठहराय ।।94।।
सांख्य करे नित[2] अनित[3] विचार । वेदान्ती मिथ्या संसार ।।95।।
व्यापक सत चित आनंद रूप । जीव ब्रह्म दोऊ एक स्वरूप ।।96।।
जीव वाच[4] त्रैदेह बतावें । ईश्वर वाच ब्रह्ममंड सुनावें ।।97।।
विश्व[5] नाम तेजस[6] और प्राग[7] । जागृत स्वप्न सुषोपति भाग ।।98।।
वैराट[8] हिरनगर्भ[9] और अव्याकृत[10] । तीन नाम ईश्वर कहें कल्पित ।।

---

1. लौकिक धर्म पालन करने वाला। 2. ठहराऊ। 3. नाशमान। 4. प्रकट स्वरूप। 5. जागृत। 6. स्वप्न। 7. सुषुप्ति। 8. स्थूल। 9. सूक्ष्म। 10. कारण।

वाच वाच दोउ मिथ्या मान । व्यापक लक्ष[1] एक कर जान ।।100।।
विवर्तवाद[2] इन कीन्ही सिद्ध । कोई अवछेद[3] अजात[4] विविद्ध[5] ।।101।।
पर सिद्धान्त सबन का एक । व्यापक निश्चय बाँधी टेक ।।102।।
पाँच शास्त्र इन किये निषेद । छठा शास्त्र माना मत वेद ।।103।।
चेतन को यह एक बतावें । और कुल्ल रचना जड़ गावें ।।104।।
चेतन ज्ञान मगन होय फिरते । सब को कल्पित[6] उसमें कहते ।।105।।
कुछ करनी करतूत न रखते । चढ़ना चलना सब भ्रम कहते ।।106।।
आना जाना भी कुछ नहीं । चेतन ही चेतन इक सही ।।107।।
पर इक मतलब की उन धारी । व्यवहारक जग सत्य कहा री ।।108।।
कोई कोई प्रारब्ध सत मानें । भोग चुकें तब असत बखानें ।।109।।
अब चेतन चेतन ही रहा । जग त्रै काल[7] कभी नहीं हुआ ।।110।।
मैं भी चेतन तू भी चेतन । मैं तू का यह भर्म मिटावन ।।111।।
चेतन को पकड़ा मज़बूत । छोड़ा जग को मिथ्या कूत[8] ।।112।।
सुरत अंस का भेद न पाया । जो सतपुर से आन समाया ।।113।।
यह तो भेद संत कोई जाना । और कोई नहिं परख पिछाना ।।114।।
बुद्धी की गम उसमें नाहीं । वह रही चेतन चेतन माहीं ।।115।।
चेतन चेतन करत बखाना । सुरत चैतन्य का मर्म न जाना ।।116।।
सब मत ऐसा धोखा खाया । सुरत भेद काहू नहिं पाया ।।117।।

।। अंग चौथा ।।

मुसल्मान हिन्दू और जैनी । ईसाई क्या जानें कहनी ।।118।।
कोइ नमाज़ कोइ रोज़ा रखते । कोइ मस्जिद कोइ काबा[9] फिरते ।।
कोइ क़ुरान पढ़ हाफ़िज़[10] होते । पढ़ें वज़ीफ़ा[11] रात न सोते ।।
कोइ चिल्ला कर मुल्ला बनते । कोइ आबिद[12] कोइ ज़ाहिद[13] रहते ।।
कोइ मशायख़[14] क़ालो हाल के । कोइ सरोद[15] कोइ रागो ताल के 122।।

---

1. गुप्त स्वरूप । 2. वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म को कर्त्ता और संसार को मिथ्या माना है । 3. जिसका टुकड़ा नहीं हुआ । 4. जो जनमा नहीं । 5. हर तरह के । 6. खयाली । 7. भूत यानी जो हो गया, भविष्य जो होवेगा, वर्त्तमान जो हो रहा है । 8. तौल कर । 9. मक्का । 10. जिनको क़ुरान याद हो । 11. जाप । 12. पुजारी । 13. परहेज़गार । 14. विद्यावान । 15. राग ।

कोई शरीअत[1] कोई तरीक़त[2] । कोई मार्फ़त[3] कोई हक़ीक़त[4] ।।123।।

।। अंग पाँचवाँ ।।

जैन धर्म संजम बहु करते । भूख प्यास को अति ही सहते ।।124।।

बेला[5] तेला[6] चौला[7] साधें । तीर्थङ्कर कुलकर आराधें ।।125।।

जीव दया भी अति कर पालें । दातन करें न दीबा बालें ।।126।।

मुख पर बस्तर बांधे बोलें । सूत मोरछल लेकर डोलें ।।127।।

हरी[8] तियागें पत्थर पूजें । कोइ निर्वाण पद आतम बूझें ।।128।।

।। अंग छठा ।।

अब ईसाई का भाखूँ बृत्तन्ता । पढ़ किताब गिरजा जा पूजा ।।129।।

इक सम होकर सब से बरतें । नीच ऊँच ज़ाती नहिं धरते ।।130।।

पूजें जल्पा[9] और सलेब[10] । मन के छोड़ें सबही ऐब ।।131।।

हज़रत ईसा को यह मानें । पुत्र ख़ुदा का उसको ज़ानें ।।132।।

वह बख़्शावें हम को इक दिन । करें भरोसा उनका निस दिन ।।133।।

यह भी मत है काल के घर का । इन से भी मेरा मन फड़का ।।134।।

।। अंग सातवाँ ।।

और अनेक मते जग माहीं । सब ही चालो काल की छाहीं ।।135।।

यह पूछूँ मैं तुम से बात । स्वामी कहो खोल विख्यात[11] ।।136।।

इन जीवन को क्या फल होई । भिन्न भिन्न कर भाखो सोई ।।137।।

।। उत्तर ।।

सुन अब सुरत कहूं मैं तो से । यह तो भूले हैं सब मो से ।।138।।

करमी शरई[12] हैं यह जीव । सतगुरु बिन नहिं पावें पीव[13] ।।139।।

कोइ राजा कोइ पंडित होवे । कोइ धनवान सुखी जग सोवे ।।140।।

कोइ स्वर्ग जा करे बिलास । कोइ ऐराफ़[14] बहिश्त निवास ।।141।।

कोइ सैय्यद कोइ शेख़ मौलवी । कोइ आमिल[15] सिफ़ली[16] कोइ उलवी[17] ।।

---

1. कर्म कांड । 2. उपासना । 3. ज्ञान । 4. विज्ञान । 5. दो दिन का ब्रत । 6. तीन दिन का ब्रत । 7. चार दिन का ब्रत । 8. साग, फल आदिक । 9. बपतिस्मा, किसी को ईसाई बनाने का संस्कार । 10. सूली । 11. प्रकट । 12. कर्मकाँडी । 13. पति । 14. स्वर्ग और नर्क के बीच में जो मुक़ाम है । 15. अभ्यासी । 16. नीचे मुक़ामो का । 17. ब्रह्मांडी ।

कोइ तारागन मंडल पावे । कोइ चाँद सूर्य के लोक समावे ।।143।।
कोइ सुमेर पर करे बसेरा । कोइ कैलास हिमांचल डेरा ।।144।।
कोइ गन्धर्व लोक कोइ इंद्रपुरी में । कोइ पित्रलोक कोइ विष्णुपुरी में ।।
कोइ शक्ति लोक कोइ ईश धाम में । कोइ ओंकार कोइ रंग नाम में ।।
उत्पति[1] अस्थित[2] परलै माहीं । यह सब रहे काल की छाहीं ।।147।।
काल हद्द से परे न कोइ । देश दयाल कोई नहिं जोई ।।148।।
आवगवन न काहू छूटा । देर अवेर सभी जम लूटा ।।149।।
सतगुरु बिना न कोई बाचा । सत्तनाम पद मिला न साँचा ।।150।।
फल करनी तो सबने पाया । सुखी हुए पर फिर भरमाया ।।151।।
ताते सतगुरु पद को सेवो । बिन सतलोक न छूटे फेरो ।।152।।
सुरत शब्द के मारग चलो । सत्त शब्द से चढ़ कर मिलो ।।153।।

।। प्रश्न चौथा ।।

यह कि संतों के निज स्थान और उस के
मार्ग का भेद क्या है

तब सूरत पूछे इक बाता । स्वामी देव भेद विख्याता[3] ।।154।।

।। उत्तर ।।

तब स्वामी ने बचन सुनाया । मारग का यों भेद लखाया ।।155।।
पाँच नाम का सुमिरन करो । श्याम सेत में सूरत धरो ।।156।।
प्रथमे सुनो गगन में बाजा । घंटा संख छाँट धुन गाजा ।।157।।
सहस कँवल दल जोत लखाई । बंकनाल में जाय समाई ।।158।।
बंक पार त्रिकुटी में गई । ओंकार और रआ़द[4] धुन लई ।।159।।
आगे पहुंची सुन्न मँझार । ररंकार धुन सुनी पुकार ।।160।।
किंगरी और सारंगी सुनी । मान सरोवर चढ़ चढ़ गुनी ।।161।।
आगे महासुन्न मैदाना । जहाँ चार धुन तिमिर[5] समाना 162।।

---

1. पैदायश । 2. ठहराव । 3. प्रकट । 4. बादल की गरज । 5. अँधेरा ।

भँवर गुफा ता ऊपर देखी । सोहं बंसी बजती पेखी[1] ।।163।।
ता के परे धाम सत नामा । बीन बजे सतलोक ठिकाना ।।164।।
सुनत सुरत फिर आगे चढ़ी । अलख लोक में जा कर धरी ।।165।।
कोटिन अरब सूर उजियारा । अलख पुरुष छबि अद्‌भुत धारा ।।166।।
तहँ से अगम लोक को चली । अगम पुरुष से जाकर मिली ।।167।।
खरबन सूर चाँद परकाशा । धुन का व्हाँ की अगम बिलासा ।।168।।
धुन का वर्णन कैसे गाऊँ । जग में कोइ दृष्टान्त न पाऊँ ।।169।।
ता के आगे रहत अनामी । निज घर संतन बरना स्वामी ।।170।।
सुन कर सुरत अति हरखानी । चलो सुवामी मैं सब जानी ।।171।।
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे । सतगुरु सो यह देश लखावे ।।172।।
सतगुरु की महिमा अति भारी । कोई न जाने पच पच हारी ।।173।।
जा पर कृपा दृष्टि वे करें । वह जाने और निश्चय धरे ।।174।।
कोइ कोइ जीव करें विश्वासा । कर प्रतीत वे धारें आसा ।।175।।
संत बचन जो सच्चा मानें । इस बानी को सो सच जानें ।।176।।

।। प्रश्न पाँचवाँ ।।

यह कि संत और साध और भेख और
पाखंडी की पहिचान क्या है।

इक संशय मेरे मन आई । सो निर्णय कर कहो सुनाई ।।177।।
संत नाम तुम किसका गावो । साध भेख दोउ भेद बतावो ।।178।।

।। उत्तर अंग पहिला ।।

।। पहिचान संत की ।।

तब स्वामी बोले सुन लीजै । कान लगाय चित्त अब दीजै ।।179।।
संत कहें हम उनको भाई । सत्तलोक जिन सुरत समाई ।।180।।
चौथा लोक तीन के पारा । सत्तनाम सतगुरु दरबारा ।।181।।

---

1. परख लिया।

संत सुरत व्हाँ करे बिलास । सत्तपुरुष सत शब्द निवास ।।182।।
तिरलोकी के आगे सुन्न । सुन्न के आगे है महासुन्न ।।183।।
महासुन्न के पार ठिकाना । भंवरगुफा ताहि करत बखाना ।।184।।
ता के परे लोक है चौथा । बिन व्हाँ पहुंचे सब है थोथा ।।185।।
संत बिना कोई वहाँ न पहुंचा । बिन व्हाँ पहुंचे संत न होता ।।186।।

।। अंग दूसरा ।।

।। पहिचान साध की ।।

संत भेद सब निर्णय कीन्हा । साध भेद अब तुम लो चीन्हा ।।187।।
संत मते का निश्चय करे । सुरत शब्द के मारग चले ।।188।।
जाय त्रिवेणी मज्जन[1] करे । सुन्न सरोवर[2] त्रिकुटी परे ।।189।।
साध नाम हम या को गाई । बिन साधे यह साध न भाई ।।190।।

।। अंग तीसरा ।।

।। पहिचान भेख की ।।

भेख संत अब बर्ण सुनाऊँ । यह भी छान तोहि समझाऊँ ।।191।।
संतन की बाणी जो पढ़ते । सुरत शब्द का निश्चय करते ।।192।।
संत सरन जिन दृढ़ कर पकड़ी । कर विश्वास सुरत निज जकड़ी ।।193।।
बिना संत नहिं और भरोसा । करम भरम तज चित को पोसा[3] 194।।
सुरत शब्द मारग कुछ साधें । जितना बने उतना आराधें ।।195।।
इन का नाम भेख तुम जानो । प्रीत करो इन सेवा ठानो ।।196।।
चाहे बस्त्र रंग घर को छोड़ें । चाहे घर रहें मन को मोड़ें ।।197।।

।। अंग चौथा ।।

।। पहिचान पाखंडी की ।।

जिन की नहीं धारना ऐसी । घर को छोड़ें होयँ परदेसी ।।198।।
कपड़े रंग बातें बहु सीखी । जग को ठगें कहावें भेखी ।।199।।

---

1. स्नान । 2. आन्तरिक अमृतसर । 3. शाँति दी, सहारा दिया ।

कर्म लिखी वह भोगें अपनी । भरमत फिरें पहिन कर कफ़नी[1] ।।200।।
उनका नाम भेख नहिं होई । वह पाखंडी जानो सोई ।।201।।
दीन गँवाया दुनिया खोई । ना गिरही ना त्यागी दोई ।।202।।
जम के द्वारे धक्के खावें । नर्क पड़ें चौरासी जावें ।।203।।
गिरही जीवन बहुत सतावें । खावें पीवें और धमकावें ।।204।।
पूजा अपनी बहुत करावें । धन खैंचे ब्यौपार बढ़ावें ।।205।।
साध संत अपने को कहें । गृहस्थ बिचारे उन की सहें ।।206।।
यह भी निर्णय तोहि सुनाया । साध संत और भेख लखाया ।।207।।
चौथे पाखंडी कह गाये । जिन जग में बहु फंद लगाये ।।208।।

उपदेश

सुनो सुरत अब कहूं बखानी । खोजो साध संत तुम जानी ।।209।।
सतगुरु कर उन सेवा ठानो । चित्त लगाय चरन में आनो ।।210।।
चरनामृत परशादी लेना । दर्शन पर तन मन सब देना ।।211।।
उनकी सेवा फल अति देई । सत्तलोक तू इक दिन लेई ।।212।।
सतसंग उनका तुम नित करना । बचन सुनो और चित्तमें धरना ।।213।।
तीन लोक सब माया चेले । ब्रह्मा विष्णु महादेव पेले ।।214।।
तीन लोक अंतर और बाहर । काल बियापा देखा ज़ाहिर[2] ।।215।।

।। दोहा ।।

बिन सतगुरु सतनाम बिन, कोई न बाचे जीव।
सत्तलोक चढ़ कर चलो, तजो काल की सीव[3] ।।216।।

---- ----

वर्णन भेद पाँच नाम यानी पाँच शब्द क विस्तार करके मय नाम और रूप और लीला और धाम एक एक शब्द के।

।। शब्द स्थान पहिला ।।

सुन री सखी तोहि भेद बताऊँ । प्रथम अस्थान खोल कर गाऊँ ।।1।।

---

1. साधू का कपड़ा। 2. प्रकट। 3. सीमा, हद्द।

सहसकँवलदल नाम सुनाऊँ । जोत निरजन बास लखाऊँ ।।2।।
करता तीन लोक यह ठाऊँ[1] । वेद चार इन रचे जनाऊँ ।।3।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनों । पुत्र इन्हीं के हैं यह चीन्हों ।।4।।
कुल बैराट[2] रचा इन मिल के । जीवन घेर लिया इन पिल के ।।5।।
जाल बिछाया जग में भारी । इनकी पूजा जीव सम्हारी ।।6।।
फँसे जाल में पचे कर्म में । धोखा खाया पड़े भरम में ।।7।।
अब जो इन को कोइ समझावे । सत्तपुरुष का भेद लखावे ।।8।।
तो नहिं मानें झगड़ा ठानें । पक्षपात[3] कर ढिंग नहिं आवें ।।9।।
या ते मैं तो को समझाऊँ । यह सब ठग खुलकर जतलाऊँ ।।10।।
इनके मारग तू मत जाय । तू संतन की सरन समाय ।।11।।
सतगुरु कहें सोई तुम मानो । इनका बचन न कर परमानो ।।12।।
राह रकाना[5] देऊँ दरसाई । पता भेद अब कहूं जनाई ।।13।।
मन और सुरत जमाओ तिल पर । घेर घुमर घट आओ पिल कर[6] ।।14।।
निरखो खिड़की देखो चौका । चित्त लगाओ राखो रोका ।।15।।
पचरंगी फुलवारी निरखो । दीपदान घट भीतर परखो ।।16।।
कोइ दिन ऐसी लीला देखो । नील चक्र ता आगे पेखो ।।17।।
विरह प्रेम बल ताको फोड़ो । जोत निहारो मन को मोड़ो ।।18।।
अनहद घंटा सुन सुन रीझो । शंख बजाओ रस में भीजो ।।19।।
यह पहिला अस्थान बताया । राधास्वामी बरन सुनाया ।।20।।

।। शब्द स्थान दूसरा ।।

अब चलो सजनी दूसर धाम । निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम[7] ।।1।।
ओंकार धुन जहं बिसराम । गरजे बादल और घनश्याम ।।2।।
सूरज मंडल लाल मुक़ाम । गुरु ने बताया गुरु का नाम ।।3।।
पंचम वेद नाद यहि गाया । चहुँ दल कँवल संत बतलाया ।।4।।

---

1. स्थान । 2. पसारा । 3. तरफ़दारी । 4. बतलाऊं । 5. भेद, तरकीब । 6. धस कर । 7. स्थान ।

घंटा शब्द तजी धुन दोई । गरज मृदंग सुनाई सोई ।।5।।
सुरत चली और खोला द्वार । बंकनाल धस हो गई पार ।।6।।
ऊँची नीची घाटी उतरी । तिल की उलटी फेरी पुतरी ।।7।।
गढ़ भीतर जाय कीन्हा राज । भक्ति भाव का पाया साज ।।8।।
करम बीज अब दिया जलाई । आगे को फिर सुरत बढ़ाई ।।9।।
नौबत झड़ती आठों जाम । सूरत पाया मूल कलाम[1] ।।10।।
महाकाल और कुरम[2] बखाना । उत्पति बीजा य्हाँ से जाना ।।11।।
सूरज चाँद अनेकन देखे । तारा मंडल बहु विधि पेखे ।।12।।
पिंड अंड से न्यारी खेली । ब्रह्मंड पार चली अलबेली[3] ।।13।।
वन और परवत बाग़ दिखाई । चमन चमन फुलवारी छाई ।।14।।
नहरें नदियाँ निरमल धारा । समुन्दर पुल चढ़ हो गइ पारा ।।15।।
मेर सुमेर देख कैलासा । गई सुरत जहँ विमल बिलासा ।।16।।
राधास्वामी कहत पुकारी । दूसर मंज़िल करली पारी ।।17।।

।। शब्द स्थान तीसरा ।।

अब चली तीसर परदा खोल । सुन्न मंडल का सुन लिया बोल ।।1।।
दसवाँ द्वार तेज परकाश । छोड़े नीचे गगन अकाश ।।2।।
मानसरोवर किये अश्नान । हंस मंडली जाय समान ।।3।।
सुन्न शिखर चढ़ी सूरत घूम । किंगरी सारँगी डाली धूम ।।4।।
सुन सुन सूरत हो गइ सार । पहुंची जाय त्रिवेनी पार ।।5।।
महासुन्न का नाका लीन्ह । गुप्त भेद जाय लीन्हा चीन्ह ।।6।।
अंध घोर जहं भारी फेर । सत्तर पालँग[4] जा का घेर ।।7।।
बानी चार गुप्त जहँ उठती । सुरत रागिनी नइ नइ सुन्ती ।।8।।
झन्कारें अद्भुत कहा बरनूँ । सुन सुन धुन मन में अति हरखूँ ।।9।।
पाँच अंड रचना तहँ कीन्ही । ब्रह्म पाँच ता में हुए लीनी ।।10।।

---

1. शब्द । 2. कछुआ । 3. सुरत मतवाली । 4. यह तिरलोकी एक पालंग के बराबर है ।

अंडन सोभा बरनूँ कैसी । सब्ज़ सेत कोइ पीत बरन सी ।।11।।
लख लख अरब तासु परमाना । यह अंडा अति तुच्छ दिखाना ।।12।।
या में ब्रह्म वियापक जोई । ता की गति कहो कितनी होई ।।13।।
ताका ज्ञान पाय यह ज्ञानी । फूलें मन में होय अभिमानी ।।14।।
मेंडक सी गति इन की जानी । कूप समुद्र जान मगनानी ।।15।।
कहा करें यह हैं लाचार । वह तो देश न देखा सार ।।16।।
बिन देखे कैसै परतीत । उन नहिं जानी अचरज रीत ।।17।।
इसी ब्रह्म को जान अपार । भूले मारग करें विचार ।।18।।
अब इन को कैसे समझाऊँ । बह नहिं मानें चुप्प रहाऊँ ।।19।।
राधास्वामी कही सुनाय । तीनों परदे दिये लखाय ।।20।।

।। शब्द स्थान चौथा ।।

अब चौथे की करी तयारी । चल री सुरत तू शब्द सम्हारी ।।1।।
नाल हंसनी घाटा[1] फाँदा । रूकमिन नाल सुरत को साधा ।।2।।
पाँजी[2] निरखी जहँ गंभीर । सुरत निरत दोउ धारी धीर ।।3।।
दायें रचे दीप परचंड[3] । बायें रचाये बहुतक खंड ।।4।।
मोती महल और रतन अटारी । हीरे लाल जड़े जहँ भारी ।।5।।
गुप्त भेद यह दिया जनाई । जानेंगे कोइ संत सिपाही ।।6।।
भँवरगुफा का परवत निरखा । सोहं शब्द जाय जहँ परखा ।।7।।
धुन मुरली जहँ उठत करारी[4] । सेत सूर सूरत निरखा री ।।8।।
तेज पुँज [5] वह देश भला री । धुन अपार तहँ होत सदा री ।।9।।
हंस अखाड़ा[6] लीला चौक । भक्त मंडली खेलें थोक[7] ।।10।।
लोक अनंत भक्त जहँ बसें । नाम अधार अमीरस रसें ।।11।।
राधास्वामी यह भी गाई । चौथा परदा लीन्हा जाई ।।12।।

---

1. घाट। 2. रास्ता। 3. बड़े। 4. तेज़। 5. समूह। 6. झुँड। 7. इकट्ठा।

।। शब्द स्थान पाँचवाँ ।।

पंचम क़िला तख़्त सुल्तानी । बादशाह सच्चा निज जानी ।।1।।
चली सुरत देखा मैदाना । अजब शहर अद्भुत चौगाना[1] ।।2।।
अमृत कुँड अमी की खाई । महल सुनहरी रचे बनाई ।।3।।
चौक चाँदनी दीप अनूपा । हंसन शोभा अचरज रूपा ।।4।।
खोड़स[2] भान चंद्र उजियारा । सुरत चढ़ी देखा निज द्वारा ।।5।।
द्वारपाल बैठे जहँ हंस । कहिं कहिं अंस कहीं कहिं बंस ।।6।।
सहज सुरत तहँ बचन सुनाये । कहो भेद तुम यहँ कस आये ।।7।।
सुरत नवीन कही तब बानी । संत मिले उन कही निशानी ।।8।।
इतना कह तब भीतर धसी । सत्तनाम दर्शन कर हँसी ।।9।।
पुहप[3] मध्य से उठी अवाज़ा । को तुम हो आये केहि काजा ।।10।।
सतगुरु मिले भेद सब दीन्हा । तिन की कृपा दरस हम लीन्हा ।।11।।
दर्शन कर अति कर मगनानी । सत्तपुरुष तब बोले बानी ।।12।।
अलख लोक का भेद सुनाया । बल अपना दे सुरत पठाया ।।13।।
अलख पुरुष का रूप अनूपा । अगम पुरुष निरखा कुल भूपा ।।14।।
देखा अचरज कहा न जाई । क्या क्या शोभा बरनूँ भाई ।।15।।
तीन पुरुष और तीनों लोक । देखे सूरत पाया जोग ।।16।।
प्रेम बिलास जहाँ अति भारी । राधास्वामी कहत पुकारी ।।17।।

।। बचन सत्ताईसवाँ ।।

वर्णन हाल विरह और खोज सतगुरु का और उनके सतसंग का

।। शब्द पहला ।।

मैं सतगुरु संग करूँगी आरती । मो विरहन को कोइ मत हटको[4] ।।1।।
जिगर[5] जले का दीपक बारूँ । मन बट कर मैं बाती डारूँ ।।2।।

---

1. चौक। 2. सोलह। 3. फूल, कँवल। 4. मना करो। 5. कलेजा।

जोत जगाऊँ दर्द प्रेम की । आरत फेरूँ सोज़[1] मरम की ।।3।।
वेदन[2] मेरी सतगुरु जाने । बिन दीदार नहीं मन माने ।।4।।
दुष्ट दूत अब अधिक सतावें । दर्शन राधास्वामी नाहिं दिखावें ।।5।।
कौन उपाव करूँ मैं सजनी । ज़ोर ज़ुल्म उन कब लग सहनी ।।6।।
जल बल ख़ाक किया मैं अंगा । जस जोती पर जले पतंगा ।।7।।
कौन सुने मेरी किस पै रोऊँ । जैसी बिथा मेरी मैं ही सहऊँ ।।8।।
आह आह कर निस दिन दैहूँ[3] । सबर न आवे फिर पछतै हूं ।।9।।
बिन राधास्वामी अब कोइ नहिं मेरा । दुक्ख दर्द ने अति कर घेरा ।।10।।
अब घबराय करूं मैं बिनती । पल पल राधास्वामी चित में धरती ।।11।।
दाद[4] फ़र्याद [5] सुनो मेरी सतगुरु । कंवल बिन जैसे तड़पे मधुकर[6] ।।12।।
मैं तड़पूं जस जल बिन मीना । जिगर फटे को कैसे सीना ।।13।।
तुम सब विधि हो समरथ स्वामी । तुमहिं जतन करो अन्तरजामी ।।14।।
मैं अजान कुछ जानत नाहीं । जैसे बने तैसे काटो फाही[7] ।।15।।
तब सतगुरु इक जुक्ति बताई । सुरत शब्द की करो कमाई ।।16।।
और आरत यह नित प्रति गाओ । घर में बैठो सुरत लगाओ ।।17।।
मौज निहारो करो विश्वासा । इक दिन होगी पूरन आसा ।।18।।
अस अस सतगुरु दीन्ह दिलासा । अब मन अंतर होत हुलासा ।।19।।
यह अरज़ी अब मानो मेरी । मैं दुखिया तुम चरनन चेरी ।।20।।
उमँग उमँग कर आरत गाई । नित्त करूँ अस आरत आई ।।21।।

।। शब्द दूसरा ।।

दर्द दुखी मैं विरहिन भारी । दर्शन की मोहिं प्यास करारी ।।1।।
दर्शन राधास्वामी छिन छिन चाहूं । बार बार उन पर बल जाऊं ।।2।।
वह तो ताड़ मार फटकारें । मैं चरनन पर सीस चढ़ाऊं ।।3।।
निर्धन निर्बल क्रोधिन मानी । औगुन अपने अब पहिचानी ।।4।।

---

1. तपन । 2. कष्ट । 3. तपूँगी । 4. प्रार्थना । 5. पुकार । 6. भँवरा । 7. बन्धन ।

स्वामी दीन दयाल हमारे । मो सी अधम को लीन्ह उबारे ।।5।।
मैं ज़िद्दिन[1] दम दम हठ करती । मौज हुक्म में चित नहीं धरती ।।6।।
दया करो राधास्वामी प्यारे । औगुन बख़्शो लेव उबारें ।।7।।

।। शब्द तीसरा ।।

कैसी करूँ कसक[2] उठी भारी । मेरी लगी गुरु संग यारी ।।1।।
दम दम तड़पूँ छिन छिन तरसूँ । चढ़ रही मन में विरह ख़ुमारी[3] ।।2।।
सुलगत जिगर फटत नित छाती । उठन लगी हिये से चिनगारी ।।3।।
नैनन नीर बहुत जस नदियाँ । डूब मरी माया मतवारी ।।4।।
ठंडी आह उठे पल पल में । छाय गई अब प्रीत करारी ।।5।।
तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे । काल करम पच हारी ।।6।।
सुरत निरत दोउ क़ासिद[4] कीन्हे । बिथा[5] लिखूँ अब सारी ।।7।।
पतियाँ भेजूँ गुरु दरबारा । अब लो ख़बर हमारी ।।8।।
नगर उजाड़ देश सब सूना । तुम बिन जग अँधियारी ।।9।।
कौन सुने और कौन सम्हारे । सब मोहिं दीन निकारी ।।10।।
बही जात नइया मँझधारा । तुम बिन कौन उबारी ।।11।।
खेवटिया क्यों देर लगाई । क्यों कर करूँ पुकारी ।।12।।
मैं मरी जाउँ जिऊं अब कैसे । तुम मेरी सुधि न सम्हारी ।।13।।
डालो जान देवो सरजीवन[6] । मैं तुम पर बलिहारी ।।14।।
बचन सुनाओ दरस दिखाओ । हरो पीर मेरी सारी ।।15।।
राधास्वामी सुनो हमारी । मैं तुम्हरे आधारी ।।16।।

।। शब्द चौथा ।।

पिया बिन कैसे जिउं मैं प्यारी । मेरा तन मन जात फुकारी ।।1।।
कोइ संत मिलें अब भारी । जो पिया को मिलावें आ री ।।2।।
मैं चढ़ूँ गगन में सारी । दिन रात लगे मेरी तारी[7] ।।3।।

---

1. हठ करने बाली। 2. पीर। 3. नशा। 4. दूत। 5. तक़लीफ़। 6. अमृत बूटी। 7. ध्यान।

मैं विरहिन लगी कटारी। मैं घायल फिरूँ उजाड़ी।।4।।
सतगुरु अब करें स्महारी। तब हिरदे घाव पुरा[1] री।।5।।
मोहिं नाम देहिं निज सारी। यह मरहम नित्त लगा री।।6।।
राधास्वामी करें दवा री। मैं उन पै जाउं बलिहारी।।7।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

दर्द दुखी जियरा नित तरसे। तन मन में पीर घनेरी।।1।।
कोइ सतगुरु संत दया कर हेरें। तो मिटे बिथा घट मेरी।।2।।
मैं अति दीन अनाथ अचेती। उन बिन को मोहिं गहे री।।3।।
क्या क्या कहूं काल जस कसियाँ[2]। फँसियाँ आन अँधेरी।।4।।
मन की बात मनहि पुनि जाने। मुख से क्यों कहत बने री।।5।।
अंतरजामी वैद मिलें जब। तब दुख दूर टरे री।।6।।
आपहि आप रोग मेरा बूझें। आपहि दें कुछ दवा भली री।।7।।
मैं तो अजान निपट कर मूढ़ा। भूला गैल[3] गली री।।8।।
तुम दयाल कस ढील करोगे। जल्दी से अब कर्म दलेरी।।9।।
सतसंग सार न बूझे चंचल। ठहरत नहिं छिन एक पली री।।10।।
राधास्वामी अचरज धामी। आन मिले सब पीर हरी री।।11।।

।। शब्द छठा ।।

चुनर मेरी मैली भई। अब का पै जाऊँ धुलान।।1।।
घाट घाट मैं खोजत हारी। धुबिया मिला न सुजान।।2।।
नैहर[4] रहुं कस पिया घर जाऊँ। बहुत मरे मेरे मान।।3।।
नित नित तरसूँ पल पल तड़पूँ। कोइ धोवे मेरी चूनर आन।।4।।
काम दुष्ट और मन अपराधी। और लगावें कीचड़ सान।।5।।
का से कहुं सुने नहिं कोई। सब मिल करते मेरी हान।।6।।
सखी सहेली सब जुड़ आईं। लगीं भेद बतलान।।7।।

---

1. पुरना = भरना। घाव। अच्छा होना। 2. बांधा। 3. मार्ग, रास्ता।
4. मां का घर। 5. पापी।

राधास्वामी धुबिया भारी । प्रगटे आय जहान ।।8।।

।। शब्द सातवाँ ।।

सुर्त चली धुलावन काज । चुनरिया मैली भरी ।।1।।
गई सतसंग के घाट । सुरत गुरु चरन धरी ।।2।।
पाया शब्द अगाध । हुई घट बीच खरी[1] ।।3।।
चली सुरत आकाश । उड़ी ज्यों उड़त परी ।।4।।
हुआ काम बल छीन[2] । तिरिष्णा सकल जरी ।।5।।
पाया प्रथम ठिकान । मिली पद आन हरी[3] ।।6।।
खोला बंक दुवार । सुफल हुइ देह नरी[4] ।।7।।
सुन्न सरोवर पाय । सेत हुइ अब चुनरी ।।8।।
महा सुन्न के पार । लगी झाँकन झँझरी ।।9।।
भँवरगुफा ढिंग पहुंच । सुनी बंसी मधुरी ।।10।।
परसे पुरुष पुरान । गई अमरा नगरी ।।11।।
खोला अलख दुवार । अमी संग भरी गगरी ।।12।।
अगम पुरुष दरबार । देख लीला सगरी[5] ।।13।।
राधास्वामी महल दिखान । हुई सुर्त अज अजरी ।।14।।

।। बचन अट्ठाईसवाँ ।।

।। वर्णन आनंद विलास प्राप्ति सतगुरु का ।।

।। शब्द पहला ।।

जाग री उठ खेल सुहागिन । पिया मिले बड़े भाग ।।1।।
लाग री उन चरनन । फिर न मिले अस दाव ।।2।।
सखी सहेली सब जुड़ आईं । गावत मंगल राग ।।3।।
शोभा भारी रूप निहारी । बढ़ा प्रेम अनुराग ।।4।।
बजी बधाई हर्ष समाई । भाग चला बैराग ।।5।।

---

1. निर्मल । 2. नाश । 3. निरंजन । 4. नर की । 5. सब ।

भक्ति भावनी निरमल करनी । खेलत निज कर फाग ।।6।।
सत्त सरोवर मज्जन कीन्हा । धोये कल मल दाग़ ।।7।।
सतगुरु सरन हंस होय बैठी । छूटी संगत काग ।।8।।
राधास्वामी मगन हुए जब । दुर्मत दीन्ही त्याग ।।9।।

।। शब्द दूसरा ।।

सोया भाग मेरा जागा आज सखी ।
सोया भाग मेरा जागा । परम पुरुष गुरु पाया ।।1।।
कर्म कला सब फूँक जलाई । सुरत शब्द हम पाया ।।2।।
सतगुरु दया द्वार घट खोला । सुखमन जाय बसाया ।।3।।
नाल काल तज शब्द समानी । सुन्न सरोवर न्हाया ।।4।।
माया ममता सब धर खाई । सुन्न शिखर चढ़ आया ।।5।।
गुरु दयाल मोहिं हिम्मत दीन्ही । महासुन्न के पार कराया ।।6।।
भँवरगुफा रस अगम पिलाया । शब्द शोर जहँ अधिक सुनाया ।।7।।
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख । अलख अगम दरसाया ।।8।।
राधास्वामी धाम अजब गत । काहू भेद न पाया ।।9।।
वेद पुरान क़ुरान न जाने । वह पद अगम अथाया ।।10।।
जोत निरंजन मर्म न जाना । अक्षर लग सब वार रहाया ।।11।।
ज्ञानी जोगी सब थक बैठे । वह पद किनहुं न पाया ।।12 ।।
यह पद सार भेद निज सारा । बिरले संत जनाया ।।13।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव गोरख । इन को माया खाया ।।14।।
इस पद का कोइ भेद न जाने । राधास्वामी अब प्रगटाया ।।15।।

।। शब्द तीसरा ।।

मोहिं मिला सुहाग गुरु का । मैं पाया नाम गुरु का ।।1।।
मैं सरना लिया गुरु का । मैं किंकर हुआ गुरु का ।।2।।
मेरे मस्तक हाथ गुरु का । मैं हुआ ग़ुलाम गुरु का ।।3।।

मैं पाया अधार गुरु का । मैं पकड़ा चरन गुरु का ।।4।।
मैं सरबस हुआ गुरु का । मैं हो गया अपने गुरु का ।।5।।
कोइ और न मुझसा गुरु का । गुरु का मैं गुरु का गुरु का ।।6।।
राधास्वामी नाम यह धुर का । मैं पाया धाम उधर का ।।7।।

।। शब्द चौथा ।।

आज घड़ी अति पावन[1] भावन[2] । राधास्वामी आये जगत चितावन 1।।
जिनके गिरह[3] प्रेम पग धारन । तिन जीवन का करें उबारन ।।2।।
आनंद मंगल हर्ष सुहावन । जुड़ मिल हंस लगे गुन गावन ।।3।।
शोभा अधिक न जाय बखानन । कहं लग कहूं वार नहिं पारन ।।4।।
राधास्वामी शब्द मनावन[4] । सुरत चढ़ी देखा घट चाँदन ।।5।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

गुरु चरन गिरह मेरे आये । भाग मेरे सोते दिये जगाये ।।1।।
पौद[5] मेरी सूखी हरी कराये । देश मेरा सूना आन बसाये ।।2।।
कहूं क्या आनँद उर न समाये । फूलती फिरूँ देह बिसराये ।।3।।
गुरु संग सतसंगी चल आये । हंस आकाशी देख लजाये ।।4।।
अजब यह औसर कहा न जाये । देव और मुनिजन गये लुभाये ।।5।।
कोटि तेतीसों रहे पछताये । दरस नहिं पाया रहे भुलाये ।।6।।
आरती ऐसी कौन सुनाये । अगम गति संत कौन कह गाये ।।7।।
निरंजन जोत थके गुन गाये । ओं और अक्षर भेद न पाये ।।8।।
सोहं सतनाम राह में आये । अलख और अगम द्वार पर छाये ।।9।।
महल राधास्वामी ऊंच दिखाये । कहन में शोभा बरनी न जाये ।।10।।
बिना गुरु भेदी कौन लखाये । सुरत बिन शब्द कभी नहीं जाये 11।।
पलँग पर बैठे सतगुरु आये । आरती अद्‌भुत लीन सजाये ।।12।।
द्वार सब घट के गये खुलाये । विहंगी[9] सुरत चढ़ी गुन गाये ।।13।।

---

1. पवित्र। 2. प्यारी। 3. घर। 4. मनाते है। 5. छोटे पेड़। 6. पक्षी की सी गति है जिसकी।

दया अस कीन्ही राधास्वामी आये । पड़ी मैं उनके चरनन धाये ।।14।।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाये । नहीं सुध तन मन गई भुलाये ।।15।।

।। शब्द छठा ।।

कौन करे आरत सतगुरु की ।। टेक ।।
ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं । मिली नहीं यह पदवी ।।1।।
कोटि तेतीसों राग बैरागी । इंद्र मुनिंदर[1] भटकी ।।2।।
सतगुरु बिना खोज नहिं पाया । करम भरम बिच अटकी ।।3।।
बड़े भाग जानो अब उन के । जिनको सरन परापत गुरु की ।।4।।
गुरु समान समरथ नहिं कोई । जिन धुर घर की आन ख़बर दी ।।5।।
मेरे भाग बड़े अब जागे । मिल सतगुरु संग आरत करती ।।6।।
भाव भक्ति क्या दिखलाऊँ । मैं सतगुरु बिन और न रखती ।।7।।
गुरु की दया सहसदल पाया । त्रिकुटी चढ़ कर सुन्न परखती ।।8।।
महासुन्न और भँवरगुफा लख । सत्तलोक चढ़ अधिक हरखती ।।9।।
अलख अगम दरसे पद दोनों । आगे राधास्वामी चरन परसती ।।10।।

।। बचन उनतीसवाँ ।।

बिनती और प्रार्थना सतगुरु के चरन कँवल में

।। शब्द पहला ।।

सतगुरु संग आरत करना । भव में क्यों दुख सुख सहना ।।1।।
मन चित का थाल सजाऊँ । सम सुरत जोत जगवाऊं ।।2।।
चढ़ अधर गगन पर धाऊं । अनहद धुन सदा बजाऊं ।।3।।
गुरु किरपा करो बनाई । अब मुझ पै रहो सहाई ।।4।।
मैं दुखिया बहु दुख पाई । तन मन को रोग सताई ।।5।।
सतसंग भी किया न जाई । ज़ुल्मी[2] बहु ज़ोर चलाई ।।6।।
अब मेरी कुछ न बसाई । कोइ चले न मोर उपाई ।।7।।

---

1. बड़े मुनि । 2. दुख देने वाला यानी काल ।

तुम दाता समरथ दाना[1] । जो चाहो करो निदाना ।।8।।
मोहि निश्चय टेक तुम्हारी । तुम करिहो भौजल पारी ।।9।।
इक बिनती सुनो हमारी । मोहिं लीजे सरन सम्हारी ।।10।।
गुन गाऊं चरन धियाऊं । तुम बिन कोइ और न गाऊं ।।11।।
मैं अधम दीन गति मेरी । तुम चरन गहे होय चेरी ।।12।।
अब छिन छिन मुझे सम्हारो । मन भटक भटक अब हारो ।।13।।
भक्ति की रीत सिखाओ । घट में मेरे प्रेम बढ़ाओ ।।14।।
दृढ़ पकड़ू चरन तुम्हारे । तुम बिन नहिं और अधारे ।।15।।
मेरे मन आसा भारी । मुझ को भी लेहैं उबारी ।।16।।
राधास्वामी गुरु हमारे । कर दया दास भव तारे ।।17।।

।। शब्द दूसरा ।।

मेरी पकड़ो बाँह हे सतगुरु । नहिं बह्यो धार भौ सागर ।।1।।
मैं बचूं जाल से क्योंकर । तुम बिन कोई और न आसर[2] ।।2।।
अब मिला अजायब औसर । जम काल बड़ा है फनधर[3] ।।3।।
कोइ मंत्र सिखाओ आ कर । लो चरन ओट किरपा कर ।।4।।
मैं थका चौरासी फिर फिर । अब कैसे मिले अमर घर ।।5।।
तब सतगुरु कहा दया कर । अब सुरत चढ़ाओ गगन पर ।।6।।
वह घाटी है अति अड़बड़[4] । मन इन्द्री खैंच उधर धर ।।7।।
तब मिले शब्द तोहि इस्थिर । तन मन धन आज अरप धर ।।8।।
गुरु प्रीत करो चित सम कर । यह आरत करो अधर चढ़ ।।9।।
राधास्वामी सरन तू दृढ़ कर । फिर छोड़ न कभी उमर भर ।।10।।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु मैं गुनहगार[5] अति भारी ।। टेक ।।
काम क्रोध और छल चतुराई । इन संग है मेरी यारी ।।1।।

---

1. अन्तरयामी । 2. सहारा । 3. सांप । 4. ऊँची नीची । 5. पापी ।

लोभ मोह अहंकार ईर्षा । मान बड़ाई धारी ।।2।।
कपटी लम्पट[1] झूठा हिंसक[2] । अस अस पाप करा री ।।3।।
दुक्ख निरादर सहा न जाई । सुख आदर अभिलाष भरा री ।।4।।
बिंजन[3] स्वाद अधिक रस चाहे । मन रसना यही चाट पड़ा री ।।5।।
धन और कामिन चित्त बसाये । पुत्र कलित्तर[4] आस भरा री ।।6।।
नाना विधि दुख पावत पापी । तो बी यह करतूत न छाँड़ी ।।7।।
यह मन दुष्ट काल का चेरा । नित भरमावत निडर हुआ री ।।8।।
जब जब चोट पड़ी दुक्खन की । तब डर डर कर भजन करा री ।।9।।
देखो दया मेहर सतगुरु की । उसी भजन को मान लिया री ।।10।।
बुधि चतुराई बचन बनावट । हार जीत की चरचा धारी ।।11।।
शेख़ी बहुत प्रीत नहिं अंतर । भोले भक्तन धोख दिया री ।।12।।
नर नारी बहुतक बस कीन्हे । मान प्रतिष्ठा[5] भोग किया री ।।13।।
गुरु संग प्रीत कपट कुछ डर की । कभी थोड़ी कभी बहुत किया री ।।14।।
कहँ लग औगुन बरनूँ अपने । याद न आवत भूल गया री ।।15।।
चोर चुग़ल[6] इन्द्री रस माता । मतलब की सब बात विचारी ।।16।।
ख़ुद मतलबी निर्दई मानी । बहुतन का अपमान किया री ।।17।।
कोटिन पाप किये बहुतेरे । कहूं कहाँ लग वार न पारी ।।18।।
हे सतगुरु अब दया विचारो । क्या मुख ले मैं करूँ पुकारी ।।19।।
नहिं परतीत प्रीत नहिं रंचक[7] । कस कस मेरा करो उबारी ।।20।।
मो सा कुटिल और नहिं जग में । तुम सतगुरु मोहिं लेव सुधारी ।।21।।
जतन करूँ तो बन नहिं आवत । हार हार अब सरन पड़ा री ।।22।।
यह भी बात कही मैं मुँह से । मन से सरना कठिन भया री ।।23।।
सरना लेना यह भी कहना । झूठ हुआ मुँह का कहना री ।।24।।
तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो । जस तस मेरा करो उबारी ।।25।।
मैं तो नीच निपट संशय रत । लगे न चरनन प्रीत करारी ।।26।।

---

1. विषयी । 2. हत्यारा, कष्ट पहुंचाने वाला । 3. अनेक प्रकार के भोजन, पकवान । 4. स्त्री । 5. इज़्ज़त । 6. निन्दक । 7. कुछ ।

मेरे रोग असाध भरे हैं । तुम बिन को अस करे दवा री ।।27।।
जब चाहो जब छिन में टारो । मेहर दया की मौज निरारी[1] ।।28।।
बारम्बार करूँ मैं बिनती । और प्रार्थना करूँ तुम्हारी ।।29।।
तुम बिन और न कोई दीखे । तुमहीं हो मेरे रखवारी ।।30।।
बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूं । जैसा तैसा आन पड़ा री ।।31।।
अब तो लाज तुम्हें है मेरी । राधास्वामी खेवो[2] बला[3] री ।।32।।

।। बचन तीसवाँ ।।

।। आरती सतगुरु के चरन कँवल में ।।

।। शब्द पहला ।।

आरत गाऊँ स्वामी अगम अनामी । सत्तपुरुष सतगुरु राधास्वामी ।।1।।
सहज का थाल अचिंत की गादी[4] । कँवल कटोरी घिय[5] अमी डराई ।।2।।
मूल नाम की जोत जगाई । दोऊ हाथ ले सनमुख आई ।।3।।
टोपी कमरी[6] धोती पटका[7] । मुख पोंछन रूमाल चढ़ाई ।।4।।
केसर तिलक माल फूलन की । धूप दीप[8] और भोग धराई ।।5।।
अब आरत ले फेरन लागी । सुन्न मंडल अनहद धुन आई ।।6।।
दृष्टि जोड़ चित चरन लगाई । कृपा दृष्टि गुरु कीन्ह बनाई ।।7।।
भान चनद्र छबि घट उजियारी । देखत देखत दृष्टि समाई ।।8।।
सब हंसन मिल आरत गाई । समर्थ सब को लिया अपनाई ।।9।।

।। शब्द दूसरा ।।

आरत गाऊँ पूरे गुरु की । महिमा बरनूँ गगन शिखर की ।।1।।
धुन पकड़ू मैं अनहद घर की । सैर करूं मैं सुन्न नगर की ।।2।।
बात कहूं मैं डगर[9] की । पीर[10] हरूं मैं अपने जिगर की ।।3।।
दीद[11] करूं मैं पुरुष अधर की । दूर करूं मैं ममता धर[12] की ।।4।।

---

1. निराली। 2. दूर करो। 3. आफ़त। 4. गद्दा। 5. घी। 6. मिरज़ई। 7. जो कमर में बाँधा जाय। 8. दीपक। 9. मार्ग, रास्ता। 10. दर्द। 11. दर्शन। 12. देह।

जोति जगाऊं प्रेम विरह की । थाली धारूं सुरत निरत की ।।5।।
मैं तो छोटा यह पद मोटा । कैसे चढ़ूं स्वामी यह मन खोटा ।।6।।
कृपा दृष्टि का दीजै झोटा[1] । तो जावे बुधि बल का टोटा[2] ।।7।।
अब मन तुम चरनन पर लोटा । काल करम सिर मारा सोटा[3] ।।8।।
खेल कूद सब मैनें छोड़ा । चित्त चरन में निस दिन जोड़ा ।।9।।
अब कीजे मो पै दया अपारी । मैं जाऊं स्वामी तुम बलिहारी ।।10।।
मैं किंकर हूं दीन अधीना । नहिं अबतक मैं तुम को चीन्हा ।।11।।
क्या आरत मैं करने जोगा । अपनी दया से मोको पोषा[4] ।।12।।
अब रक्षा मेरी तुम कीजै । बिछड़ूं न कभी सरन में लीजै ।।13।।
दामन[5] तुम्हरा पकड़ा स्वामी । तुम हो अगम अपार अनामी ।।14।।
प्रेम भक्ति और सेवा ध्याना । यह सब दीजै मुझ को दाना[6] ।।15।।

।। शब्द तीसरा ।।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाऊँ ।
नाम पदार्थ नाम पदार्थ नाम पदार्थ पाऊँ ।।1।।
जोत जगाय दृष्टि भर देखूं । अगम अगाध रूप हिय पेखूं[7] ।।2।।
महिमा ता की बरनी न जाई । प्रत्यक्ष सतगुरु दिया दिखाई ।।3।।
चरन सरन वर[8] माँगू दाता । हो मेरे तुम पित और माता ।।4।।
करी आरती हित चित लाई । अमृतसर अश्नान कराई ।।5।।
सुन्न महल जाय बासा कीन्हा । धुन किंगरी सुन मन हुआ लीना[9] ।।6।।
सुरत सखी जहँ करे बिलासा । हंस मंडली अजब तमाशा ।।7।।
लीला देखी यहाँ अति भारी । आगे की अब करी तयारी ।।8।।
महासुन्न में लगन लगाई । गुप्त भेद ले सुरत चढ़ाई ।।9।।
घाटा[10] भारी सो अब तोड़ा । भँवरगुफा सुनी सोहं घोरा[11] ।।10।।
सत्तनाम धुन निज कर पाई । राधास्वामी भेद जनाई ।।11।।

---

1. झूले का झोंका। 2. नुक़सान, घाटा। 3. डंडा। 4. सम्हाला। 5. पल्ला यानी आसरा। 6. बखशिश। 7. निरखूँ। 8. वरदान। 9. मगन। 10. घाटी। 11. आवाज़।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु आरत मैं करने आई । दुक्ख भरम सब दूर नसाई ।।1।।
थाल लिया मैं सील छिमा का । पाया भेद मैं गुरु महिमा का ।।2।।
जोत जगाई विरह अगिन की । करी आरती प्रेम उमंग की ।।3।।
भोग लगाया अपने भाव का । फल पाया हम देह दाव का ।।4।।
दृष्टि जोड़ कर सन्मुख ठाढ़ी[1] । सतगुरु दया दृष्टि जब डारी ।।5।।
राधा राधा नित नित गाऊँ । स्वामी स्वामी सदा मनाऊँ ।।6।।
राधास्वामी फिर दोउ एका । जुगल[2] रूप की निस दिन टेका ।।7।।
कहँ लग बरनूं शोभा उन की । कोटि सूर चँद छबि इक अंगकी ।।8।।
देखत देखत मन बिगसाना[3] । कँवल सूर जस प्रीत पुराना ।।9।।
कहँ लग आरत करूँ बनाई । मन नहिं माने चित न अघाई[4] ।।10।।
प्रेम उमंग अपनी अब रोकूं । पूरन आरत कर हिया पोखूँ[5] ।।11।।
राधास्वामी मगन होय कर । दें परशादी लेउँ गोद भर ।।12।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

गाऊँ आरती ले कर थाली । गगन शिखर सूरत मेरी चाली ।।1।।
उलट दृष्टि देखूं मैं जोती । छिन छिन मन को तहाँ परोती ।।2।।
सुरत निरत कर सुनती बाजा । बना आरती का सब साजा ।।3।।
कर आरत लीन्हा फल पूरा । उदय हुआ घट में अब सूरा ।।4।।
सूर चाँद दोउ देख उजाली । शब्द पौद सींचे मन माली ।।5।।
कँवलन क्यारी जाय सम्हारी । सुरत मालिनी फूल सँवारी ।।6।।
गूंथ गूंथ स्वामी ढिंग लाई । आरत कर गल हार चढ़ाई ।।7।।
फूल फूल कर सन्मुख ठाढ़ी । आरत फेरूँ दृष्टि निहारी ।।8।।
चाह चमेली मन किया मरूवा[9] । भरा अमी से तन का चरूवा[7] ।।9।।
मोह जाल का धागा तोड़ा । रोग सोग संशय अब छोड़ा ।।10।।

---

1. खड़ी हुई । 2. दोनों । 3. खिला, खुश हुआ । 4. तृप्त, संतुष्ट होना ।
5. शांति दूँ । 6. एक फूल का नाम । 7. बड़ा मटका ।

खैंच खाँच मन चरनन जोड़ा । ज्यों त्यों कर यह जग से मोड़ा ।।11।।
तन सीतल और मन भया सीतल । नहिं भावे अब काँसा पीतल ।।12।।
प्रेम प्रीत स्वामी से लागी । और काम सब दीन्हा त्यागी ।।13।।
आरत पूरन कीन्ही अबही । राधास्वामी दया करी पुनि जबही ।।14।।

।। शब्द छठा ।।

आरत गावे स्वामी दास तुम्हारा । प्रेम प्रीत का थाल सँवारा ।।1।।
ज्ञान ध्यान का दीपक बारा । भक्ति जोग धुन सुन झनकारा ।।2।।
झुनक झुनक झनकार झुमावा[1] । सुरत शब्द धुन आन समावा ।।3।।
अब आरत स्वामी मानो मेरी । गुनहगार भूला बहुतेरी ।।4।।
छिमा करो अपराध सुवामी । आगे न चूकूँ पाइ हैरानी ।।5।।
दया करो दाता प्रभु मेरे । मैं सेवक निज चरनन चेरे ।।6।।
दृष्टि करो भरपूर अपारा । पद पाऊँ जा का वार न पारा ।।7।।
नाम तुम्हार धुन्ध[2] उजियारा । गुन गाऊँ धुन अगम अपारा ।।8।।
दया करो अब राधास्वामी । देव प्रसाद मोहिं अंतरजामी ।।9।।

।। शब्द सातवाँ ।।

गुरु मेरे दाता मैं भई दासी । जनम जनम की काटी फाँसी ।।1।।
दुर्लभ नर देही अब पाई । करूँ भक्ति गुरु लेउँ रिझाई ।।2।।
रटना नाम करूँ मैं निस दिन । गुन गाऊँ अब स्वामी छिन छिन ।।3।।
दर्शन पाऊं मन उमगाऊं । नैन जोड़ कर सुरत लगाऊं ।।4।।
तब अनहद अद्भुत पाऊं । गगन मंडल में जाय समाऊं ।।5।।
त्रिकुटी जाय सिंहासन बैठी । करे राज घट घट में पैठी ।।6।।
आरत विधि अब कीन्हा साजा । धुन धधकार गगन का बाजा ।।7।।
धुन आई इक धुर से भारी । अधर पदारथ पाया सारी[3] ।।8।।
बरसे अमी की धार अखंडा । भींजे सुरत तजा नौखंडा ।।9।।

---

1. घुमाया । 2. अंधेरा । 3. सार, जौहर । 4. पिंड ब्रह्मंड ।

हंस चाल अब चली सरोवर । पहुंची जाय अचिंत बरोबर ।।10।।
अगम[1] निगम[2] से हो गइ पारा । फोड़ा जाय सत्त का द्वारा ।।11।।
सत्तनाम पद पाया नूरा । काल देख अब छिन छिन झूरा[3] ।।12।।
मैं भी भई नाम रस माती । आरत सतगरू नित प्रति गाती ।।13।।
तुम दयाल देओ मोहिं दाना । चित्त रहे तुम चरन समाना ।।14।।
कभी न बिछड़ूँ ज्यों जल मीना । बार बार तुम चरन अधीना ।।15।।

।। शब्द आठवाँ ।।

आरत गाऊं पाँच कड़ी की । पाँच तत्त्व[4] संग आन पची री ।।1।।
पाँच प्राण[5] की डोर बंधी री । पाँच दुष्ट[6] संग आन अड़ी री ।।2।।
सतगुरु पूरे दया करी री । खुली गाँठ और गगन चढ़ी री ।।3।।
काया मद्धे खूब लड़ी री । धुन के मोती पोये लड़ी री ।।4।।
सुन्न मंडल की धुन पकड़ी री । राधास्वामी चरनन आन पड़ी री ।।5।।

।। शब्द नवाँ ।।

सात कड़ी की आरत फेरूं । सुरत चढ़ाय शब्द संग घेरूं ।।1।।
मन को मोड़ गगन को फोड़ूँ । चित्त को रोक चरन में जोड़ूँ ।।2।।
सतगुरु मुखड़ा छिनछिन निरखूँ । विविध भाँत अनहद धुन परखूँ ।।3।।
मैं मृगनी सुनी नाद गुरु की । सुनत नाद तन मन सुध बिसरी ।।4।।
इन्द्री पाँच सुरत मन दोई । सातों सँग ले गगन समोई[7] ।।5।।
आँख दिखाऊं और झुँझलाऊँ । सतगुरु के बल ज़ोर चलाऊँ ।।6।।
यह आरत मैं नित्त करूँगी । अब नहिं रूठूँ[8] सच्च कहूंगी ।।7।।

।। शब्द दसवाँ ।।

आरत गाऊँ सत्तनाम की । जोत जगाऊँ अधर नाम की ।।1।।
लीला देखूँ कंज श्याम की । सैर करूँ मैं सेत धाम की ।।2।।
जड़ काटूँ अब दुष्ट काम की । मैं चेरी गुरु बिना दाम की ।।3।।

---

1. दसवाँ द्वार । 2. महासुन्न । 3. सूख गया । 4. पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, आकाश । 6. पाँच वायु यानी अपान, व्यान, समान, प्राण, उदान । 6. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार । 7. प्रवेश किया । 8. खफा हूँ ।

सेवा धारूं आठ जाम[1] की । त्याग दई धुन दिशा बाम[2] की ।।4।।
प्रीत लगी जस अलिफ़ लाम[3] की । नाद सुनी चढ़ ला-मुकाम[4] की ।।5।।
संगत छोड़ी ख़ासो आम की । रही न लज्जा नंगो नाम[5] की ।।6।।
शोभा देखी गगन बाम[6] की । हुइ मस्तानी अजर जाम[7] की ।।7।।
जगह नहीं अब कुछ कलाम[8] की । आरत राधास्वामी अब तमाम की ।।8।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

दया गुरु की अब हुइ भारी । मैं भी आरत करन विचारी ।।1।।
ज्ञान गुरु का थाल सिंगारी । भक्ति जोत ले कर[6] में धारी ।।2।।
खड़ी हुई जब गुरु के आगे । मद और मोह काम उठ भागे ।।3।।
दृष्टि लकुटिया गुरु की लागी । ममता कुतिया भोंकत भागी ।।4।।
मंत्र बताया गुरु ने ऐसा । लोभ भूत छोड़ा तन देसा ।।5।।
सुरत चढ़ी अब गगन मंडल में । नौ छोड़े गइ अष्ट कंवल में ।।6।।
राधास्वामी नाम सम्हारा । रूप अनूप हृदे में धारा ।।7।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

एक आरती और बनाऊं । राधास्वामी आगे आन सुनाऊं ।।1।।
जुक्ति जतन कर विरह जगाऊं । प्रेम प्रीत का थाल सजाऊं ।।2।।
कुल कुटुम्ब से नाता तोड़ा । चरन कँवल में मन को जोड़ा ।।3।।
काल चक्र डाला बहुतेरा । छोड़ दिया सब मेरा तेरा ।।4।।
मन उमँगा चरनन में भारी । सुध नहिं को नर है को नारी ।।5।।
शब्द भेद जो गुरु दरसाया । सुरत चढ़ाय द्वार पर आया ।।6।।
गगन माहिं धस दास कहाया । स्वामी चरन निपट लिपटाया ।।7।।
घट में दर्शन सतगुरु पाया । रूप अनूप देख हरखाया ।।8।।
गूँजत भँवर सरोज[11] सेत में । लेत सुगंध और मगन हेत[12] में ।।9।।
धुन की ख़बर जनावत न्यारी । लगी सुरत जहँ अधिक करारी ।।10।।

---

1. पहर । 2. बायाँ । 3. प्रीत जो कभी न टूटे । 4. अधामी । 5. बदनामी और नेकनामी । 6. अटारी । 7. प्याला । 8. बचन । 9. हाथ । 10. लकड़ी । 11. कँवल । 12. प्यार ।

राधास्वामी दया विचारी । मो सी अधम को लिया उबारी ।।11।।

।। शब्द तेहरवाँ ।।

अगम आरती राधास्वामी गाऊँ । तन मन धन सब भेंट चढ़ाऊँ ।।1।।
छत बुहारूँ[1] छज्जे झाड़ूं । नीच नीच मैं सेवा धारूं ।।2।।
दया करो अब स्वामी मेरे । जन्म जन्म पड़ी काल के घेरे ।।3।।
अब दयाल ने मुहर[2] लगाई । कंटक[3] काल सब दूर पराई ।।4।।
देव प्रसाद मोहिं राधास्वामी । पद पाऊँ सतनाम नामी ।।5।।
मैं चेरी स्वामी तुम्हरे घर की । साफ़ करूँ बुधि मायाबर[4] की ।।6।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

घामर घूमर[5] करूँ आरती । स्वामी हुए दयाल जी ।।1।।
खाउँ परशादी ओढ़ूँ परशादी । नाम तुम्हारा लिये जाउँगी ।।2।।
देखो चाहे मत देखो स्वामी । मैं अपनी सी करे जाउँगी ।।3।।
देउँ परिकर्मा पिऊँ चरनामृत । बँदगी कर कर चरन गहूंगी ।।4।।
काल करम का माथा फोड़ूँ । सुरत चरन में जोड़ रहूंगी ।।5।।
ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाऊँ । उमंग उमंग गुन गाऊंगी ।।6।।
पूजा भेट धरूँ नहिं कौड़ी । आरत गाऊँ नौड़ी नौड़ी[6] ।।7।।
ख़फ़ा होव तो रूसूँ नाहीं । चरन तुम्हारे पकड़ रहूंगी ।।8।।

।। शब्द पंद्रहवाँ ।।

करे आरता सेवक भोला । नेह[7] नगर का फाटक खोला ।।1।।
चौक आकाश साफ़ अब कीन्हा । शब्द गुरु का दर्शन लीन्हा ।।2।।
कर कर दरस मगन हुआ मन में । सुरत सखी पहुंची इक छिन में ।।3।।
लगन लगी और प्रीति अब जागी । राधास्वामी दर्शन सूरत पागी[8] ।।4।।
पाँच तत्त्व फुलवारी देखी । प्रकृत पचीसों क्यारी पेखी ।।5।।
सहन[9] चौतरा सुन्न मझारा । तहँ राधास्वामी सिंहासन धारा ।।6।।

---

1. झाड़ू लगाऊँ । 2. छाप । 3. दुख । 4. माया का पति यानी काल ।
5. परिक्रमा देकर । 6. झुक कर । 7. प्रीति । 8. दृढ़ हुई । 9. आँगन ।

हिया परात हाथ अब लीन्ही । बाला जोता[1] धुन्ध टलीनी ।।7।।
अगम नगर ला भेट चढ़ाया । अमी सजीवन बूटी[2] लाया ।।8।।
किया आरता उमंग प्रेम का । फोड़ा माथा काल अधम का ।।9।।
धारा राधास्वामी नाम विहंगम[3] । दम दम तोड़े दाँत धरमजम[4] ।।10।।
फूल पान और केसर टीका । भोग भाव धरा प्रीत रीत का ।।11।।
पाउं प्रसाद अब राधास्वामी का । गाउं गीत पल पल प्रीतम का ।।12।।
किया आरता पूरा आज । जन्म अष्टमी पाया साज ।।13।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

जाग रे मन छोड़ बखेड़ा । त्याग रे मन जगत अँधेरा ।।1।।
अब खोजो साँझ सवेरा । फिर क़ाबू[4] चले न तेरा ।।2।।
तब सतगुरु करें निबेड़ा[6] । तू करे न भौजल फेरा ।।3।।
काल यह डाला घेरा । सब खायँ जीव भटभेड़ा[7] ।।4।।
सतगुरु पद सेवो मेरा । छूटे सब मेरा तेरा ।।5।।
मत कर तू बहुत अबेरा । अब बाँध अगम का बेड़ा[8] ।।6।।
घाट घट भीतर हेरा । पद मिला आज बहु नेड़ा[9] ।।7।।
मैं किया गगन में डेरा । जहँ संत करें नित फेरा ।।8।।
तसकर[10] सब मारे घेरा । सुख पाया आज घनेरा ।।9।।
संतन का चौकी पहरा । मैं करूँ अचिंत बसेरा ।।10।।
आरत की उमंग उठाऊँ । सामान कहाँ से लाऊँ ।।11।।
मन भूखा सूरत भूखी । इन्द्री तन भीतर सूखी ।।12।।
तब सतगुरु दीन्ही टेरा । तू चढ़ आ छोड़ अँधेरा ।।13।।
त्रिकुटी का देख उजेरा । धुन से कर व्हाँ की नेहरा[11] ।।14।।
सुन्न में जाय चौकी डारी । अब मिल गइ सामाँ भारी ।।15।।
अब आरत करूँ सिंगारी । सतगुरु पै जाऊँ बलिहारी ।।16।।

---

1. बड़ी जोत। 2. जान देने वाली जड़ी। 3. पक्षी। 4. धर्मराय। 5. उपाय। 6. निस्तार। 7. भटकना। 8. नाव। 9. पास। 10. चोर। 11. प्रीति।

उमगी अब सुरत करारी । यहि कर में लीन्ही थारी ।।17।।
जहँ सीतल जोत जगाई । झारी भर अमृत लाई ।।18।।
अमी मूर का भोग धराई । कंवलन गल हार पहराई ।।19।।
सतगुरु की शोभा भारी । मैं निरखूं दृष्टि पसारी ।।20।।
महासुन्न ग़लीचा डारा । जहं गगन धरन नहिं तारा ।।21।।
जहं दीप रचे अति भारी । हंसन गति क्या कहुं न्यारी ।।22।।
भक्तन के जूथ[1] बसाये । उपमा उन कही न जाये ।।23।।
आरत विधि देखन आये । सब भँवरगुफा ढिंग छाये ।।24।।
सचखंड बना सिंहासन । सतपुरुष किया तहिं आसन ।।25।।
अनहद धुन बीन बजाई । हंसन मिल आरत गाई ।।26।।
जहं आरत कीन्ही भारी । फिर अलख लोक पग धारी ।।27।।
आरत की धूम समाई । धुर अगम लोक तक आई ।।28।।
यह आरत बहुत बढ़ाई । परताप कहा नहिं जाई ।।29।।
राधास्वामी घर में आई । क्या भाग सराहूं भाई ।।30।।
आरत अब हो गइ पूरी । मैं राधास्वामी चरनन धूरी ।।31।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

दम्पत[2] आरत करूं राधास्वामी । प्रेम सहित गाऊं गुन नामी ।।1।।
कर पकवान मिष्टान भोग धर । और वस्तर गोटन के सज कर ।।2।।
लाय भेट स्वामी के राखे । तब स्वामी अस आज्ञा भाखे ।।3।।
करो आरती प्रेम सिंगारी । बार बार अस आरत धारी ।।4।।
हम भी आरत करें बनाई । राधास्वामी रहो सहाई ।।5।।
सुरत शब्द भाँवर[3] अब लीन्ही । सदा सुहाग अचल गुरु दीन्ही ।।6।।
गुरु दयाल तो कल्ल दयाला । सतगुरु पूरे करें निहाला ।।7।।
उन चरनन पर जाउं बलिहारी । उन बिन कौन करे उपकारी ।।8।।

---

1. झुंड । 2. जोड़ा । 3. परिक्रमा ।

मैं किंकर तुम चरन अधारा । तुम बिन को अब करे उबारा ।।9।।
मस्तक हाथ धरो अब हमरे । प्रीत लगे अब चरनन तुम्हरे ।।10।।
ऐसी कृपा करो राधास्वामी । भक्ति जुक्ति मोहिं देव अनामी ।।11।।
मन और सुरत दोउ मिल आये । नूर तुम्हार हिये में लाये ।।12।।
अब दोनों को लेकर सरना । मारग अगम लखाओ अपना ।।13।।
सुरत चढ़ाओ सहसकँवल में । रूप निहारूं जोत अब तिल में ।।14।।
फिर आगे को चढ़ूँ बंक में । लखूँ तिरकुटी धाम ओं में ।।15।।
सुन्न शिखर चढ़ पहुंचूँ छिन में । महासुन्न का धारूं पन[1] मैं ।।16।।
भंवरगुफा बैठूं सुन धुन मैं । बीन बजाऊं जा सतपुर में ।।17।।
अलख अगम की दया समाई । राधास्वामी नाम सुनाई ।।18।।
सुनूं नाम और धारूं चित में । करम भरम काटूँ इक पल में ।।19।।
कर सतसंग मलिनता नासी । घट में चेतन कीन्ह प्रकासी ।।20।।
अन्ध घोर अज्ञान नसाना[2] । घोर अनाहद मिला ठिकाना ।।21।।
सुन सुन धुन मगनानी ऐसी । मीन मगन रहे जल में जैसी ।।22।।
दासी दास जुगल सरनाये । करके ब्याह आरती लाये ।।23।।
भेट चढ़ावें अब अति गहरी । तन मन धन तो तुच्छ भये री ।।24।।
मैं अजान कुछ मर्म न जानूं । राधास्वामी नाम बखानूं ।।25।।
तुम दयाल मेरी आरत मानो । हम अजान तुम गति न पिछानो ।।26।।
राधास्वामी दरस भाग से पाया । राधास्वामी सरन चित्त अब आया ।।27।।

।। शब्द अट्ठारहवाँ ।।

आज आरती करूँ सुहावन । भावन पावन मन ललचावन ।।1।।
गावन लावन[3] प्रीत बढ़ावन । छावन उमंग हटावन धावन[4] ।।2।।
सुरत चलावन शब्द मिलावन । सहज समावन रंग चढ़ावन ।।3।।
अघ[5] रावण कुल नाश करावन । सीता राम अजुध्या लावन ।।4।।

---

1. इरादा, प्रतिज्ञा । 2. नाश हुआ । 3. सुन्दर । 4. चंचलता । 5. पाप ।

सुरत सिया मन राम कहावन । दसवाँ द्वार अजुध्या गावन ।।5।।
मानसरोवर घाट अन्हावन । महासुन्न में जाय चढ़ावन ।।6।।
भंवरगुफा लीला दरसावन । सत्तलोक गति बीन सुनावन ।।7।।
अलख अगम जा शब्द जगावन । राधास्वामी धाम दिखावन ।।8।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

उठी अभिलाषा इक मन मोर । करूँ अब आरत गुरु की जोर ।।1।।
प्रेम की थाली लूँगी हाथ । शब्द की जोत जगाऊं साथ ।।2।।
सुरत को बाँधूँगी अब तान । रूप गुरु निरखुंगी अब आन ।।3।।
बचन कर महिमा करूं बखान । चरन गुरु लाऊं हिरदे ध्यान ।।4।।
गुरु बिन और न काहू मान । सरन में उनके पड़ी निदान[1] ।।5।।
करें गुरु खेवा मेरा पार । बचावें डूबत हूं मँझधार ।।6।।
पकड़ अब लेना भुजा पसार । जगत का मेटो सभी ग़ुबार ।।7।।
सुरत को लीजे आज सम्हार । चढूं और झाँकू नभ का द्वार ।।8।।
निरंजन जोत लखूं उजियार । सहसदल छोड़ बंक के पार ।।9।।
घाट फिर त्रिकुटी लेउं निहार । सुन्न चढ़ खोलूं बजर किवाड़ ।।10।।
महासुन पहुंचूं सतगुरु लार । भंवर चढ़ पकडूं बंसी धार ।।11।।
सच्चखंड आई बीन सम्हार । अलख और अगम किया दरबार ।।12।।
किया राधास्वामी मुझ से प्यार । हुई मैं उन पर अब बलिहार ।।13।।
करूं मैं आरत लूं आनन्द । मिला मोहिं आज परमानन्द ।।14।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

क्योंकर करूं आरती सतगुरु । बल नहिं धरूं प्रेम का निज उर ।।1।।
तुम हो दीन दयाल कृपाला । बंधन काट करो प्रतिपाला ।।2।।
मैं किंकर अति अधम उदासी । तुम्हरी गति सब पर अबिनासी ।।3।।
मैं कहा जानूं भेद तुम्हारा । विषय भोग मेरा सदा अहारा ।।4।।
काल कला की धारा भारी । या ते पार उतरो तारी ।।5।।

---

1. आख़िरकार ।

मन तन मोर करत नहिं काजा । सेवा भजन करत करे लाजा ।।6।।
संत समागम दुर्लभ भाई । सो किरपा से मिल्यो मोहिं आई ।।7।।
कौन भाग अब उदय हमारा । या ते दर्शन पायो तुम्हारा ।।8।।
दूर देश से चल कर आयो । और काल बहु बिघन लागायो ।।9।।
मन उचाट कर चित भरमावत । बारम्बार देश को धावत ।।10।।
सतसंग में रहना नहिं चाहत । धन तिरिया की याद बढ़ावत ।।11।।
ताते सतगुरु मत को फेरो । तुम चरनन कर निस दिन चेरो ।।12।।
सुरत चढ़ाओ गगन शब्द में । निरत जमाओ धुनन अवध[1] में ।।13।।
सहस कँवल त्रिकुटी लख लीला । सुन्न महासुन खेलत सीला ।।14।।
भँवर गुफा सतलोक दिखाई । अलख अगम की छबि चित भाई ।।15।।
राधास्वामी दीन अवाज़ा । चलो सुरत घर अपना पाजा ।।16।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

धूम धाम से आइ इक सजनी । पति[2] को संग पुत्र दोउ[3] मगनी ।।1।।
आय सरन सतगुरु की लीन्ही । तन मन सहित प्रीति परबीनी ।।2।।
आरत करन विचारत गुरु की । उमंग प्रीत दिखलावत उर की ।।3।।
गुरु संग प्रीति करी नहिं थोड़ी । सुरत निरत निज चरनन जोड़ी ।।4।।
प्रेम जगावत कर्म सुलावत । भजन भक्ति में धीर बढ़ावत ।।5।।
नित्त नवीन प्रीति अधिकाई । शोभा गुरु देखत मुसकाई ।।6।।
गुरु की महिमा कही न जाई । कोटिन सूर इक रोम लजाई ।।7।।
गति उनकी उनहीं की जानी । कौन कहे यह अकथ कहानी ।।8।।
सतसंग उनका जो कोइ पावे । शब्द माहिं वह छिन छिन धावे ।।9।।
ताते सरन गही राधास्वामी । तुमही रक्षा करो निदानी ।।10।।
मैं आरत कुछ करन न जानी । अपनी दया से लगन लगानी ।।11।।

---

1. दसवां द्वार । 2. मन । 3. बैराग और अनुराग ।

।। शब्द बाईसवाँ ।।

सतगुरु की अब करूँ आरती । जगा भाग और रहूं जागती ।।1।।
दिन दिन प्रीत पदारथ लाती । बढ़ी उमंग अब कहां छिपाती ।।2।।
देख सारदा[1] निपट लजाती । सतगुरु महिमा कही न जाती ।।3।।
जब जब दरस गुरु का पाती । तन मन धन सब अर्प धराती ।।4।।
अस आरत मैं करूँ बनाई । संत सरन मैं निज कर पाई ।।5।।
काल दुष्ट इक विघन लगाई । उलटी मो को देश पठाई ।।6।।
मैं गुरु मूरत हिरदे धारी । पल पल छिन छिन करूँ अधारी ।।7।।
तब तो काल रहे मुरझाई । विरह प्रेम बल मार गिराई ।।8।।
दूर रहूं सतगुरु उर धारूँ । काल विघन सब दूर निकारूँ ।।9।।
मैं सतगुरु बल लीन्हा हाथा । फोड़ूं काल करम का माथा ।।10।।
अब छिन छिन यह आरत गाऊँ । सतगुरु चरनन नित बल जाऊँ ।।11।।
तन तो रहे देश के माहीं । मन तो रहे चरन की छाहीं ।।12।।
यों दम दम गुरु पास बसानी । अब क्या विघन करे मेरी हानी ।।13।।
राधास्वामी मूरत हिरदे धारी । छिन छिन देखूं नैन उघाड़ी ।।14।।

।। शब्द तेईसवाँ ।।

करूँ री इक आरत अद्भुत भारी । चरन गुरु सेव होकर न्यारी ।।1।।
सुरत मेरी लागी धुन में पागी । निरत मेरी जागी ममता भागी ।।2।।
हंस गति पाई पानी त्यागी । रही मैं अब तक बहुत अभागी ।।3।।
गुरु ने अब दीन्हा मोहिं सुहागी । मैं गुरु के चरन की हुई अनुरागी ।।4।।
भोग सब छूटे चित बैरागी । गाउं अब निसदिन सतगुरु रागी ।।5।।
कहूं कहा मैं अब बड़ भागी । शब्द माहिं सूरत मेरी लागी ।।6।।
करम धरम बिच दीन्ही आगी । मान अपमान दोउ मैं त्यागी ।।7।।
सतगुरु चरन हुई मैं दाग़ी । नाम दान सतगुरु से माँगी ।।8।।

---

1. सरस्वती ।

गगन चढ़ूँ देखूं पद आगी[1] । सत्त शब्द में सुरत समागी[2] ।।9।।
छूट गई संगत सब कागी । हंसन साथ रला मेरा भागी ।।10।।
मन को जीता ममता भागी । राधास्वामी चरन परस परसागी ।।11।।

।। शब्द चौबीसवाँ ।।

गुरु के चरन पर चित बलिहारी । मन परतीत करूँ दृढ़ सारी[3] ।।1।।
कर अभिलाख दूर से आयो । अचरज दर्श नैन भर पायो ।।2।।
काल करी अपनी ठगियाई । मन बिच नाना भरम उठाई ।।3।।
कभी परतीत प्रीत दृढ़ताई । कभी सरन से देत कचाई ।।4।।
कभी झकोले मोह दिखाई । कुटुंब देस की याद कराई ।।5।।
चरन गुरु ज्यों त्यों दृढ़ करता । फिर भरमाय जगत में धरता ।।6।।
क्या क्या कहूं काल की लीला । तपन उठावत खोवत सीला ।।7।।
लीक पुरानी कुल मरजादा[4] । तीरथ बर्त धर्म को साधा ।।8।।
भरम उठावत अस अस भारी । दूर हटावत प्रेम विचारी[5] ।।9।।
मैं बलहीन दीन सरनागत । जस जानो तस टारो आफ़त ।।10।।
यह मन चोर कठोर हमारो । लोभ लहर में बहतो सारो ।।11।।
आस भरोस और बिश्वासा । गुरु चरनन में करे न बासा ।।12।।
क्यों कर इस मन को समझाऊँ । गुरु की दया बिन ठौर न पाऊँ ।।13।।
ता ते बिनती करूँ तुम्हारी । ज्यों त्यों मन को लेओ सुधारी ।।14।।
तुम चरनन में रहूं सदा री । कभी न छोडूं देओ क़रारी[6] ।।15।।
चरन भेद गुरु दिया बताई । नैन निरख जहँ सुरत लगाई ।।16।।
दो तिल छूट एक तिल दरसा । जोत निरंजन का पद परसा ।।17।।
आगे सुखमन घाट सुहाई । द्वार बंक में जाय समाई ।।18।।
घंटा संख रही लौ लाई । छोड़ ताहि फिर त्रकुटी आई ।।19।।
गरजा बादल मृदंग सुनाई । ओंकार गुरु शब्द जनाई ।।20।।

---

1. आगे का । 2. समा गई, धस गई । 3. पूरी । 4. रीति । 5. विचार । 6.दृढ़ता ।

लीला देख सुरत हरखाई। आगे सुन्न सरोवर धाई।।21।।
हंसन साथ उमंग बढ़ाई। मान सरोवर बिमल अन्हाई।।22।।
महासुन्न की करी चढ़ाई। सतगुरु संग खेप निभ आई[1]।।23।।
तिमिर छाँट परकाश दिखाई। भँवरगुफा बंसी सुन पाई।।24।।
सच्चखंड सतशब्द लखाई। धुन अनंत और बीन बजाई।।25।।
अलख अगम दर्शन दरसाई। राधास्वामी धाम समाई।।26।।
आरत कर लीन्हा घट भेदा। भई परापत सर्व उमेदा।।27।।
सकल मनोरथ पूरन हुए। रतन पदारथ राधास्वामी दिये।।28।।

।। शब्द पच्चीसवाँ ।।

आरत आगे राधास्वामी के कीजे। बिमल प्रकाश अमी रस पीजे।।1।।
चित कर चंदन हित कर माला। आन चढ़ाऊँ स्वामी दीनदयाला।।2।।
गगन का थाल सुरत की बाती। शब्द की जोत जगे दिन राती।।3।।
सहस कँवल दल घंटा बाजे। बंकनाल धुन शंख सुनीजे।।4।।
ओंकार धुन त्रिकुटी बाजे। सुन्न शिखर अक्षर धुन गाजे।।5।।
भँवरगुफा ढिंग सोहं बासा। सत्तलोक सतनाम निवासा।।6।।
दास तुम्हारे स्वामी आरत गावें। चरन कँवल में बासा पावें।।7।।

।। बचन इकतीसवाँ ।।

वर्णन मन और इन्द्रियों के विकार और काल के विघ्नों का अभ्यास की हालत में

।। शब्द पहला ।।

घट औघट झाँका री सजनी ।। टेक ।।
मन मतिमन्द कहन नहिं माने। शब्द सुरत नहिं ताका री।।1।।
घर घर फिरे स्वान[2] मति लीये। झूठ झूठ विष खाता री।। 2।।
धन सम्पत सुख चाह उठाई। मान मनी मद माता री।।3।।

---

1. निर्विघ्न पार हुई। 2. कुत्ता।

कुल कुटुम्ब जग झूठ पसारा । तिन संग बाँधा नाता री ।।4।।
घाट बाट सतगुरु नहिं चीन्हे । खान चार नित जाता री ।।5।।
क्यों कर कहूं बूझ नहिं माने । फिर फिर भरम भुलाता री ।।6।।
छल और कपट ईर्षा निन्दा । दम दम पाप बढ़ाता री ।।7।।
गुरु का बचन सात्विकी[1] रहनी । इन में चित न समाता री ।।8।।
कहँ लग कहूं हार अब मानी । गुरु बिन कौन बचाता री ।।9।।
गुरु चरनन पर प्रेम बढ़ाओ । पिरथम सीढ़ी गाता री ।।10।।
दूसर सीढ़ी सुरत शब्द की । मन अन्तरगत न्हाता री ।।11।।
राधास्वामी कहत बुझाई । जीवन काज सुनाता री ।।12।।

।। शब्द दूसरा ।।

छुटूं मैं कैसे इस मन से । सुरत यह कहती निज मन से ।।1।।
जाल इन डाला बहु रस से । छुटाया मोहिं धुर घर से ।।2।।
बँधी मैं आय इन दस[2] से । किया परपंच[3] इन मुझ से ।।3।।
द्वार मैं आन नौ परसे । गिराया मोहिं दस दर[4] से ।।4।।
लगी अब लाग भोगन से । छुटूं क्यों हाय इस फँद से ।।5।।
गुरु बिन कोइ नहिं दरसे । निकाले मोहिं इस वन से ।।6।।
कांपती मैं फिरूं जम से । छुड़ावे कौन इस डर से ।।7।।
पशु सम हो गई नर से । करी नहिं प्रीत मैं गुरु से ।।8।।
डार ज्यों टूट गई जड़ से । पड़ी मैं दूर निज घर से ।।9।।
करूं फ़र्याद सतगुरु से । लगाओ मोहिं चरनन से ।।10।।
दूर करो मैल सतसंग से । होय फिर भिन्न इस तन से ।।11।।
मिले तब जाय सुन धुन से । अमीरस पाय तब सरसे[5] ।।12।।
शब्द से जाय कर परसे । मिटे दुख फिर नहीं तरसे[6] ।।13।।
लगूं मैं आय राधा[7] से । करूँ मैं प्रीत स्वामी से ।।14।।

---

1. सतोगुणी । 2. दस इन्द्रिय । 3. उपाधि । 4. द्वार । 5. खुश हो ।
6. तृष्णा करे । 7. आदि सुरत ।

करो राधास्वामी तुम अपना । पड़ी में आय तुम सरना ।।15।।

॥ शब्द तीसरा ॥

गई आज सोच में ।। टेक ।।

मेरी सुरत कुचालन चाल । गई आज सोच में ।।1।।

अनहद बाजे बजें गगन में । धरे न धुन पर ख़्याल ।।2।।

सतगुरु पूरे भेद बतावें । यह भरमे भौ जाल ।।3।।

सतसंग सार निकार न जाने । पड़ी बहुत जंजाल ।।4।।

कैसे कहूं बूझ नहिं लावे । अति भरमाया काल ।।5।।

बिन सतगुरु बिन नाम सम्हारे । कौन करे प्रतिपाल ।।6।।

छिन छिन फाँसी पड़े गुनन की । कोइ काटें दीन दयाल ।।7।।

काम क्रोध आशा और तृष्णा । यह घट भारी पाल[1] ।।8।।

बिरह अगिन उठ उठ बुझ जावे । क्यों कर करूँ सम्हाल ।।9।।

दूत दुष्ट अब मोहिं सतावें । अपनी छाया डाल ।।10।।

सुरत शब्द मारग बिन पाये । कैसे होय निहाल ।।11।।

सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आवे । न्हाय मानसर ताल ।।12।।

महासुन्न चढ़ भँवरगुफा तक । सत्तनाम पावे निज माल ।।13।।

दया करो अब राधास्वामी । मेटो यह दुख साल[2] ।।14।।

॥ शब्द चौथा ॥

मन चंचल कहा न मानें । मैं कौन उपाय करूँ ।।1।।

गुरु नित समझावें साध बुझावें । सतसंग में चित जोड़ धरूँ ।।2।।

सुन सुन बचन बहुत पछताऊँ । बहुर भुलावे भर्म रहूं ।।3।।

अपनी सी बहु जुक्ति सम्हारी । कैसे मन को मार मरूँ ।।4।।

सुरत शब्द का घाट न पाया । फिर क्योंकर मैं गगन भरूँ ।।5।।

डावाँडोल रहे संशय में । जगत आस से नाहिं टरूँ ।।6।।

---

1. परदा। 2. दर्द।

सतगुरु सरन पकड़ कर बैठूं । तो इस मन की व्याधि हरूँ ।।7।।
जगत जाल यह अति दुखदाई । इसी अगिन में नित्त जरूँ ।।8।।
बिना मेहर कुछ काज न सरिहै । अब राधास्वामी की सरन पड़ूं ।।9।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

चमरिया[1] चाह बसी घट माहिं । गुरु अब कैसे धारें पायँ ।।1।।
दुक्ख सुख नितही आवें जायँ । करम फल भोगत मन के माहिं ।।2।।
शुद्धता सब ही भागी जायँ । प्रेम और भक्ति नहीं ठहरायँ ।।3।।
विरह अनुराग निकासे जायँ । करूँ क्या कोई जतन अब नाहिं ।।4।।
बहुरि फिर गुरुही लेयँ बचाय । नाम बिन करे न कोइ सहाय ।।5।।
करूं अब सतसंग सरन समाय । शब्द में निस दिन लगन लगाय ।।6।।
राधास्वामी कीन्ही दृष्टि झुमाय[2] । चमरिया घट से भागी जाय ।।7।।

।। शब्द छठवाँ ।।

गुज़र मेरी कैसे होय सहेली । इस मन साथ ।।1।।
यह तो चोर चुग़ल छल कपटी । कभी न आवे हाथ ।।2।।
गुरु समझावें मैं समझाऊँ । पुनि पुनि करता अपनी घात ।।3।।
काम न छोड़े क्रोध न छोड़े । लोभ मोह संग अति दुख पात ।।4।।
मान बड़ाई जगत बासना । नित्त बढ़ावत जात ।।5।।
खान पान और भोग बिलासा । इन में सदा फंसाता ।।6।।
सतगुरु दाता शब्द लखावें । सो नहिं लेता दात ।।7।।
ऐसा दुष्ट कहा नहिं माने । छोड़त नहिं उतपात ।।8।।
जम नगरी के दुक्ख सुनाऊँ । तो भी भय नहिं खात ।।9।।
सत्तलोक के सुख दरसाऊँ । सो भी कुछ परतीत न लात ।।10।।
कहूँ कहाँ लग नेक न माने । मैं तो हारा जात ।।11।।
कैसी करूँ उपाय न सूझे । नहिं या ते बसियात[3] ।।12।।

---

1. चमड़े से जिसकी प्रीति है। 2. घुमा कर। 3. विवश हूँ।

जो कुछ करें करें राधास्वामी । और न कोई दृष्टि आत ।।13।।

।। शब्द सातवाँ ।।

हुआ मन आज दुखदाई । कहूँ मैं चाल इस गाई ।।1।।
न डर गुरु का न भय जम का । गिरे नित पाप में जाई ।।2।।
करे सतसंग सुने बानी । समझ तो भी नहीं आई ।।3।।
स्वान की पूँछ ज्यों जानो । कभी छोड़े न टेढ़ाई ।।4।।
मिरग सम होय सदा चंचल । कभी लेवे न थिरताई ।।5।।
नाद घट में घुरे[1] निस दिन । सुने नहिं एक छिन भाई ।।6।।
कर्म और भर्म में पचता । भोग में रहे लौ लाई ।।7।।
भोग और रोग में खपता । नाम रस लेत नहिं आई ।।8।।
रहे अभिमान में भूला । गुरु संग करत चतुराई ।।9।।
कही राधास्वामी गति मन की । दया बिन हाथ नहिं आई ।।10।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु को ऊपर ऊपर गाता । गुरु को दिल भीतर नहिं लाता ।।1।।
गूरू का दर्शन बाहर करता । चित्त में दर्शन कभी न धरता ।।2।।
काज तेरा कैसे होवे भाई । ऊपरी गुरु संग लगन लगाई ।।3।।
भीतरी धन और मान विराजा । ऊपरी नाम ग़रीबी साजा ।।4।।
भीतरी काम और क्रोध बसाये । ऊपरी सील छिमा दिखलाये ।।5।।
भीतरी लगन न गुरु से लागी । ऊपरी लगन करे क्या पाजी[2] ।।6।।
गुरु कस तेरे होयँ सहाई । शब्द की प्रीति न अन्तर आई ।।7।।
कौन विधि कहूँ तोहि समझाई । भाग कुछ ओछा ही तैं पाई ।।8।।
तमोगुन छाय रहा घट तेरे । सतोगुन कभी न आवे नेरे[3] ।।9।।
भजन तू करे न कबही सच्चा । सरन में गुरु की है तू कच्चा ।।10।।
ज़रा सी ताड़ मार नहिं सहता । निरादर करें जगत में बहता ।।11।।

---

1. बजे। 2. नीच, दुष्ट। 3. निकट।

दुखों से डर कर कुछ कुछ लगता । गये दुख वोही तुर्त फड़कता[1] ।।12।।
नाम रस पाय नहिं अविनासी । जगत से हुआ न कभी उदासी ।।13।।
जतन कोइ समझ नहिं अब आता । गुरु की मेहर बिना क्या पाता ।।14।।
गुरु की मरज़ी कभी न परखी । मेहर कहो आवे कैसे धुर की ।।15।।
ख़बर नहिं पाई तैं निज घर की । शब्द में सुरत न तेरी सरकी[2] ।।16।।
मरम यह मन का सबही गाया । सुनो राधास्वामी कहत सुनाया ।।17।।

।। शब्द नावाँ ।।

अरे मन नहिं आई परतीत ।।
गुरु की नहिं आई परतीत । अब तक नहिं आई परतीत ।।1।।
बहुतक भरमा जगत भर्म में । नहिं कीन्हा मन मीत ।।2।।
गुरु संग रहता सतसंग करता । चरनामृत पी खाता सीत ।।3।।
अब जो देखी हालत मन की । लगी न गुरु संग प्रीत ।।4।।
धोखा देत रहा मन पाजी । गही न गुरु की रीत ।।5।।
गुरु ने परख करी कुछ मन की । छोड़ चला संगीत[3] ।।6।।
मन मूरख यह कहा न माने । सोता रहे कपट नहिं जीत ।।7।।
क्योंकर मन को देऊँ सचौटी । कुटुम्ब जगत की लज्जा कीत ।।8।।
कुटुम्ब जगत संग सच्चा बरते । झूठा सतसंग लीत[4] ।।9।।
जब देखो तब रूखा सूखा । गुरु दर्शन में नहिं हुलसीत ।।10।।
सतसंगियन से हेल मेल नहिं । जग जीवन संग रखता प्रीत ।।11।।
दारा[5] सुत परिवार सकल संग । हंस हंस खेलत नीत[6] ।।12।।
गुरु से सीधे मुँह नहिं बोले । सतसंगियन से टेढ़ा चीत ।।13।।
गुरु सतसंगी दोउ हितकारी । तिन का हित जाने न पलीत[7] ।।14।।
जग बिच्छू तिरिया है नागिन । इन संग रहत मिलीत ।।15।।
ज़हर हलाहल[8] नित ही खावत । डंक सहत फिर फिर पछतीता ।।16।।

---

1. बे रोक टोक बरतता है। 2. आगे वढ़ी। 3. संगत। 4. लिया। 5. जोरू। 6. नित्त। 7. नापाक, अपवित्र। 8. मार डालने वाला।

गुरु के बचन अमी की धारा । तिन में न्हात न हो मगनीत ।।17।।
ऐसा नीच कुबुद्धी यह मन । गुरु को अपना जाने न मीत ।।18।।
गुरु संग प्रीत लगावत ऐसी । जस धागा कच्चा चटकीत[1] ।।19।।
जो कोई बचन कहे वह कड़ुवा । और करें अपमान भलीत ।।20।।
तो मन फेरे घर को भागो । बैर करे कुछ करे अनीत ।।21।।
गुरु को दुख पहुंचावन चाहे । क्यों नहिं मेरा आदर कीत ।।22।।
जोरू लड़के गाली देवें । मूछ पकड़ वह खैंच खिंचीत ।।23।।
उनकी ताड़ मार नित सहता । उन से तौ भी मन न फिरीत ।।24।।
उनकी प्रीत लगी अस दृढ़ होय । लोहे की संगलीत[2] ।।25।।
अब तो चेत ज़रा तू हे मन । त्याग पशु की रीत ।।26।।
खान पान और लोभ लहर में । क्यों बहता तज भीत[3] ।।27।।
राधास्वामी कहत बुझाई । इस से बढ़ क्या गाऊँ गीत ।।28।।

।। शब्द दसवाँ ।।

डगर मेरी रोक लई । या ज़ुल्मी काल ।।1।।
मैं पनिहारी अमी अधारी । सतगुरु करो सम्हाल ।।2।।
गगरी सुरत डोर निज करनी । छूट गया जंजाल ।।3।।
उर्धमुखी कुइया[4] चढ़ झाँकी । भरत अधर रस हाल ।।4।।
भेद गुप्त इक सतगुरु दीन्हा । पहुंची हँसन ताल ।।5।।
राधास्वामी अगम अनामी । मुझ पर हुए दयाल ।।6।।
सुरत शब्द मारग दरसाया । काटा मन का जाल ।।7।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

गूजरी[5] चली भरन गगरी । श्याम[6] ने रोकी पनघटवा ।।1।।
सखियन साथ उमंग से जाती । खोज लगाती धुन घटवा ।।2।।
अब क्या करूँ ज़ोर नहिं चले । कैसे खोलूँ घट पटवाँ ।।3।।

---

1. टूट जाता है। 2. जंजीर। 3. भय, डर। 4. ऊपर मुख वाला कुआ यानी मस्तक। 5. सुरत। 6. काल। 7. पाट, परदा।

मारग रोक भुलावत सब को । कला दिखावत ज्यों नटवा ।।4।।
धूम धाम कर फिर बगदावत[1] । ठहरन देत न काहु तटवा ।।5।।
ऐसा छलिया कान्ह न माने । छोड़त नाहीं निज हटवा ।।6।।
गुरु बिन कौन बचावे या ते । खोल सुनावें धुन छँटवा[2] ।।7।।
राधास्वामी खेली लीला । दूर हटाया अब झटवा ।।8।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

फैल रही सुर्त बहु विधि जग में । बिन पिया भटक गई या मग में ।।1।।
इन्द्री रस अधिक सतावें । मन तरंग बहुत भरमावें ।।2।।
राधास्वामी दया करावें । मन उलट फेर बदलावें ।।3।।
रस शब्द अधर चखवावें । तब तन मन शांति धरावें ।।4।।

।। बचन बत्तीसवाँ ।।

प्रार्थना सुरत की मन से और जवाब देना उसका

।। शब्द पहला ।।

मन रे मान बचन इक मेरा ।। टेक ।।
मैं तेरी दासी जनम जनम की । तू हुआ स्वामी मेरा ।।1।।
तीन लोक का नाथ कहावें । तीन देव तेरा चेरा ।।2।।
ऋषि मुनि सब पर हुकुम चलावे । जती सती सब घेरा ।।3।।
तेरे बस सुर नर और जोगी । कोइ तेरा हुकम न फेरा ।।4।।
जिस चाहे तिस जगत फँसाए । और चाहे तिस करे निबेरा ।।5।।
ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी । ताते तुम पै करूँ निहोरा[3] ।।6।।
इस तन नगरी तुच्छ देश में । क्यों क़ैदी होय पड़े अंधेरा ।।7।।
सतगुरु मोसे कहा बचन इक । मन को संग ले चलो सबेरा ।।8।।
ता ते तुम पै करूँ बीनती । चढ़ो गगन क्यों करो अबेरा ।।9।।
इन्द्री द्वार विषय अब त्यागो । करो अभी सुलझेरा[4] ।।10।।
तुम सा संगी और न कोई । मैं तुम्हरी और तुम ही मेरा ।।11।।

---

1. लौटा देता है। 2. छँटी हुई। 3. विनती, प्रार्थना। 4. निबेड़ा, सुलझाना।

मुझ दासी का कहना मानो । गगन मंडल चढ़ बाँधो डेरा ।।12।।
जैसे थे तैसे फिर होइ हो । क्यों दुख सुख यहाँ सहो घनेरा ।।13।।
सतगुरु पूरे भेद बताया । मन को संग लेकर घर फेरा ।।14।।
मैं हूं सुरत पड़ी बस तेरे । बिन तुम मदद शब्द नहिं हेरा ।।15।।
जो यह कहन न मानो मेरी । तो चौरासी करें बसेरा ।।16।।
अब तुम दया करो मेरे ऊपर । सुन बिनती खोजो धुन नेरा ।।17।।
हम तुम दोनों चढ़ें अधर में । जाकर बसें पहाड़ सुमेरा ।।18।।
तुम वहाँ रहना राज कमाना । हम पहुंचें जहँ राधास्वामी डेरा 19।।

।। शब्द दूसरा ।।

मन बोला सुर्त से फिर ऐसे । विषय स्वाद मोसे जात न छोड़ा ।।1।।
कैसी करूँ बचन कस मानूं । मैं इन्द्री बस हुआ न थोड़ा ।।2।।
बल पौरूष मैं सब ही हारा । अब इन से मेरा चले न ज़ोरा ।।3।।
मैं चाहूं छोड़ूँ भोगन को । देख भोग बस चले न मोरा ।।4।।
आगे पीछे बहु पछताऊँ । समय पड़े पर होवत चोरा ।।5।।
कैसे चढ़ूं गगन को प्यारी । मैं चंचल ज्यों दौड़त घोड़ा ।।6।।
ताते तोसे कहूं जतन मैं । चल सतगुरु पै करो निहोरा ।।7।।
सरन पड़ें मिल कर अब हम तुम । कर सतसंग होयँ कुछ पोढ़ा[1] ।।8।।
दया करें सतगुरु जब अपनी । पल पल राखें मोको मोड़ा ।।9।।
मैं अपने बल चढ़ूँ न कब ही । जब लग मिलें न गुरु बंदी छोड़ा।।10।।
सुन कर सुरत अधिक हरखानी । चल जल्दी वह बन्धन तोड़ा ।।11।।
सतसंग सरन गही अब दोनों । भर भर पीवत अमी कटोरा ।।12।।
दोनों मिल कर चढ़े गगन को । शब्द शब्द रस हुए चटोरा ।।13।।
दया करी राधास्वामी उन पर । हीरा मोती लाल बटोरा ।।14।।
राधास्वामी ऐसी मौज दिखाई । मार लिया अब काल कठोरा ।।15।।

---

1. मज़बूत ।

।। बचन तेंतीसवाँ ।।

फ़र्याद और पुकार करना सतगुरु से और माँगना मेहर और दया का वास्ते चढ़ने सुरत के और प्राप्ति दर्शन स्वरूप सतगुरु की

।। शब्द पहला ।।

अब मन आतुर दरस पुकारे । कल नहिं पकड़े धीर न धारे ।।1।।
दम दम छिन छिन दर्द दीवानी । सोऊँ न जागूँ अन्न न पानी ।।2।।
बेकल तड़पूँ पिया तुम कारन । डस डस खावत चिंता नागिन ।।3।।
कौन उपाय करूँ अब सजनी । भौजल से अब काहे को तरनी ।।4।।
याहि सोच में दिन दिन जलती । कोइ न सम्हारे आली पल पल गलती ।।
पिया तो बसें मेरे लोक चतुर में । मैं तो पड़ी आय मृत्यु नगर में ।।6।।
बिन मिलाप प्रीतम दुख भारी । राह चलूं नहिं जात चला री ।।7।।
घाट बाट जहँ अति अँधियारी । कोई न सुने मेरी बहुत पुकारी ।।8।।
जतन न सूझे हिम्मत हारी । अपने पिया की मैं ना हुई प्यारी ।।9।।
जो पिया चाहें तो दम में बुलावें । शब्द डोर दे अभी चढ़ावें ।।10।।
भाग हीन मैं धुन नहिं पकड़ी । काम क्रोध माया रही जकड़ी ।।11।।
सुरत शब्द मारग जो पाया । सो भी मुझ से गया न कमाया ।।12।।
मैं तो सब विधि हीन अधीनी । मन नहिं निर्मल सुरत मलीनी ।।13।।
तुम समरथ स्वामी अति परबीना[1] । मैं तड़पूं जैसे जल बिन मीना ।।14।।
काज करो मेरा आज सम्हारी । तुम्हारी सरन स्वामी मैं बलिहारी ।।
हार पड़ी अब तुम्हारे द्वारे । तुम बिन अब मोहिं कौन सम्हारे ।।
तब स्वामी बोले अस बानी । मौज निहारो रहो चुप ठानी ।।17।।
धीरज धरो करो विश्वासा । अब करूं पूरन तुम्हरी आसा ।।18।।
सुनत बचन अब सीतल भई । चरन सरन स्वामी निश्चल गही ।।19।।

---

1. जानकार ।

॥ शब्द दूसरा ॥

अब मैं कौन कुमति उरझानी । देश पराया भई हूं बिगानी[1] ॥1॥
अब की बार मोहिं लेओ सुधारी । मैं चरनन पर निस दिन वारी ॥2॥
रहुं पछताय झुरूँ मन अपने । कैसे लगूँ मैं संग पिया अपने ॥3॥
मैं धरती पिया बसें अकासा । बिन पाये पिया रहूं उदासा ॥4॥
हे सतगुरु सुनो मेरी टेरा । काल चक्र अब मारो घेरा ॥5॥
दीन दुखी होय करत पुकारी । सुन स्वामी यह बिनती हमारी ॥6॥
तुम दयाल सब को देओ दाना । मैंही अभागिन भई दुख खाना ॥7॥
क्या कहुं मैं अब अपनी पीर की । जस कोइ छेदत भाल तीर की ॥8॥
तब स्वामी ने दियो दिलासा । प्रेम पंख ले उड़ो अकासा ॥9॥
दया हुई अब मिली पिया से । हरी पीर दुख दूर जिया से ॥10॥

॥ शब्द तीसरा ॥

करत हूं पुकार, आज सुनिये गुहार[2],
मैं दीन हूं अधीन, तुम दाता दयार हो ॥1॥
अब करिये सम्हार, मेरी नाव है मँझधार,
मैं दुखिया अति भार, तुम खेवट अगार[3] हो ॥2॥
दूत और दुष्ट मोहिं, घेर लिया वार, दुख देत हैं अपार,
भय दिखावत जमद्वार, तुम रक्षक हुशियार हो ॥3॥
लेना अब ख़बर मोर, मैं तो हूं सरन तोर,
काल किया बहुत ज़ोर
धूम धाम करत शोर, तुम सूरन प्रधान हो ॥4॥
मेरी बुद्धि है मलीन, मन सुरत है अलीन[4],
बल पौरुष सब छीन, तुम सतगुरु प्रबीन[5] हो ॥5॥
मोहिं दीजे इक दान, मैं माँगत हूं निदान,

---

1. परदेसिन, पराई । 2. पुकार । 3. सब से भारी । 4. अपवित्र । 5. जानकार ।

सुर्त शब्द का निशान, तुम समरथ सुजान हो ।।6।।
विरह नाहिं, प्रेम नाहिं, भक्ति भाव चाव[1] नाहिं,
सरधा परतीत नाहिं,
काम क्रोध लोभ माहिं, कैसे करोगे निर्वाह हो ।।7।।
रोग सोग नित सतायँ, भजन सुमिरन बनत नाहिं,
भोग बास घटत नाहिं, चिंता डर अधिक दाहिं[2]
और कोई सुनत नाहिं, तुम ही मेरे बैद हो ।।8।।
संतन बिन कोइ नाहिं, सतगुरु बिन ठीक[3] नाहिं,
करम भरम नीक नाहिं,
शब्द बिना सीख नाहिं, यही भीख दीजिये ।।9।।
सुरत को चढ़ाओ आज, शब्द का दिखाओ साज,
सहसकँवल जाय भाज, देखे व्हाँ का समाज,
मन को तब होय लाज, यही काज कीजिये ।।10।।
बंक परे त्रिकुट घाट, खुले फिर सुन्न बाट,
महासुन्न खोल पाट, भवँरगुफा बाँध ठाट,
सत्तशब्द पाय चाट, सतपुर पहुंचाइये ।।11।।
जहँ से परे अलख देख, लोक एक अगम पेख,
राधास्वामी पद अलेख, पंडित न जाने भेख,
क़ाजी न मुल्ला शेख, संत बिन न जाइये ।।12।।
एक कहूं सीख मान, मन की तू छोड़ ठान[4],
गुरु की गति अगम जान, शब्द भेद ले पहिचान,
तेरी बुद्धि है अजान, काम क्रोध त्यागिये ।।13।।
सतसंग की क़दर जान, नर शरीर दुर्लभ मान,
नाम रस करो पान, गुरु स्वरूप धरो ध्यान,
इन्द्री मन करो आन, पर्ख पर्ख चालिये ।।14।।

---

1. शौक़ । 2. जलाने वाले । 3. ठिकाना । 4. हठ, ज़िद ।

मित्र तेरा कोई नाहिं, कुल कुटुंब लूट खाहिं,
जोबन धन साथ नाहिं, जक्त भर्म फाँस माहिं,
काल कर्म खोस खाहिं, खान चार जाईये ।।15।।

जन्म जन्म नर्क बास, जम दिखावे अधिक त्रास,
तड़पे तू स्वाँस स्वाँस, पुजवे[1] न कहीं आस,
पावे न सुख निवास, कष्ट बहु भोगाइये ।।16।।

जक्त भोग छोड़ चाह, सब से तू हो अचाह,
संतन को खोज जाय, सतगुरु की सरन आय,
बचन उनके मन समाय, बंद से छुड़ाइये ।।17।।

गुरु का तू बचन पाल, मन की मति तुर्त टाल,
बुद्धि के सांचे ढाल, मनमुख का संग जाल,
गुरुमुख की यही चाल, काल हाल जारिये ।।18।।

सूरत नैना सम्हाल, तिल आकाश फाड़ डाल,
निरखो जोती जमाल, द्वारे धस बंकनाल,
अनहद पर धरो ख़्याल, गगन में चढ़ाइये ।।19।।

सुन्न शिखर चन्द्र देख, दसम द्वार सेत पेख,
सरवर में मुक्ति लेख[2], किंगरी धुन सुन बिशेष,
कर्म की मिटाओ रेख, हंस रूप धारिये ।।20।।

महासुन्न अंध घोर, घाट अगम सुगम तोड़,
सूरत जहँ कीन पोढ़, सतगुरु संग चली दौड़,
भँबरगुफा सुना शोर, सोहँग में समाइये ।।21।।

आगे की गली लीन्ह, धुन अनन्त शब्द चीन्ह,
हंस मिले अति प्रवीन, प्रेम भाव बहुत कीन्ह,
सत्तलोक द्वार लीन्ह, बीन धुन बजाइये ।।22।।

---

1. पूरी हो। 2. पहिचान।

वहाँ से फिर चली पार, अलख लोक जा निहार,
अलख पुरुष धुन सम्हार, देखा अचरज उजार,
किया जाय धुन अधार, अलख दर्श पाइये ।।23।।

अगम लोक ख़बर पाय, ऊपर को चढ़ी धाय,
अगम पुरुष दर्श पाय, तेज पुँज[1] अजब जाय,
अमी सिंध पहुंची आय, अगम रूप धारिये ।।24।।

यहाँ से भी चली सुर्त, किया जाय वहाँ निर्त,
जस समुद्र नदी रलत, चरनन पर सीस धरत,
राधास्वामी संग मिलत, निज घर अपना पाइये ।।25।।

कहूं कहा बहुत कही, यही बात है सही,
जन्म जन्म भूल रही, चरन धूर धार लई,
करम भरम सभी बही, राधास्वामी गाइये ।।26।।

लाओ अब प्रेम प्रीत, सतसंग में धारो चीत,
पाओ फिर सत्त रीत, गाओ यह अगम गीत,
बाज़ी यह लेव जीत, जग में कोइ नाहिं मीत,
मेरी तू कर प्रतीत, दिया सब बुझाइये ।।27।।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु गहो आज मेरी बहियाँ[2] । मैं बसूँ तुम्हारी छइयाँ ।।1।।
कलमल सब मेरे दहियाँ[3] । मैं छोड़ी मन परछइयाँ[4] ।।2।।
फिर चलूं तुम्हारी रहियाँ[4] । तुम बिन मेरा कोइ न गुसइयाँ ।।3।।
उजड़ा घर तुमहिं बसइयाँ । दुख जन्म जन्म मैं सहियाँ ।।4।।

---

1. भंडार । 2. भुजा । 3. जला दिया । 4. परछाई । 5. मार्ग, रास्ता ।

अब करूँ सोई तुम कहियाँ । मेटो जग भूल भुलइयाँ ।।5।।
कर्मन से खूंट[1] छुड़इयाँ । शब्दा रस सार पिलइयाँ ।।6।।
मैं दुख सुख बहुतक सहियाँ । कुल लाज तजी नहिं जइयाँ ।।7।।
इन्द्री बस आन पड़इयाँ । भोगन में बहुत फँसइयाँ ।।8।।
ऐसी कोइ कहन न कहियाँ । जैसी तुम बात सुनइयाँ ।।9।।
गगना में सुरत चढ़इयाँ । मन माया दोऊ पचइयाँ[2] ।।10।।
सतपुरुष भेद बतलइयाँ । फिर अलख अगम दरसइयाँ ।।11।।
नइया मेरी पार लगइयाँ । फिर अलख अगम दरसइयाँ ।।12।।
राधास्वामी चरन समइयाँ । छिन छिन में लेउँ बलैयाँ[3] ।।13।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

मौत डर छिन छिन व्यापे आई । काल भय पल पल मोहिं सताई ।।1।।
सुरत मन बहुत चढ़ाऊँ भाई । गगन में टिके न छिन इक जाई ।।2।।
कहो कस काटूँ बड़ी बलाई[4] । गुरु मोहिं कहें नित्त समझाई ।।3।।
सुरत मन नेक नहीं ठहराई । करूँ क्या कैसे पाऊँ राही ।।4।।
गुरु से यह फ़र्याद सुनाई । शब्द में कभी न जाय समाई ।।5।।
भरोसा दम का है नहिं भाई । मर्म मैं अब तक कुछ नहिं पाई ।।6।।
करूँ क्या चले न कोई उपाई । सरन गुरु गहूं यही ठहराई ।।7।।
प्रीत का घाटा बहुत दिखाई । सरन भी मो से गही न जाई ।।8।।
दोऊ में एक न अब बन आई । मरूँ क्या अब मैं माहुर[5] खाई ।।9।।
गुरु तब बचन सुनाया सार । मरे मत बौरी[6] धीरज धार ।।10।।
नाम रट मन से बारम्बार । रूप गुरु धारो हिये मँझार ।।11।।
करो तुम नित प्रति यह करतूत । टलें तब तेरे घट के दूत ।।12।।
जुगत से बस[7] कर मन का भूत । लगे तब धुन से तेरी सूत ।।13।।
तजो मत नित कर यह अभ्यास । गुरु का संग कर रह कर पास ।।14।।

---

1. पल्ला । 2. थक गये । 3. वार दूँ । 4. आफ़त, बला । 5. विष, ज़हर । 6. पागल । 7. वश में करो ।

मिटे जब जग की तेरी आस । लगे तब घट में करन बिलास ।।15।।
भोग सब त्यागो होहु निरास । सुरत तब पावे गगन निवास ।।16।।
शब्द रस पीवे स्वाँसी स्वाँस । महल में जावे पावे बास ।।17।।
मौज को ताको कर विशवास । नहीं कुछ जतन नहीं परियास[1] ।।18।।
होहु अब राधास्वामी दास । करें वह पूरन इक दिन आस ।।19।।

।। शब्द छठा ।।

नाम दान अब सतगुरु दीजे । काल सतावे स्वाँसा छीजे[2] ।।1।।
दुख पावत मैं निस दिन भारी । गही आय अब ओट तुम्हारी ।।2।।
तुम समान कोइ और न दाता । मैं बालक तुम पिता और माता ।।3।।
मो को दुखी आप कस देखो । यह अचरज मोहिं होत परेखो[3] ।।4।।
मैं हूं पापी अधम विकारी । भूला चूका छिन छिन भारी ।।5।।
अवगुन अपने कहँ लग वरनूँ । मेरी बुधि समझे नहिं मरमूं ।।6।।
तुम्हरी गति मति नेक न जानूं । अपनी मति अनुसार बखानूं ।।7।।
तुम समरथ और अंतरजामी । क्या क्या कहूं मैं सतगुरु स्वामी ।।8।।
मौज करो दुख अंतर हरो । दया दृष्टि अब मो पै धरो ।।9।।
माँगूं नाम न माँगूँ मान । जस जानो तस देओ मोहिं दान ।।10।।
मैं अति दीन भिखारी भूखा । प्रेम भाव नहिं सब विधि रूखा ।।11।।
कैसे दोगे नाम अमोला । मैं अपने को बहु विधि तोला ।।12।।
होय निरास सबर कर बैठा । पर मन धीरज धरे न नेका ।।13।।
शायद कभी मेहर हो जावे । तो कहूं नाम नैक मिल जावे ।।14।।
बिना मेहर कोइ जतन न सूझे । बख़शिश होय तभी कुछ बूझे ।।15।।
किनका नाम करे मेरा काज । हे सतगुरु मेरी तुमको लाज ।।16।।
अब तो मन कर चुका पुकार । राधास्वामी करो उधार ।।17।।

---

1. परिश्रमी, मेहनत । 2. घटती है । 3. विचार करने से ।

॥ शब्द सातवाँ ॥

नाम रस पीवो गुरु की दात । शब्द संग भींजो मन कर हाथ ॥1॥
चरन गुरु पकड़ो तन मन साथ । मान मद मारो आवे शांत ॥2॥
परख कर समझो गुरु की बात । निरख कर चलियो माया घात ॥3॥
जगत सब डूबा भौजल जात । नाम बिन छुटे न जम का नात[1] ॥4॥
घाट घट उलटो दिन और रात । मोह की बाज़ी होगी मात ॥5॥
सुरत से करो शब्द विख्यात[2] । गगन चढ़ देखो जा साक्षात[3] ॥6॥
मिटे फिर मन की सब उत्पात[4] । राधास्वामी परखी और परखात ॥7॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

गुरु करो मेहर की दृष्टि दास पल पल दुख पावत ।
मैं आरत करूँ बनाय रोग सब ही घट जावत ॥1॥
निज औगुण देखूं आय मनहिं मन में पछतावत ।
क्यों कर करूँ पुकार काल अब बहु भरमावत ॥2॥
काम क्रोध अति ज़ो जीव इन में झख मारत[5] ।
राधास्वामी लेओ बचाय रहूं मैं अति घबरावत ॥3॥
सुनिये दीनदयाल तुम्हें मैं टेर[9] सुनावत ।
तुम को समरथ जान, कहूं यह दर्द बुझावत ॥4॥
खोलो प्रेम दुआर, नहीं मोहिं कर्म बहावत ।
शब्द माहिं दृढ़ करो, रहूं छिन छिन गुन गावत ॥5॥
रसिक[7] रहूं धुन माहिं, और कछु नाहिं सुहावत ।
दुख पाये मैं बहुत, नीच मन कहा मनावत ॥6॥
कैसे करूँ पुकार, शब्द में नहीं लगावत ।
आज बने तो बने, बहुरि यह दांव न पावत ॥7॥

---

1. बन्धन, रिश्ता । 2. परख । 3. प्रत्यक्ष । 4. उपद्रव । 5. अबस रहता है । 6. पुकार । 7. रसीला ।

मैं हूं दीन अधीन, ईर्षा, बहुत जरावत।
मेटो कलह[1] अपार, काहे को नित्त बढ़ावत।।8।।
तुमहीं करो सहाय, मोर कुछ नहिं बसावत[2]।
डरत रहूं दिन रात, काल से जान छिपावत।।9।।
मैं नित करूँ पुकार, ख़्याल तुम क्यों नहिं लावत।
मर्म न जानूँ नेक, मौज तुम कहा करावत।।10।।
कहँ लग कहूँ जनाय, नेक मन बस नहिं आवत।
सदा रही तुम साथ, तौऊ तुम क्यों न बचावत।।11।।
अचरज भारी होत, समझ में नेक न आवत।
गुरु बिन रक्षक नाहिं, कहें सब यही कहावत।।12।।
कौन कर्म मैं किये, नित्त यह भुगतूं आफ़त।
हार पड़ी अब द्वार, बहुरि मैं तुमहिं मनावत।।13।।
जस तस दीजै दान, और कोई चित न समावत।
राधास्वामी नाम, पहर आठों अब गावत।।14।।

।। शब्द नावाँ ।।

सतगुरु मेरी सुनो पुकार। मैं टेरत[3] बारम्बार।।1।।
दुरमत मेरी दूर निकारो। मुझे करलो चरन अधारो।।2।।
मोहिं भौजल पार उतारो। मेरी पड़ी नाव मँझदारो।।3।।
तुम बिन अब कोइ न सहारो। अपना कर मुझे सम्हारो।।4।।
मैं कपटी कुटिल तुम्हारो। तुम दाता अपर अपारो।।5।।
मैं दीन दुखी अति भारो। जब चाहो तब निस्तारो।।6।।
मैं आरत करूँ तुम्हारी। तन मन धन तुम पर वारी।।7।।
अब मिला सहारा भारी। मैं नीच अजान अनाड़ी।।8।।
घट भेद नाद समझाया। मन बैरी स्वाद न पाया।।9।।

---

1. विघ्न। 2. बस चलता है। 3. प्रार्थना करती हूँ।

दुख सुख में बहु भरमाया । जग मान बड़ाई चाहा ।।10।।
उल्टूं मैं इसको क्यों कर । बिन दया तुम्हारी सतगुरु ।।11।।
अब खैंचो राधास्वामी मन को । मैं विनय सुनाऊं तुमको ।।12।।

।। शब्द दसवाँ ।।

तुम धुर से चल कर आये । अब क्यों ऐसी ढील[1] लगाये ।।1।।
जल्दी से काज सँवारो । तुम दाता देर न धारो ।।2।।
मैं आतुर[2] तुम्हें पुकारूं । चित में कोइ और न धारूं ।।3।।
मेरा जीवन मूर अधारा[3] । जस सीपी स्वाँत निहारा ।।4।।
अब मुक्ता[4] नाम जमाओ । मेरे जी की आस पुराओ ।।5।।
मन सूरत अधर चढ़ाओ । अब के मेरी खेप निबाहो ।।6।।
भौसागर वार न पारा । डूबे सब उसकी धारा ।।7।।
है मिथ्या झूठ पसारा । धोखे को सच सा धारा ।।8।।
सतगुरु बिन धोख न जाई । बिन शब्द सुरत भरमाई ।।9।।
या ते तुम सरना ताकूँ । सोवत मैं क्यों कर जागूँ ।।10।।
बिन मेहर जतन सब थाके । मैं कर कर बहु विधि त्यागे ।।11।।
बल पौरूष मोर न चाले । मैं पड़ी काल जंजाले ।।12।।
बिनती अब करूँ बनाई । तुम सतगुरु करो सहाई ।।13।।
मैं दीन अधीन तुम्हारी । तुम बिन अब कौन सम्हारी ।।14।।
कुछ करो दिलासा मेरी । भरमों की पड़ी अँधेरी ।।15।।
परकाश करो घट भाना । मिटे भर्म तिमिर अज्ञाना ।।16।।
तुम तज अब किस पै जाऊँ । मैं कह कह तुम्हें सुनाऊँ ।।17।।
जब चाहो तब ही देना । तुम बिन मोहिं किससे लेना ।।18।।
मैं द्वारे पड़ी तुम्हारे । धीरज धर रहूं सम्हारे ।।19।।
मन आतुर दुख न सहारे । उठ बारंबार पुकारे ।।20।।

---

1. विलंब, देर । 2. दुखी, घबराई हुई । 3. असली सहारा । 4. मोती ।

मैं सरन दयाल तुम्हारी । कर जल्दी लो निस्तारी ।।21।।
घर तुम्हरे कमी न कोई । कहिं भाग ओछ[1] मेरा होई ।।22।।
यह भी सब तुम्हरे हाथा । तुम चाहो करो सनाथा ।।23।।
अब कहँ लग करूँ पुकारी । मैं हार हार अब हारी ।।24।।
तुम दाता दीन दयाला । राधास्वामी करो निहाला ।।25।।
मैं आरत कीन्ह अधारी । तुम राधास्वामी सब पर भारी ।।26।।

।। शब्द गायारहवाँ ।।

माँगूँ इक गुरु से दाना । घट शब्द देव पहिचाना ।।1।।
मन साथ सदा भरमाना । कर किरपा कर्म छुड़ाना ।।2।।
सुर्त चढ़े सुने धुन ताना । मन मारो कर्म नसाना ।।3।।
सब छूटे बान कुबाना[2] । सत शब्द मिले दृढ़ थाना ।।4।।
अब कर दो नाम दिवाना । मैं ताकूँ शब्द निशाना ।।5।।
कोइ करे न मेरी हाना । मोहिं तुम पर बल बल जाना ।।6।।
कल[3] धारा मुझे न बहाना । मोहिं देना शब्द ठिकाना ।।7।।
मन हो गया बहुत निमाना[4] । अब राधास्वामी चरन समाना ।।8।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

मैं लिखूं गुरु को पाती । मन कीन्ही बहु उतपाती ।।1।।
मेरी धड़के छिन छिन छाती । नहीं धीरज बहु दुख पाती ।।2।।
विरह अगिन मोहिं नित्त जलाती । मैं पल पल गुरु गुन गाती ।।3।।
मेरे दर्द उठा बहु भाँति । मैं किस को वर्ण सुनाती ।।4।।
अब छोड़ी कुल और ज़ाती । गुरु चरन सुरत मेरी राती[5] ।।5।।
मैं रहूं लगन बिच माती[6] । अब सुरत गगन को जाती ।।6।।
व्हाँ शब्द अमीरस खाती । गुरु प्रेम हिये में लाती ।।7।।
दर्शन बिन होय न शान्ती । उलटी फिर तन में आती ।।8।।

---

1. छोटा । 2. बुरी आदत । 3. काल की । 4. दीन अधीन । 5. रत हुई, हर्षित, महव, मसत । 6. मतवाली ।

कोई सुने ना मेरी बाती । मैं रहूं सदा घबराती ।।9।।
मैं रोती दिन और राती । मन मारे बहु विधि लाती ।।10।।
गुरु करो दया की दाती । तौ टले काल की घाती ।।11।।
मन आवे मेरे हाथी । तौ मारे सिंह[1] को हाथी[2] ।।12।।
मेरे लगी प्रेम की काती[3] । हिरदे में धीर न लाती ।।13।।
अब हर दम उमंग जगाती । मैं देखूँ गुरु कराँती[4] ।।14।।
मारूँ अब माया ताती[5] । गुरु मूरत चित में ध्याती ।।15।।
अब छूटी सकल भ्रांती[6] । मैं पाई नाम दराँती[7] ।।16।।
अब काटूँ कर्म सनाती[8] । गुरु बिन क्यों और मनाती ।।17।।
गुरु को सब भेद जनाती । मैं पाये दुख बहु भाँती ।।18।।
कस मानसरोवर न्हाती । मैं उलटी धार बहाती ।।19।।
जुग बँधे जो गुरु के साथी । तौ मर्म सभी दरसाती ।।20।।
गुरु चरन सदा परसाती । मैं सुरत पतंग उड़ाती ।।21।।
मन चादर नाम रँगाती । घट भीतर नाद बजाती ।।22।।
जन्म मरण दुख दूर कराती । ममता में सकल खपाती ।।23।।
राधास्वामी सरन पराती[9] । राधास्वामी दास कहाती ।।24।।

।। शब्द तेहरवाँ ।।

गुरु मोहिं दीजे अपना धाम ।। टेक ।।
मैं तो निकाम भर्म बस रहता । तुम दयाल लो मोको थाम ।।1।।
ना जानूँ क्या पाप कमाये । गहे न सूरत नाम ।।2।।
कैसी करूँ ज़ोर नहिं चाले । मन नहिं पावे दृढ़ विश्राम ।।3।।
हे सतगुरु अब दया विचारो । मैं दुख में रहूं आठों जाम ।।4।।
ना सुर्त चढ़े न मन ठहरावे । शब्द महातम नहिं पतियाम[10] ।।5।।
संत मता ऊँचा सुन पकड़ा । क्यों नहिं संत करे मेरी साम[11] ।।6।।

---

1. काल । 2. मन । 3. कटारी । 4. प्रकाश । 5. अग्नि रूप । 6. भरम । 7. हँसिया, काटने वाला । 8. पुराना । 9. प्राप्त हुई या पड़ी । 10. प्रतीत करती । 11. सहायता ।

संत मते को लज्जा आवे । जो मेरा नहिं पूरन काम ।।7।।
अपनी मति ले करूँ पुकारा । मौज तुम्हारी मैं नहिं जाम[1] ।।8।।
बार बार मैं विनय पुकारूँ । जस जानो तस देओ निज नाम ।।9।।
राधास्वामी कहें निज नामी । दर्दी को चहिये आराम ।।10।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

सुरत मेरी धोय डालो । नहिं मरिहों रोय ।।1।।
कर्म मेरे खोय डालो । मैं सरना तोय[2] ।।2।।
भर्म मेरे सब टारो । मैं दासी तोय ।।3।।
मर्म अब दे डारो । तुम सतगुरु मोय[3] ।।4।।
काल को धर मारो । तुम सूरा होय ।।5।।
प्रण को धर धारो । नहिं हरकत[4] होय ।।6।।
श्रम[5] यह कर डालो । जो बख़्शिश होय ।।7।।
मोह को ले डारो । तुम सम्रथ सोय ।।8।।
जाल से अब काढ़ो । लगी फाँसी मोय ।।9।।
राधास्वामी गुरु न्यारो । अस लखा न कोय ।।10।।

।। शब्द पंद्रहवाँ ।।

गुरु मोहिं अपना रूप दिखाओ ।। टेक ।।
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण । जीव उबार कराओ ।।1।।
रूप तुम्हारा अगम अपारा । सोई अब दरसाओ ।।2।।
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ । अभय दान दिलवाओ ।।3।।
यह भी रूप पियारा मो को । इस ही से उसको समझाओ ।।4।।
बिन इस रूप काज नहिं होई । क्यों कर वाही लखाओ ।।5।।
ता ते महिमा भारी इसकी । पर वह भी लखवाओ ।।6।।
वह तो रूप सदा तुम धारो । या ते जीव जगाओ ।।7।।
यह भी भेद सुना मैं तुम से । सुरत शब्द मारग नित गाओ ।।8।।

---

1. जानती । 2. तुम्हारी । 3. मेरे । 4. नुक़सान । 5. श्रम, कोशिश ।

शब्द रूप जो रूप तुम्हारा । वा में भी अब सुरत पठाओ ।।9।।
डरता रहूं मौत और दुख से । निर्भय कर अब मोहिं छुड़ाओ 10।।
दीनदयाल जीव हितकारी । राधास्वामी काज बनाओ ।।11।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

देख प्यारे मैं समझाऊँ । रूप हमारा न्यारा ।।1।।
वह तो रूप लखे नहिं कोई । जब लग देउँ न सहारा ।।2।।
करनी करो मार मन डालो । इन्द्री रोक दुआरा ।।3।।
सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ । सुन्न शिखर के पारा ।।4।।
सत्त पुरुष का रूप दिखाऊँ । अलख अगम दर सारा ।।5।।
ता के आगे राधास्वामी । वह निज रूप हमारा ।।6।।
धीरज धरो करो सतसंगत । मेहर दया से लेउँ सुधारा ।।7।।
वह तो रूप दिखा कर छोड़ूँ । तुम जल्दी क्यों करो पुकारा ।।8।।
तुम्हरी चिंता मैं मन धारी । तुम अचिंत रह धरो पियारा ।।9।।
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती । और परतीत सँवारा ।।10।।
यह करनी मैं आप कराऊँ । और पहुचाऊँ धुर दरबारा ।।11।।
राधास्वामी कहत सुनाई । जब जब जैसी मौज विचारा ।।12।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

सुरत की आज लगा दे तारी । गगन चढ़ पीऊँ अमृत धारी ।।1।।
शब्द धुन उठती क़रारी[1] । नाम सुन तन मन लिया पखारी[2] ।।
गुरु का रूप निहार निहारी । मैं किंकर अधम अनाड़ी[3] ।।3।।
तुम सतगुरु पतित उधारी । तुम्हरी गति तुमहिं विचारी ।।4।।
मैं छिन छिन पल पल विषय अहारी । तुम किरपा अमृत धार बहा री 5।।
अब लीजै मोहिं निस्तारी । घट दीजै नाम सम्हारी ।।6।।
मैं भूला भूल फँसारी । तुम काढ़ो मोहिं निकारी ।।7।।
मैं दास दासन पनिहारी । तुम चरन जाऊँ बलिहारी ।।8।।

---

1. तेज़ । 2. धोया । 3. मूढ़ ।

अब मारग देव उघाड़ी[1] । मेंरा मन करो शांत सुखारी ।।9।।
मेरा कोई नहिं अपना री । मेरे तुम हो मैं भी तुम्हारी ।।10।।
क्या क्या कहूं बर्ण सुना री । मन जैसे नाच नचा री ।।11।।
इन्द्री मोहिं नित्त सता री । भोगन की चाह बढ़ा री ।।12।।
रोगन में सदा गिरसा[2] री । भव कूप पड़ा गहरा री ।।13।।
कस निकसूँ कौन उबारी । सुर्त हुई न शब्द पियारी ।।14।।
बिन शब्द बहुत भरमा री । जल पत्थर जगत पुजारी ।।15।।
इन भर्मन रहा भरमा री । तुम मिल अब कीन सुधारी ।।16।।
राधास्वामी चरन दुलारी । अब नाम देवो कर न्यारी ।।17।।

।। शब्द अट्ठारहवाँ ।।

घट का पट खोल दिखाओ ।। टेक ।।
यह मन जूझ जूझ कर हारा । लगे न एक उपाओ ।।1।।
तुम समरत्थ कहा नहिं तुम्हरे । क्यों एती देर लगाओ ।।2।।
मैं दुख सुख में खाऊँ झकोले[3] । क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ ।।3।।
अब ही दया करो मेरे दाता । मन और सूरत गगन चढ़ाओ ।।4।।
मन तो दुष्ट विरह नहिं लावे । प्रेम प्रीत का दान दिवाओ ।।5।।
यह तो सुख झूठे ही चाहे । सच्चे की परतीत न लाओ ।।6।।
भोग बिलास जगत के माँगे । सुरत शब्द का रस नहिं पाओ ।।7।।
क्योंकर कहुं किस विधि समझाऊँ । गुरु का बचन न रिदे[4] समाओ ।।8।।
इस मन की कुछ घढ़त अनोखी । शब्द माहिं कुछ प्रेम न भाओ ।।9।।
कैसे बचे पचे चौरासी । यह नहिं चढ़ता गुरु की नाओ ।।10।।
संसारी के धक्के खावे । फिर जमपुर में पिटता जाओ ।।11।।
ऐसे दुक्ख सहेगा बहुतक । अब नहिं माने गया भुलाओ ।।12।।
सब घट में गुरु तुमहीं प्रेरक । मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ ।।13।।

---

1. खोल। 2. फंसा। 3. झटका। 4. हृदय।

तुम बिन और न कोई मेरा । चार लोक में तुमहिं दिखाओ ।।14।।
अब तो दया करो राधास्वामी । जैसे बने तैसे घाट चढ़ाओ ।।15।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

सतगुरु से करूँ पुकारी । संतन मत कीजे जारी ।।1।।
जीवन का होय उधारी । मैं देखूं यही बहारी ।।2।।
मैं मौज करूँ फिर भारी । सब आरत करें तुम्हारी ।।3।।
मैं हरखूँ खेल निहारी । मानो यह अर्ज़ हमारी ।।4।।
मैं राखूं पक्ष तुम्हारी । अब कीजे दया विचारी ।।5।।
मैं बालक सरन अधारी । मैं करूँ बीनती भारी ।।6।।
जो मौज न हो यह न्यारी । तो फेरो सुरत हमारी ।।7।।
घट भीतर होय क़रारी[1] । शब्दारस करे अहारी ।।8।।
दोउ में से एक सुधारी । जो दोनों करो दया री ।।9।।
मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी । मैं राधास्वामी गोद पड़ा री ।।10।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

लगाओ मेरी नइया सतगुरु पार । मैं बही जात जग धार ।।1।।
तुम बिन नाहीं को कढ़ियार[2] । लगादो डूबी खेप किनार ।।2।।
सहेली मत तू मन में हार । दिखाऊँ जग का वार और पार ।।3।।
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार । शब्द संग खेय उतारूँ पार ।।4।।
गुरु को धर ले हिये मँझार । नाम धुन घट में सुन झनकार ।।5।।
तरंगें उठतीं बारम्बार । भँवर जहँ पड़ते बहुत अपार ।।6।।
मेहर से पहुंची दसवें द्वार । राधास्वामी दीन्हा पार उतार ।।7।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

दर्शन की प्यास घनेरी[3] । चित तपन समाई ।।1।।
जग भोग रोग सम दीखें । सतसंग में सुरत लगाई ।।2।।

---

1. स्थिर । 2. निकालने वाला । 3. भारी ।

गति अगम तुम्हारी समझी । पर दरस बिन तिरपत नहिं आई ।।3।।
गुरुमुखता बन नहिं पड़ती । फिर कैसे प्रत्यक्ष पाई ।।4।।
तुम गुप्त रहो जीवन से । संग सब के दूर न भाई ।।5।।
बिन किरपा सतगुरु पूरे । निज रूप न तुम दिखलाई ।।6।।
अब तरसूँ तड़पूँ बहु विधि । तुम निकट न होत रसाई[1] ।।7।।
हो समरथ दाता सब के । मुझ को भी खैंच बुलाई ।।8।।
मैं कैसे देखूँ तुम को । कोई जतन न अब बन आई ।।9।।
घट का पट खोलो प्यारे । यह बात न कुछ कठिनाई ।।10।।
तुम चाहो तो छिन में कर दो । नहिं जन्म जन्म भटकाई ।।11।।
अब दरस दिखादो जल्दी । मैं रहूं नित्त मुरझाई ।।12।।
अब दया विचारो ऐसी । मैं रहूं चरन लौ लाई ।।13।।
तुम बिन कोई और न जानूं । तुमहीं से रहुं लिपटाई ।।14।।
यह आरत अद्भुत गाई । सूरत मेरी शब्द समाई ।।15।।
राधास्वामी कहत सुनाई । मैं दासन दास कहाई ।।16।।

।। शब्द बाईसवाँ ।।

सोचत रही री बेचैन, रैन दिन बहु पछतानी ।
मेरी लगी न प्रीत संग शबद, कहन मेरी सभी कहानी ।।1।।
झुरत रहूं मन माहिं, कौन से करूँ बखानी ।
सुननहार नहिं सुने, कहो मेरी कहा बसानी ।।2।।
मौज बिना क्या होय, मौज की सार न जानी ।
सबर न आवे चित्त, दर्द में रैन बिहानी[2] ।।3।।
दिवस करूँ फ़र्याद, गुरु मेरे अन्तरजामी ।
अपनी चूक विचार, रहूं मैं अति घबरानी ।।4।।
दीना नाथ दयाल, सुनो जल्दी मेरी बानी ।

---

1. पहुँच । 2. बीती ।

चरन पकड़ हठ करूँ, मेहर कर देवो दानी ।।5।।
मैं तो अजान अभाग, कुटिल मोहिं सब जग जानी ।
जो अपना कर लिया, लाज अब तुम्हें समानी ।।6।।
राधास्वामी कह रहे, यह अचरज बानी ।
सौदा पूरा मिले, होय नहिं तेरी हानी ।।7।।

।। शब्द तेईसवाँ ।।

धीरज धरो बचन गुरु गहो । अमृत पियो गगन चढ़ रहो ।।1।।
दूर न जानो सतगुरु पास । निस दिन करो चरन विश्वास ।।2।।
सागर मेहर दया की मौज । राधास्वामी दीन्ही अचरज चोज[1] ।3।।
खेल खिलावें बाल समान । देखे मात हरख मन आन ।।4।।
रक्षक शब्द जान और प्रान । सो पहलू छोड़े न निदान ।।5।।
मन की घढ़त करावें दम दम । वह हैं मित्र वही हैं हमदम[2] ।।6।।
भूल चूक बख़्शें[3] वह छिन छिन । संग रहें इसके वह निस दिन ।।7।।
यह मन कच्चा बूझ न जाने । उनकी गति कैसे पहिचाने ।।8।।
जगत जाल में रहा भुलाई । सुरत शब्द में नहीं जमाई ।।9।।
या से सोग वियोग सतावे । मन का घाट हाथ नहिं आवें ।।10।।
गुरु कुंजी जो बिसरे नाहीं । घट ताला छिन में खुल जाई ।।11।।
खुले घाट तब सुन्न में देखे । धुन की ख़बर रूप निज पेखे ।।12।।
चढ़े अधर जब नाम समावे । रस पावे सूरत घर आवें ।।13।।
रतन खान घट में जब खुले । दुक्ख दर्द और दुर्मत टले ।।14।।
मौज निहारो सबर सम्हारो । भर्म अँधेरा कौतुक[4] टारो ।।15।।
अमल अचल पकड़ो गुरु चरना । सुक्ख पिरापत दुख सब हरना ।।16।।
यह संसार अगिन भंडार । सीतल जल सतगुरु आधार ।।17।।
बड़े भाग जिन सतगुरु पाये । चौरासी से तुरत हटाये ।।18।।

---

1. ख़ूबसूरती, बिलास । 2. गहरे साथी । 3. क्षमा करें । 4. खेल ।

दुक्ख सुक्ख जो व्यापत होई । पिछले कर्म भोग हैं सोई ।।19।।
कोइ दिन सोग रोग हट जावें । देर नहिं जल्दी भुगतावें ।।20।।

दोहा

राधास्वामी रक्षक जीव के, जीव न जाने भेद।
गुरु चरित्र[1] जाने नहीं, रहे कर्म के खेद[2] ।।21।।
खेद मिटे गुरु दर्श से, और न कोई उपाय।
सो दर्शन जल्दी मिलें, बहुत कहा मैं गाय ।।22।।

।। दो कड़िया छन्द ।।

धीरज धरना, मत घबराना, चित ठहराना,
रूप समाना, नित गुन गाना, नहीं बहाना,
यही निशाना, ज्यों पपिहा स्वाँती आस ।।23।।
घट में रहना, कहीं न बहना, मन में सहना,
रस ही लेना, धीरज गहना, मर्म न कहना,
ज्यों जल मीना, राधास्वामी पास ।।24।।

आगे दया मेहर सतगुरु की । वहीं दरसावें वह अब धुर की ।।25।।
राधास्वामी बचन सुनाया । जीवन की हठ से लिखवाया ।।26।।

दोहा

सुरत बसाओ शब्द में, शब्द गगन के माहिं।
विरह बसाओ हिये में, हिया तिरकुटी माहिं ।।1।।
सुरत शब्द इक अंग कर, देखो बिमल बहार।
मध्य सुखमना तिल बसे, तिल में जोत अकार ।।2।।
शब्द स्वरूपी संग हैं, कभी न होते दूर।
धीरज रखियो चित्त में, दीखेगा सत नूर ।।3।।
सत्तनाम सतपुरुष का, सत्तलोक में पूर।

---

1. लीला। 2. दुख।

सुरत चढ़ाओ शब्द में, दर्शन हाल हुज़ूर ।।4।।
प्रेम प्रीत राचे रहो, कुमति कुटिल से दूर।
मन सूरत से जूझ कर, रहो शब्द में सूर ।।5।।

।। बचन चौंतीसवाँ ।।

प्राप्ति मेहर और दया सतगुरु की और पहुँचना सुरत का चढ़ कर स्थानों पर और वर्णन महिमा शब्द और सतगुरु की और भेद और लीला स्थानों की

।। शब्द पहला ।।

जीव चितावन आये राधास्वामी । बार बार तिन करूं प्रनामी ।।1।।
आरत उनकी करूँ सजाई । चित्त शुद्ध कर थाल बनाई ।।2।।
अब जीवों को चहिए ऐसा । चल कर अर्पें तन मन सीसा ।।3।।
जोत जगावें प्रथम विरह की । बाती जोड़ें बिर्त[1] लगन की ।।4।।
जब आरत अस लई सँजोई[2] । सतगुरु दया दृष्टि कर जोई[3] ।।5।।
दीन्हा दीन जान उपदेशा । सुरत शब्द में करो प्रवेशा ।।6।।
खोलो जाकर गगन किवाड़ी । श्याम कंज तब लागी ताड़ी ।।7।।
सेत कँवल फिर मन ठहराना । प्रगटी जोत सुन्न में जाना ।।8।।
सेत श्याम दल दोनों छोड़े । तीसर दल में मन को जोड़े ।।9।।
बंकनाल का द्वारा सोई । तन की सुद्धि वहाँ गइ खोई ।।10।।
मन और सुरत चेत कर जागी । त्रिकुटी शब्द गुरु में लागी ।।11।।
अब पाया विश्राम ठिकाना । आरत पूरन करी बखाना ।।12।।
इतना धाम सुरत ने पाया । राधास्वामी चरन समाया ।।13।।

।। शब्द दूसरा ।।

आज काज मेरे कीन्हें पूरे । बाजे घट में अनहद तूरे ।।1।।

---

1. धारा। 2. तैयार की। 3. देखा।

भाग उदय आज हुये हमारे । राधास्वामी चरन सीस पर धारे ।।2।।
बिमल आरती अब मैं गाऊँ । परस चरन और बल बल जाऊँ ।।3।।
कोटि जन्म से धोखा खाया । बिन स्वामी जोनी भरमाया ।।4।।
दाव पड़ा मेरा अब के ऐसा । राधास्वामी चरन आय मैं परसा ।।5।।
अब पाया मैंने अजर विलासा । क्या कहूं महिमा अधिक हुलासा ।।6।।
रोम रोम रग रग मेरी बोली । राधास्वामी राधास्वामी घुँडी[1] खोली ।।
रंग रंगी मेरे तन की चोली[2] । सुन सुन धुन अब भइ हुं अमोली ।।8।।
घूम चली अब गगन मँझारा । सुन्न शिखर का झाँका द्वारा ।।9।।
मानसरोवर किये अश्नाना । सत्तनाम सूँ[3] लागा ध्याना ।।10।।
महासुन्न घाटी चढ़ भागी । सत्तपुरुष के चरनन लागी ।।11।।
हंसन साथ करूँ अब आरत । प्रेम मगन होय दुक्ख बहावत ।।12।।
अमी अहार किया मैं भारी । छिन छिन दर्शन पुरुष निहारी ।।13।।
शोभा बरनी न जाय अपारी । आरत पूरन हो गइ सारी ।।14।।
धन धन धन धन क्या कहूं महिमा । राधास्वामी राधास्वामी पलपल कहना ।।

।। शब्द तीसरा ।।

भइ है सुरत मेरी आज सुहागिन । लगी है सुरत मेरी छिन छिन जागन ।।
स्वामी स्वामी लगी है पुकारन । राधा राधा नाम सम्हारन ।।2।।
गगन मँडल अब लागा गर्जन । भाग गये मेरे घट से दुर्जन ।।3।।
तन मन मैंने कीन्हा अर्पन । लगी सुरत अब सतगुरु चरनन ।।4।।
नाम थाल और बाती सुमिरन । जुक्ति जोत बाली मैं निज तन ।।5।।
आरत फेर चढ़ाया निज मन । गगन जाय सुनता अनहद धुन ।।6।।
संत कृपा पाया पद पूरन । करम भरम डाले कर चूरन ।।7।।
साफ़ किया मैं मन का दर्पन । ममता माया कीन्ही मर्दन ।।8।।
नूर निरंजन जगत सम्हारन । सहसकँवल चढ़ कीन्हा दर्शन ।।9।।
सुई द्वार नाका लगी झाँकन । पाप अनंत हुये जहं खंडन ।।10।।

---

1. गाँठ । 2. पहनने का कपड़ा । 3. से ।

बंकनाल धस त्रिकुटी धावन । ओंकार धुन करी अब सरवन ।।11।।
सुन्न मँडल धुन पाई रारँग । किंगरी सुनी और बाजी सारँग ।।12।।
चन्द्र चौक जहँ देखा चाँदन । हंसन रूप धरे मन भावन ।।13।।
महासुन्न सागर चली न्हावन । सूरत मिली जाय महा चेतन ।।14।।
भँवरगुफा द्वारा अति पावन[1] । धुन मुरली जहँ बजत सुहावन ।।15।।
हंसन शोभा मन बिगसावन[2] । सुन सुन धुन अति प्रेम बढ़ावन ।।16।।
चौक अगाध साध कर चालन । गइ सतपुर लगी पुरुष मनावन ।।17।।
चौथा लोक त्रिलोकी कारन । संत बसें जिव करें उबारन ।।18।।
अलख लोक इक पुरुष बिराजन । बैठे अचरज धार सिंहासन ।।19।।
तिस आगे फिर अगम निहारन । अगम पुरुष ढिंग शोभा पावन ।।20।।
लगी सुरत निज भेद सुनावन । मिल गये राधास्वामी पतित उधारन ।।
अब अनाम का क्या करूँ छानन[3] । सैन कही यह अकह अपारन ।।22।।
भई आरती अब सम्पूरन । छोड़ दई मैं सभी गुनावन[4] ।।23।।

।। शब्द चौथा ।।

संत दास की आरती, सुनो राधास्वामी ।
मैं अति दीन अधीन हूं, सेवक बिन दामी ।।1।।
जन्म जन्म सरनागती, तुम पुरुष अनामी ।
दया करो अपना करो, मुझे अन्तर जामी ।।2।।
मैं अन-समझ अबूझ हूं, तुम चरन नमामी ।
तुम दाता पद अधर के, मैं दास निकामी[5] ।।3।।
तुम्हरी गति मति को कहे, तुम अगम ठिकानी ।
मुझपर अस किरपा करी, कुछ मिली निशानी ।।4।।
अनहद धुन बाजे बजें, मन होय अकामी ।
सरन गही सतगुरु की, तज लाज लोकानी[6] ।।5।।

---

1. पवित्र । 2. प्रफुल्लित करने वाली । 3. निर्णय । 4. चिन्त । 5. नीच । 6. लोक यानी संसार की ।

त्रिकुटी घाट सूरत चढ़ी, मिला पद निरबानी।
अब आगे का भेद यह, सुन अचरज बानी।। 6 ।।
मानसरोवर घाट, करें हंसा बिसरामी।
धुन किंगरी और साराँगी, तामें सुरत समानी।। 7 ।।
यह पद है निज ब्रह्म का, लक्ष वाच प्रमानी।
पारब्रह्म तिस ऊपरे, महासुन्न पुरानी।। 8 ।।
भँवरगुफा सतलोक को, सब संत बखानी।
दो पद आगे और हैं, सो गुप्त कहानी।। 9 ।।
तापर अगत[1] अगाध हैं, तिस रूप न नामी।
संत बिना नहिं पाइये, यह भेद मुदामी[2] ।।10।।
अब आरत फेरन लगा, धर धीरज थाला।
दृष्टि जोड़ सन्मुख खड़ा, काटा जंजाला।।11।।
विरह जोत जगमग हुई, और काल निकाला।
दया करी राधास्वामी, अगम कर दिया निहाला।।12।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सतगुरु संत मिले राधास्वामी । आरत करने की विधि ठानी।।1।।
अधर थाल और अक्षर जोती । प्रेम सुरत से दृष्टि परोती।।2।।
निरत नाम धुन माला डारूँ । सीतल तिलक केसरी धारूँ।।3।।
बस्तर भाव प्रीत पहिराऊँ । अमी मूर मय[3] भोग धराऊँ।।4।।
तन मन निज मन भेंट चढ़ाऊँ । नौ निधि नौछावर करवाऊँ।।5।।
नओं द्वार पर नीत बिठाऊँ । चित्त जोड़ मुख आरत गाऊँ।।6।।
मैं अति दीन अधम तुम दासा । आरत देखन उपजी आसा।।7।।
दूर देश से आयो अबही । आरत करूँ रिझाऊं गुरु ही।।8।।
मो पर कृपा दृष्टि अब कीजै । दीनबन्धु मोहिं सरना लीजै।।9।।

---

1. जिसकी गति न जानी जाय। 2. अविनाशी। 3. सहित।

भेद तुम्हारा अति कर सारा । सुरत शब्द मारग मैं धारा ।।10।।
पकड़ूं शब्द चढ़ाऊं सूरत । नभ निरखूं और देखू मूरत ।।11।।
सहसकंवल धस घंट बजाऊं । बंकनाल चढ़ शंख सुनाऊं ।।12।।
त्रिकुटी घाट किया जाय फेरा । ओंकार धुन से मन घेरा ।।13।।
मन हुआ लीन सुरत अब चीन्ही । कान पड़ी धुन झीनी झीनी ।।14।।
मानसरोवर पैठ अन्हाई । निर्मल होय निर्मल पद पाई ।।15।।
सुन्न शिखर जाय फेरा दीन्हा । कोट महासुन चढ़ कर लीन्हा ।।16।।
भंवरगुफा सोहं धुन सुनी । सत्तनाम धुन छिन छिन गुनी ।।17।।
सत्तलोक जाय बैठक पाई । सत्त सुरत सत शब्द समाई ।।18।।
अलख अगम के पार अनामी । यह भी पद दरसे मोहिं स्वामी ।।19।।
महिमा सतगुरु कहं लग कहूं । आरत कर अब चुप हो रहूं ।।20।।
देओ प्रशाद रहूं चरनन में । गुन गाऊं पल पल छिन छिन में ।।21।।

।। शब्द छठा ।।

गुरु पै डालूं तन मन वार । गुरु पै जाऊं अब बलिहार ।।1।।
गुरु ने नाम सुनाया सार । गुरु ने दीन्हा भेद अपार ।।2।।
सुरत से सेऊं नाम सम्हार । सहसदल मध्य होत झनकार ।।3।।
दामिनी दमकत नैन निहार । रूप का खुला जहाँ भंडार ।।4।।
छाँट धुन घंटा बारम्बार । और धुन त्यागो सबही झाड़ ।।5।।
शंख धुन पकड़ो उसके पार । बंक का खोलो जाकर द्वार ।।6।।
गहो फिर व्हाँ से धुन ओंकार । गर्ज मिरदंग है तिस लार[1] ।।7।।
ररंग धुन होवत दसवें द्वार । सुनो तुम जाकर अति कर प्यार ।।8।।
मानसर न्हाओ निर्मल धार । हंस हुइ छूटा काग अकार ।।9।।
महासुन पहुंची शोभा धार । शब्द संग कीन्हा जाय विहार ।।10।।
भँवर चढ़ बैठी होय हुशियार । नाम घर आई सुरत सुधार ।।11।।

---

1. साथ ।

अलख लख अगम करा दरबार । मिले फिर राधास्वामी यार ।।12।।

।। शब्द सातवाँ ।।

गुरु मिले अमी रस दाता । मैं अधम विषय मद माता ।।1।।
मैं नीच अजान अनाड़ी । सुर्त कीन्ही शब्द दुलारी ।।2।।
गुरु महिमा छिन छिन गाता । मन निज मन चरन लगाता ।।3।।
घट में नित आरत करता । सुर्त सहसकंवल में धरता ।।4।।
जहं जोत जगाई न्यारी । तिल तोड़ा गगन सिहारी[1] ।।5।।
धुन अनहद शोर मचाई । सुखमन में सुरत जमाई ।।6।।
गढ़ बंका तोड़ा भाई । धुन ओंकार सुन पाई ।।7।।
आगे को निरत बड़ाई । श्यामा तज सेत समाई ।।8।।
चंदा जहँ नूर दिखाई । हंसन की पाँत जुड़ाई ।।9।।
मुक्ता जहँ चुन चुन खाई । आतम निज अक्षर पाई ।।10।।
सतगुरु फिर किरपा धारी । हुइ महासुन्न धस पारी ।।11।।
अनहद धुन मुरली बाजी । ढिंग भँवरगुफा सुर्त गाजी ।।12।।
बल सतगुरु सचखँड आई । यहँ आरत अद्भुत गाई ।।13।।
चढ़ आगे अलख दिखाई । गुरु अगम पुरुष दरसाई ।।14।।
लीला कुछ अचरज कही न जाई । ज्ञानी और जोगी भेद न पाई ।।15।।
सब काल देश में गये भुलाई । द्याल देश यह संत जनाई ।।16।।
राधास्वामी महल अजब मैं पाया । रूप अगाध जाय नहिं गाया ।।17।।

।। शब्द आठवाँ ।।

आज मैं देखूँ घट में तिल को । लगी यह बतियाँ प्यारी दिल को ।।1।।
गुरु अपनाय छिन छिन हमको । मर्म मैं पाया चढ़ कर नभ को ।।2।।
सहसदल चढ़ कर मिली अलख को । जोत लख पाई छोड़ ख़लक[2] को ।।
श्याम तज पहुंची सेत नगर को । चली और निरखा त्रिकुटी घर को ।।4।।

---

1. गई । 2. संसार ।

बहुर चल निरखा सरवर तट को । खोल वह द्वारा फाड़ा पट[1] को ।।5।।
महासुन पा गइ गुप्त समझ को । भँवर चढ़ परखा पुरुष रमज़[2] को ।।6।।
सत्त पद आगे मिला सुरत को । सुनी धुन बीना धार निरत को ।।7।।
अलख लख पहुंची जाय अगम को । मिला अब राधास्वामी धाम अधम को ।।

।। शब्द नवाँ ।।

प्रेमिन दूर देश से आई । चलो सतगुरु की हाट ।।1।।
विरह बिमल अनुराग बढ़ाई । लगो अब सतगुरु घाट ।।2।।
दर्द दिवानी हो मस्तानी । खोलो गगन कपाट ।।3।।
गुरु की महिमा अगम बखानी । समझ समझ मुसक्यात ।।4।।
बचन बान गुरु अधिक चलाये । गया कलेजा फाट ।।5।।
कहँ लग कहूं खोट इस मन की । चले न सतगुरु बाट ।।6।।
अमृत सागर गुरु बतलाया । यह नित विषया[3] खात ।।7।।
शब्द निशानी पूरन बानी । सो गुरु कीन्ही दात ।।8।।
मन बौराना विषय दिवाना । उलटा भरमा जात ।।9।।
कौन सुने अब गुरु बिन मेरी । उन बिन को कर्म काट ।।10।।
सेवा करूँ सरन दृढ़ पकड़ूँ । तौ धरें मेहर का हाथ ।।11।।
चले सुरत फिर शब्द सम्हारे । सुने सुन्न विख्यात[4] ।।12।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आवे । गया दसम दर[5] फाट ।।13।।
महासुन्न से भँवरगुफा तक । सत्तनाम की पाई चाट ।।14।।
अलख अगम का लगा ठिकाना । राधास्वामी निरखा ठाट ।।15।।
आरत करूं प्रेम से पूरी । काल बली की कीन्ही घात ।।16।।

।। शब्द दसवाँ ।।

गुरु के दर्शन करने, हम आये अब दूर से ।
आये अब दूर से, चल आये हम दूर से ।।1।।

---

1. परदा । 2. भेद । 3. जहर । 4. बानी । 5. द्वारा ।

दीन अनाथ भिखारी दर के। हुए मंगता हम धुर घर के।
गुरु मिलावें मूर[1] से।।2।।
और आस विश्वास न कोइ। चरन गुरु के पकड़े सोई।
वही छुड़ावें कूड़[2] से।।3।।
सुरत डोर चरनन में लागी। चित चंचलता सबही भागी।
वही लगावें तूर[3] से।।4।।
अनहद बाजे बजें गगन में। सुरत चढ़ी और लागी धुन में।
दृष्टि मिली अब नूर से।।5।।
कायरता अब मन से भागी। सुरत शब्द में छिन छिन लागी।
डरे काल गुरु सूर से।।6।।
सहसकँवल तज त्रिकुटी आई। सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई।
भेद मिला गुरु पूर से।।7।।
भंवरगुफा का ताला तोड़ा। अमर नगर जा सूरत जोड़ा।
मिल गई सत्त ज़हूर[4] से।।8।।
अलख पुरुष की प्रीत समानी। अगम लोक जा बैठक ठानी।
हुई पावन गुरु धूर से।।9।।
राधास्वामी चरन निहारे। लगे मोहिं अब अतिकर प्यारे।
आरत करूँ शऊर[5] से।।10।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

करूं मैं आरत सखियन साथ। गहूँ मैं थाली सम चित हाथ।।1।।
जोत में धारूं विरह अनुराग। प्रेम सँग गाऊं गुन और राग।।2।।
सजाऊं आरत पाऊं लाभ। सुरत खिंच पहुंची नभ[6] तज नाभ[7]।।
कुलाहल[8] होत गगन में आज। प्रेम संग भींजा सकल समाज।।4।।
छोड़ नौ आई दसवें द्वार। खोलिया ताला सुन्न मँझार।।5।।

---

1. मूल। 2. झूठा (पंजाबी बोली)। 3. एक प्रकार का बाजा। 4. प्रकाश। 5. विधि। 6. सहसदल कँवल। 7. त्रिकुटी। 8. शोर।

धुनों की होत जहाँ झनकार । सुरत जहँ देखत रूप अपार ।।6।।
महासुन पहुंची सतगुरु लार । भँवर चढ़ खुला शब्द भंडार ।।7।।
सत्त पद पाया अधर अधार । अलख का लिया जाय दरबार ।।8।।
अगम का पाया वार और पार । रही अब राधास्वामी रूप निहार ।।9।।
सुरत अब शब्द लखा निज सार । दिया अब राधास्वामी भेद विचार ।।
साध संग कीन्हा तज अहंकार । गुरु संग मेल किया बहु प्यार ।।11।।
नाम धन पाया विरह सम्हार । गुरु ने मर्म लखाया पार ।।12।।
कंवल चढ़ झाँकी मन को मार । घाट अब देखा घट में सार ।।13।।
चरन राधास्वामी हिरदे धार । रहूं मैं दम दम चरन सम्हार ।।14।।
हुए राधास्वामी आज दयार । नाम रस पाया परखी धार ।।15।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

गुरु आरत तू करले सजनी । दिवस गया आई अब रजनी[1] ।।1।।
मन को तोड़ चढ़ो निज गगनी । सुरत शब्द रस पीवत मगनी ।।2।।
हिर्स हवस[2] जग छिन छिन तजनी । नाम ओर[3] अब पल पल भजनी[4] ।।3।।
जोत नाद संग दम दम रंगनी । लख पिया रूप बढ़ावत लगनी ।।4।।
बिन गुरु कौन करावत करनी । सुख अकाश तज गिरती धरनी ।।5।।
छूट गया मेरा जन्म और मरनी । सतगुरु दया सुरत नभ भरनी ।।6।।
अमर लोक अब लागी चढ़नी । धुन अपार हिरदे में जरनी ।।7।।
सत्तनाम सतगुरु हुइ सरनी । अलख अगम के चरनन पड़नी ।।8।।
गुरु पद परस परख घट चलनी । माया ममता तृष्णा दलनी ।।9।।
सुआ[5] समान फँसा जग नलनी[6] । गुरु प्रताप मेरे दुख टलनी ।।10।।
राधास्वामी दृष्टि करी मन गलनी । बाल समान गोद गुरु पलनी ।।11।।

।। शब्द तेहरवाँ ।।

आओ री सिमट हे सखियो । मैं आरत करूँ गुरु की ।।1।।

---

1. रात । 2. तृष्णा और वासना । 3. तरफ़ । 4. भागना । 5. तोता ।
6. तोता फंसाने की कल ।

तुम जुड़ मिल बैठो गाओ । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 2 ।।
तुम अपने संग लगा लो । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 3 ।।
तुम प्रेम बढ़ा दो मेरा । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 4 ।।
तुम करो मदद मेरी मिल कर । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 5 ।।
तुम बिन मेरे बल नहिं पौरूष । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 6 ।।
तुम सेवक साँचे गुरु की । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 7 ।।
अब बिनती सुनो अधम की । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 8 ।।
तुम ढंग सिखाओ रंग से । मैं आरत करूँ गुरु की ।। 9 ।।
यह औसर मिले न कबही । मैं आरत करूँ गुरु की ।।10।।
अस औसर फिर न मिलेगा । मैं आरत करूँ गुरु की ।।11।।
मन विरह जोत अब बाली । मैं आरत करूँ गुरु की ।।12।।
कर[1] उमंग थाल ले आई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।13।।
सामाँ सब हुई इकट्ठी । मैं आरत करूँ गुरु की ।।14।।
सुर्त श्याम कंज चढ़ झाँकी । मैं आरत करूँ गुरु की ।।15।।
फिर बंकनाल धस आई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।16।।
त्रिकुटी की सिला[2] हटाई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।17।।
सुन सेत हंस गति पाई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।18।।
महासुन्न निरखती चाली । मैं आरत करूँ गुरु की ।।19।।
मुरली धुन गुफा सम्हारी । मैं आरत करूँ गुरु की ।।20।।
सचखंड बीन धुन जागी । मैं आरत करूँ गुरु की ।।21।।
लख अलख पुरुष पद पागी । मैं आरत करूँ गुरु की ।।22।।
अब अगम गम्म कर धाई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।23।।
राधास्वामी धाम दिखाई । मैं आरत करूँ गुरु की ।।24।।
राधास्वामी सतगुरु पूरे । मैं आरत करूँ गुरु की ।।25।।

---

1. हाथ । 2. बज्र कपाट ।

।। बचन पैतीसवाँ ।।

चढ़ कर पहुँचना सुरत का आकाश में और भेद और लीला मुक़ामात की जो कि सुरत ने रास्ते में देखी है

।। शब्द पहला ।।

करूँ आरती नाना विधि से । देखो स्वामी मेहर बेहद से ।।1।।
घट का थाल चित्त की बाती । नाम चेतना[1] जोत जगाती ।।2।।
भाव भक्ति का भोग धराऊँ । सुरत दृष्टि का जोग मिलाऊँ ।।3।।
बाजे अनहद नित्त बजाऊं । अमी धार रस अगम चुवाऊं ।।4।।
रूप अनूपम गगन गंभीरा । झलकें जहं तहं मोती हीरा ।।5।।
सूरज मंडल तेज उजारा । चन्द्र मंडली खोला द्वारा ।।6।।
सुखमन नाली सुरत चढ़ाई । बंकनाल में सहज समाई ।।7।।
धुन धधकार सुनी ओंकारा । लाल रंग जहँ सूर निहारा ।।8।।
त्रिकुटी घाट सुरत अब जागी । मानसरोवर चालन लागी ।।9।।
सेत सेत मैदान अनूपा । हंसन का जहँ देखा रूपा ।।10।।
द्वादस सूर कला जिन केरी । हंस हंस प्रति ऐसी हेरी ।।11।।
शोभा वहां की अगम अगाधा[2] । नहिं पावे कर जोग समाधा ।।12।।
सुरत जोग से पहुंचे कोई । जा पर दया राधास्वामी की होई ।।13।।
आगे भेद गुप्त हम राखा । अधिकारी को कहिं कहिं भाखा ।।14।।
यह आरत अब पूरण होई । स्वामी देओ प्रसादी मोहीं ।।15।।

।। शब्द दूसरा ।।

लाई आरती दासी सज के । नाम राधास्वामी का छिन छिन भज के ।।
सील छिमा की ओढ़ चदरिया । काम क्रोध की छाँट बदरिया ।।2।।

---

1. याद करना। 2. अथाह।

नाम थाल लिया हाथ पसारी । विरह अग्नि से जोत सँवारी ।।3।।
अमी सरोवर भर लइ झारी । राधास्वामी सन्मुख कर कर ढारी[1] ।।4।।
अगम लोक के बिंजन लाई । राधास्वामी आगे भोग धराई ।।5।।
अम्बर चीर पिताम्बर जोड़े । भेट किये मैंने हाथी घोड़े ।।6।।
पाँच तत्त्व गुन तीन सिपाही । मार लिये राघास्वामी की दुहाई ।।7।।
चढ़ी गगन पर कीन्हा धावा । सुरत निरत दोउ शब्द समावा ।।8।।
बंकनाल की तोप चलाई । विरह अग्नि की चिनगी लाई ।।9।।
धर्मराय की फ़ौज भगाई । धूम धाम मैंने बहुत मचाई ।।10।।
घंटा शंख मृदंग बजाई । धौंसा[2] धमक अजब धुन आई ।।11।।
गगन मँडल का घाटा[3] रोका । काल मंडली खाया झोका ।।12।।
अब चढ़ गई सुरत शशि[4] द्वारे । तीन लोक के हो गइ पारे ।।13।।
भान किरन जहँ झलकन लागी । अगम रूप अद्‌भुत जहँ पागी ।।14।।
खुली दृष्टि जब झिरना झाँकी । क्या कहूं शोभा अब मैं वहाँ की ।।15।।
कोटिन भान रोम इक लागी । देख सुरत अचरज अस जागी ।।16।।
सुरत शब्द का हो गया मेला । अगम पुरुष अब रहा अकेला ।।17।।
एक दोय कुछ कहा न जाई । ऐसे पद में जाय समाई ।।18।।
आरत का मैं यह फल पाया । दुक्ख भर्म सब दूर बहाया ।।19।।
परम शाँति में आन समानी । क्या कहूं महिमा अचरज बानी ।।20।।
अब कीजै स्वामी पूरन किरपा । तन मन मैं सब तुम पर अरपा ।।21।।
राधास्वामी राधास्वामी अब नित गाऊं । और बचन कुछ याद न लाऊँ ।।
देओ प्रसाद अगमपुर धामी । भक्ति सहित तुम चरन नमामी ।।23।।

।। शब्द तीसरा ।।

हे सहेली आली मौज करी अब भारी । चरन कँवल प्रीतम जिया धारी ।।
जगी है जोत हिये भई उजियारी । गगन मंडल धुन भई धधकारी ।।2।।

---

1. गिराया। 2. वड़ा नक़्क़ारा। 3. रास्ता। 4. चन्द्रमा।

चाँद सुरज दोउ झाँक झरोका[1] । सुखमन खिड़की द्वार जाय रोका ।।3।।
प्राण पवन जहँ देती झोका[2] । सुरत अड़ी अब माने न नेका ।।4।।
शब्द गुरु जाय कीन्हा ठेका । त्रिकुटी महल पर पग अब टेका ।।5।।
मानसरोवर हंस समीपा । अक्षर का जहँ है निज दीपा ।।6।।
चार भान कामिन जहाँ क़ांती[4] । द्वादस भान हंस की भाँती ।।7।।
लीला अद्‌भुत बरनी न जाई । देख देख मन जहँ बिगसाई ।।8।।
इकटक[4] ठाढ़ी सुरत निहारी । धुन किंगरी जहँ सुनत सम्हारी ।।9।।
महासुन्न होय सचखंड आई । अलख अगम में जाय समाई ।।10।।
मौज अनामी क्या कहूं लेखा । बरना न जाय रूप जस देखा ।।11।।
सोई रूप धारा राधास्वामी । जीव काज आये निज धामी ।।12।।
उन चरनन पर तन मन वारूँ । छबि उनकी पल पल हिये धारूँ ।।13।।
आरत फेरूँ प्रेम उमंग से । सुधि बुधि बिसरी अब मोरे तन से ।।14।।
फल पाया मैं अगम अपारा । अमी अहार करूँ नित सारा ।।15।।

।। शब्द चौथा ।।

प्रेम प्रीत घट भीतर आई । दास आरती नई बनाई ।।1।।
तिल का थाल मदुर्मक[6] बाती । सहसकँवल दल सन्मुख लाती ।।2।।
चक्र फेर कर जोत जगाती । सोत पोत[7] लख ऊपर जाती ।।3।।
सुन्न निरख फिर धुन को सुनती । घाटी बंक मध्य होय धसती ।।4।।
तहाँ संखनी[8] करें पुकारा । और डंकनी[8] अमल[9] पसारा ।।5।।
शब्द कमान हाथ लइ जबही । धुन के बान छुटे बहु तबही ।।6।।
झुंड झुंड उनके सब भागे । सुरत शब्द ले चाली आगे ।।7।।
ब्रह्म देश जहँ नाद अस्थाना । धुन अनंत जहँ वेद ठिकाना ।।8।।
नाग फाँस डाली जहँ काला । गरुड़ शब्द से काटा जाला ।।9।।
फिर सतगुरु जब भये सहाई । बिघन अनेकन दूर बहाई ।।10।।

---

1. सुराख । 2. धक्का । 3. हंसनी । 4. प्रकाश । 5. एक तरफ़ दृष्टि जोड़ कर । 6. आँख की पुतली । 7. भंडार । 8. माया की शक्तियां । 9. हुक्म, दख़ल ।

चौक चाँदनी घट के पारा । पारब्रह्म का रूप निहारा ।।11।।
महासुन्न सागर गंभीरा । पार किया दई सतगुरु धीरा ।।12।।
भंवरगुफा जाय द्वारा खोला । सत्तपुरुष तब बानी बोला ।।13।।
सुन सुन बानी सुरत समानी । अलख अगम की फिर गति जानी 14।।
पद अनाम कुछ कहा न जाई । देश संत का निज कर पाई ।।15।।
अब आरत यह पूरन करहूं । राधास्वामी छिन छिन भजहूं ।।16।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

पश्चिम[1] तज पूरब[2] चलि आया । सतगुरु आरत सामाँ लाया ।।1।।
दीन ग़रीबी भक्ति सिंगारी । उमंग थाल चित जोत संवारी ।।2।।
गुरु दर[3] झाँक झुकाया माथा । घेर घार मन चरनन लाया ।।3।।
आरत कीन्हीं विविध भाँत से । शुद्ध किया मन भर्म भ्रांत से ।।4।।
काल हटाया जुक्ति घात से । निर्मल किया मन अष्ट धात[4] से ।।5।।
गिरा[5] सुनी इक त्रिकुटी घाट से । सुरत चढ़ाई नैन बाट से ।।6।।
दो दल[6] मोड़े जब ठाट से । सुरत हटाई नऊहाट[7] से ।।7।।
बज्र किवाड़ दूसरा खोला । चारकंवलदल[8] अन्दर मोड़ा ।।8।।
खटदलकँवल[9] सुन्न में फूला । अष्टकँवलदल[10] आगे झूला ।।9।।
द्वादसदल[11] मैं सुरत समानी । दल तेरह[12] से निकसी बानी ।।10।।
दस दल महासुन्न के नाके । झार झरोखा धस कर ताके ।।11।।
संतोष दीप अमृत जहँ झिरना । सुरत निरत दोनों जहँ भरना ।।12।।
आगे सतमत ताला खोला । पुरुष सत्त बानी सत बोला ।।13।।
लौ लागी गइ अलख अगम में । सुरत समानी अधर पदम में ।।14।।
राधास्वामी नाम अनामी । बार बार चरनन परनामी ।।15।।

---

1. नीचे । 2. ऊपर । 3. दरवाजा । 4. पाँच तत्त्व और तीन गुन । 5. आवाज़ ।
6. आंख । 7. नव द्वार । 8. तीसरा तिल । 9. तीसरे तिल के ऊपर का सुन्न ।
10. सहसदल कंवल । 11. त्रिकुटी । 12. सुन्न ।

।। शब्द छठा ।।

गुरु का अगम रूप मैं देखा । सतगुरु सत्तनाम सम पेखा ।।1।।
बल सतगुरु अब काल पछाड़ा । कर्म काट सतगुरु पद धारा ।।2।।
सहसकंवल का थाल सुधारा । जोत रूप का दीपक बारा ।।3।।
धुन घंटा और शंख बजाई । बंक नाल में दृष्टि जमाई ।।4।।
दृष्टि सम्हारत मन हुलसाना । गगन मंडल धुन गरज पिछाना ।।5।।
देख रूप सूरज परकाशा । मिटा अँधेरा झलक अकाशा ।।6।।
पाया आतमपद[1] अब भारी । ररंकार धुन जहाँ सम्हारी ।।7।।
चंद्र चांदनी चौक निहारा । सेत सेत पद श्याम निकारा ।।8।।
इकटक सुरत लगी वहि द्वारे । हंस जूथ[2] बहु लगे पियारे ।।9।।
राधास्वामी लीला धारी । आरत कर मन बिगसा भारी ।।10।।
दया मेहर परशादी पाऊं । रज चरनन की सीस चढ़ाऊं ।।11।।

।। शब्द सातवाँ ।।

गुइयाँ[3] री लख मरम जनाऊँ । अब भेद अगम घट गाऊँ ।।1।।
सुर्त सहसकँवल पर लाऊं । लख नैन सैन दरसाऊँ ।।2।।
जोती की झलक झकाऊँ । श्यामा तज सेत मिलाऊँ ।।3।।
फिर बंकनाल चढ़ आऊँ । त्रिकुटी का राग सुनाऊँ ।।4।।
सुन्नी[4] जाय सुन्न समाऊँ । सरवर में धमक चढ़ाऊँ ।।5।।
हंसन से प्यार बढ़ाऊँ । किंगरी अब नित्त बजाऊँ ।।6।।
राधास्वामी नाम जपाऊँ । नौका अब पार लगाऊँ ।।7।।

।। शब्द आठवाँ ।।

बहुरिया[5] धूम मचावत आई । चढ़न को सतगुरु धाम ।।1।।
भाव भक्ति और प्रेम दिवानी । आरत लीन्ही साम[6] ।।2।।
करूणानिधि[7] गुरु फूल बिराजें । करें भजन निज नाम ।।3।।

---

1. सुन्न। 2. झुंड। 3. सखी, सहेली। 4. सुरत। 5. दुलहिन। 6. सामान।
7. दया के भंडार।

शोभा भारी कहूं सम्हारी । बिसर गये सब काम ।।4।।
तन मन की सुधि भूल गई है । पाया अब आराम ।।5।।
सुरत चढ़ाय गगन पर आई । कौन जपे मुख राम ।।6।।
हम सतगुरु अब पूरे पाये । भेद दिया सतनाम ।।7।।
देखा तिल तोड़ा वह द्वारा । खिला कंज घट श्याम ।।8।।
जोत जगमगी थाली उस की । पाया काल मुक़ाम ।।9।।
घंटा शंख धूम अति डारी । हार गया अब जाम[1] ।।10।।
नाली पार चढ़ी सुर्त विरहिन । बसी तिरकुटी ग्राम ।।11।।
सुन्न शिखर जा डंका दीन्हा । पाई सीतल छाम[2] ।।12।।
महासुन्न पर गाजन लागी । भँवरगुफा कीन्हा बिसराम ।।13।।
बंसी अधर बजावन लागी । लज्जित कोटिन श्याम[3] ।।14।।
सत्तलोक में जाय समानी । बीन बजे जहाँ आठों जाम ।।15।।
अलख अगम का दर्शन पाया । जहाँ ख़ास नहिं आम ।।16।।
आगे चली मिले राधास्वामी । अब पाया विश्राम ।।17।।
आरत कर कर मगन हुई अति । भागा लोभ और काम ।।18।।

।। शब्द नवाँ ।।

सुरत सहेली नभ पर खेली । परखी मूरत जोत निशान ।।1।।
आगे पेली[4] धुन सँग मेली । शब्द गुरु का पाया ज्ञान ।।2।।
सुन्न में जाय धुन अक्षर पाई । लखा चंद्र अस्थान ।।3।।
हँसन साथ करे कंतूहल[5] । मान सरोवर कर अश्नान ।।4।।
महासुन्न चढ़ झांकी गुरु बल । देखा अति मैदान ।।5।।
भँवरगुफा पर आसन डारा । वहां लगाया ध्यान ।।6।।
सत्तलोक जा सतगुरु पाये । सुनी बीन धुन तान[6] ।।7।।
अलख पुरुष का दर्शन पाया । पहुंची अगम ठिकान ।।8।।

---

1. जमराय। 2. छांह। 3. कृष्ण। 4. धसी। 5. बिलास। 6. स्वर, राग।

राधास्वामी धुन सुन पाई । करी बहुत पहिचान ।।9।।
अब आरत ले सन्मुख आई । भेट चढ़ाई अपनी जान ।।10।।
प्रेम प्रीत चरनन में लागी । देख रूप मैं हुइ हैरान ।।11।।
कहनी कथनी सब अब थाकी । देखे ही परमान[1] ।।12।।
यह आरत मैं अचरज कीन्ही । बूझें बिरले संत सुजान ।।13।।
यह गति मति है सब से न्यारी । ज्ञानी जोगी मर्म न जान ।।14।।
रतन पदारथ घट में पाया । राधास्वामी दीन्हा दान ।।15।।

।। शब्द दसवाँ ।।

चल सुरत देख नभ गलियाँ । जहँ सहस कँवल की पसरी[2] कलियाँ ।।
कली कली में देखीं नलियाँ । नली नली मध जोती बलियाँ ।।2।।
जोत निरंजन करते रलियाँ । नाना रंग फुलवारी खिलियाँ ।।3।।
देखत छबि मन जगत उगलियाँ । अनहद सुन धुन में सुर्त पिलियाँ ।।4।।
सुख अगाध क्या कहु जो मिलियाँ । कर्म कला जहाँ छिन छिन जलियाँ ।।
काम क्रोध आसा जहँ दलियाँ । फिर आगे सूरत चढ़ चलियाँ ।।6।।
बंक तिरकुटी सुखमन खुलियाँ । देख सूर शशि चमक बिजलियाँ ।।7।।
सुन्न शिखर पर जाय सम्हलियाँ । सेत वर्ण जहँ देख कँवलियाँ ।।8।।
महासुन्न महाकाल मिलनियाँ । भंवरगुफा पर सुरत चलनियाँ ।।9।।
सत्तनाम जा मर्म खुलनियाँ । अलख अगम पद मिले जुगलियाँ ।।10।।
राधास्वामी चरन परस मल धुलियाँ । आनंद अधिक मोहिं अब मिलियाँ ।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

मेरे उर में भरे दुख साल । कब काटोगे दीन दयाल ।।1।।
मैं भरम रही भौजाल । अचरज खेल दिखावत काल ।।2।।
कभी करत चाँदना दीवा बाल । कभी घोर अँधेरा बाँधत पाल[5] ।।3।।
कभी पाँच तत्त्व के रंग दिखाल । कभी शब्द सुनावत डारत जाल ।।4।।

---

1. प्रतीत। 2. फैली। 3. प्रवेश किया। 4. दोनों। 5. परदा।

बहु भटकावत जोग सम्हाल । जोगी भूले ऐसे ख़्याल ।।5।।
मैं भी भटका बहुतक काल । क्या क्या कहूं मैं अपना हाल ।।6।।
अब सतगुरु मोहिं मिले दयाल । कुंजी दे खोला तिल ताल[1] ।।7।।
रूप निहारूँ अजब विशाल । शब्द सुनूँ चढ़ बंकीनाल ।।8।।
त्रिकुटी घाट भेद दरसाल । सुन्न मँडल अक्षर परसाल ।।9।।
देखी नदी चमकती चाल । अचरज लहरें करत बेहाल ।।10।।
बजत जहाँ छिन छिन करताल । सुरत सुरत काटा जंजाल ।।11।।
महरम[2] महल न को अटकाल । सतगुरु दया सुफल हुइ घाल[3] ।।12।।
अब आरत गुरु करूँ सम्हाल । राधास्वामी किया निहाल ।।13।।
सेत पदम चढ़ मारा काल । मूल मिली और छूटी डाल ।।14।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

मन और सुरत चढ़ाओ त्रिकुटी । खेलो गगन और करो आरती ।।1।।
निरख नाम पोओ धुन मोती । गरज गरज झलके जहँ जोती ।।2।।
हाथ झाड़ माया तब रोती । पाया ररंकार निज गोती[4] ।।3।।
आसा मंसा यहां रही सोती । घाट त्रिबेनी चढ़ मल धोती ।।4।।
आलस नींद भूख सब खोती । ममता विपता सब भई थोथी[5] ।।5।।
छिन छिन प्रेम मगन सुर्त होती । कँवलन की जहाँ माल परोती ।।6।।
अब चली सत्तनाम पद न्योती[6] । सुरत शब्द की क्यारी बोती ।।7।।
धन धन राधास्वामी मेरे सतगुरु । जिन यह मौज दिखाई चढ़ कर ।।8।।
क्या आरत मैं उनकी गाऊँ । महिमा अगम अगाध सुनाऊँ ।।9।।
कहत कहत मैं कभी न अघाऊँ[7] । उमँग प्रेम अब कहा समाऊँ ।।10।।
चरन कँवल बिन और न आसा । मन भँवरा वहिं करत बिलासा ।।11।।
राधास्वामी राधास्वामी उठी धुन हिये से । सुरत सुहागिन अब मिली पिय से ।।12।।

---

1. ताला । 2. जानकर । 3. खेप । 4. गोत्र, जाति । 5. खाली ।
6. जिसको नेवता दिया है । 7. संतुष्ट होऊँ ।

।। शब्द तेहरवाँ ।।

चेत चली आज सुरत रंगीली । छूट गई मति बुधि सब मैली ।।1।।
हाथ लगी अनहद धुन थैली । होय गई निज घर की चेली ।।2।।
द्वारा फोड़ गगन को पेली । अब सूरत भई अति अलबेली[1] ।।3।।
इड़ा थाल पिंगला कर जोती । करी आरती सुखमन सेती ।।4।।
बंकनाल धुन शंख बजाई । त्रिकुटी घाट ओं धुन पाई ।।5।।
बाजे मृदँग गाज तम्बूरा । सुन सुन धुन अब मन भया सूरा ।।6।।
सूर होयकर काल पछाड़ी । माया चादर छिन में फाड़ी ।।7।।
फाँद[2] पिंड और तोड़ा अंडा । खंड खंड कीन्हा ब्रह्मंड़ा ।।8।।
भर छलाँग[3] पहुंची सचखंडा । पायगई पद अमर अखंडा ।।9।।
अब अनाम पद जाय समानी । आरत की विधि पूरी जानी ।।10।।
राधास्वामी दया करी अब भारी । मैं अपना पद लिया सम्हारी ।।11।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

चली सुरत अब गगन गली री । मिली जाय अब पिया से अली री ।।1।।
दली जाय मंसा सब मैली । सुन्न शिखर पर खुल खुल खेली ।।2।।
भई सुरत सतनाम की चेली । गगन फोड़ अब आई सहेली ।।3।।
अब पाया पद ऐसा हेली[4] । खिलगई घट में पौद चमेली ।।4।।
पहिर लई गल धुन की सेली[5] । चरण धूर सतगुरु अब ले ली ।।5।।
अगम अटारी चढ़ी अकेली । जहँ से यह रचना सब फैली ।।6।।
अब याकी विधि क्या कहूं खोली । संत बिना को समझे बोली ।।7।।
यह आरत है परम पुरुष की । धुन पकड़ी मैं अधर अर्श[6] की ।।8।।
सतगुरु ने अब दया विचारी । पद अपना दे काल बिडारी[7] ।।9।।
शब्द अगम का सौदा कीन्हा । सरन पड़ी सतगुरु पद लीन्हा ।।10।।
दीनदयाल दयानिधि स्वामी । काढ़ि लिया मोहिं अंतरजामी ।।11।।

---

1. अनोखी। 2. लांघ करके। 3. उछाल। 4. है आली, सखी। 5. गूलूबन्द। 6. आकाश। 7. दूर किया।

॥ शब्द पन्द्रहवाँ ॥

गगन नगर चढ़ आरत करहूं । पिंड देश अब छिन छिन तजहूं ॥1॥
सुनूँ गगन में अनहद रागा । बढ़त जाय पल पल अनुरागा ॥2॥
रूप अनूप देख हिये माहीं । कहत न बने कहा कहूं भाई ॥3॥
मथ मथ शब्द जोत परकाशी । सुन सुन धुन भई सुर्त अविनाशी ॥4॥
दुन्द[1] धुन्ध[2] से निकसी पारा । सत्तनाम का खोला द्वारा ॥5॥
अंस हंस सँग कीन्ह बिलासा । देखा जाय बंस परकाशा ॥6॥
सुरत सम्हार सुनी धुन बीना । कौन कहे वह अचरज चीन्हा ॥7॥
जोगी थके समाध लगाई । ज्ञानी रहे आतम गति पाई ॥8॥
यह संतन का भेद अमोला । बिना संत काहू नहिं तोला ॥9॥
संतन की गति अगम अपारा । क्योंकर कहूं वार नहिं पारा ॥10॥
संत मौज से जा पर हेरा । दिया अमर पद मिट गया फेरा[3] ॥11॥
यह आरत कही उमँग प्रेम से । पाठ करूँ और करूँ नेम से ॥12॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

आरत गाउँ स्वामी सुरत चढ़ाऊँ । गगन मंडल में धूम मचाऊँ ॥1॥
श्याम[4] सुन्दर पद निरख निहारूँ । सेत पदम पर तन मन वारूँ ॥2॥
बिन्द्राबन[5] मथरा[6] पद लीन्हा । गोकुल[7] जीत कालिन्द्री[8] छीना ॥3॥
सुन्न महावन गिरवर[9] चीन्हा । महासुन्न जाय अमृत पीना ॥4॥
धीरज थाल प्रेम की जोती । धुन विवेक घट मोती पोती ॥5॥
विरह राग तज रंग लगाऊँ । सुरत निरत ले शब्द समाऊं ॥6॥
रास मंडल घट लीला ठानी । कालीनाथ[10] निरख नभ जानी ॥7॥
घोर उठा अब गगन कुंज में । मगन हुई लख तेज पुंज में ॥8॥
मद और मोह हने और सूदे[11] । मोहन मुरली बजी मन बोधे ॥9॥

---

1. दुई। 2. अन्धेरा। 3. जन्म मरन। 4. सहसदल कँवल। 5. देह। 6. मथकर, रकार पद। 7. इन्द्रियों का देश। 8. काल की शक्ति। 9. ऊँचा देश। 10. काल को दबा कर। 11. मार कर दूर भगाए।

गोपी धुन और शब्द ग्वाल मिल । सुरत गूजरी आई चल चल ।।10।।
खेलत कूदत शोर मचावत । दधि अकाश सब मथ मथ लावत ।।
पी पी चहुं दिश होत पुकारा । सुन सुन राधा मगन विहारा ।।12।।
स्वामी स्वामी धुन अब जागी । उमँग हिये में छिन छिन लागी ।।13।।
जगत वासना सब हम त्यागी । मन हुआ मेरा सहज वैरागी ।।14।।
कृपा करो अस राधास्वामी । करत रहूं तुम चरन नमामी ।।15।।
मन को फेरो दीनदयाला । छिन छिन निरखूं दरस विशाला ।।16।।
अब तो लिये जात मोहिं खींचे । मानत नाहिं डार मोहिं भींचे[1] ।।17।।
भक्ति पौद जो तुमहिं लगाई । मेहर दया से सींचो आई ।।18।।
मेरा बस मन से नहिं चाले । बहुत लगाये इन जंजाले ।।19।।
पर तुम समरथ पुरुष अपारा । काटोगे हम निश्चय धारा ।।20।।
अब आरत सब विधि हुइ पूरी । राधास्वामी रहूं हज़ूरी[2] ।।21।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

हिरदे में गुल[3] पौद खिलानी । मैं बुलबुल सम भई मस्तानी ।।1।।
प्रेम प्रीत का लगा बग़ीचा । मन माली ताहि दम दम सींचा ।।2।।
अमर बेल फैली चहुंदिस में । भीज रही वह अमृत रस में ।।3।।
बाजे अनहद बजे गगन में । सुध भूली तन उसी लगन में ।।4।।
दृष्टि खुली और झाँकी पाई । सूरत मूरत अगम दिखाई ।।5।।
माणिक मोती शब्द नाद के । नीलम पन्ना धुन अगाध के ।।6।।
रतन जड़ित सुन्न चौकी पाई । देखत छबि मन गया भुलाई ।।7।।
मानसरोवर हंस बिलासा । केल करें मिल अजब तमाशा ।।8।।
हंस हंसिनी नाचें गावें । तूर तँबूरा अधिक बजावें ।।9।।
अस वेदी रच लीला ठानी । सुरत शब्द मिल बोले बानी ।।10।।
दुलहा दुलहिन दोऊ बिठाये । भाँवर फेरे दोउ गठियाये ।।11।।
व्याह भया और निज घर आये । सत्तपुरुष का दर्शन पाये ।।12।।

---

1. दबा लिये । 2. सन्मुख । 3. फूल ।

अजर चौतरा अमर अटारी । सेज अजूनी[1] लीन्ह सिंगारी ।।13।।
अटल सुहाग सुरत अब लीन्हा । पति मिलाप अनहद धुन बीना ।।14।।
राधास्वामी लगन धराई । तब हम ऐसा दुलहा पाई ।।15।।
अजब तमाशा नहीं तिरासा[2] । मौज चौज[3] जहाँ अधिक दिलसा ।।16।।

।। शब्द अट्ठारहवाँ ।।

सुरत चढ़ी घट में अब दौड़ी । सुन कर शब्द भई अब पौढ़ी ।।1।।
आसा मनसा जग की छोड़ी । लाज कान कुल की सब तोड़ी ।।2।।
सतसंग रंग पाया भई बौरी । सेत द्वार में निज कर जोड़ी ।।3।।
श्याम नगर गइ परदा फोड़ी । गगन खंड फिर सूरत मोड़ी ।।4।।
गगन नगर पहुंची सुन्दर[4] में । खिला चमन अब हिये अन्दर में ।।5।।
सहन[5] मिला चौड़ा अब सुन में । मगन हुई पहुंची निज धुन में ।।6।।
रस पाया अब अगम अधर में । पाया चैन आय गइ घर में ।।7।।
घट घट भीतर यही बिलासा । देख देख मैं पाऊँ हुलासा ।।8।।
जीव अचेत न चेते भाई । घर सुख तज बन बन भटकाई ।।9।।
जाके घर सुख का भंडारा । क्यों भरमे फिरे दर दर[6] मारा ।।10।।
राधास्वामी कहत सुनाई । कर सतसंग बूझ तब पाई ।।11।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

घट झूम रही अब सुरत रंगीली । पट घूम गई सुन शब्द छबीली[7] ।।1।।
उलट नैन तिल डाला पेली । जोत जगमगी झलके हेली ।।2।।
सुन सुन धुन निरते[8] अलबेली । गगन मँडल चढ़ त्रिकुटी ले ली ।।3।।
धोय धोय निर्मल हुई मैली । छोड़ गई गुन तीन की फ़ेली[9] ।।4।।
सुन्न सरोवर गई अकेली । सिमट गई धुन में नहिं फैली ।।5।।
महासुन्न चढ़ अद्भुत खेली । सत्तनाम धुन छिन में ले ली ।।6।।
शब्द पेड़ पर चढ़ी सुर्त बेली[10] । नाम अगम गल डाली सेली[11] ।।7।।

---

1. जूनो से रहित । 2. डर, तकलीफ़ । 3. बिलास । 4. सुन्न का द्वार । 5. चौक । 6. दरवाज़ा । 7. सुन्दर । 8. नाचे । 9. करतूत । 10. लता, बेल । 11. गुलूबन्द ।

।। व्याख्या शब्द सोलहवाँ ।।

कड़ी 1—आरती राधास्वमी दयाल की गाऊँ और सुरत को गगन मंडल में चढ़ा कर धूम मचाऊँ यानी बिलास करूँ।

" 2—और चढ़ाई के वक़्त श्यामसुन्दर पद यानी श्याम पद जो अति सुन्दर है, और वही सुन्न यानी चैतन्य मंडल का द्वारा है, देखती चलूँ और सेत पदम यानी सत्तलोक में पहुँच कर सत्तपुरुष पर तन मन वारूँ यानी इन दोनों से न्यारी होकर पहुँचूँ।

" 3---बिन्द्राबन, यानी देह को जो बिन्द से बनी है, मथ कर रकार पद यानी सुन्न में पहुँची और गोकुल यानी इन्द्रियों के देश से न्यारी हुई, और काल की शक्ति छीन हुई यानी जाती रही।

" 4---सुन्न मंडल की जो महाबन है, और वही ऊँच देश यानी पहाड़ है, पहचान करो, और वहाँ से आगे महासुन्न में पहुँच कर अमृत पान किया।

" 5---धीरज का थाल लेकर यानी चित्त में धीरज कर और प्रेम की जोत जगा कर यानी प्रेम तेज़ करके मोती रूप धुनों को घट में छांट कर पोती हुई यानी सुनती चली।

" 6---संसारी भोगों की विरह छोड़ कर प्रेम बढ़ाऊँ और सुरत और निरत को जगा कर और संग लेकर शब्द में लगूँ।

" 7---यानी घट में रास मंडल की लीला करके और काल अंग को नीचे डाल कर सुरत रास्ते की सैर करती हुई आकाश में पहुँची।

" 8---आकाश में चढ़ कर आवाज़ गगन मंडल की सुनाई दी और वहाँ पहुँच कर त्रिकुटी में जो स्वरूप है, उसका दर्शन करके खुश हुई।

" 9---और मद और मोह दूर हुए और निहायत रसीली बांसुरी की आवाज़ सुन कर मन को नया बोध हुआ।

कड़ी 10---शब्द की धुनें और शब्द सुनती हुई जो कि गोपी और ग्वाल है, सुरत गूजरी यानी इन्द्रियों को जलाने वाली ऊपर को चढ़ती चली जाती है।

" 11---गोपी और ग्वाल यानी मन इन्द्रिय वग़ैरा बिलास और शोर करते हुए और आकाश में से दधि यानी चैतन्य को समेटते और छांटते हुए मगन हो रहे हैं।

" 12---और सब चारों तरफ से अपने प्रीतम शब्द गुरु को पुकारते है और राधा यानी सुरत चलने वाली इस बिलास को देख कर मगन होती है।

" 13---फिर स्वामी नाम की धुन सुनती हुई नवीन उमंग हिरदे में बढ़ाती जाती है।

" 14---यह कैफ़ियत देख कर जगत की चाह और बासना बिलकुल छोड़ दी और मन सहज में बैरागी यानी उदासीन हो गया।

" 15---हे राधास्वामी दयाल ऐसी ही कृपा मेरे ऊपर जारी रक्खो, और मैं तुम्हारी बंदना करती रहूँ।

" 16---और मेरे मन को इस तौर से फेर दीजिये कि छिन-2 आप का दर्शन करती रहूँ।

" 17---इस वक्त तो वह मुझ को अपनी तरफ़ं खींचे लिये जाता है और कहना नहीं मानता और मुझ को तंग कर रहा है।

" 18---भक्ति की पौद जो आपने लगाई है उस को आप ही अपनी मेहर और दया से सींचो यानी बढ़ाओ और तरक़्क़ी दो।

" 19---क्योंकि मेरा मन मेरे क़ाबू में नहीं है और बहुत संसारी जाल इसने फैला रक्खा है।

" 20---लेकिन आप सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल समर्थ हो और मुझको यक़ीन है कि आप दया करके इस जंजाल को काटोगे।

" 21---अब यह आरती सम्पूर्ण हुई और मेरी अर्ज़ और मांग यही है कि राधास्वामी दयाल के सदा सन्मुख रहूँ।

।। शब्द बीसवाँ ।।

सुरत मेरी हुई शब्द रस माती । गुरु महिमा अब छिन छिन गाती ।।1।।
अन्य गुरु जिन भेद लखाया । धुन अन्तर मन राती[1] ।।2।।
राग रागिनी बाहर बाजे । यह सब तुच्छ बुझाती ।।3।।
निरत सखी को अगुआ करके । पल पल शब्द समाती ।।4।।
शब्द फोड़ सुन शब्द को जाती । माया ममता कूटत छाती ।।5।।
धुन धुन सिर अब काल पुकारे । यह सूरत मेरे हाथ न आती ।।6।।
पहुंची जाय सत्त दरबारा । अगम पुरुष का दर्शन पाती ।।7।।
हंसन साथ आरती गावे । अमी अहार सदा नित खाती ।।8।।
और नहीं कुछ कहने जोगी । राधास्वामी के बल बल जाती ।।9।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

सुरत अब जाना निज घर अपना । शब्द खोज हम पाया अपना ।।1।।
जगत अब भासा[2] हमको सुपना । छूट गया सब भरम कल्पना[3] ।।2।।
कहा करे ले जप और तपना । या में काल करे जग ठगना ।।3।।
संत भेद पर डाला ढकना । जीवन पाया बहुत भटकना ।।4।।
अब यामें कोइ कभी न अटकना । जैसे बने तैसे मन को झटकना ।।5।।
सुरत शब्द ले गगन सटकना[4] । वहाँ जाय कर बहुत मटकना[5] ।।6।।
कर्म धर्म से दूर फटकना[6] । सतगुरु चरनन माहिं लिपटना ।।7।।

।। शब्द बाईसवाँ ।।

गाओ री सखी जुड़ मंगल बानी । आज पिया मेरे दीन्ह निशानी ।।1।।
घट में घाट द्वार मैं चीन्हा । प्रेम पदारथ छिन छिन लीन्हा ।।2।।
मन चढ़ चला छोड़ तन थाना । गगन महल पर उमँग समाना ।।3।।
तहां से सुरत चली होय न्यारी । सुन्न नगर का शब्द पहिचाना ।।4।।
क्या कहूं महिमा बरनी न जाई । काल कर्म दोउ हुए दिवाना ।।5।।

---

1. लवलीन हो गया। 2. मालूम पड़ा। 3. खयाल। 4. जाना। 5. खुशी का इज़हार (प्रकट) करना। 6. अलग हो जाना।

मैं पिया की अपने सुध पाई । घाट घाट पर जोत जगाई ।।6।।
भागा तिमिर हुआ उजियारा । चौक चाँदनी द्वार निहारा ।।7।।
शोभा महल कहाँ लग बरनूँ । किंगरे किंगरे सूर हज़ाराँ ।।8।।
आगे बाट चली नहिं मेरी । राधास्वामी करो निबेड़ा[1] ।।9।।

।। शब्द तेईसवाँ ।।

प्रेम भरी मेरी घट की गगरिया । छूट गई मोसे मलिन नगरिया ।।1।।
नौ दूतन मोसे धूम मचाई । दसवें ने मोहिं खैंच चढ़ाई ।।2।।
हंस मंडली फ़ौज लड़ाई । काल दुष्ट अब पीठ दिखाई ।।3।।
माया आई मोहि लुभावन । कनिक कामिनी बान छुड़ावन ।।4।।
मैं भी उमँग नवीन सम्हारी । मार लिया दल उसका भारी ।।5।।
भागी माया छोड़ा देश । मैं सतगुरु को करूँ आदेश[2] ।।6।।
सतगुरु पकड़ी अब मोरी बहियां । खैच चढ़ाया गगन मँझइयां ।।7।।
धुन सुनकर अब भई निहाल । सतपुरुष मेरे दीन दयाल ।।8।।
दया करी मोहिं अंग लगाई । चरन ओट गह सरन समाई ।।9।।
कोटि जन्म की ख़बर जनाई । जन्म मरन अब दूर नसाई ।।10।।
प्रेम प्रीत का मिला ख़ज़ाना । जीत रीत गुरु शब्द पिछाना ।।11।।
शब्द पाय सत शब्द पुकारी । चली सुरत और निज धुन धारी ।।12।।
राधास्वामी अन्तरजामी । गति उनकी कस करूँ बखानी ।।13।।

।। शब्द चौबीसवाँ ।।

शब्द धुन सुनी असमानी । सुरत मेरी हुई हैरानी ।।1।।
विहंग की चाल चलानी । मीन मत मारग जानी ।।2।।
मकर के तार समानी । लक़्क़ा ज्यों उलट दिखानी ।।3।।
गगन ज्यों धरन पिछानी । नाम फुलवार खिलानी ।।4।।
जोत में जोत मिलानी । जोत जोती संग आनी ।।5।।

---

1. निपटारा । 2. प्रणाम ।

सुरत मेरी हुई निमानी[1] । शब्द की लखी निशानी ।।6।।
नाम की हुई दिवानी । भेद अब करूँ बखानी ।।7।।
सुन्न की धुन दरसानी । मानसर किये अश्नानी ।।8।।
सुरत अब अति हरखानी । गुप्त पद बात छिपानी ।।9।।
खोल कस कहूं कहानी । अकह की सैन[2] प्रमानी ।।10।।
राधास्वामी अगम ठिकानी । चलो अब होय न हानी ।।11।।

।। शब्द पच्चीसवाँ ।।

अली री मथूँ निज पिंडा । राधास्वामी दीन्हा भेद अखंडा ।।1।।
प्रेम का धारूं झंडा । गगन में फोडूँ अंडा ।।2।।
द्वार दल नाका खंडा । चढ़ी और लिया ब्रह्मंडा ।।3।।
जगी वहाँ जोत प्रचंडा[3] । काल सिर मारा डंडा ।।4।।
बंकनल द्वार समानी । शब्द गुरु गही निशानी ।।5।।
सुन्न धुन लीन्ह सम्हारी । हंस संग कीन्ही यारी ।।6।।
सुरत की लागी तारी । शब्द घट हुइ उजियारी ।।7।।
महासुन तिमिर दिखाना । पार हुई भँवर समाना ।।8।।
सत्त पद अपना जाना । अलख गति अगम पहिचाना ।।9।।
राधा यह कहत बखानी । स्वामी निज कीन्ह प्रमानी ।।10।।

।। शब्द छब्बीसवाँ ।।

सुरत आज मगन भई । उन पाया शब्द का भेद ।।1।।
धर्मराय अब सिर धुन मारे । मिटा कर्म का खेद ।।2।।
जन्म मरन की त्रास नसाई । अहंमेव[4] मम डाला छेद ।।3।।
अविनाशी पद अगम निहारा । अमर पदारथ मिला अभेद ।।4।।
अब की बार दाव हम पाया । लाल भई पद पाया सेत ।।5।।
नर्द[5] बचाई जुग गुरु बाँधा । सत्तपुरुष पद धरी उमेद ।।6।।

---

1. दीन। 2. इशारा। 3. तेज़। 4. अहंकार। 5. गोट।

चढ़ी सुरत और पिंड छिपाना । गही शब्द की टेक ।।7।।
खुला देश भंडार भक्ति का । सतगुरु दाता छिन छिन देत ।।8।।
मैं अति दीन दुखी जन्मन की । भूल गई दुख सब सुख लेत ।।9।।
धन्य धन्य अब भाग हमारा । निभ गइ अब के मेरी खेप ।।10।।
गुरु किरपा और साध की संगत । सोया मनुवाँ जागा चेत ।।11।।
मूल मिला और भूल मिटाई । पाया बीज वृक्ष नापैद[1] ।।12।।
राधास्वामी खेल दिखाया । हैरत हैरत हैरत हेत ।।13।।
अब क्या कहूं कहन में नाहीं । अचरज भारी अद्‌भुत नेत ।।14।।

।। शब्द सत्ताईसवाँ ।।

सुखमन जाय मन हुलसाना । सतगुरु संग कीन्ह पयाना[2] ।।1।।
चाँद सूर्य दोउ सम कर राखे । तब सतगुरु यों कह कर भाखे ।।2।।
अब सुन धुन होत नफ़ीरी[3] । तेरी सुरत करूँ मैं झँझीरी ।।3।।
तब सुन धुन अति हरखानी । महिमा नहिं जात बखानी ।।4।।
मैं आरत कीन्हा साजा । सतगुरु घट माहिं बिराजा ।।5।।
थाल सोसील[4] धराया । सोमत[5] की जोत जगाया ।।6।।
तन भीतर आरत फेरी । मन लीन्हा चहुंदिश घेरी ।।7।।
अंबर[6] का चीर पहिराया । सतगुरु अचरज रूप दिखाया ।।8।।
दर्शन कर तिरपत आई । मन इन्द्री तहाँ जमाई ।।9।।
अब जन्म सुफल कर लीन्हा । आरत फल ऐसा चीन्हा ।।10।।
घट बाजे अनहद तूरा । पट खोला निरख ज़हूरा ।।11।।
अंतर हुई अजब सफ़ाई । गगन पर बजी बधाई ।।12।।
सुन्न और महासुन देखा । धुर अगम लोक तक पेखा ।।13।।
निज भेद अधर रस पाई । अस आरत राधास्वामी गाई ।।14।।

---

1. गुप्त, अप्राप्य जो पैदा न हुआ हो । 2. यात्रा । 3. शहनाई, बड़ी बाँसूरी । 4. शान्त स्वभाव । 5. सुमत । 6. आकाश यानी नूर ।

।। शब्द अट्ठाईसवाँ ।।

मुरलिया बाज रही । कोइ सुने संत धर ध्यान ।।1।।
सो मुरली गुरु मोहिं सुनाई । लगे प्रेम के बान ।।2।।
पिंडा छोड़ अंड तज भागी । सुनी अधर में अपूर्ब तान ।।3।।
पाया शब्द मिली हंसन से । खैंच चढ़ाई सुरत कमान ।।4।।
यह बंसी सतनाम बंस की । किया अजर घर अमृत पान ।।5।।
भँवरगुफा ढिंग सोहं बंसी । रीझ रही मैं सुन सुन कान ।।6।।
इस मुरली का मर्म पहिचानो । मिली शब्द की खान ।।7।।
गई सुरत खोला वह द्वारा । पहुंची निज अस्थान ।।8।।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई । अद्‌भुत जिनकी शान ।।9।।
जिन जिन सुनी आन यह बंसी । दूर किया सब मन का मान ।।10।।
सुरत सम्हारत निरत निहारत । पाय गई अब नाम निशान ।।11।।
अलख अगम और राधास्वामी । खेल रही अब उस मैदान ।।12।।

।। शब्द उनतीसवाँ ।।

बोल री राधा प्यारी बंसी । क्यों तरसावत जान ।।1।।
तड़प रही मैं कारन तोरे । सतगुरु मर्म लखाया आन ।।2।।
बिरह बान की वर्षा कीन्ही । खैंच लिये मन प्रान ।।3।।
हुई दीवानी मिली निशानी । लिया मर्म सब छान ।।4।।
खान पान तन सुध बिसराई । सुरत समानी तान ।।5।।
सुन सुन धुन अब सूर भई है । मारा काल निदान ।।6।।
राधास्वामी देस दिखाना । कौन जुगत से करूँ बखान ।।7।।

।। शब्द तीसवाँ ।।

गुरु नाम रसायन[1] दीन्हा । दारिद्र[2] हुआ सब छीना ।।1।।
सुख रास[3] मिली घट अंतर । धुन शब्द गही गगनन्तर ।।2।।

---

1. कीमिया । 2. निर्धनता । 3. भंडार ।

सुखसागर ग़ोता मारा । भौसागर त्यागा भारा ।।3।।
धुन नाम मिले जहाँ मोती । सूरत अब लड़ियां पोती ।।4।।
श्रृंगार किया सुर्त अपना । पति मिला छोड़ जग सुपना ।।5।।
अनहद धुन अजपा जपना । सुन सुन इस तन से हटना ।।6।।
कामादिक मन से तजना । गुरु शब्द माहिं नित लगना ।।7।।
नभ द्वारा लागा फटने । लगी नींद भूख अब घटने ।।8।।
अमृत रस मिला अधर में । पहुंची अब सुन्न शिखर में ।।9।।
लीला अब देखी न्यारी । वर्णन सब करूँ सम्हारी ।।10।।
रतनन के भरे ख़ज़ाने । अमृत के कुंड दिखाने ।।11।।
हीरों की खान खुलानी । लालन की देख निशानी ।।12।।
सूरत और चाँद अनंता । तारों का मंडल बंधता ।।13।।
रंभा[1] जहाँ गावे बानी । हंसन गति अजब कहानी ।।14।।
सुर्त देख देख हरषानी । महिमा क्या करूँ बखानी ।।15।।
यह भेद सार बतलाया । राधास्वामी सब दिखलाया ।।16।।

।। शब्द इकतीसवाँ ।।

मौज इक धारी सतगुरु आज । कहूं क्या कहते आवे लाज ।।1।।
गगन में देखा अजब समाज । सुरत ने पाया अद्‌भुत साज ।।2।।
सिंह ने मारा गउवन गाज । मिरग[2] इक आया नभ में भाज ।।3।।
अमी रस चाखा छोड़ा नाज । सुरत गइ त्रिकुटी पाया राज ।।4।।
प्रेम का दुलहिन पाया दाज[3] । सुन्न में दुलहा मिला अगाज ।।5।।
सुरत ने कीन्हा अपना काज । शब्द संग कीन्हा आन समाज ।।6।।
गुरु ने दीन्ही इक आवाज़ । प्रेम की पाई बड़ी रिवाज ।।7।।
राधास्वामी सरन गही मैं भाज । काज सब हो गया पूरा आज ।।8।।

।। शब्द बत्तीसवाँ ।।

घूँघट खोल चली सुर्त दुलहिन । दुलहा शब्द मिला अब चढ़ सुन ।।1।।

---

1. अपसरा । 2. हिरन । 3. दहेज़ ।

करत बिलास एक हुए छिन छिन । देख रूप अब होत मगन मन ।।2।।
लीला अद्भुत होत न वर्णन । अजब अखाड़ा रचा सेत धुन ।।3।।
काल पछाड़ा कीन्हा मरदन । माया ममता भागी सिर धुन ।।4।।
चली सुरत और पहुंची महासुन । सेज बिछाई जा चौथे खन[1] ।।5।।
सत्तपुरुष मुख सुनी बीन धुन । अलख अगम को कीन्हा परसन ।।6।।
वहां से चली देख कुछ अगमन । राधास्वामी रूप निहारत दिरगन ।।7।।
देख देख फूली अब निज तन । कौन कहे वह गति राधास्वामी बिन ।।

।। शब्द तेंतीसवाँ ।।

सुरत अब चली ऐन[2] में पैन[3] । लखा जाय अचरज रूप अनैन[4] ।।1।।
त्याग गुन तीनों और दस धैन[5] । अधर में पहुंची पाया चैन ।।2।।
कहूं क्या घट की परखी सैन । चुका अब काल करम का दैन[6] ।।3।।
खुले अब सुन में हिरदे नैन । समझ तब आये वहाँ के बैन ।।4।।
सुरत अब लागी वहाँ रस लेन । शब्द की परखी अद्भुत कहन ।।5।।
चाँद और सूरज गहे दोउ गहन । सुखमना लागी सूरत रहन ।।6।।
राधास्वामी सूरत कीन्ही पहन[7] । दई मोहि पदवी अब अति महन[8] ।।

।। शब्द चौंतीसवाँ ।।

चमकन अब लागी घट में बिजली । यह घाट लखे कोइ सूरत बिरली ।।
सतगुरु ने दृष्टि करी, मुझ पर अब सगली[9]।
तिल तोड़ लिया, नभ पार चढ़ी, जहाँ छाय रही, नित बदली ।।1।।
दृग झाँक रही, सुर्त सूर भई, छेदा दल कदली ।
तन छोड़ चली, जड़ गाँठ खुली । अब पाय गई, अपना गुरु अदली[10] ।।2।।
धुन सार मिली, सुन पार चली, पाया पद अमली[11] ।
खोला सुन द्वारा, झाँका घर न्यारा । डार लई चौंकी अब सँदली[12] ।।3।।

---

1. खण्ड । 2. आंख । 3. तेज़ । 4. अगोचर । 5. इन्द्रिय । 6. क़रज़ा । 7. चौड़ी । 8. बड़ी । 9. सब । 10. न्यायकार, मुन्सिफ़ । 11. निर्मल । 12. चंदन की ।

बैठी घर जानी, धुन माहिं समानी। देख हंसन मंडली।
पिया अमृत प्याला, घट हुआ उजाला, छाँट दई माया सब गदली ।।4।।
पद आदि मिली, धुन साथ रली, बुधि दूर हुई कमली[1] ।
महासुन्न मिली, लख भँवर गली, अब होय गई सत पद अचली ।।5।।
लख अलख सही, घर अगम रही । कुल काल दली, फिर चाल चली,
पा कँवल कली । राधास्वामी चरन पर जा मचली ।।6।।

।। शब्द पैंतीसवाँ ।।

चढ़ोरी घट देखो मौज भली । अमीरस पाओ आज अली ।।1।।
नाम धुन अंतर ख़ूब खुली । खोइ जमा मानो फेर मिली ।।2।।
चढ़ गगन शिखर बंक नली । त्रिकुटी में बैठी शब्द पिली ।।3।।
फिर वहाँ से पहुंची सुन्न गली । सुन में जा हंसन साथ रली ।।4।।
सब आधि[2] बियाधि[3] उपाधि[4] टली । कर्मन की रसरी अगिन जली ।।5।।
महाकाल जाल भी जार चली । सोहं धुन पकड़ी मूर[5] मिली ।।6।।
सतनाम लखा दुख दूर टली । अलख अगम धुन चित्त खली[6] ।।7।।
राधास्वामी चरन में आन हिली । महिमा उन पाई सुरत घुली ।।8।।

।। शब्द छत्तीसवाँ ।।

दमिनियाँ दमक रही घट माहिं । धुबिनियाँ[7] धोय रही मल नाहिं ।।1।।
रंगिनियाँ रंग दई चटकाहिं । कँवल की खिल गई कलियाँ आहिं ।।2।।
सुरतिया झूम रही मुसक्याहिं । तपनियाँ दूर भई मिली छाहिं ।।3।।
गगनियाँ फोड़ गई धुन पाहिं । निरतियाँ छान लई छकियाहिं ।।4।।
ठगनियाँ नाश भई बल नाहिं । मगनियाँ मगन भई सुन माहिं ।।5।।
सरनियाँ सरन पई गुरु पाँय । धुनन की धुनियाँ धुन धुन लाय ।।6।।
गविनयाँ गान सुनावन जांय । कहनियाँ राधास्वामी नाम सुनाय ।।7।।

---

1. पगली, (पंजाबी ज़बान)। 2. मन का दुख। 3. तन का दुख। 4. बाहर का दुख यानी लड़ाई, झगड़ा, सरदी गरमी बग़ैरा। 5. जड़। 6. चुभी। 7. सुरत।

॥ शब्द सैंतीसवाँ ॥

खिज़ां तज देखो मूल बहार । घूम चल देखो तिल का द्वार ॥1॥
खिला जहँ अजब सदा गुलज़ार[1] । पाँच रंग देखे पाँचों सार ॥2॥
चमन जहँ नूरी खिले अपार । नूर की क्यारी निर्मल धार ॥3॥
उतरता अमी लखा हर बार । फूल रही अद्भुत जहँ गुलनार ॥4॥
सुरंगी[2] सरवर भरे अपार । सुरत और शब्द करें जहं प्यार ॥5॥
महल जहँ देखे खुले दुवार । नीलगूँ किंगुरे लगे क़तार ॥6॥
सैर यह देखी तन मन वार । गुरु ने मौज दिखाई सार ॥7॥
मेहर से दूर हुए सब ख़ार[3] । तजा फिर मन ने निज अहंकार ॥8॥
गुरु मिल पहुंची गुरु दरबार । पड़ी अब राधास्वामी चरन मंझार ॥

॥ शब्द अड़तीसवाँ ॥

सुर्त पनिहारी सतगुरु प्यारी । चली गगन के कूप ॥1॥
प्रेम डोर ले पनघट आई । भरी गगरिया ख़ूब ॥2॥
शब्द पहिचान अमीरस पागी । देखा अद्भुत रूप ॥3॥
नगर अजायब मिला डगर में । जहाँ छाँह नहिं धूप ॥4॥
पहूंची जाय अगमपुर नामी । दर्श किया राधास्वामी भूप ॥5॥

॥ बचन छत्तीसवाँ ॥

प्राप्ति शब्द और मुक़ामात की और वर्णन आनंद और बिलास और महिमा सतगुरु की

॥ शब्द पहला ॥

उमँड रही घट में घटा अपार ॥ टेक ॥
चमक बीजली प्यार बढ़ावत । और घंटा झनकार ॥1॥
शोभित अधर घाट सुर्त प्यारी । शब्द खुला भंडार ॥2॥
देख रही जहँ कँवल कियारी । फूल रही फुलवार ॥3॥

---

1. चमन। 2. खुश रंग। 3. काँटे।

यह अन्तरगत खेल न देखे । भटके बारम्बार ।।4।।
कौन कहे बिन राधास्वामी । यह संतन मत सार ।।5।।

।। शब्द दूसरा ।।

गोरी[1] खिलीं श्याम दल कलियां । मन भँवर करत जहां रलियां ।।1।।
माया जहां अधिक लगावत छलियां । सिद्ध जोगी बहुत निगलियां ।।2।।
मेरी गुरु मिल बात सम्हलियां । नाम बल सकल उपाधि टलियां ।।3।।
काल जहां डारत सब को दलियां । मैं वहीं शब्द संग मिलियां ।।4।।
मैं चली गगन की गलियां । घट खोली अंतर नलियां ।।5।।
फिर शब्द गुरु मैं पिलियां । पहुंची सुन्न सेत कँवलियां ।।6।।
धुन सुनी अधिक निर्मिलियां । गहे राधास्वामी चरन अमलियां[2] ।।7।।

।। शब्द तीसरा ।।

शब्द सँग लगी सुरत की डोर । सुहागिन करे आरती जोड़ ।।1।।
भौसागर में तुलहा[3] बांधा । जम के जाल लिये सब तोड़ ।।2।।
प्रेम प्रीत घट थाली धारी । जोत जगाई मन को मोड़ ।।3।।
सुरत लगाई शब्द समाई । नित नित धुन में होती पोढ़[4] ।।4।।
गगन द्वार धस ताला खोला । अनहद शब्द मचावत शोर ।।5।।
करम भरम सब दूर निकारे । सतगुरु घट में कीन्हा दौर[5] ।।6।।
जन्म जन्म का सोया मनुवां । जाग उठा सुन अनहद घोर ।।7।।
पिंजर छोड़ उड़ा पंखेरू । चला गगन की ओर ।।8।।
त्रिकुटी जाय शब्द फल पाया । छूटा मोर और तोर ।।9।।
सुन्न शिखर जा रैन बिहानी । उदय हुआ घट भोर ।।10।।
सुन्न महासुन भँवरगुफा पर । सुरत चढ़ी सब नाके तोड़ ।।11।।
सत्त अलख और अगम ठिकाना । राधास्वामी धाम मिला चित चोर ।।

---

1. सखी । 2. निर्मल । 3. तैरने को मल्लाह लोग फूस का बनाते है ।
4. मज़बूत । 5. दौरा ।

।। शब्द चौथा ।।

गुरु चरन धूर हम हुइयां । तुम सुनो हमारी गुइयां ।।1।।
क्या क्या सुख कहूं गुसइयां । बिन भाग नहीं कोइ पइयां ।।2।।
अब ध्यान कमान खिंचइयां । सुर्त बान चलावत गइयां ।।3।।
नभ शब्द निशान धरइयां । फोड़ा और आगे चलइयां ।।4।।
सत शब्द मिलाप करइयां । राधास्वामी धाम समइयां ।।5।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सतगुरु मैं पूरे पाये । मन घाट लिया बदलाये ।।1।।
सूरत ने शब्द जगाये । घट मोती चुन चुन खाये ।।2।।
हंसन के जूथ दिखाये । मिल उन संग प्रेम लगाये ।।3।।
घाटी चढ़ बाटी धाये । फिर सुन्न शिखर चढ़ आये ।।4।।
सतलोक सुरत को लाये । फिर जोनी बास न आये ।।5।।
सत रूप अजब दरसाये । कोटिन रवि[1] चंद्र लजाये ।।6।।
हंसन छबि क्या कहूं गाये । षोड़स[2] शशि[3] भान[4] दिखाये ।।7।।
राधास्वामी कहत बुझाये । सुन सेवक अति हरषाये ।।8।।

।। शब्द छठवां ।।

सुरत अब घूम चली तन छोड़ निदान ।
चरन गुरु आन अड़ी गहि नाम ठिकान ।।1।।
धुन बाजे अनहद परख निशान । सतगुरु दई कुंजी कुफ़ल[5] खुलान ।।2।।
सुन्न सागर झाँकी कर अश्नान । शब्द घट जागा सुरत समान[6] ।।3।।
पोढ़ भइ नभ में कँवल खिलान । जोत लख पाई तिल परमान ।।4।।
काल की कला थकी अब जान । लखी गुरु मूरत शब्द पिछान ।।5।।
तीन गुन टारे छोड़ा थान[7] । लखी मैं राधास्वामी अचरज शान ।।6।।
रही नहीं अब कुछ जग की कान । गही अब राधास्वामी पूरन आन[8] ।।7।।

---

1. सूरज। 2. सोलह। 3. चन्द्रमा। 4. सूरज। 5. ताला। 6. समाई। 7. ठहराव की जगह। 8. हुक्म।

।। शब्द सातवाँ ।।

मन सोधो घट में शब्द संग । तज काम क्रोध और मोह रंग ।।1।।
अब औसर पाया अजब ढंग । मिली देही उत्तम गुरु संग ।।2।।
नित बचन सुनूँ मैं विहंग अंग[1] । अब होत सफ़ाई मिटत ज़ंग[2] ।।3।।
क्या उपमा बरनूँ साध संग । निर्मलता पाई अंग अंग ।।4।।
तन दूत हूए सब आप तंग । घट भीतर लागी होने जंग[3] ।।5।।
गुरु प्रेम समाना मिट तरंग । गुन बिर्त हटाई चित अपंग[4] ।।6।।
सेत मिला हट श्याम रंग । धुन शब्द सुनाई भरम भंग ।।7।।
फिर निरत जगाई उड़ बिहंग । राधास्वामी पाये काल दंग ।।8।।

।। शब्द आठवाँ ।।

मौज करूँ अब घट में बैठ । देवर[5] मारा मारा जेठ[6] ।।1।।
खोली हाट अधर की पैंठ । धुन को सुना गई वहाँ पैठ[7] ।।2।।
चाँद सुरज दोउ देखे हेठ[8] । सीस किया सतगुरु की भेट ।।3।।
लोभ मोह सब डारे मेट । पाप पुण्य सब सोये लेट ।।4।।
इन्द्री भोग गये सब ऐंठ । राधास्वामी मिल गये भारी सेठ ।।5।।

।। शब्द नवाँ ।।

मेरे घट का दिया गुरु ताला खोल । मैं सुनत रहूं नित बाला बोल ।।1।।
क्या कहूं सुरत शब्द की तोल । पहुंची जाय नाम के कोल[9] ।।2।।
अधिक हुलास मिला जहँ चोल । माया की सब निकसी पोल ।।3।।
का से कहूं यह भेद अमोल । बिन गुरु कोई न कहता खोल ।।4।।
जीव विचारे डावांडोल । बिन गुरु भरे न मन का डोल ।।5।।
मैं विरहिन मेरे हिरदे हौल[10] । काल चढ़ाई मुझ पर रौल[11] ।।6।।
मैं पकड़ी अब धुन की रोल । मार दिया सब माया ग़ोल[12] ।।7।।
जो गुरु भाखें मुझ से क़ौल[13] । मन मूरख सिर मारी धौल ।।8।।

---

1. ऊँचे चढ़ कर । 2. काई । 3. युद्ध । 4. निश्चल । 5. पिंडी मन । 6. निज मन । 7. ठहर गई । 8. नीचे । 9. पास । 10. डर, धड़का । 11. रौला, हल्ला । 12. समूह । 13. बचन ।

कौन करे उस धुन का मोल । उसके आगे सभी कुबोल ।।9।।
बजे सुहावन घट में ढोल । सुन सुन बोझ गिरा हुइ हौल[1] ।।10।।
पाई यह धुन करी टटोल । पहर लिया अब प्रेम पटोल[2] ।।11।।
अब नित झूलूँ गगन हिंडोल । राधास्वामी अमी पिलाया झकझोल ।।

।। शब्द दसवाँ ।।

इन्द्री उलट लाओ अब तन में । मन को खैंच चढ़ाओ गगन में ।।1।।
सुरत लगाओ जा उस धुन में । सहसकँवल चढ़ देखो सुन्न में ।।2।।
जोत जगाय देख तू घन में । बंकनाल चढ़ पहुंच निर्गुन में ।।3।।
अक्षर लखो जाय दरपन में । महासुन्न चढ़ रहो अमन[3] में ।।4।।
भँवरगुफा धुन पड़ी श्रवन में । देख रूप सतपुरुष अपन में ।।5।।
धुन सुन पहुंची अलख अगम में । राधास्वामी रूप बसा नैनन में ।।6।।
आरत करी गुरु चरनन में । पाय दया गुरु हुई मगन मैं ।।7।।
प्रेम प्रतीत लगी अब उन में । कहूं कहा महिमा चुन चुन मैं ।।8।।
तन मन सीस करूँ अर्पन मैं । चरन सरन गहि गाऊँ गुन मैं ।।9।।
खोल न कहूं भेद सबहिन में । नहीं समावत बचन रसन[4] मैं ।।10।।
आनँद होत सदा छिन छिन में । राधास्वामी संग अब करूँ रमन[5] मैं ।।11।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

सुरत को मिला ख़ज़ाना नाम ।। टेक ।।
सुरत निमानी हुई दिवानी । दिया गुरु अस जाम[6] ।।1।।
उमंग उमंग कर नभ पर पहुंची । मिला निरंजन धाम ।।2।।
आगे चली बंक पट खोला । मिला गुरु का नाम ।।3।।
सुन्न द्वार दसद्वार समानी । पाया अब आराम ।।4।।
महासुन्न से भँवरगुफा पर । जाय मिली सतनाम ।।5।।
अलख अगम से भेटा कीन्हा । राधास्वामी मिली मुक़ाम ।।6।।

---

1. हलकी । 2. वस्त्र । 3. बे-खटके । 4. ज़बान, जिह्वा । 5. बिलास । 6. प्याला ।

मनसा पूरन होय सब आई । रहा न कोई काम ।।7।।
उमंग बढ़ी सूरत में भारी । आरत करूँ मुदाम[1] ।।8।।
राधास्वामी मर्म लखाया । यह सब का अंजाम[2] ।।9।।
समझ बूझ कर भाख सुनाया । अब सबको यह दिया पयाम[3] ।।10।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

उलट घट झाँको गुरु प्यारी । नैन दोउ तानो हो न्यारी ।।1।।
देख नभ मंडल उजियारी । अनेकन चंद्र सूर तारी ।।2।।
खिली जहाँ पचरंग फुलवारी । नदी जहाँ बहती इक भारी ।।3।।
लाल और मानिक पन्ना री । झालरें मोती लख झारी ।।4।।
झिलमिल दामिन चमका री । दमक जहाँ जोत लखी भारी ।।5।।
सहसदल मध्य घनकारी । धुनन की होत झनकारी ।।6।।
सुना यह अनहद बाजा री । करे जहाँ माया सिंगारी ।।7।।
ठगे बहु जोगी मुनि भारी । टिके मत आगे चल प्यारी ।।8।।
चढ़ो अब घाटी बंका री । निरख सब त्रिकुटी लीला री ।।9।।
गगन में परखो ओंकारी । गरज जस बादल गरजा री ।।10।।
लाल जहँ सूरज दरसा री । मृदंग और मुंहचंग बजता री ।।11।।
तख़्त जहाँ शाही बिछता री । त्रिलोकी नाथ बैठा री ।।12।।
जोगेश्वर ध्यान धारा री । परे इस शुद्ध गाया री ।।13।।
व्यास यह मत चलाया री । संत उस तान मारा री ।।14।।
राह बिच रहा अटका री । संत घर उस न पाया री ।।15।।
राम और कृष्ण औतारी । वशिष्ठ और शंकराचारी ।।16।।
थके जहाँ शेष नारद री । रहे जहाँ सनक सारद री ।।17।।
वेद भी नेत कहता री । कँवलसुत[4] विष्णु शिव हारी ।।18।।
साध संग सुन्न में आ री । संत जहाँ कहत दसद्वारी ।।19।।

---

1. हमेशा। 2. अन्त। 3. सँदेशा। 4. ब्रह्मा।

अगम परकाश धुन न्यारी। रकार अक्षर परख सारी।।20।।
महासुन चल करो यारी। संत अब हुए अगुवा री।।21।।
भँवर पा जा चढ़ी पारी[1]। सुनी धुन बांसुरी कारी[2]।।22।।
क़दम वहाँ से उठाया री। सत्त पद यही पाया री।।23।।
अलख और अगम धाया री। आरती राधास्वामी गाया री।।24।।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

घट में अब शोर मचाय रही ।। टेक।।
ऊँचे चढ़ी सुरत सुन घोरा। प्राण पिंड से छूट गई।।1।।
जीते मुक्ति मिली सतगुरु से। क्या कहुं महिमा चुप्प रही।।2।।
घट में खेल पसारा अद्भुत। देखे ही परतीत भई।।3।।
सुन सुन अचरज करती पहिले। बुद्धि ख़राबा भुगत रही।।4।।
क्या क्या कहूं बुद्धि की विपता। करनी प्रेम बहाय दई।।5।।
विद्या बुद्धि चतुरता बैरन। अहंकार में डूब रही।।6।।
विद्या बुद्धि चतुरता बैरन। गुरु सेवा मन त्याग दई।।7।।
भक्ति पदारथ महिमा जानी। सुरत चढ़ी और सुन्न गई।।8।।
महासुन्न और भँवरगुफा की। लीला अद्भुत कौन कही।।9।।
सत्तलोक सतपुरुष पियारा। रूप निहारा मगन भई।।10।।
अलख अगम और राधास्वामी। उन को देखत मौन रही।।11।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

घट चमन खिला उजियारी। गुरु ज्ञान मिला अब भारी।।1।।
सुर्त नदी चली धधकारी। पहुंची जाय सिंध सम्हारी।।2।।
धुन अनहद निरत निरारी[3]। घंटा जहाँ शंख बजा री।।3।।
मन पहरा द्वार लगा री। तस्कर[4] सब दूर निकारी।।4।।
दे सील क्षमा की बाड़ी। सत की फुलवार खिला री।।5।।

---

1. पार। 2. कारगर। 3. निराली। 4. चोर।

धीरज का कूप खुदा री। जल प्रेम सींच रही क्यारी।।6।।
भक्ति रस प्रीत पिया री। चढ़ गगन रौब फल खा री।।7।।
दल कँवल सहस फुलवारी। पचरंगी रंग बहारी।।8।।
नौबत जहँ बजती न्यारी। खुल खेली सुरत हमारी।।9।।
सुन्न में चढ़ धुन लइ सारी। किंगरी गति अगम विचारी।।10।।
गइ महासुन्न पद पारी। जहाँ बंसी बजत करारी[1]।।11।।
सतनाम मिला पद चारी। गति अलख अगम धर धारी।।12।।
राधास्वामी चरन सम्हारी। पाई गति आज अपारी।।13।।
कर आरत हुइ गुरु प्यारी। घर अजर अमर पाया री।।14।।
सुर्त मारग दूर चला री। हद बेहद पार सिधारी।।15।।
ज्ञानी थक जोग थका री। श्रुति सिमृत पार न पा री।।16।।
संतन मत ऊँच निकारी। मानी जिन भाग बड़ा री।।17।।
ब्रत तीरथ जगत पचा री। जप तप में वृथा खपा री।।18।।
विद्या पढ़ मान अहारी। तिरपत नहिं बुद्धि बिगाड़ी।।19।।
भक्ति और प्रेम गया री। दासातन अब न रहा री।।20।।
घट में क्यों जाय चढ़ा री। मन हुआ सुतंतर[2] भारी।।21।।
मनमुखता अजब सँवारी। गुरुमुखता दूर निकारी।।22।।
राधास्वामी कहत पुकारी। हे सतगुरु लेओ सम्हारी।।23।।
इन से मोहिं लेओ बचा री। यह रूखे प्रेम न धारी।।24।।
मैं राधास्वामी सरन पड़ा री। तुम रक्षा करो हमारी।।25।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ ।।

सूरत सरकत पार, वार त्याग देही तजत।
घट का घोर सुनाय, रात दिवस लागी रहत।।1।।
नाम अमोलक पाय, गगन गिरा गरजी चलत।

---

1. तेज़। 2. खुद मुख़्तयार।

धाम लिया सत जाय, पुरुष दर्श पाई सुगत ।।2।।
मेरे गृह अति रंग, बोलत मोर पपीहरा।
स्वाँती बरसत अंग, मेघ बरस तन मन हरा ।।3।।
ज्यों हरियावल भूमि, खोल दृष्टि देखत रहूं ।
बिच बिच उठत तरंग, मन तन सीतलता सहूं ।।4।।
खोलत बज्र किवाड़, सुरत जहाँ टक लावई ।
सतगुरु लिया सम्हार, सुरत शब्द संग न्हावई ।।5।।
झूलत गगन हिंडोल, सखियाँ निकट झुलावहीं ।
मैं अब किया सिंगार, पिया रिझावत धावही ।।6।।
अब आरत घट धार, अन्तर पट खोलत चली ।
दीपक जोत सम्हार, सूर चाँद गगना गली ।।7।।
गावत राग मलार, धुन अनहद शोभा अधिक ।
होत जहाँ झनकार, ढोल दमामा[1] अति धमक ।।8।।
बिन सतगुरु परताप, यह लीला नहीं को लखे।
देखेंगे निज दास, पी पी अमृत नित छके[2] ।।9।।
पूरण पद विश्राम, सेत पदम पर जा चढ़ी।
राधास्वामी नाम, गावत है सनमुख खड़ी।।10।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

गुमठ[3] चढ़ी मन बरजती[4]। काल अटक तुड़वाय ।।1।।
गुरु पासा[5] अद्भुत लिया। गति मति कही न जाय ।।2।।
बोलत तूती[6] अधर में। तोता[7] दिया है जगाय ।।3।।
देश बिराना छुट गया। पिंजरा[8] दूर पराय ।।4।।
खुला उड़े आकाश में। तूती संग मिलाय ।।5।।
महल अजब गत चाँदना। सूरज ना ठहराय ।।6।।

---

1. नक्कारा। 2. अघाये। 3. शिखर। 4. रोकती । 5. तरफ़। 6. धुन। 7. मन। 8. शरीर।

धुन धधकार अनाहदी । बिरले गुरुमुख पाय ।।7।।
लख तिरबेनी घाट को । ता में पैठ अन्हाय ।।8।।
सुन समाधि जाको मिली । अनहद माहिं समाय ।।9।।
अमी बर्ष बुँदियन झड़ी । रसिया रहे लुभाय ।।10।।
राधास्वामी चाख कर । वर्णन किया बनाय ।।11।।

।। बचन सैंतीसवाँ ।।

दशा सुरत और मन की और प्राप्ति शब्द की और शुकराना सतगुरु का

।। शब्द पहला ।।

गुरु ने अब दीन्हा भेद अगम का । सुरत चली तज देश भरम का ।।1।।
बल पाया अब विरह मरम का । भटकन छूटा दैरो[1] हरम[2] का ।।2।।
वर्षन लागा मेघ करम का । संशय भागा जनम मरन का ।।3।।
तोड़ दिया सब जाल निगम[3] का । सुख पाया अब हम दम दमका ।।4।।
फल पाया आज हम सम दम का । भँवर हुआ मन सेत पदम का ।।5।।
फूँक दिया घर लाज शरम का । काटा फंदा नेम धरम का ।।6।।
ज्ञान ध्यान बाचक हम छोड़ा । भक्ति भाव का पहिना जोड़ा ।।7।।
भक्ति भाव की महिमा भारी । जानेंगे कोइ संत विचारी ।।8।।
सत्तनाम सतपुरुष अपारा । चौथे माहि करें दरबारा ।।9।।
सुरत शब्द मारग कोइ पावे । सो हंसा चढ़ लोक सिधावे ।।10।।
सो मारग अब राधास्वामी गाई । कोइ कोइ प्रेम भक्ति से पाई ।।11।।

।। शब्द दूसरा ।।

गुरु मारा बचन का बान । मेरा गया कलेजा छान ।।1।।
मैं सुनी सुन्न की तान । मर गये काल के मान ।।2।।
तन छूट गया अभिमान । मैं करी शब्द पहिचान ।।3।।

---

1. मन्दिर । 2. मक्का । 3. वेद ।

मुरदे के पड़ गई जान । मेंरी करे न कोई हान ।।4।।
मुझे सतगुरु दीन्हा दान । मैं पहुंची अधर अमान ।।5।।
मेरी सुरत चढ़ी खरसान । मैं मारा काल निदान ।।6।।
मैं किया अमीरस पान । घट खुली रतन की खान ।।7।।
क्या महिमा करूँ बखान । अचरज का खेल दिखान ।।8।।
मैं पाया नाम निशान । अब झूठा लगा जहान ।।9।।
मेरा छूटा आवन जान । मुझे मिला शब्द परमान ।।10।।
जग फिरे भरमता खान । कोइ सुने न अनहद कान ।।11।।
कोइ करे न गुरु की कान । घर घेर लिया शैतान ।।12।।
अब करो जीव कल्यान । धरो राधास्वामी ध्यान ।।13।।

।। शब्द तीसरा ।।

गुरु मोहिं दीन्ही अमृत रास । बुझी मेरी जन्म जन्म की प्यास ।।1।।
सुरत अब चढ़ गई फोड़ अकाश । मिली जाय शब्द लखा परकाश ।।2।।
जगत की छूटी सब ही आस । गई अब तृष्णा बल हुआ नास ।।3।।
काल मोहिं देखत करे त्रास । कर्म भी भागा छोड़ा बास ।।4।।
दूर की वस्तु मिली मोहिं पास । छुटी तन मन से हुई निरास ।।5।।
गई अमरापुर किया निवास । गाउँ गुरु महिमा स्वाँसो स्वाँस ।।6।।
हुई मैं राधास्वामी चरनन दास । ज्ञानी और जोगी खोदें घास ।।7।।

।। शब्द चौथा ।।

घोर सुन चढ़ी सुरत गगना । भेद लख हुई अजब मगना ।।1।।
रूप उन पाया अब अपना । जगत हुआ झूठा ज्यों सुपना ।।2।।
चली अब गुरु पद सो लखना । काल पर पड़ा कठिन तपना ।।3।।
कर्म का छूट गया खपना । सहज सुख मिला शब्द तकना ।।4।।
मेट मन कपट छुटा ठगना । अमर पद मिला जुगन जुगना ।।5।।

टेक गुरु बाँध ध्यान धरना । चरन गुरु पकड़ पड़ो सरना ।।6।।
सहसदल कँवल जाय लगना । त्रिकुटी चढ़ो चाल पकना ।।7।।
सुन्न में नहीं नैन झपना । मानलो राधास्वामी गुरु कहना ।।8।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

नाल नभ तकी होय न्यारी । सुरत को लगी अब विरह करारी ।।1।।
मन बैठा भोग बिसारी । जिव छोड़ी कृत[1] संसारी ।।2।।
क्या कहूं मिले गुरु भारी । उन भेद दिया पद चारी ।।3।।
मैं पाऊँ शब्द रस सारी । मेरे लगा ज़ख़्म अब कारी[2] ।।4।।
मन तन पर फिरती आरी । क्यों जीऊँ जीवना हारी ।।5।।
तब दया करी गुरु न्यारी । अब दीन्हा शब्द सम्हारी ।।6।।
मैं चढ़ गई गगन अटारी । वहाँ खेलूँ नित्त शिकारी ।।7।।
धुन सुन कर बहुत पुकारी । चढ़ भागी खोल किवाड़ी ।।8।।
राधास्वामी चरन निहारी । लख पाया भेद अपारी ।।9।।

।। शब्द छठवां ।।

गुरु की गति अगम अपार । मैं कैसे बरनूँ पार ।।1।।
सतगुरु मोहिं अंग लगाया । सतगुरु मोहिं नाम दृढ़ाया ।।2।।
बैरागिन भइलो सतगुरु चरना । अनुरागिन भइलो नाम अनामा ।।3।।
सतगुरु मेरे दया विचारी । भौजल से पार उतारी ।।4।।
ब्रह्मंडी खेल दिखाया । अनहद धुन तार बजाया ।।5।।
घट तिमिर पुराना नाशा । शब्द उजास किया परकाशा ।।6।।
गुरु ऊपर बल बल जाऊँ । राधास्वामी नाम धियाऊँ ।।7।।

।। शब्द सातवाँ ।।

मैं भई अगम की दासी । मेरी सुरत हुई अविनासी ।।1।।
मैं शब्द किया घट मंजन । मन हारा डरा निरंजन ।।2।।

---

1. करतूत ।   2. गहरा ।

जोती अब चरन पखारे । संतन की ओट पुकारे ।।3।।
गुरु दया अनोखी कीन्ही । मोहिं चरन सरन गति दीन्ही ।।4।।
तन भीतर उलटी धाई । राधास्वामी हुए सहाई ।।5।।

॥ शब्द आठवाँ ॥

सुर्त भरी अगम जल गगरी । मैं देखी राधास्वामी तेरी नगरी ।।1।।
मेरी प्रीत लगी अब जिगरी[1] । मैं चढ़ी गगन की डगरी ।।2।।
मेरी दूर हुई ममता अब मगरी[2] । मैं पहुंची सतगुरु मग[3] री ।।3।।
गुरु कहा शब्द जा पग[4] री । हँगता की उतरी पगड़ी ।।4।।
माया की इज़्ज़त बिगड़ी । राधास्वामी चरन तू तक री ।।5।।

॥ शब्द नवाँ ॥

गुरु नाम रटूँ अंग अंग से । गुरु आरत करूँ उमँग से ।।1।।
मैं रँगी प्रेम के रंग से । दुख दूर हुए दिल तँग से ।।2।।
में छूटी जगत कुरँग से । मन शोभित नाम सुरँग से ।।3।।
मैं हटी नाम और नँग से । मैं तरी आज गुरु संग से ।।4।।
मेरा काज किया गुरु ढँग से । मैं पहुंची चाल विहँग से ।।5।।
मैं जीती काल निहँग[5] से । मैं मिली जाय ओअं से ।।6।।
अब निकसी जाल उचँग[6] से । सुरत साफ़ हुई कुल ज़ंग[7] से ।।7।।
सुर्त लगी जाय सोहं से । राधास्वामी छुड़ाया अहं से ।।8।।

॥ शब्द दसवाँ ॥

गुरु चरन प्रीत मन रंगा । अब सब से हुआ असंगा ।।1।।
मन मारा संशय भंगा । चित शुद्ध हुआ अब चंगा[8] ।।2।।
अब मिटा काल का दंगा । डर रहा न नाम और नंगा[9] ।।3।।
आरत अब सजूँ अभंगा । मेरे प्रेम भरा अंगा अंगा ।।4।।
मेरी परखे न कोइ उमंगा । मैं पकड़ा सतगुरु संगा ।।5।।

---

1. अन्तरी। 2. माया। 3. रास्ता। 4. मिल। 5. मगर-मच्छ। 6. तरंगें।
7. मैल। 8. अच्छा। 9. लाज।

मैं भौजल पार उलंघा[1]। मेरी सुरत उड़ी जस चंगा[2]।।6।।
मैं घट में न्हाया गंगा। मैं छोड़ा मन परसंगा[3]।।7।।
मन घोड़ा बाँधा तंगा। अब मिट गइ ममता पंगा[4]।।8।।
सब मेटी चित्त उचंगा। हौं[5] जाली जस जोत पतंगा।।9।।
गुरु चरन मिला आलंबा[6]। सतगुरु का सीखी ढंगा।।10।।
गुरु चरन प्रेम मैं मंगा[7]। राधास्वामी दीन्ह उतंगा।।11।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

मन बनियां बनत[8] बनाई। घट भीतर तोल तुलाई।।1।।
नैनन के पलड़े धारे। सुरत निरत डोर गठिया रे।।2।।
नभ डंडी पकड़ धरा रे। सुखमन का फुंदन लगा रे।।3।।
जहाँ शब्द जिन्स तोला रे। मैं पाया आज नफ़ा रे।।4।।
गुरु कीन्ही दात अपारे। अस बनिज किया जग आ रे।।5।।
मेरी हटिया माल भरा रे। मैं करूँ यही व्योपारे।।6।।
मोहिं बाँट मिले द्वारे। मैं तोलूँ वस्तु सम्हारे।।7।।
मेरे सतगुरु शाह पियारे। मेरी साख बढ़ी सब हारे।।8।।
राधास्वामी खरा करा रे। खोटा घट दूर निकारे।।9।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

गुरु का मैं दामन पकड़ा। छोड़ूँ नहिं अब तो जकड़ा।।1।।
तू मत कर मुझ से रगड़ा। मैं छोड़ा जग का झगड़ा।।2।।
मैं मारा मन और पकड़ा। मेरे गुरु ने किया मोहिं तकड़ा[9]।।3।।
मैं छोड़ा काया छकड़ा[10]। फिर कर्म द्वार से निकरा।।4।।
मैं मारा मन का मकड़ा। तब काल देख बहु अकड़ा[11]।।5।।
अब कटा क्रोध का लकड़ा। और मरा लोभ का बकरा।।6।।
मैं देखा गगन दमकड़ा[12]। राधास्वामी नाम चमकड़ा।।7।।

---

1. छलांग मार गया। 2. पतंग। 3. साथ। 4. लँगड़ी। 5. अहंकार।
6. सहारा। 7. मांगा। 8. बनाव। 9. बलवान। 10. गाड़ी। 11. ऐंठा।
12. चमकीला।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

गुरु मोहिं भेद दिया पूरा । सुरत संग बाजा घट तूरा ।।1।।
हुआ मन तन में अब सूरा । लखूँ मैं नभ चढ़ शशि सूरा ।।2।।
खुला अब घाट अगम नूरा । हटाया काल करम दूरा ।।3।।
दिखाया राधास्वामी पद मूरा । तियागा जगत लगा कूड़ा ।।4।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

मैं सुनूं क्या नित घट की । गुरु भेद दिया धुन में अब अटकी ।।
अब सुरत चढ़ी पहुंची नभ सटकी । मेरी फूट गई कर्मन की मटकी ।।2।।
फिर काम क्रोध डारे सब पटकी । सुर्त सहसकँवल चढ़ झटकी[1] ।।3।।
मन माया धर धर झटकी[2] । आसा और तृष्णा जग की पटकी ।।4।।
गुरु ख़बर जनाई अंतर पट की । सुर्त जग से छिन छिन हटकी ।।5।।
गुरु की मति धारी दुर्मत खटकी[3] । सुर्त मगन हुई धुन सुन सर[4] तट[5] की ।।
मन खेली कला उलट ज्यों नटकी । राधास्वामी गाई गति उलट पलट की।।

।। शब्द पंद्रहवाँ ।।

सोच ले प्यारी अस मिला जोग । गुरु दया करी सब मिटे रोग ।।1।।
सुर्त मिली शब्द से तज वियोग । यह मिला भाग से सहज जोग ।।2।।
गुरु बिन कब मिलता अस संजोग । अब करले निस दिन शब्द भोग ।।3।।
मन की मति त्यागी गया सोग । राधास्वामी किरपा करी जोग[6] ।।4।।
जो होना था सो हुआ होग । को सुने हमारी भूले लोग ।।5।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

गुरु ने मोहिं दीन्हा नाम सही । तृष्णा सकल दही ।।1।।
सतसंग करूँ सार रस पीऊँ । दृढ़ कर नाम गही ।।2।।
गुरु की महिमा कही न जावे । चरनन पकड़ रही ।।3।।
जिस पर दृष्टि पड़ी मेरे गुरु की । सोई पार गई ।।4।।

---

1. बढ़ाई । 2. गिराई । 3. अलग हुई । 4. मानसरोवर । 5. किनारा ।
6. लायक ।

धारा शब्द चली नित आवे । कूड़ा कर्म बही ।।5।।
काल टार मन मार निकारा । सहज सुहाग दई ।।6।।
मैं प्यारी सतगुरु अपने की । सत्तनाम की लार लई ।।7।।
धर को छोड़ अधर चढ़ चाली । सुरत हंसनी आज भई ।।8।।
काम क्रोध मद लोभ बिडारे । ममता खोय गई ।।9।।
धुर पद पहुंच शब्द संग पागी । मान ईर्षा सकल दही ।।10।।
राधास्वामी नाम दीवानी । अस्तुत कौन कही ।।11।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

आले[1] में देखा ताक़ जाला ।। टेक ।।
सेत दीप में श्याम किवाड़ी । सो मैं खोला ताला ।।1।।
घट में जाय गगन में पैठी । पिया अमीरस प्याला ।।2।।
चढ़ा अमल घट भीतर झूमी । भूमी[2] भार निकाला ।।3।।
अद्‌भुत ख़्याल दिखाया गुरु ने । मन मौजी का किया निवाला ।।4।।
चढ़ कर खोली सुन्दर खिड़की । झाँका गगन शिवाला ।।5।।
मूरख जीव जगत में भटकें । पूजें ईंट दिवाला ।।6।।
सतगुरु के हम चरन पखारे । सुन्न नगर में फेरें माला ।।7।।
तसबी[4] माला कसबी डाला । हम तो दूर निकाला ।।8।।
सतगुरु पूरे पाये हमने । हम निज नाम सम्हाला ।।9।।
राधास्वामी गुरु हमारे । वे हैं दीन दयाला ।।10।।
काल जाल से तुरत निकाला । कीन्हा मोहिं निहाला ।।11।।

।। शब्द अट्ठाहरवाँ ।।

सुरत ने शब्द गहा निज सार । आज घट कुल का हुआ उधार ।।1।।
नाम का पाया रंग अपार । जीव ने धरा हंस औतार ।।2।।
दूध और पानी कीन्हा न्यार । दूध फिर पीया तन मन वार ।।3।।

---

1. ताक । 2. धरती यानी देह । 3. ग्राम । 4. माला ।

छोड़िया पानी विपत बिडार । नित्त मैं पीती रहूं सुधार ।।4।।
काल को डाला बहुत लताड़ । चरन गुरु पकड़े आज सम्हार ।।5।।
नाम संग हो गइ सूरत सार । मानसर न्हाई मैल उतार ।।6।।
चुगूँ मैं मोती शब्द विचार । गुरु ने खोला घाट दुवार ।।7।।
धुनन को छाँट लिया मन मार । घाट घट भीतर पड़ी पुकार ।।8।।
नाम गुरु लीन्हा मोहिं निकार । छोड़िया सारा जगत लबार[1] ।।9।।
किया अब राधास्वामी जगत उधार । जिऊँ मैं राधास्वामी चरन पखार ।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

मालिनी लाई हरवा गूँथ । प्रेमिन डाले फुलवा जूँथ ।।1।।
गुरुन से पाई नाम विभूत[2] । आरती जोड़ी लागा सूत ।।2।।
हुआ मन गगन माहिं अवधूत[3] । करे अस सेवा होय सपूत ।।3।।
भगाये गुरु ने घट के दूत । चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत ।।4।।
काल को डाला छिन छिन कूट । मोह दल भागा लीन्हा लूट ।।5।।
गया सब तन से नाता टूट । काल बल डाला सब ही कूत[4] ।।6।।
गुरु ने दीन्हा अमृत क्रूत[5] । राधास्वामी दूर किया कलबूत[6] ।।7।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

दिखाया रूप मनोहर गुरु ने । मेरी दृष्टि खुली पहुंची धुर घर में ।।1।।
निज भेद दिया सतगुरु ने । धुन धमक सुनी नभपुर में ।।2।।
मेरे हरख हुई अति उर में । मैं उलट चली अब सुर[7] में ।।3।।
चढ़ घोर सुना अन्दर में । मैं झाँकी जा मंदिर में ।।4।।
मैं पाइ मौज सुन्दर में । गुरु चरन धरे अब सिर में ।।5।।
मैं धाई सुन्न शिखर में । अब पाये पुरुष अजर मैं ।।6।।
लग राधास्वामी हुई अमर मैं । मैं न्हाई अमी नहर में ।।7।।

---

1. झूठा । 2. बड़ी कला । 3. साधु । 4. तौल । 5. अहार । 6. देह से । 7. धुन ।

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

धुबिया गुरु सम और न कोय । चदरिया धोई सूरत जोय[1] ॥1॥
मैल सब काढ़ा निर्मल होय । कहूं क्या गुरु की महिमा सोय ॥2॥
घाट पर बैठे दीखें मोहिं । सुरत मैं डारी चरन समोय ॥3॥
धार अब आई कसमल[2] खोय । चटक कर दीन्ह चदरिया धोय ॥4॥
शब्द संग लागी प्रेमी होय । भेद राधास्वामी पाया गोय[1] ॥5॥

॥ शब्द बाईसवाँ ॥

चलो री सखी अब आलस छोड़ । सुनो अब चढ़कर घट में घोर ॥1॥
काल जो देवे कुछ झकझोर[4] । भुजा उस डारो तुरत मरोड़ ॥2॥
दया गुरु सुन लो घट का शोर । अमीरस पीओ नभ में ज़ोर ॥3॥
बोल जहाँ परखो दादुर मोर । मेघ जहाँ गरजत घोरम घोर ॥4॥
शब्द धुन परखी सूरत जोड़ । करम का कलसा डाला फोड़ ॥5॥
द्वार अब खोला ताला तोड़ । मिला भंडार अगम का मोर[5] ॥6॥
भगाये घट के सब ही चोर । गही मैं निज धुन की अब डोर ॥7॥
राधास्वामी डारा मन को तोड़ । चरन मैं परसे दोउ कर जोड़ ॥8॥

॥ शब्द तेईसवाँ ॥

सूरमा सुरत हुई गुरु देख प्रताप ॥ टेक ॥
सुरत शब्द की करूँ कमाई । पाऊँ अपना आप ॥1॥
गगन मंडल अब झाँकन लागी । कर कर सूरत साफ़ ॥2॥
चढ़ी अधर में देख उधर में । परमातम को आतम पात ॥3॥
करम कटाने भरम नसाने । जन्म जन्म के छूटे पाप ॥4॥
सुन्न शिखर पर पहुंची सूरत । करती अजपा जाप ॥5॥
अजब धाम पाया मैं सजनी । कौन करे यहाँ तोल और नाप ॥6॥
राधास्वामी खेल दिखाया । वोही हैं मेरे मा और बाप ॥7॥

---

1. स्त्री । 2. मैल । 3. गुप्त । 4. झकोला । 5. मुझे ।

।। शब्द चौबीसवाँ ।।

कुमतिया दूर हुई, गुरु हुये दयाल।
सुमतिया दान दई, गुरु किया निहाल ।।1।।
सरन गुरु आन लई, तज मन का जाल।
मूल को पकड़ लिया, तज डारी डाल ।।2।।
नाम धन पाय गई, तज झूठा मान।
गुरु संग लाग रही, देख अचरज ख़्याल ।।3।।
परम पद पाय गई, चढ़ सुखमन नाल।
भर्म सब काट दिये, और मारा काल ।।4।।
काल अब थकित हुआ, अब पाया हाल[1]।
राधास्वामी दूर किये, मेरे सब दुख साल[2] ।।5।।

।। शब्द पच्चीसवाँ ।।

सुरत उठ जागी चरन सम्हार । गुरु संग लागी रूप निहार ।।1।।
बचन सुन त्यागी मनसा ख्वार । सुरत हुई रागी[3] शब्द सम्हार ।।2।।
अमीरस पीवत नभ के द्वार । छोड़ कर भागी जगत लबार ।।3।।
पकड़ कर आई गुरु दरबार । सरन गह बैठी तन मन वार ।।4।।
हंस होय चुगती मुक्ता सार । नाम रस पागी सूरत नार ।।5।।
काल संग तोड़ा नाता झाड़ । दयाल घर पहुंची सतगुरु लार ।।6।।
मिले राधस्वामी किरपा धार । छुटे सब संगय गया संसार ।।7।।

।। शब्द छब्बीसवाँ ।।

मंगल मूल आज की रजनी[4] । महिंमा कहूं कौन सुन सजनी ।।1।।
आनँद छाय रहा नभ धरनी । रोम रोम अमृत रस भरनी ।।2।।
तिमिर हटावन धारे चरनी । रूप सुहावन पाइ मैं सरनी ।।3।।
अमी धार लागी अब झिरनी । सुरत निरत लागी घट घिरनी ।।4।।

---

1. अन्तर की हालत। 2. पीड़ा कष्ट। 3. अनुरागी। 4. रात।

गगन मंडल लागी अब चढ़नी । बिन गुरु कौन करे यह करनी ।।5।।
ता ते सरन गुरु की पड़नी । मिर्ग टले और भागी हिरनी ।।6।।
भान मध्य पहुंची जा किरनी । सुरत अड़ी जा अब नहिं गिरनी ।।7।।
राधास्वामी भेद दिया कर निरनी । मैं नहिं उन चरनन से फिरनी ।।8।।

।। शब्द सत्ताईसवाँ ।।

शोभा देखुँ मैं अब गुरु की । नैन निहारूँ खिड़की धुर की ।।1।।
ख़बर जनाऊँ फिर सुर[1] की । जान गई गति अब उर उर की ।।2।।
मो को कहें सभी दुर दुर[2] की । मैं गही टेक गुरु गुरु की ।।3।।
राधास्वामी गति गाई ऊपर की । सुरत तजी मैं इस मरपुर[3] की ।।4।।

।। शब्द अट्ठाईसवाँ ।।

दौड़त गई गगन के घेर । तन को छोड़ लिया मन फेर ।।1।।
जहाँ शब्द अनाहद लीन्हा हेर[4] । ज़ीना[5] चढ़ कर सुनी इक टेर[6] ।।2।।
काल करम दोउ कीन्हे ज़ेर[7] । चढ़ आई मैं आज सुमेर ।।3।।
धुन पाई मैं अब अति नेर[8] । जल्दी करी लगी नहिं देर ।।4।।
गीदड़ से गुरु कीन्हा शेर । हेर हेर धुन घट में हेर ।।5।।
छोड़ी मन की सभी लगेड़[9] । सुरत हुई अब धुन की चेर ।।6।।
अंतर दृष्टि लाई फेर । दूर हटाया पापन ढेर ।।7।।
अब सतगुरु की होगई मेहर । मिट गया आज काल का क़हर[11] ।।8।।
लगी नहीं कुछ मुझे अबेर । मैं चढ़ पहुंची बहुत सबेर ।।9।।
तन मन झगड़ा सभी निबेड़[12] । मिला भक्ति भंडार कुबेर ।।10।।
बैरियन की खाल लई उधेड़ । मानसरोवर न्हाई नहर ।।11।।
मन का सभी मिटाया फेर । राधास्वामी लिया मन घेर ।।12।।

।। शब्द उन्तीसवाँ ।।

गुरु संग खेलूँ निस दिन पास । करूँ मैं अचरज बिमल बिलास ।।1।।

---

1. धुन। 2. फटकार। 3. मृत्यु लोक। 4. ढूँड लिया। 5. सीढ़ी। 6. आवाज़।
7. अधीन। 8. निकट। 9. लगाव। 10. चेली। 11. डंड। 12. निपटा कर।

सुखी होय करती चरन निवास । हुआ मोहिं गुरु का अति विश्वास ।।
गुरु बिन और नहीं कोइ आस । मिली अब नाम रतन की रास ।।3।।
धियाऊँ पल पल स्वाँसो स्वाँस । काल और कर्म हुए दोउ नास ।।4।।
जगत से रहती सहज उदास । मिली अब पदवी दासन दास ।।5।।
करे अब सूरत नभ पर बास । शब्द का पाया परम प्रकाश ।।6।।
लगन अस रहती बारह मास । चरन मैं पकड़े गुरु के ख़ास ।।7।।
द्वार घट खोला चढ़ आकाश । काल मुरझाया सूखा मास ।।8।।
हुआ अब घर में दीप उजास । मिला निज सूरज संग आभास[1] ।।9।।
कहूं क्या महिमा शब्द ख़वास[2] । गहे[3] जो पावे अमर अवास[4] ।।10।।
करूं अब आरत राधास्वामी रास । शब्द का दीपक कीन्हा चास[5] ।।11।।

।। शब्द तीसवाँ ।।

गुरु मूरत मेरे मन बस गइयां । तन धन वारूं बल बल जइयां ।।1।।
अस पिया संग सुहागिन भइयां । अटल सुहाग नाम धुन पइयां ।।2।।
करम भरम सब दूर बहइयां । जगत जाल जंजाल कटइयां ।।3।।
अब चढ़ सुरत श्याम[6] घर अइयां । सेत दीप की दमक दिखइयां ।।4।।
सहस कँवल दल मोह दलइयां । काम क्रोध मद दूर करइयां ।।5।।
घंटा संख नाद सुन लइयां । पाँच तत्त्व रंग सूक्षम पइयां ।।6।।
लीला अद्भुत गुरु लखइयां । अब आगे को डगर[7] चलइयां ।।7।।
बंकनाल का द्वार खुलइयां । त्रिकुटी घाट मौज दरसइयां ।।8।।
गुरु मूरत जहां सूर ललइयां[8] । सुन्न शिखर चढ़ कर्म जलइयां ।।9।।
महासुन्न महिमा क्या कहियां । भँवरगुफा चढ़ बंस बजइयां ।।10।।
सत्तनाम धुन बीन सुनइयां । अलख अगम जा सुरत नचइयां ।।11।।
निज कर राधास्वामी दास कहइयां । अब आरत पूरन करवइयां ।।12।।

---

1. छटा, झलक। 2. गुन। 3. पकड़े। 4. घर। 5. जगाया। 6. तीसरा तिल। 7. रास्ता। 8. लाल।

।। शब्द इकतीसवाँ ।।

सोच रही री मौज की बतियां । सुर्त रतियां[1] कँवल बिलास ।।1।।
उमँग प्रेम छबि लखियाँ । अब हियरे बढ़त हुलास ।।2।।
निमख[2] निमख अटकी दृग शोभा । निरख रही परकाश ।।3।।
भीजत मन सीझत नृत न्यारी । धावत निज आकाश ।।4।।
आवत घोर सुनत निस[3] बासर[4] । उलट फिराया स्वांस ।।5।।
चेतन होत सोख तम सागर । पावत अगम निवास ।।6।।
चंद चकोर मगन प्रीतम रस । ज्यों जल मीना बास ।।7।।
जगे भाग कल[5] कालख[6] नासे । पाया सुख विश्वास ।।8।।
अधर पियारी चढ़ी अटारी । छूट गई जम फाँस ।।9।।
राधास्वामी दरस दिवानी । बैठी चरनन पास ।।10।।

।। शब्द बत्तीसवाँ ।।

मेरे पिया की अगम हैं गतियां । मैं कैसे कैसे गाऊँ ।।1।।
कोइ मर्म न पावत रतियां[7] । क्योंकर मन लाऊँ ।।2।।
धुन ध्यान लगावत रतियां[8] । चुन चुन धुन लाऊँ ।।3।।
तिल ताकत[9] फेर उलटियां । घट दीप[10] जगाऊँ ।।4।।
लिख भेजूँ पिया को पतियां[11] । क़ासिद[12] पहुंचाऊँ ।।5।।
विरह अग्नि जलावत नितियां । घर घाट न पाऊँ ।।6।।
राधास्वामी भाग पलटियां । कर्म काट जलाऊँ ।।7।।

।। शब्द तैंतीसवाँ ।।

पिया दरसत भइ री निहाल । हाल क्या बरनूँ अपना ।।1।।
काल गति दूर निकारी । जग लागा सुपना ।।2।।
घट में धुन अवगत जागी । खोया तन तपना ।।3।।
सुर्त सीतल सरवर पाया । शब्दारस मगना ।।4।।

---

1. रत्त रही है। 2. पल। 3. रात। 4. दिन। 5. काल के। 6. क्लेश, दुख। 7. रत्ती भर। 8. प्रेम के साथ। 9. देख कर। 10. जोत। 11. चिट्ठी। 12. चिट्ठी ले जाने वाला।

बिन साध न कोई जाने । नित घट में जगना ।।5।।
तन धरती अब हम त्यागी । पहुंची चढ़ गगना ।।6।।
अब लाज तुम्हें राधास्वामी । मैं हो गइ सरना ।।7।।

।। बचन अड़तीसवाँ ।।

।। बारहमासा ।।

।। असाढ़ मास पहला ।।

हाल दुख सुख सहने जीव का संसार में मन और माया के संग भरम कर और वर्णन कष्ट और क्लेश का जो कि बिना सतगुरु और नाम भक्ति के अन्त समय में जमदूतों के हाथ से सहता है ।

प्रथम असाढ़ मास जग छाया । आसा धर जिव गर्भ समाया ।।1।।
आस आड़ ले जीव भुलाया । घर को भूल दुक्ख अति पाया ।।2।।
कर्म वेग[1] ने बाहर डाला । माया कीन्हा बहु जंजाला ।।3।।
बाल अवस्था अति दुख पावे । बेदन[2] भारी नित्त सतावे ।।4।।
मुख बोले ना सैन चलावे । काहू दुख अपना न जनावे ।।5।।
दुख में रोवे अति बिल्लावे । मात पिता बुधि काम न आवे ।।6।।
दुख कुछ है औषध कुछ करि हैं । उलट पलट संतापे दे हैं ।।7।।
बालपना अति दुख में बीता । भई किशोर खेल मति लीता ।।8।।
मात पिता चाहें पढ़वाना । यह रहे निस दिन खेल दिवाना ।।9।।
मार पीट पितु मात घनेरी । वह भी दुख की भारी ढेरी ।।10।।
यह भी दिन दुख ग़फलत बीते । सुक्ख ना पाया रहे अब रीते ।।11।।
तरून अवस्था आवन लागी । मन तरंग अब छिन छिन जागी ।।12।।
चाह उठी तब करी सगाई । ब्याह हुआ घर नारी आई ।।13।।
नारि देख मन अति हरषाना । बेड़ी भारी सो नहिं जाना ।।14।।

---

1. जोर । 2. दुक्ख, दर्द ।

मात पिता का हक़ सब भूले । दिन और रात नारि संग झूले ।।15।।
घटती चली लगन पितु माता । नारि पुत्र संग मन अति राता ।।16।।
फ़िकर पड़ा उद्यम का जबही । दर दर भरमे दुख अति सहही ।।17।।
स्वान समान करी गति अपनी । धन का सुमिरन धन की जपनी ।।18।।
धन पाया तो हुआ अनंदा । अन-मिलते पड़ा दुख का फंदा ।।19।।
गृह कारज अब नित्त सतावें । कुल और जाति बहुत भरमावें ।।20।।
सब का बोझ भार सिर लीन्हा । अब तड़पे जस जल बिन मीना ।।21।।
मूरख ने यह भार उठाया । अब दुक्खन से बहु घबराया ।।22।।
भरमत फिरे सुक्ख के कारन । सुख नहिं मिला हुआ दुख दारुन ।।23।।
किये अपने को बहु पछतावे । पर अब कछू पेश नहिं जावें ।।24।।
कल कलेश बहु वर्षन लागे । वर्षा ऋतु असाढ़ अब जागे ।।25।।
मोर पपीहा भर्म त्रास के । रोग सोग दुख मोह आस के ।।26।।
बोलन लागे चहुंदिस घेरी । उमड़ी घटा मानो रात अँधेरी ।।27।।
भक्ति चन्द्रमा सूरज ज्ञाना । छिप गये दोनों घोर समाना ।।28।।
अज्ञान अँधेरा अति घट छाया । लोक गया परलोक गँवाया ।।29।।
यह भी बीते दुख में सब दिन । वृद अवस्था आई छिन छिन ।।30।।

।। दोहा ।।

वृद्धाई बादल उमड, घेर लिया तन खंड़ ।
लोभ नदी बाढ़न लगी, तृष्णा अति परचंड ।।31।।
बुद्धि हीन बल छीन होय, वर्षा तन से होत ।
नैन नीर मुख नासिका, बहन लगे जस सोत ।।32।।

।। सावन मास दूसरा ।।

सावन आया मास दूसरा । सास[1] मरी घर आया ससुरा[2] ।।1।।
काली घटा श्याम मन हूआ । श्याम कंज में यह मन मूआ ।।2।।

---

1. माया, इच्छा । 2. ब्रह्म ।

गरजे बादल चमके बिजली । मनसा मोड़ी आसा बदली[1] ।।3।।
सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं । धुन अनंत शब्दन से चालीं ।।4।।
बृद्ध अवस्था चेतन लागी । काल आय जब सिर पर गाजी ।।5।।
जमपुर से अब सतगुरु राखें । बहुतक जीव मौत दर ताकें ।।6।।
काल घटा जब आकर छाई । धारा मौत अधिक बर्षाई ।।7।।
जीव अनेक रहे घबराई । काया गढ़ न दीन्ह ढवाई ।।8।।
जमपुर जाय जीव पछतावें । जम के दूत तिन बहुत सतावें ।।9।।
नाना कष्ट दें हैं पल पल में । फिर फाँसी डालें गल गल में ।।10।।
कुम्भी नर्क माहिं दें ग़ोते । जीव सहें दुख अति कर रोते ।।11।।
वे निरदई[2] दया नहिं लावें । अति त्रास से जिव मुरझावें ।।12।।
अगिन खंभ से फिर लिपटावें । हाय हाय कर तब चिल्लावें ।।13।।
सुने न कोई मुश्किल भारी । सर्पन माला ले गल डारी ।।14।।
मार मार चहुं दिस से होई । पति गति अपनी सब विधि खोई ।।15।।
नर्कन में अति त्रास दिखावें । फिर चौरासी ले पहुंचावें ।।16।।
गुरु भक्ती बिन यह गति पाई । नर देही सब बाद गँवाई[3] ।।17।।
जो जो भजन भक्ति से चूके । तिन के मुख जम पल पल थूके ।।18।।
ऐसी कुगति होयगी सब की । जो नहिं धारें सतगुरु अब की ।।19।।
सतगुरु बिना कोई नहिं बाचे । नाम बिना चौरासी नाचे ।।20।।
धन्य भाग हम सतगुरु पाया । चढ़ी सुरत मन गगन समाया ।।21।।
सुन्न मँडल जाय झूला झूली । सावन मास लिया फल मूली ।।22।।
सखियाँ सब मिल गावन लागीं । माया ममता देखत भागीं ।।23।।
सभी सुहागिन झूलें घर घर । पिया अपने को हिरदे धर धर ।।24।।
पिया बिमुख तरसें बहु नारी । जिनके पति परदेश सिधारी ।।25।।
तिनको सावन काला नागा । डस डस खावे लागे आगा ।।26।।
बाहर वर्षा रिमझिम होई । घट में उनके अग्नि समोई ।।27।।
अग्नि लगी मानो तन मन फूँका । उनके भावें पड़ गया सूखा ।।28।।

1. बदल गई । 2. कठोर, बे रहम । 3. बे फ़ायदा खोई ।

तीज त्योहार कछू नहिं भावे । मन में दुख, नहिं हर्ष समावे ।।29।।
पिया बिन सावन कैसा आया । जेठ तपन जस जीव जलाया ।।30।।

।। दोहा ।।

जीव जले विरह अग्नि में, क्योंकर शीतल होय ।
बिन वर्षा पिया बचन के, गई तरावत खोय ।।31।।
जिन को कंत मिलाप है, तिन मुख बरसत नूर ।
घट सीतल हिरदा सुखी, बाजे अनहद तूर ।।32।।

।। भादों मास तीसरा ।।

चेतावनी जीवों को कि मनमत कर्म और धर्म और जप तप और मूर्ति पूजा और तीर्थ व्रत से जीव की चौरासी नहीं छूटेगी जब तक कि संत सतगुरु और साध का संग और उनसे भेद नाम का लेकर अंतरमुख अभ्यास न करेंगे और वर्णन जुक्ति और भेद सुरत शब्द मार्ग का

भादों मास तीसरा जारी । दौं[1] लागी सब जग को भारी ।।1।।
तीन ताप का बड़ा पसारा[2] । इक इक जीव घेर कर मारा ।।2।।
काम क्रोध मद लोभ सतावें । माया ममता आग लगावें ।।3।।
जल जल जीव पड़े घबरावें । छूटन की कोइ जुगत न पावें ।।4।।
कोई कर्म कोइ धर्म सम्हारे । कोइ विद्या कोइ जप तप धारे ।।5।।
कोइ मंदिर जा मूरत पूजे । कोइ तीरथ कोइ बर्त में जूझे ।।6।।
यह सब भूले भटका खावें । कोई न इनकी भूल मिटावें ।।7।।
क्या पंडित क्या भेख गृहस्ती । यह सब बसे काल की बस्ती ।।8।।

---

1. प्यास लगने से जो भटकी लगती है । 2. फैलाव ।

चौरासी में बहु भरमावें । नर्क स्वर्ग के धक्के खावें ।।9।।
जो कोई उन से कहे समझाई । उलटी मानें करें लड़ाई ।।10।।
कलजुग कर्म धर्म नहिं कोई । नाम बिना उद्धार न होई ।।11।।
नाम भेद है अति कर झीना[1] । बिन सतगुरु काहू नहिं चीन्हा[2] ।।12।।
अपने में सब गये भुलाई । नाम अगम कोइ भेद न पाई ।।13।।
जो सतगुरु पूरे मिल जाते । तो वे भेद नाम का गाते ।।14।।
नाम रहे चौथे पद माहीं । यह ढूँढ़ें तिरलोकी माहीं ।।15।।
तीन लोक में नाम न पावें । चौथे लोक में संत बतावें ।।16।।
तीन लोक में बसता काल । चौथे में रहे नाम दयाल ।।17।।
सोई नाम संतन से पावे । बिना संत नहिं नाम समावे ।।18।।
अब मारग का भेद बताऊँ । आँख खुले तो भेद लखाऊँ ।।19।।
पहिले सुर्ती नैन जमावे । घेर फेर घट भीतर लावे ।।20।।
विरह होय तो यह बन आवे । मेहनत करे तो कुछ फल पावे ।।21।।
देखे तिल पिल जोत समावे । अनहद सुन मन बस में आवे ।।22।।
मन बस होय तो सूरत जागे । निरख अकाश आत्मा पागे ।।23।।
शब्द पकड़ परमातम निरखे । आतम जाय परमातम परखे ।।24।।
परमातम से आगे जाई । सुन्न महल में बैठक पाई ।।25।।
सुन्न के परे महासुन लेखा । महासुन्न पर खिड़की देखा ।।26।।
खिड़की आगे चौक अपारा । चौक परे निरखा सत द्वारा ।।27।।
सत्तपुरुष सतनाम कहाई । सत्तलोक निज पाया आई ।।28।।
यह मारग संतन ने भाखा । भेद प्रगट कुछ गोय[3] न राखा ।।29।।
लोक भेद बस जो जिव होई । सो परतीत न लावे कोई ।।30।।

।। दोहा ।।

लोक वेद में जो पड़े, नाग पाँच[4] डस खायँ।

---

1. बारीक। 2. समझा। 3. गुप्त। 4. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।

जन्म जन्म दुख में रहें, रोवें और चिल्लायँ ।।31।।
जिन सतगुरु के बचन की, करी नहीं परतीत ।
नहिं संगत करी संत की, रोवें सिर पीट ।।32।।

।। क्वार मास चौथा ।।

आसक्त होना जीवों का मन और इन्द्रियों के भोगों में और भूलना अपने सत्तकुल को और प्रगट होना सत्तपुरुष दयाल का संत सतगुरु रूप धारन करके वास्ते उनके उद्धार के और उपदेश करना सुरत शब्द मार्ग का

क्वार महीना चौथा आया । जिव भौ सागर वार रहाया ।।1।।
पार न जावे वार रहावे । साध संत संग प्रीत न लावे ।।2।।
जगत भोग में रहे अधीना । रोग सोग दुख सुक्ख मलीना ।।3।।
ज्ञान वैराग भक्ति नहिं धारी । मोह राग हंकार पचा री ।।4।।
क्वारी सुरत करे व्यभिचारा । मन इन्द्री संग फिरती लारा ।।5।।
काम क्रोध में भरमत डोले । जड़ चेतन की गाँठ न खोले ।।6।।
सतसंग करे न सतगुरु सेवे । भाव भक्ति में मन नहिं देवे ।।7।।
काल चक्र क़ा पड़ा हिंडोला । ऊँच नीज खावे झकझोला ।।8।।
जन्म अनेक झूलते बीते । जम झोटन के सहे फ़ज़ीते[1] ।।9।।
धर्मराय नित करे ख़ुवारी[2] । नर्कन में भोगे दुख भारी ।।10।।
कर्म भार सिर ऊपर लादा । घेरे फिरे काल का प्यादा ।।11।।
प्यादों के संग इज्ज़त खोती । सत्तनाम कुल की थी गोती ।।12।।
गोत लजाया जाति गँवाई । तो भी मन में लाज न आई ।।13।।
लाज करी तो मन के कुल की । सुध भूली सब अपने कुल की ।।14।।
कुल इसका है सब से ऊँचा । संत बिना कोइ जहाँ न पहुंचा ।।15।।
शेष महेश रहे सब नीचे । ब्रह्म और पारब्रह्म रहे बीचे ।।16।।
सत्तपुरुष को लज्जा आई । संत औतार धरा जग माही ।।17।।

---

1. मुसीबतें । 2. कुगत ।

संत रूप धर जिव उपदेशें। बानी नाव बना जिव खेवें ।।18।।
सुरत अजान न बूझे बानी। फिर फिर डूबे कहा न मानी ।।19।।
भौसागर में ग़ोते खावे। मनमत ठान चौरासी धावे ।।20।।
संत बतावें सत की रीत। यह नहिं माने कुछ परतीत ।।21।।
बिन परतीत रीत नहिं पावे। जन्म जन्म चौरासी जावे ।।22।।
चौरासी से संत बचावें। उनका बचन न मन ठहरावे ।।23।।
मन के रंग फिरे बहुरंगी। ढंग न सीखे बड़ी कुढंगी ।।24।।
साध संत का ढंग नहिं सीखे। भोगे दुख रस चाखे फीके ।।25।।
रस फीके संसार के सबही। अंतर का रस अगम न लेही ।।26।।
स्वाँति पदरिया अंतर बरसे। सुरत लगावे तो मन सरसे[1] ।।27।।
शर्द चन्द्रमा अंतर दरसे। सुन्न की धुन्न जाय जब परसे ।।28।।
मोती चुने मानसरवर के। भोगे भोग मराल[2] नगर के ।।29।।
जो संतन के बचन सम्हाले। जाय त्रबेनी होय निहाले ।।30।।

।। दोहा ।।

होय निहाल सुन्दर लखे, सुने किंगरी नाद।
नाद सुरत होवत मगन, फिर खोजत पद आद ।।31।।
संत दया सतगुरु मया[3], पाया आद अनाद।
गति मति कहते ना बने, सुरत भई बिस्माद ।।32।।

।। कातिक मास पाँचवाँ ।।

वर्णन कँवलों का अंदर काया के और बड़ाई संत मते की

कातिक मास पाँचवाँ चला। सुरत शब्द गुरु चेला मिला ।।1।।
तक काया कँवलन विधि भाखी। कँवल दुवादस काया राखी ।।2।।
प्रथमे कँवल गनेश बिलासा। कँवल दूसरे ब्रह्मा बासा ।।3।।

---

1. खुश हो। 2. हंस। 3. कृपा।

कँवल तीसरे विष्णु प्रकाशा । चतुर्थ कँवल शिव शक्ति निवासा ।।4।।
आतम कँवल पाँचवाँ होई । छठा कँवल परमातम सोई ।।5।।
कँवल सातवें काल बसेरा । जोत निरंजन का वहाँ डेरा ।।6।।
कँवल आठवाँ त्रिकुटी माहीं । सूरज ब्रह्म बसे तेहि ठाहीं ।।7।।
नवाँ कँवल है दसवें द्वारे । पारब्रह्म जहँ बसे निरारे ।।8।।
महासुन्न में कँवल अचिंता । कँवल दसम का वहाँ बरतंता ।।9।।
कँवल इकादश भँवरगुफा पर । द्वादस कँवल सत्तपद अंतर ।।10।।
खट चक्कर यह पिंड सँवारा । तीन चक्र ब्रह्मंड अधारा ।।11।।
तीन कँवल जो ऊपर रहे । संत बिना कोइ बरन न कहे ।।12।।
खष्ट कँवल तक जोगी आसन । नवें कँवल जोगेश्वर बासन[1] ।।13।।
पिंड ब्रह्मंड का इतना लेखा । योगी ज्ञानी यहाँ तक देखा ।।14।।
आगे का कोई भेद न जाने । तीन कँवल सो संत बखाने ।।15।।
कोइ छः तक कोइ नौ तक भाखे । सर्व मते इन भीतर थाके ।।16।।
बड़ा संत मत सब से आगे । संत कृपा से कोइ कोइ जागे ।।17।।
जो पहुंचे द्वादस अस्थाना । सोई कहिये संत सुजाना ।।18।।
संतन का मत सब से ऊँचा । जो परखे सोई धुर पहुंचा ।।19।।
पहुंचे की क्या करूँ बड़ाई । सब मत उसके नीचे आई ।।20।।
जो मन में परतीत न देखे । तो कबीर गुरु[2] बानी पेखे ।।21।।
तुलसी साहब का मत जोई । पलटू जगजीवन कहें सोई ।।22।।
इन संतन का देऊँ प्रमाना । इनकी बानी साख[3] बखाना ।।23।।
जोग ज्ञान मत इनहूं भाखा । पुनि संतन मत ऊँचा राखा ।।24।।
जोगी और वेदान्ती भाई । संतन मत परतीत न लाई ।।25।।
वेद कतेब[4] न पहुँचे तहँ हीं । थके बीच में रस्ते माहीं ।।26।।
बार बार कह कर समझाऊँ । संतन का मत ऊँचा गाऊ ।।27।।

---

1. बासा, ठहराव । 2. नानक सहिब । 3. गवाही । 4. क़ुरान ।

जो परतीत न लावे या की । जानो काल ग्रसी बुधि वा की ।।28।।
वे कहा जानें मत संतन को । एक मिलावें काँच रतन को ।।29।।
उनसे यह मत खोल न कहिये । सैन जनाय मौन गहि रहिये ।।30।।

।। दोहा ।।

संत मता सब से बड़ा, यह निश्चय कर जान ।
सुफ़ी और वेदान्ती, दोनों नीचे मान ।।31।।
संत दिवाली नित करें, सत्तलोक के माहिं ।
और मते सब काल के, योंही धूल उड़ायँ ।।32।।

।। अगहन मास छठवाँ ।।

महिमा सतगुरु की और विधि सतसंग और भक्ति की और चढ़ कर पहुँचना सुरत का सत्तलोक में उन की मेहर और दया से

आया मास अगहन अब छठा । अघ[1] की हानि हुई मल घटा ।।1।।
मन हुआ निर्मल चित हुआ निश्चल । काम क्रोध गये इन्द्री निष्फल ।।2।।
धरन छोड़ सुर्त चढ़ी अकाशा । शब्द पाय आई महाकाशा ।।3।।
शब्द संग नित करे बिलासा । देखे अचरज बिमल तमाशा ।।4।।
छोड़ा यह घर पकड़ा वह घर । खोया जग को पाया सतगुरु ।।5।।
जब से सतगुरु सरना लीन्हा । सत्तनाम धुन घट में चीन्हा ।।6।।
धन सतगुरु धन उनकी संगत । जिन प्रताप पाई मैं यह गत ।।7।।
कर सतसंग काज किया पूरा । पाप नसे[2] मानो खाया धतूरा ।।8।।
पाप पुन्य दोउ गये नसाई । भक्ति भाव जिव हृदय समाई ।।9।।
अब यह सतसंग गुरु का पावे । हिल मिल चरन माहिं लिपटावे ।।10।।
चरन सेव चरनामृत पीवे । गुरु परशादी खा नित जीवे ।।11।।
दर्शन करे बचन पुनि सुने । फिर सुन सुन नित मन में गुने ।।12।।

---

1. पाप । 2. नाश हुए ।

गुन गुन छाँट लेय उन सारा । सार धार तिस करे अहारा ।।13।।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई । जग भौ लाज अब गई नसाई ।।14।।
गुरु भक्ति जानों इश्क़ गुरू का । मन में धसा सुरत में पक्का ।।15।।
पक पक घट में गड़ा थाना । थान गाड़ अब हुआ दिवाना ।।16।।
गुरु का रूप लगे अस प्यारा । कामिन पति मीना जल धारा ।।17।।
सतसंग करना ऐसा चहिये । सतसंग का फल येही सही है ।।18।।
सतसंग सतसंग मुख से गावे । करें नित्त फल कछू न पावें ।।19।।
सतसंग महिमा है अति भारी । पर कोइ जीव मिले अधिकारी ।।20।।
अधिकारी बिन प्रगट नहीं फल । सतसंग तौ कीन्हा सब चल चल ।।21।।
चल चल आये सतगुरु आगे । बचन न पकड़ा दरस न लागे ।।22।।
सतसंग और सतगुरु क्या करें । सो जिव भौजल कैसे तरें ।।23।।
पत्थर पानी लेखा बरता । जल मिसरी सम मेल न करता ।।24।।
बाहर का संग जब अस होई । सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई ।।25।।
तब अंतर का सतसंग धारे । सुरत चढ़े असमान पुकारे ।।26।।
बोले अर्श और गरजे गगना । बैठा कुरसी मन हुआ मगना ।।27।।
ला-मुक़ाम पाया लाहूत । छोड़ा नासूत मलकूत जबरूत ।।28।।
हाहूत का जाय खोला द्वारा । हूतलहूत और हूत सम्हारा ।।29।।
हूत मुक़ाम फ़क़ीर अख़ीरी । रूह सुरत जहाँ देती फेरी ।।30।।

।। दोहा ।।

अल्लाहू त्रिकुटी लखा, जाय लखा हा सुन्न ।
शब्द अनाहू पाइया, भँवरगुफा की धुन्न ।।31।।
हक़्क़ हक़्क़ सतनाम धुन, पाई चढ़ सचखंड ।
संत फक़र बोली जुगल, पद दोउ एक अखंड ।।32।।

।। पूस मास सातवाँ ।।

वर्णन स्वरूप सुरत और शब्द का और उपदेश सतगुरु भक्ति और सतसंग का जो कि मुख्य उपाय प्राप्ति मेहर और दया का है

पूस महीना जाड़ा भारी । कर्म भर्म ज्यों फूस जला री ।।1।।
जल जल ढेर हुआ जब भारी । प्रेम पवन से तुरत उड़ा री ।।2।।
मोह सीत[1] ने चित को घेरा । सूर विवेक[2] किया घट फेरा ।।3।।
फेरा करत भक्ति गुरु जागी । सुरत भई अनहद अनुरागी ।।4।।
राग भोग सब दूर निकारा । विमल विरह वैराग सम्हारा ।।5।।
सहज जोग गुरु दिया बताई । सुरत शब्द मारग लखवाई ।।6।।
झीनी सुरत रूप नहिं दरसे । परसे शब्द जाय मन घर से ।।7।।
सुन्न शिखर जाय रूप दिखाना । गगन मंडल के पार ठिकाना ।।8।।
रूप सुरत का दरसा ऐसा । बिन अनुभव क्यों कर कहूं कैसा ।।9।।
अनुभव से वह जाना जाई । शब्द बिना अनुभव[3] नहिं पाई ।।10।।
सुरत शब्द दोउ अनुभव रूपा । तू तो पड़ा भर्म के कूपा ।।11।।
करनी करकर सुरत चढ़ाओ । शब्द मिले अनुभव घर पाओ ।।12।।
बिना शब्द अनुभव नहिं होई । अनुभव बिन समझे नहिं कोई ।।13।।
सुरत शब्द दोउ रूप अमोला । सुन्न चढ़े जिन निज कर तोला ।।14।।
ताते करनी गुरु बताई । सतगुरु दया लेव संग भाई ।।15।।
मेहर दया करनी करवाई । करनी कर बहु मेहर बढ़ाई ।।16।।
करनी मेहर संग दोउ चलते । तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते ।।17।।
अस संजोग मौज से होई । मौज उपाव नहीं अब कोई ।।18।।
पच पच थक थक सब ही हारे । मौज बिना क्यों करें बिचारे ।।19।।
इक उपाव कुछ मन में आया । पर थोड़ा सा चित्त समाया ।।20।।
जब जब संत जगत में आवें । ढूंढ भाल उनके ढिंग जावें ।।21।।
जाय करें नित सेवा दर्शन । हाज़िर रहें गिरें उन चरनन ।।22।।
नित्त हाज़िरी उनकी करते । मन से दीन लीन होय रहते ।।23।।
पर यह बात बड़ी अति झीनी । संत करावें निंदा अपनी ।।24।।

---

1. सरदी। 2. विचार। 3. प्रत्यक्ष।

निन्दा चौकीदार बिठाई । कोई जीव धसने नहिं पाई ।।25।।
बिरला जीव होय अनुरागी । निंदा से वह छिन छिन भागी ।।26।।
निंदा सुन सुन चित नहिं धारे । संतन की यह जुगत विचारे ।।27।।
जस जाने तस मन समझावे । संतन सन्मुख ज्यों त्यों आवे ।।28।।
ऐसी दृढ़ता जाकर होई । तो फिर संत मौज करें सोई ।।29।।
संत मौज फिर कोइ न टारे । ईश्वर परमेश्वर सब हारे ।।30।।

दोहा

संत डारिया बीज, घट धरती जेहि जीव के ।
को अस समरथ होय, जो जारे उस बीज को ।।31।।
कोई काल के माहिं, वह बीजा अंकुर गहे ।
जब जब आवें संत, अंकूरी उन संग रहे ।।32।।

सोरठा

वह सीचें निज पौद, होय भक्त वह पेड़ सम ।
फल लागें अति से सरस, भोगें सतगुरु मेहर से ।।33।।
कारज कीन्हा पूर, संत धूर हिरदे धरी ।
सूर हुआ मन चूर, नूर तूर घट में प्रगट ।।34।।

।। माघ मास आठवाँ ।।

वर्णन लीला और विलास मुक़ामात का और उनके रास्ते का अंतर में

माघ महीना अति रस भरा । काया बन मन गुलशन[1] हरा ।।1।।
चमन[2] चमन फुलवारी खिली । बाग़ बाग़ नहरें अब चलीं ।।2।।
गुरु भक्ति और पौद प्रेम की । क्यारी धीरज दया नेम की ।।3।।
अस अस लीला देखी घट में । मन माली सींचे छिन छिन में ।।4।।
नैनन आगे पचरंग फूल । पल पल निरखत तिल तिल झूल[3] 5।।
तत्त्व पृथवी भिन्न होय दरसा । ऋतु बसंत फूली मन सरसा ।।6।।
झलक जोत और उमंड घटा की । रिम झिम बरसे बूंद अमी की ।।7।।

---

1. फुलवारी । 2. बग़ीचा । 3. झूलती है ।

सहस धार दल सहस कँवल में । उठें तरंगें फैलें मन में ।।8।।
मन चढ़ चला महल अपने में । उल्टा पहुंचा गगन मंडल में ।।9।।
गगन मंडल लीला इक न्यारी । शब्द गुरु की खिल रही क्यारी ।।10।।
मूल नाम और शाखा धुन की । फूली जहँ फुलवार त्रिगुन की ।।11।।
यह लीला घट माहिं निहारी । महिमा नाम कहा कहुं भारी ।।12।।
सरगुन नाम और सरगुन रूपा । वहाँ तक देखा मन का सूता ।।13।।
अब आगे सूरत चढ़ चली । पैठी[1] जाय सुखमना नाली ।।14।।
सुखमन में निज मन दरसाना । निज मन आगे निरगुन जाना ।।15।।
यह निरगुन वह सरगुन देखा । दोनों घाट भिन्न कर पेखा ।।16।।
अब आगे पाँजी[2] इक गाऊँ । गंधर्प नाल के मध्य चढ़ाऊँ ।।17।।
नाल भुवंगन बायें त्यागी । दहने नाल धुन्धरी जागी ।।18।।
जागत नाल काल मुख मूंदा । घाट अठासी नाका रूँधा ।।19।।
सिंह पौल[3] ढिंग झँझरी निरखी । सेत पदमनी जाली परखी ।।20।।
सुन्न ताल जहँ धुन भंडारा । छजली कजली दीप निहारा ।।21।।
सागर नागर जाकर झाँका । कुरम शेष अक्षर जहाँ थाका ।।22।।
जहाँ सुरंगी दीप झरोखा । सुरत अड़ी जाय द्वारा रोका ।।23।।
संदली चंदली चौकी डारी । सुरत मंडली पाट खुला री ।।24।।
कुंडल दीप छबीली रमना । दामिन दीप सोत का झरना ।।25।।
नीलम कुंड रतन नल पाल । महाकाल रचिया जहां जाल ।।26।।
कंकन घाटी सुरत झमाई । जाल काल सब दूर पड़ाई ।।27।।
सेत धरन जहाँ लाल अकासा । हंस छावनी देख बिलासा ।।28।।
यह पाँजी निरखी निज धामी । बिमल दीप बैठे जहाँ स्वामी ।।29।।
पोहप नगर जहाँ अमृत धाम । हंस बसें पावें विश्राम ।।30।।

---

1. धसी। 2. रास्ता। 3. दरवाजा।

॥ दोहा ॥

बैठक स्वामी अद्‌भुती, राधा निरख निहार।
और न कोइ लख सके, शोभा अगम अपार॥31॥
गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहिं पावई, जहाँ कोई विश्राम॥32॥

॥ फागुन मास नवाँ ॥

उतरना सुरत का बीच नौ द्वार के और फँस जाना
मन और इन्द्रियों का संग करके भोगों में और
फिर आना सत्तपुरुष दयाल का संत सतगुरु
रूप धार कर और पहुँचाना सुरत का
निज घर में शब्द मार्ग रास्ते की कमाई से
और वर्णन भेद रास्ते और
मुक़ामात का

फागुन मास रँगीला आया। धूम धाम जग में फैलाया॥1॥
घर घर बाजे गाजे लाया। झाँझा मजीरा डफ़ बजाया॥2॥
यह नर देही फागुन मास। सुरत सखी आइ करन बिलास॥3॥
मन इन्द्री संग खेली फाग। उत से सोई इत को जाग॥4॥
जग में आ संजोग मिलाया। लोक लाज कुल चाल चलाया॥5॥
भोग रोग परिवार बँधानी। फगुआ खेली होली ठानी॥6॥
धूल उड़ाई छानी ख़ाक। पाप पुन्य संग हुइ नापाक॥7॥
इच्छा गुन संग मैली भई। रंग तरंग बासना गही॥8॥
फल पाया भुगती चौरासी। काल देस जहँ बहुत तिरासी॥9॥
आस त्रास माहिं अति फँसी। देख देख तिस माया हँसी॥10॥
हँस हँस माया जाल बिछाया। निकसन का कोइ राह न पाया॥11॥
तब संतन चित दया समाई। सत्तलोक से पुनि चलि आई॥12॥

ज्यों त्यों चौरासी से काढ़ा । नर देही में फिर ले डाला ।।13।।
चरन प्रताप सरन में आई । तब सतगुरु अतिकर समझाई ।।14।।
तुझको फिर कर फागुन आया । सम्हल खेलियो हम समझाया ।।15।।
सुरत कहे सुनो संत सुवामी । कस खेलूँ कहो अंतरजामी ।।16।।
तब सतगुरु इक भेद लखाया । सुरत जोग मारग बतलाया ।।17।।
सुरत चली अब खेलन होली । कर सिंगार बैठ धुन डोली ।।18।।
विरह अनुराग रंग घट लीन्हा । मन को संग ले तन तज दीन्हा ।।19।।
शब्द गुरु से पहले खेली । गगन चौक चढ़ त्रिकुटी लेली ।।20।।
त्रिकुटी माहिं बहुत दिन खेली । ओंकार संग कीन्हा मेली ।।21।।
लाल गुलाल रूप सुर्त पाया । तब सतगुरु सुन्न शब्द सुनाया ।।22।।
आगे बढ़ी चढ़ी ऊँचे को । उलट न देखे अब नीचे को ।।23।।
चल चल पहुंची सत्तलोक में । फगुवा माँगे सत्तनाम से ।।24।।
गई जहाँ से फिर वहि आई । पद में अपने आन समाई ।।25।।
रंग रंग नित खेलत होली । जो होना था सो अब हो ली[1] ।।26।।
छोड़ा पिंडा छोड़ा अंडा । खंड खंड कीन्हा ब्रह्मंडा ।।27।।
निज घर अपने जाकर बसी । सत्त शब्द धुन बीना रसी[2] ।।28।।
हंस रूप अब धारा असली । देह रूप धर बहुतक फँसली[3] ।।29।।
काल निरंजन तोड़ी पसली । हो गइ सत्तनाम गल हँसली[4] ।।30।।

दोहा

जब आवे सुर्त देह में, देह रूप ले ठान ।
जब चढ़ उलटे सुन्न को, हंस रूप पहिचान ।।31।।
सुरत रूप अति अचरजी, वर्णन किया न जाय ।
देह रूप मिथ्या तजा, सत्त रूप हो जाय ।।32।।

---

1. हो गया । 2. रस से भरी । 3. फँसी । 4. नाम गहने का ।

।। चैत मास दसवाँ ।।

चैत महीना आया चेत । बाँधा सतगुरु भौ में सेत[1] ।।1।।
जीव चिताये जो थे वार[2] । भौसागर से कीन्हे पार ।।2।।
भौसागर अति गहिर गंभीर । सतगुरु पूरे बाँधी धीर ।।3।।
तन मन धन की लई जगात[3] । शिष्य उतारे गहिकर हाथ[5] ।।4।।
सुरत बहे थी नौ[5] की धार । ताहि चढ़ाया गगन मँझार ।।5।।
गगन जाय धुन शब्द सिहारी[6] । देखा रूप जोत अति भारी ।।6।।
जोत निहारे देखे तारा । बंक नाल का खोला द्वारा ।।7।।
संख सुना और धुन ओंकारा । शब्द गुरु का घाट निहारा ।।8।।
छोड़ा मन अब चेती सूरत । त्रिकुटी चढ़ निरखी गुरु मूरत ।।9।।
गुरु चेला मिल आगे चाली । मानसरोवर शब्द सम्हाली ।।10।।
हंसन साथ करी जाय यारी । सुरत सखी हुइ सबकी प्यारी ।।11।।
सुन्न शहर में कुछ दिन बसी । फिर चढ़ ऊपर आगे धसी ।।12।।
महासुन्न इक नगर अपारा । कहूं कहा अचरज बिस्तारा ।।13।।
धुन जहाँ चार गुप्त अति झीनी । संत बिना कोइ परख न चीन्ही ।।14।।
अचिंत दीप तहं दायें रहता । सहज दीप दस पालँग बसता ।।15।।
महिमा दीप कहा कहुं भारी । संतोष दीप तहाँ बायें सँवारी ।।16।।
तहँ इक झिरना अजब रचानी । सुरत निरत से गही निसानी ।।17।।
देख निशान मध्य को धाई । भँवरगुफा की गली समाई ।।18।।
तिस आगे मैदान दिखाना । सत्तलोक जहाँ पुरुष पुराना ।।19।।
निज पद पाय पुरुष से मिली । देख गली आगे फिर चली ।।20।।
अलख लोक में किया बसेरा । अगम लोक जाय डाला डेरा ।।21।।
शोभा वहाँ की क्या कह गाऊँ । अरब खरब शशि सूर लजाऊं ।।22।।
अब अनाम जहाँ रूप न नामा । संत करें जाय वहाँ विश्रामा ।।23।।

---

1. सतगुर ने भवसागर में पुल बांधा । 2. आर । 3. महसूल । 4. हाथ पकड़ कर । 5. नौ द्वार । 6. पकड़ी ।

सुरत चेत पाया बिसमाद[1] । नहिं जहाँ बानी नहिं जहाँ नाद ।।24।।
आदि न अंत अनंत अपार । संतन का वह निज दरबार ।।25।।
संत सभी वा घर से आवें । काल देश से जीव चितावें ।।26।।
जो चेते तिस ले पहुंचावें । सुरत शब्द मारग बतलावें ।।27।।
जीव चेत जो माने कहना । ताको फिर दुख सुख नहिं सहना ।।28।।
मानो बचन करो कुछ करनी । सुरत निरत की धारो रहनी ।।29।।
सतसंग करो गहो गुरु रंग । सुरत चढ़ाओ गगन उमंग ।।30।।

।। दोहा ।।

सतगुरु संत दया करी, भेद बताया गूढ़[2] ।
अब सुन जीव न चेतई, तो जानो अति मूढ़ ।।31।।
भौसागर धारा अगम, खेवटिया गुरु पूर ।
नाव बनाई शब्द की, चढ़ बैठे कोइ सूर ।।32।।

।। बैसाख मास ग्यारहवाँ ।।

वर्णन भेद काल मत और दयाल मत का और प्रगट होना सत्तलोक का और रचना तीन लोक की और सबब फैलने काल मत का और गुप्त होना संत मते का

बैसाख महीना सिर पर आया । साख गई जिव हुआ पराया ।।1।।
काल पक्ष सब जीवन धारी । पुरुष दयाल की सुद्धि बिसारी ।।2।।
सुरत देश अपना बिसराना । काल देश इन अपना जाना ।।3।।
काल रची तिरलोकी सारी । दयाल रचा सतलोक सम्हारी ।।4।।
तीन लोक काल का थाना । चौथा लोक दयाल अस्थाना ।।5।।
काल दिया जीवन को धोका । चौथे पद से सब को रोका ।।6।।
दयाल पुरुष का भेद न दीना । कर्म कांड में जीव अधीना ।।7।।
अपनी पूजा सब विधि गाई । जीव चले चौरासी भाई ।।8।।
त्रैगुन रसरी जीव बँधाना । ब्रह्मा विष्णु महेश पुजाना ।।9।।

---

1. विशेष समाधि अवस्था । 2. गुप्त ।

देवी देवा पत्थर पानी । पाप पुण्य में जीव उरझानी ।।10।।
काल धरे जग दस औतारा । कला दिखाय जीव धर मारा ।।11।।
आपहि राम आप हुआ रावन । आपहु कंस आप जसुनन्दन ।।12।।
आपहि बल[1] और आपहि बावन । आपहि कच्छ मच्छ धर धारन ।।13।।
परसराम और नरसिंह देख । प्रहलाद भक्त होय बाँधी टेक ।।14।।
खंभ फाड़ बाहर होय निकला । रक्षक कला दिखाई सकला[2] ।।15।।
चाँद सूर्य और गौर गनेशा । पुजवाये और राहु होय ग्रसा ।।16।।
अस अस कला अनंत असंखा । कहाँ लग बरनूँ भेद सबन का ।।17।।
काल लिया सब लोकन घेरी । दयाल पुर्ष कोइ मर्म न हेरी ।।18।।
काल कला परचंड दिखाई । जीव चले सब उसकी राही ।।19।।
संतन का कोइ भेद न जाना । संत मता रहा गुप्त छिपाना ।।20।।
संत मता खुल कर अब गाऊँ । देकर कान सुनो समझाऊँ ।।21।।
नहिं पताल नहिं मृत अकाशा । पाँच तत्त्व नहिं तिरगुन स्वाँसा ।।22।।
नहिं शिव शक्ति न पुरुष प्रकिरती । जोत निरंजन नहिं परकिरती ।।23।।
तारा मंडल सूर न चंदा । पिंड ब्रह्मंड रचा नहिं अंडा ।।24।।
कुरम न शेष नहीं ओंकारा । माया ब्रह्म न ईश्वर धारा ।।25।।
आतम परमातम नहिं दोई । सुन्न महासुन रचा न सोई ।।26।।
अल्ला ख़ुदा रसूल न होते । पीर मुरीद न दादा पोते ।।27।।
वेद पुरान क़ुरान न कहते । मस्जिद काबा बांग[3] न देते ।।28।।
नहिं त्रिकाल सन्ध्या न नमाज़ा । तीरथ बर्त नेम नहिं रोज़ा ।।29।।
कर्मी शरई थे नहिं भाई । जोगी ज्ञानी खोज न पाई ।।30।।

दोहा

तपसी[4] हबसी[5] ज़ाहिदा[6] नहिं आबिद[7] माबूद[8] ।
क़ुतुब पैग़म्बर औलिया, कोई न थे मौजूद ।।31।।

---

1. एक दैत्यराज बलि। 2. सब। 3. अजान। 4. तप करने वाला। 5. प्राणों को रोकने वाला। 6. जती। 7. भक्त। 8. भगवंत।

स्वर्ग नर्क दोज़ख़[1] इरम[2], अर्ज़[3] समा नहिं होय।
मुसलमान हिन्दू नहिं, जैन न ईसा कोय।।32।।

।। जेठ मास बारहवाँ ।।

जेठ महीना जेठा भारी। जीवन हिरदे तपन करारी[5]।।1।।
संत दयाल जीव हितकारी। भेद कहें अब निज कर भारी।।2।।
नहिं ख़ालिक़[6] मख़लूक़[7] न ख़िल्क़त। कर्ता कारन काज न दिक़्क़त।।3।।
दृष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत। वाच[8] लक्ष[9] नहिं पद न पदारथ।।4।।
ज़ात सिफ़ात न अव्वल आख़िर। गुप्त न परगट बातिन ज़ाहिर।।5।।
राम रहीम करीम न केशो। कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।।6।।
सिमृति शास्त्र न गीता भागवत। कथा पुरान न वक्ता कीरत।।7।।
सेवक सेव[10] न दास न स्वामी। नहिं सतनाम न नाम अनामी।।8।।
कहाँ लग कहूं नहीं था कोई। चार लोक रचना नहिं होई।।9।।
जो कुछ था सो अब कह भाखूँ। उनमुन सुन्न बिसमाधी राखूँ।।10।।
हैरत हैरत हैरत होई। हैरत रूप धरा इक सोई।।11।।
उनमुन रूप सदा वह रहता। उनमुन दशा सदा वहि बरता।।12।।
वा की गति कोई नहिं जाने। वह अपनी गति आप बखाने।।13।।
संत तूप होय जग में आया। अपना भेद आप उन गाया।।14।।
आपहि आप न दूसर कोई। उठी मौज परगट सत सोई।।15।।
तीन देश मौज ने रचे। अगम अलख सतनाम होय हँसे।।16।।
धुन धधकार उठी इक भारी। सात सुरत रचना उन धारी।।17।।
सांचा बन जामन पुन दीन्हा। सुरत परस्पर रचना कीन्हा।।18।।
सोहं सुरत आदि यों बोली। सोहं सोहं सम्पट खोली।।19।।
सहज धीर जामन तहां दीन्हा। ओं सोहं गर्भ धुन चीन्हा।।20।।
मूल सुरत जहां पर प्रगटाई। मूल द्वार पर बैठी आई।।21।।

---

1. नर्क। 2. स्वर्ग। 3. पृथ्वी। 4. आकाश। 5. सख्त। 6. पैदा करने वाला। 7. रचना। 8. जो वाणी द्वारा कहा जावे। 9. जो देखा जावे। 10. जिसकी सेवा की जाय।

शांत सुरत तहं कीन्ह बिलासा । हंस रचे कर दीप निवासा ।।22।।
दीपन शोभा क्या कहुं भारी । हंस कुतूहल[1] करें अपारी ।।23।।
पुरुष दरस और लीला न्यारी । देख देख अनुभव गति धारी ।।24।।
जुग केते और मुद्दत केती । कही न जावे उनकी गिनती ।।25।।
रचना सत्य सत्य वह देशा । नहिं व्यापे जहाँ काल कलेशा ।।26।।
हंस सभा समरथ तहँ बैठे । लीला देखें रहें इकट्ठे ।।27।।
कँवल द्वार दल धारा निकसी । श्याम रूप अचरज होय दरसी ।।28।।
पुरुष देख अचरज लौलीना । सेत माहिं जस श्याम नगीना ।।29।।
सब हंसन मिल अर्ज़ी कीन्हा । कौन कला यह हम नहिं चीन्हा ।।30।।
पुरुष कहा तुम करो विलासा । यह कल रचिहै और तमाशा ।।31।।

दोहा

हंसन मन अचरज भया, कहा करे विस्तार ।
पुरुष सेव नित ही करै, मन कुछ औरहि धार ।।32।।
धारा वह बढ़ती चली, कला न रोकी ताहि ।
पुरुष मौज ऐसी हुई, बोली कला बनाय ।।33।।

रचना रचूँ और मैं न्यारी । यह रचना मोहिं लगे न प्यारी ।।34।।
तीन लोक रचना मैं करूँ । राज पाय ध्यान तुम धरूँ ।।35।।
पुरुष कला को दिया निकासी । निकस कला कीन्हा अति त्रासी ।।36।।
पुरुष दया कर जुगत बनाई । कला दूसरी और उपाई ।।37।।
पीत वर्ण वह कला सिंगारी । दीन्ही अज्ञा पुरुष निहारी ।।38।।
एक काल कुछ अंस दयाली । दोनों मिल कीन्हा कुछ ख़्याली ।।39।।
आये मानसरोवर तीरा । अक्षर की देखी वहँ लीला ।।40।।
लीला देख कला चित त्रासा । तब अक्षर ने दिया दिलासा ।।41।।

दोहा

जोत निरंजन दोउ कला, मिल कर उत्पति कीन ।
पाँच तत्त्व और चार खान, रच लीन्हे गुन तीन ।।42।।

---

1. लीला ।

गुन तीनों मिल जगत का, किया बहुत विस्तार।
ऋषि मुनी नरदेव अदेव[1], रच बाढ़ो हंकार ।।43।।

।। सोरठा ।।

ब्रह्मा विष्णु महेष, और चौथी जोती मिली।
भर्म जाल की फांस, जीव न पावें निज गली ।।44।।

आप निरंजन हुए नियारे । भार सृष्टि सब इन पर डारे ।।45।।
दीप रचा इक अपना न्यारा । ता में कीन्हा बहु विस्तारा ।।46।।
पालँग आठ दीप परमाना । जोग आरंभ कीन विधि नाना ।।47।।
स्वाँस खैंच निज सुन्न चढ़ाये । धुन प्रगटी और वेद उपाये ।।48।।
वेद मिले ब्ह्मा को आये । देख वेद ब्रह्मा हरखाये ।।49।।
मुख चारों से धुन उचारी । ताते वेद हुए पुनि चारी ।।50।।
ऋषि मुनि मिल फिर किया पसारा । कर्म धर्म और भर्म सम्हारा ।।51।।
सिमृत शास्तर बहु विधि रचे । कर्म धर्म में सब मिल पचे ।।52।।
खोज निरंजन किनहुं न पाया । वेदहु नेति नेति गुहराया[2] ।।53।।

।। दोहा ।।

दर्श निरंजन ना मिला, किया ज्ञान अनुमान[3]।
फिर आगे सतपुरुष का, क्यों कर करें प्रमान ।।54।।
ताते यह मत संत का, रहा गुप्त जग माहिं।
गुन तीनों मानें नहीं, जीवहु मानें नाहिं ।।55।।

।। सोरठा ।।

संत पुकारें भेद, वेद पशु मानें नहीं।
अब क्या करें उपाय, जीव पड़े सब भर्म में ।।56।।

तिरलोकी का नाथ कहाया । सो भी उनके हाथ न आया ।।57।।
स्वर्ग नर्क चौरासी फेरा । जन्म जन्म पड़े काल के घेरा ।।58।।

---

1. राक्षस। 2. वर्णन किया। 3. कयास।

कोइ कोइ चेतन माहिं समाने । सो भी फिर जनमे भौ आने ।।59।।
चौथा लोक संत दरबारा । निश्चय ता का काहू न धारा ।।60।।
संत दया अपने चित धरें । जीव न मानें तो क्या करें ।।61।।
भेद बतावें बानी कहें । देह धरें और जग में रहें ।।62।।
जीव चितावें किरपा धार । बहुत उठावें जीवन भार ।।63।।
तौ भी कोइ परतीत न लावे । चौथा पद आसा नहिं धारे ।।64।।
बारह मास बखान पुकारे । कह कह कर अब हम भी हारे ।।65।।
हार जीत कुछ हमरे नाहीं । मूरख पर इक तान चलाई ।।66।।
सत्य सत्य सत्य मैं कही । अब कहने को कुछ नहिं रही ।।67।।
राधास्वामी नाम उचारो । भक्ति भाव अब मन में धारो ।।68।।
संतन की जिन मन परतीत । और धारी जिन सतसंग रीत ।।69।।
सतसंग करे नित्त जो आई । उन प्रति यह बानी हम गाई ।।70।।

।। मँगल दूसरा ।।

गुरु मेरे दीनदयाल, करी किरपा घनी ।
सुन कर बानी सार[1] सुरत धुन में तनी ।।1।।
प्रेम प्रीत चित धार, दास शोभा बनी ।
मैं औगुन की खान, कहूं कहाँ लग गिनी ।।2।।
शब्द भेद अति गूढ़, थके जहाँ मुनि जनी ।
कोई न पावे भेद, छान ऐसी छनी ।।2।।
सत्तनाम सतपुरुष, अगम पूरन धनी ।
संत बतावें भेद, सार भाखें पुनी ।।4।।
जीव न माने नेक, काल बुधि उन हनी[2] ।
प्रेमी सतसंगी कोई, जिन खोई मानमनी ।।5।।

---

1. बारहमासा ।   2. नाश करी ।

नहिं बूझे संसार, चाल मनमुख सनी।
जौहरी जाने कोय, परख मानिक मनी।।6।।
पोत[1] गहे जग मूढ़, छाँड़ हीरा कनी।
क्योंकर कहूं बुझाय, बात ऐसी बनी।।7।।
सुरत हंसनी जाय, शब्द मोती चुनी।
कोइ बिरले गुरुमुख जीव, ठान ऐसी ठनी।।8।।
खोला अगम दुवार, मर्म जाना जिनी।
गई रात अँधियार, हुआ चाँदन दिनी।।9।।
सतगुरु किरपा धार, साख ऐसी भनी[2]।
मार लिया मन खेत, सोई सूरा रनी।।10।।
आदि नाम को भूल, हुई सब की ऋनी[3]।
ममत चदरिया पहिन, कर्म ने जो बिनी[4]।।11।।
मंत्र दिया गुरु देव, काल, मारा फनी।
राधास्वामी नाम, चित्त दे अब सुनी।।12।।

।। बचन उनतालीसवाँ ।।

।। बसंत व होली ।।

।। बसंत ।।

।। शब्द पहला ।।

देखो देखो सखी अब चल बसंत । फूल रही जहाँ तहाँ बसंत।।1।।
घट घट बाजत धुन मृदंग । बीन बाँसरी और मुहचंग।।2।।
खुल गये परदे अब निसंग । लागी लगन मेरी होय अभंग।।3।।
मोहिं मिल गये राधास्वामी पूरे संत । अब बाजत हिये मैं धुन अनंत।।4।।
मेरे घट में रँभा[5] बहु नचंत । मानो इन्द्रपुरी आई अचिंत।।5।।
अस औसर बाढ़ी अति उमंग । मन कूदन लागा जस तुरंग[6]।।6।।
सब घट से निकसे रूप रंग । पद पायो अगम अनाम अरंग।।7।।

---

1. कांच के मनके। 2. बयान करी। 3. देनदार। 4. बुनी। 5. अप्सरा। 6. घोड़ा।

मैं ने मारो काल महा भुजंग । मो पै बरसन लागे गुल सुरंग ।।8।।
मोहिं राधास्वामी दीन्हों ऐसो ढंग । मैं तो उड़न लगो अब जैसे चंग ।।9।।
मेरे घट में धारा बही है गंग । न्हाओ न्हाओ सिमट कर सबहि संग ।।10।।
स्वामी किरपा कीन्ही अति उतंग[1]। मैं तो सबसे हो गई अब असंग ।।11।।
अब छुट गया मेरा सब कुसंग । मैं ने पायो अद्भुत आदि रंग ।।12।।
मेरा बिछ गया चौ-महले पलंग । मैं ने छोड़ दिया नौ महला तंग ।।13।।
मेरे नाश हुए मन के कुरंग । मोहिं मिल गया ऐसा साध संग ।।14।।
मुझे पिया ने मिलाया अपने अंग । मैं ने धारा अपने पिया का रंग ।।15।।
कहँ लग बरनूँ यह बसंत । मेरा पावे न कोई आदि अंत ।।16।।
मैं उबारे बहुतक जीव जंत । मेरा पावे न कोई परम मंत ।।17।।
मैं बरनूँ अपना आप तंत[2] । मैंने कर लिया घट का सब मथंत[3] ।।18।।
कोइ नहिं कथि है अस कथंत । मैंने भाखा अपना निज बृतंत ।।19।।
मैंने दूर किया सब नाम नंग । मेरी सुरत उड़ी जैसे पतंग ।।20।।
मैंने मार लई अब मन की जंग[4] । कोई कर न सके मेरा बाल बंक[5] ।।
मेरी मिट गई अब शीशे की ज़ंग । अब न रही मेरे कोइ उचंग ।।22।।
मैंने पाया अपना पिय निहंग[6] । अब आऊँ जाऊँ जस बिहंग[7] ।।23।।
मोहिं काल न परखे होय दंग । राधास्वामी लगाई यह सुरंग ।।24।।

।। शब्द दूसरा ।।

घट में खेलूँ अब बसन्त । भेद बताया सतगुरु सन्त ।।1।।
घर पाया मैं आदि अन्त । सुन सुन अनहद धुन अनन्त ।।2।।
कहूं कहा महिमा अतन्त[8] । बरनूं कैसे यह बृतन्त ।।3।।
सुरत निरत दोऊ जगन्त । चली जाय मारग बेअन्त ।।4।।
छुट गइ भीड़ भई एकन्त । सुरत शब्द का पाया तन्त[9] ।।5।।
काल करी बहुतक ठगन्त । दयाल सुनाया अपना मन्त ।।6।।
मन और माया दोउ जरन्त । चढ़ी पहुंची निज पन्थ ।।7।।

---

1. ऊँचे की । 2. भेद । 3. मथन, बिलोना । 4. लड़ाई । 5. टेढ़ा ।
6. बे परदा । 7. पक्षी । 8. अत्यन्त, बहुत । 9. तत्त, सार ।

घर छूटा फिर मिला जुगन्त[1] । पाय गई राधास्वामी कन्त ।।8।।

।। शब्द तीसरा ।।

खेल रही मैं नित बसन्त । सुरत निरत कर मिली हूं कंत ।।1।।
राधास्वामी चरन मेरे हिये बसंत । खेलत उन संग आदि अन्त ।।2।।
शब्द शोर घट में उठन्त । सुन्न शिखर पहुंची तुरन्त ।।3।।
उल्टत तिल देखत परन्त[2] । श्याम कंज जोती जगन्त ।।4।।
गगन मँडल पर बाजत तन्त[3] । घोर उठत छिन छिन अतन्त[4] ।।5।।
छाय रही जहाँ ऋतु बसंत । खेल रही सूरत इकंत ।।6।।
यह सतगुरु से पावे पंथ । चढ़ कर पहुंची महले संत ।।7।।
अमी धार जहाँ नित गिरंत । भींजत गुरुमुख होय निचिंत ।।8।।
देश अगम बानी बृतंत[5] । कोइ बिरले साधु घट मंथत ।।9।।
सोइ सोइ पावे यह रसंत । राधास्वामी गाया अगम मंत ।।10।।
खोला पाट रूप दरसंत । कोटि भान छबि भाषत संत ।।11।।
नौका मेरी पार लगंत । अलख अगम के पार चढ़ंत ।।12।।
राधास्वामी नाम गहा निज मंत । कँवल कियारी शब्द खिलंत ।।13।।

।। शब्द चौथा ।।

देखन चली बसंत अगम घर । देख देख अब मगन भई ।।1।।
सखियन साथ चली नभ ऊपर । शब्द गुरु संग लगन लगी ।।2।।
कँवलन क्यारी फूल सँवारी । पेख पेख अब गगन रही ।।3।।
सतगुरु सँघ[6] परखती पहुंची । कर्म बीज को अगिन दई ।।4।।
ममता मार अहँगता जारी । सुरत शब्द की सरन लई ।।5।।
अनहद राग सुने घट अंतर । नाम रसायन रसन रसी ।।6।।
सुखमन पार सुन्न घर पहुंची । भक्ति शिरोमन[7] परन[8] गही ।।7।।
सतगुरु किरपा सत पद पाया । राधास्वामी धरन[9] धरी ।।8।।

---

1. बहुत काल का, युगों के पश्चात् । 2. पार या ऊपर की तरफ़ । 3. बाजा । 4. अत्यन्त । 5. हाल । 6. मिलाप । 7. सब से उत्तम । 8. प्रतिज्ञा । 9. धारना ।

होली

।। शब्द पाँचवाँ ।।

अब खेलत राधास्वामी संग होरी । धरन गगन बिच शोर मचो री ।।1।।
चाँद सुरज तारागन मंडल । उतर उतर आये घर छोड़ी ।।2।।
शेषनाग और कुरम साज ले । चढ़ पताल आये कर जोड़ी ।।3।।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण । चार दिशा सब भइ इक ठौरी ।।4।।
सुर नर मुनि जोगी बैरागी । धूम धाम कुछ भइ है न थोड़ी ।।5।।
सागर कूप भरे सब रंग से । मेरू डंड पिचकारी छोड़ी ।।6।।
भींज रहीं सखियाँ सब संग की । बार बार रंग प्रेम निचोड़ी ।।7।।
समा बंधा लीला अति उमगी । काल बली अब जात ठगो री ।।8।।
सुरत अबीर[1] गुलाल शब्द का । अब सब के मुख जात मलो री ।।9।।
लोभ मोह अहंकार विकारी । घर इनका सब आज जलो री ।।10।।
धुन धधकार सुन्न की बरषा । मुख उनका अब जात न मोड़ी ।।11।।
अगम ख़ज़ाना मिला शब्द का । त्याग दिया धन लाख करोड़ी ।।12।।
सुन्न महल सतलोक अटारी । जाय चढ़ी और नाम लखो री ।।13।।
नइ नइ शोभा पुरुष पुराना । कहत न आवे बचन थको री ।।14।।
राधास्वामी खेल खिलाया । अनेक रूप जहाँ एक भयो री ।।15।।

।। शब्द छठा ।।

काया नगर में धूम मची है । खेल रही अब सूरत होली ।।1।।
छाय रही सतनाम निरख पद । लाय रही धुन परुष अतोली[2] ।।2।।
आसा मनसा कर पिचकारी । गुन गुलाल घट भीतर घोली ।।3।।
हँगता ममता दूर उड़ाई । प्रेम अबीर लिया भर झोली ।।4।।
संपति रंभा[3] नाच नची है । विपता नटनी अब मुख मोड़ी ।।5।।
रोग सोग दुख मार निकाले । धार लई मन में गुरु बोली ।।6।।

---

1. गुलाल या अबरक का महीन चर जिसे होली में लोग एक दूसरे पर डालते है ।
2. जिसकी तोल न हो सके । 3. अप्सरा ।

जन्म जन्म के फंदा काटे । खेली काल संग आँख मिचौली ।।7।।
भक्ति भाव रंग माट भराया । रंग रंगी मेरे मन की चोली ।।8।।
कुमति उड़ाय सुमति अब धारी । मार मार माया सिर धौली ।।9।।

।। शब्द सातवाँ ।।

उमंड घुमंड कर खेली होली । सुमति ज्ञान संग भर लई झोली ।।1।।
मार लई मैनें माया पोली । चढ़के चली अब प्रेम खटोली ।।2।।
गगन शिखर धुन निजकर तोली । जड़ चेतन की गाँठ सब खोली ।।3।।
सुरत निरत मेरी भई है अमोली । फेरूँ जैसे पान तमोली ।।4।।
मन तन लाल भया जस रोली[1] । सभी विकार डारे मैंने रोली[2] ।।5।।
मोह नींद मैं बहुतक सोली । अब राधास्वामी मेरी रंग दी चोली ।।6।।
भरी नाम धन से हिये नौली[3] । अब समझी सतगुरु की बोली ।।7।।
आसा मन्सा तन से डोली । अब नहिं करत काल मोसे ठोली[4] ।।8।।

।। शब्द आठवाँ ।।

मेरे गुरु ने खिलाई प्रेम संग होरी । मैं तो होय रही सब जग से बौरी ।।1।।
सील गुलाल अबीर छिमा का । ता से मैं भर लई झोरी ।।2।।
काम क्रोध दोउ खेलन आये । मार मार उनका मुख मोड़ी ।।3।।
सुरत निरत दोउ सखियाँ संग ले । शब्द खोज को चाली दौड़ी ।।4।।
सुखमन नाका जाय हम घेरा । बंकनाल पिचकारी छोड़ी ।।5।।
त्रिकुटी शब्द जाय हम पकड़ा । धूम धाम कुछ भई है न थोड़ी ।।6।।
हंस सभा जहँ मान-सरोवर । प्रगट भई माया की चोरी ।।7।।
किंगरी नाद होत धुन भारी । सुरत तार अपना नहिं तोड़ी ।।8।।
राधास्वामी दया रंग घट भरिया । जनम मरन दुख दूर करो री ।।9।।

।। शब्द नवाँ ।।

गुरु आन खिलाई घट में होली । धुन नाम लई तन अंतर खोली ।।1।।

---

1. लाल रंग । 2. रोल कर । 3. बसनी, बांसली – रूपया रखने की । 4. ठठोली ।

मन मार लई तिल ताला तोड़ी । सुर्त फेर लई दल अंदर जोड़ी ।।2।।
जुग बाँध लई गुरु से पट फोड़ी । पद पाय गई त्रिकुटी गढ़ दौड़ी ।।3।।
सुन जाय रही सुर्त घर जब मोड़ी । घर आय गई अपने भइ पोढ़ी ।।4।।

पंच इन्द्री पिचकारियाँ, भर उलटी छोड़ी ।
गुन तीनों की जेवरी[1], छिन माहिं जलोरी ।।5।।
हौंमें ममता छोड़ कर, चढ़ गगन चलोरी ।
बिखरी धुनें समेट कर, सब एक करो री ।।6।।
दृष्टि जोड़ नभ में धरो, तब जोत लखोरी ।
जोत फाड़ आगे धसो, फिर सुन्न तकोरी ।।7।।
इस सुनकी धुन सोध लो, जस शंख बजोरी ।
राधास्वामी एक पद, यह कह्यो भलो री ।।8।।

।। शब्द दसवाँ ।।

मेरी सुरत राधास्वामी जोड़ी । घट में अब खेलूँगी होरी ।।1।।
करम भरम की धूर उड़ाई । दुष्ट दूत सब का सिर फोड़ी ।।2।।
गगन मँडल में माट भराया । जुगत जतन कर मन को मोड़ी ।।3।।
अनहद धुन अब धमकन लागी । बिजली चमक और उठी घनघोरी ।।4।।
तन मन की सब सुद्ध गई है । जग से कुल नाता तोड़ी ।।5।।
काल जाल के टुकड़े कीन्हे । सुन्न मँडल तब सुरत बहोरी[2] ।।6।।
जम जंदार[3] खड़ा मेरे द्वारे । पल पल छिन छिन करत निहोरी[4] ।।7।।
जड़ चेतन की गाँठ खुलानी । ममत माया से तिनका तोड़ी ।।8।।
सुरत छड़ी[5] अब चढ़ी है अटारी । पकड़ गही अब धुन की डोरी ।।9।।
पंचमुखी पिचकारी छोड़ी । गई हूं पिया पै मैं दौड़ी दौड़ी ।।10।।
ऐसी रंगी मेरी सुरत चुनरिया । अगम पुरुष मोसे करत निठोरी[9] ।।11।।
धन राधास्वामी ऐसा खेला खिलाया । तब ऐसी मैंने खेली है होरी ।।12।।

---

1. रस्सी । 2. उलटी । 3. दूत, प्यादा । 4. खुशामद । 5. अकेली ।
6. ठठोली ।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

राधास्वामी घर बाढ़ो रंग । मैं तो खेलूँगी ऐसी होली उमंग ।।1।।
सुरत निरत की ले पिचकारी । राधास्वामी पै भर भर डारी ।।2।।
चाँद सुरज दोउ क़ुमक़ुम[1] कीन्हे । प्रेम गुलाल से भर भर लीन्हे ।।3।।
सुखमन हौज़ भरा अब भारा । बंकनाल का छुटा फुहारा ।।4।।
सहस[2] धार होय त्रिकुटी पारा । पहुंचा जाय सुन्न के द्वारा ।।5।।
हंसन से जाय खेली होरी । बहन लगी जहँ अमी की मोरी ।।6।।
अनहद बाजे अद्भुत बाजें । राधास्वामी खुल खुल गाजें ।।7।।
ऐसी होली खेलो मेरे भाई । सब संतन के जह मन भाई ।।8।।

।। शब्द बारहवाँ ।।

आओ री सखी जुड़ होली गावें । कर कर आरत परुष मनावें ।।1।।
तन मन क़ुमक़ुम भर भर मारें । छिड़क रंग राधास्वामी रिझावें ।।2।।
लाल गुलाल वस्त्र पहिनावें । देख देख रंग रूप निहारें ।।3।।
सुरत अबीर थाल भर लावें । नैनन की पिचकार छुड़ावें ।।4।।
राधास्वामी अपने हिये बिच धारें । उन संग निस दिन प्रेम बढ़ावें ।।5।।
धरन गगन बिच धूम मचावें । राधास्वामी अब ऐसी होली खिलावें ।।6।।
चाँद सूरज दोउ खैंच मिलावें । सुखमन नदियाँ रंग बहावें ।।7।।
सुरत चुनरिया रंग रंगावें । भींजत निरत खोज धुन पावें ।।8।।
दल बादल अब अधिक सुहावें । लाल लाल चहुं दिस घिर आवें ।।9।।
रंग भरे रंग ही बरसावें । अचरज लीला आन दिखावें ।।10।।
अस होली कहो कौन खिलावें । राधास्वामी भेद बतावें ।।11।।

---

1. कांच के गोले गुलाल आदि डालने के लिए । 2. हज़ार ।

।। बचन चालीसवाँ ।।

।। सावन, हिंडोला व झूला ।।

।। शब्द पहला ।।

सावन मास आस हुइ झूलन । गर्जत गगन मगन मन फूलन ।।1।।
सखियाँ सज सज आई ढँढूलन[1] । प्रेम भरी सुख सहज अमूलन[2] ।।2।।
कहा कहूं बतियाँ[3] नहिं खूलन[4] । देख देख छबि मन सुध भूलन ।।3।।
गर्जन धन और बिजली चमकन । श्याम घटा मानो अति गज हूलन[5] ।।4।।
देखत सूरत चढ़ी पद मूलन[6] । झूलत शब्द हिंडोल अतूलन[7] ।।5।।
सुन सुन धुन काटे सब सूलन[8] । मान-सरोवर मोती रूलन[9] ।।6।।
राधास्वामी कहत सरस यह सावन । देख देख सब करत ममूलन[10] ।।7।।

।। शब्द दूसरा ।।

सावन मास सुहागिन आई । अपने पिया संग झूलन धाई ।।1।।
श्याम घटा अब चहुं छाई । गर्ज गगन अति धूम मचाई ।।2।।
नई रागनी तान सुनाई । चमक धमक सँग खेल दिखाई ।।3।।
अमी धार छिन छिन बरषाई । सुखमन नदियाँ प्रेम भराई ।।4।।
गगन हिंडोला झोका लाई । सखियाँ संग की उमगत आई ।।5।।
रस भर भर पिया सँग लुभाई । दामिन[11] चमचम[12] अधिक सुहाई ।।6।।
मोर पपीहा रटन लगाई । अचरज बानी घोर सुनाई ।।7।।
राधास्वामी छबि निरखत हर्षाई । अजब समा सब देत बधाई ।।8।।

।। शब्द तीसरा ।।

सुरत तू चेत री, अब सावन आया ।
गगन चढ़ झाँक री, गुरु खेल दिखाया ।।1।।
जहां पड़ा हिंडोला नाम का, धुन डोर बँधाया ।
सखी सहेली संग ले, जग काम न आया ।।2।।

---

1. देखने । 2. अनमोल । 3. बातें । 4. खोलने वाली । 5. हाथी का झूलना । 6. मूल (आदि) । 7. अतोल । 8. सूल, कष्ट । 9. मोतियों का रोलना (चुगना) । 10. आनन्द । 11. बिजली । 12. चमक, चमक कर ।

मैं बिरहिन पिय दरस की, कहिं चैन न पाया।
अब खुल खेलूँ सुन्न में, गुरु भेद जनाया ।।3।।
रिमझिम वर्षा हो रही, मन मोर बुलाया।
पी की री बतियां सुन रही, मन चाव[1] बढ़ाया ।।4।।
घट में कर सिंगार, पिया को आन रिझाया।
सखियन साथ विलास यह, राधास्वामी गाया ।।5।।

।। शब्द चौथा ।।

राधास्वामी झूलत आज हिंडोला । गगन मंडल धुन अद्भुत बोला ।।1।।
सुरत निरत सखियां मिल आई । झूमत घूमत रूप समाई ।।2।।
नैन निहारत दरस पुकारत । राधास्वामी राधास्वामी नाम दृढ़ावत ।।
चाँद सुरज दोउ खंभ सजे रे । सुखमन चौकी लाला जड़े रे ।।4।।
चरन धार राधास्वामी बिराजे । प्रेम मगन सब प्रीतम गाजे ।।5।।
अजब समा अचरज यह औसर । हंस हंसनी छोड़ा सरवर ।।6।।
देख बिलास मगन हुए भारी । सुध बुध भूले देह बिसारी ।।7।।
धूम मची अब अमर नगर में । झूलत राधास्वामी बैठ अधर में ।।8।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

अजब यह बँगला लिया सजाय । हंस भी रीझे देखत ताहि ।।1।।
बैठ गये राधास्वामी ता में आय । करें सब आरत सुर संग गाय ।।2।।
आज यह घड़ी सुहावन पाय । गई अब सब की दूर बलाय ।।3।।
हुई मैं पावन[2] सरन समाय । कहूं क्या बंगला अजब दिखाय ।।4।।
रही मैं राधास्वामी महिमा गाय । सेत पद बंगला मोहिं सुहाय ।।5।।

।। शब्द छठा ।।

सुरत मेरी चढ़ गई गगन अटरियां।
मैं धीरे धीरे चढ़ गई गगन अटरियां ।।1।।

---

1. उमंग, शौक़। 2. पवित्र।

मैं लख लिये राधास्वामी सुघड़[1] सुजनियां।
मोहिं डार दई गल में प्यारे गल बहियां।
मैं धारा निज नैना में ज्ञान अँजनियां[2] ।।2।।

॥ शब्द सातवाँ ॥

पाय गई राधास्वामी होगई सुहाग भरी।
खिल गये कँवला मैं पाय गई बन्ना[3] ।।1।।
निहार लई शोभा मैं पार गई गगना।
छोड़े बिकार पाई सतगुरु सरना ।।2।।

॥ शब्द आठवाँ ॥

सुरत आज झूल रही। गुरु मिले झुलावन हार ।।1।।
वर्षा ऋतु सखियां हर्षानी[4]। आईं सहेली लार[5] ।।2।।
शब्द हिंडोला पड़ा गगन में। झूल रही सुर्त नार ।।3।।
धुन की डोरी खिंची अधर में। होत जहाँ झनकार ।।4।।
सभी सुहागिन गावन लागीं। कर कर प्रेम सिंगार ।।5।।
अजब अखाड़ा रचा सुन्न में। देखैं नित्त बहार ।।6।।
गुरु सिंहासन धरा अधर में। बैठे लीला धार ।।7।।
दर्शन करत हिया उमगावत[6]। खावत अमी अहार ।।8।।
भाग सरावत[7] भक्ति बढ़ावत। भूल गई संसार ।।9।।
अधर धाम सतगुरु का डेरा। पहुंची खोल किवाड़ ।।10।।
करे अनंद सदा सुख सागर। खोये सभी विकार ।।11।।
आरत समा मिला भागन से। होत जीव उपकार ।।12।।
खेलें बिगसें[8] संग गुरु के। पाया भेद अपार ।।13।।
सहस कँवल में खेल जमाया। खोला त्रिकुटी द्वार ।।14।।
सुन्न नगर में धूमा धामी। बजत सारंगी सार ।।15।।

---

1. सुन्दर। 2. सुरमा। 3. दुल्हा। 4. खुश हुई (आन्दित हुई)। 5. निकट।
6. ह्दय में चाव उत्पन्न होता है। 7. महिमा करती हुई। 8. ख़ुश होवें।

हंस हंसनी रचा अखाड़ा । अचरज शोभा धार ।।16।।
कौन कहे महिमा उस घर की । अक्षर का दरबार ।।17।।
सुरत हंसनी देख तमाशा । आगे को पग धार ।।18।।
महासुन्न मैदान अनूपा । पहुंची सतगुरु लार ।।19।।
सुन सुन शब्द हुई मस्तानी । भँवरगुफा बंसी झनकार ।।20।।
सत्य धाम सतनाम पियारा । छिन छिन मैं बलिहार ।।21।।
अलख पुरुष का खोज लगाया । कोटि अरब सूरज उजियार ।।22।।
अगम नाम का सुमिरन पाया । चली प्रेम की धार ।।23।।
आगे महल अनूप दिखाना । राधास्वामी अगम अपार ।।24।।
किंगुरे किंगुरे नूर अपारा । बैठे शोभा धार ।।25।।
सुरत निरत दोउ जाय समानी । पहुंची सब के पार ।।26।।
राधास्वामी अगम अनामी । कीन्हा उनसे प्यार ।।27।।

।। बचन इकतालीसवाँ ।।

फुटकल शब्द

।। शब्द पहला ।।

खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोइ नेक न गाया ।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया ।।1।।
करता रहा पुकार, दाद[1] को कहीं न पाया ।
भेख भिखारी जक्त गुरु, सब भरमें माया ।।2।।
शब्द बिना ख़ाली फिरें, सब धोखा खाया ।
अब मिल गये पूरे सतगुरु, उन भेद सुनाया ।।3।।
सुरत सार लखवाय के, फिर गगन चढ़ाया ।
गगन मँडल में पहुंच कर, अनहद बजवाया ।।4।।
जपी तपी मौनी बकी, जत जोग चलाया ।

---

1. इन्साफ़ ।

यह मारग कोई ना कहे, दुर्लभ दरसाया ।।5।।
धन्य संत और सतगुरु, जिन सार बुझाया।
मनमत जग में फैलिया, गुरुमत नहीं आया ।।6।।
सुरतवंत बिरले कोई, जिन शब्द कमाया।
राधास्वामी भेद दे, सब जीव चिताया ।।7।।

।। शब्द दूसरा ।।

सुन्नी सुरत शब्द बिन भटकी । अटकी मन संग दुख पाई ।।1।।
भरमत फिरे चक्र की नाई । उलट गई तन में छाई ।।2।।
विष खावत जगमें झख मारत । समझ सोच धुर नहिं लाई ।।3।।
सोवत रही मोह अँधियारी । जागन चौप नहीं पाई ।।4।।
इन्द्री के बस पड़ी विकल होय । काल कला घट में छाई ।।5।।
भोगन में अति कर लिपटानी । रोग सोग दिन दिन खाई ।।6।।
बंधन बँधी जगत में गाढ़ी । बाढ़ी ममता रस पाई ।।7।।
जग व्यव्हार लगा अति प्यारा । धारा उलटी यहां आई ।।8।।

कड़ी 1—जो सुरत कि सुन्न यानी चैतन मंडल की बासी थी, शब्द की धार को छोड़ कर इस संसार में भटक गई और मन का संग करके दुख पाती है।

" 2---और चक्र यानी चकई के मुवफ़िक़ चंचल होकर भरम रही है और उलटी होकर देह में फैल गई।

" 3---और भोगों में जो ज़हर से भरे हुए हैं, बर्त कर जगत में टक्करें खाती है और अपने धुर मुक़ाम की समझ नहीं लाती है।

" 4---और मोह के अन्धकार यानी रात में बेहोश सो रही है और जागने का इरादा नहीं करती।

" 5---और इन्द्रियों के बस होकर हर वक्त चंचल और बेकल हो रही है और इस सबब से काल की कला यानी ज़ोर घट में व्याप रहा है।

" 6---और भोगों में लिपट कर दिन दिन रोग और सोग सहती है।

" 7---इस तरह जगत में बन्धन इसके खूब मजबूत हो गये और थोड़ा थोड़ा रस पाकर हर एक चीज में पकड़ यानी मोह बढ़ गया।

" 8---और जगत में बर्ताव प्यारा लग कर जो धार कि सुरत की ऊपर को चढ़नी चाहिए थी, वह उलटी देह और संसार में बहने और बिखरने लगी।

बिना मेहर सतगुरु पूरे के । कस उल्टे कस घर जाई ।।9।।
सुखमन द्वार गगन का नाका । कठिन हुआ नहिं सुधि पाई ।।10।।
श्याम धाम से हुई न न्यारी । सेत पदम कस कस पाई ।।11।।
धुन की छाँट होत नहिं भाई । कैसे सूरत धुन पाई ।।12।।
घट में बैठ निरख दृग द्वारा । यहां से राह अधर जाई ।।13।।
घाटा तोड़ काल मति मोड़ो । कर्म काट ऊँचे जाई ।।14।।
राधास्वामी कहत सुनाई । समझ समझ पग धर भाई ।।15।।

।। शब्द तीसरा ।।

सुरत चल बावरी, क्यों घर बिसराया ।
सतगुरु के संग लाग री, धुर ले पहुंचाया ।।1।।
घट पट पश्चिम खोल कर, पूरब दिखलाया ।
अजब खेल अद्‌भुत दशा, हंसन परसाया ।।2।।
संत मंडली सेत दीप, जा जोत जगाया ।
मौज निहारी सत्त पुरुष, धुन बीन सुनाया ।।3।।

कड़ी 9---जब ऐसा हाल हो गया तो अब बिना मेहर पूरे सतगुरु के मुख इसका ऊपर यानी निज घर की तरफ़ कैसे मोड़ा जावे ।

" 10---और इसी सबब से आकाश का द्वारा जो कि पहला सुखमन स्थान है, खुलना कठिन हो गया बल्कि उसकी सुध भी भूल गई ।

" 11---और श्याम स्थान यानी काल के घेर से जुदा न हो सकी । फिर सेत धाम जो उसका निज स्थान है, कैसे पावे ?

" 12---और इसी सबब से धुन की छाँट भी नहीं हुई ! फिर निज धुन को कैसे प्राप्त होवे ?

" 13---अब चाहिये कि अपने घट में निश्चल होकर और नेत्रों के द्वारे को झांक कर अन्दर को चले । यही सड़क ऊंचे निज देश की है ।

" 14---पहली घाटी को कि जिसकी हद त्रिकुटी तक है, तोड़ कर और काल का मुख मोड़ कर और करमों को काटते हुए ऊंचे को चलना चाहिये ।

" 15---राधास्वामी दयाल फ़रमाते है कि इस रास्ते में निरख निरख और परख परख कर कदम रखना चाहिये ।

अर्ध[1] उर्ध[2] के मध्य में, तीरथ परसाया।
अंतर गति नहिं बूझते, तिन जन्म गँवाया।।4।।
बिन सतगुरु यह बाट, कहो कोइ कैसे पाया।
मेहर करें जा पर धनी, फिर रंक[3] न राया[4]।।5।।
ग़ोता मार समुद्र में मुक्ता चुन लाया।
रतन माल हिरदे धरी, बेहद पहुंचाया।।6।।
निरत सखी अगुवा हुई, जा शब्द समाया।
राधास्वामी नाम यह, कोई गुरुमुख पाया।।7।।

।। शब्द चौथा ।।

घट भीतर तू जाग री, हे सुरत पुरानी।
बिना देश झाँकत रही, सब मर्म भुलानी।।1।।
काल दाव मारत रहा, पर तू न चितानी।
अब सतगुरु की मेहर से, मौसम बदलानी।।2।।
नर देही पाई सहज, सतसंग समानी।
सुरत घाट अब पाइया, धुन शब्द पिछानी।।3।।
यह मारग संतन कहा, पंडित नहिं जानी।
जिन यह मारग पाइया, सो छूटे खानी।।4।।
श्याम कंज के घाट से, सूरत अलगानी।
चौथे पद में जा मिली, जहां अचरज बानी।।5।।
पंचम षष्टम पाय के, राधास्वामी जानी।
भाग सुहागिन पाइया, को करे बखानी।।6।।

।। शब्द पाँचवाँ ।।

सुरत घर खोज री। ऋतु मिलन मिली।।1।।
शब्द घर सोच री। चढ़ महल चली।।2।।

---

1. नीचा। 2. ऊँचा। 3. कंगाल। 4. राजा।

चन्द्र पद पाय अली । ऋतु सर्द खिली ।।3।।
घूम कर जाय अड़ी । तिल घोट पिली ।।4।।
धुन धाम रली । गई गगन गली ।।5।।
पिया संग खेल रही । सब कर्म दली ।।6।।
बस्ती तन छूट गई । खिली कँवल कली ।।7।।
गुन इन्द्री त्याग दई । जड़ काल हिली ।।8।।
राधास्वामी ध्यान धरी । बिसरूं नहिं एक पली ।।

।। शब्द छठा ।।

चल अब सजनी पिया के देश । मिल अब गुरु से कर आदेश[1] ।।1।।
लखो फिर घट में पद जाय शेष[2] । थके जहँ ब्रह्मा विष्णु महेश ।।2।।
गई नहिं उनकी वहाँ कुछ पेश । हार कर बैठे गौर गणेश ।।3।।
काल ने मारा गहि[3] कर केश । संत बिन किया न घट परवेश ।।4।।
रहे सब कैदी माया देश । बचे नहिं भोगें काल कलेश ।।5।।
मिलें जो सतगुरु कहें संदेश । मिटे फिर काल कर्म का लेश ।।6।।
धरा अब सूरत हंसा भेष । काल के तोड़ दिये सब नेश[4] ।।7।।
हुआ मैं राधास्वामी दर[5] दरवेश[6] । हुए अब राधास्वामी मेरे ख़्वेश[7] ।।8।।

।। शब्द सातवाँ ।।

सखी चल देख बहार पिया की । चढ़ो घट सेज सँवार पिया की ।।1।।
सुनो धुन गगना पार पिया की । निरख छबि देखी सार पिया की ।।2।।
अमीरस आई धार पिया की । सुर्त होगइ प्यारी नार पिया की ।।3।।
मैं होगइ जग को जार पिया की । गुरु कीन्ही सुरत गलहार पिया की ।।4।।
राधास्वामी खिलाई बाड़ पिया की । अब झांकी गली अगार पिया की ।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु निरखो री, हिये नैन खुलें । गुरु देखो री ।। टेक ।।
घट के पट खोल चली, दल काल दले । गुरु पेखो री ।।1।।

---

1. प्रणाम । 2. सहस दल कँवल । 3. पकड़ कर । 4. डंक । 5. दरवाज़ा । 6. फ़कीर । 7. निज ।

चित चोर लिया, गुरु चरन अली । मन नाव चढ़ी, सतगुरु बल्ली ।।2।।
भौजल के पार पिली, गुरु पदम रली । धुन ध्यान मिली, सुर्त कँवल खिली ।।
सब कर्म जली, निःकर्म चली । घट खोज पिली, चढ़ गगन गली ।।
विरह् बान खली, तब कँवल खिली । गुरु रूप लखी, पिया पास पली ।।5।।
अमृत घट धार चली, निस दिन मैं न्हाऊँ अली ।
मेरा भाग उदय, सत शब्द मिली ।।6।।
काल करम घर आग लगी । सब पूँजी माया जाल जली ।।7।।
फिर खोदत खीदत खान खुली । क्या हीरे मोती लाल बली ।।8।।
निज काया काल की जात गली । माया दल मारा दलन दली ।।9।।
मैं सुमति दुआरा खोल चली । गुरुचरन पकड़ धुर धाम वली ।।10।।
अब आरत पूरन करत चली । गुरु प्रेम बढ़ावत घाट घुली ।।11।।
गुरु चरन पकड़ कहूं नाहिं टली । फिर चरन सरन में आन हिली ।।12।।
दम दम मेरे चरन अधार कली । कल नाहिं पिया बिन बे-अकली[1] ।।13।।
कोइ परखत वेदन[2] होत वली । नहिं जानत वेद कतेब तली ।।14।।
राधास्वामी चरन पकड़ हेली । तन मन से सूरत अधर चली ।।15।।

।। शब्द नवाँ ।।

घुड़ दौड़ करूँ मैं घट में । मुझे मिले सिपाही संत री ।।1।।
मैं चेत चली अब तट में । घट आदि अनादी अंत री ।।2।।
सूरत की मूरत निरत चली । पिया पाये सरोवर तंत री ।।3।।
मन तोड़त तन अकुलाना । क्या वर्ण बताऊँ जंतरी ।।4।।
मेरे कँवल दलन पर भँवरा । क्या करूँ गुनावन कंत री ।।5।।
अब परसूँ पिया पद आज । पढूँ गुरु मंत री ।।6।।
मेरे भाग बड़े क्या भाखूँ । शशि सूर अनेकन दंत री ।।7।।
तारागन गगन घुमाये । गुरु महिमा करूँ बे-अंत री ।।8।।

---

1. व्याकुल । 2. तकलीफ़ । 3. नीचे ।

मैदान उलट घट झाँकी । धर मारे काल गजंत री ।।9।।
मेरे सतगुरु सूरे पूरे । दल मारें काल अनंत री ।।10।।
रस वेद राज रजधानी । गुरु बैठे आज मसंद री ।।11।।
मेरे गुरु का दरस कोइ देखे । हो जावे हूर परंद[1] री ।।12।।
धुन शब्द सुनी जहां नाद री । जहाँ हारे कृष्ण और नंद री ।।13।।
यह भेद मिला मोहिं अब की । घट कीन्हा आदि मंथत री ।।14।।
मैं पकड़े चरन गुरु के । नहिं बिछड़ूँ कोटि जुगंत री ।।15।।
क्या रोष महेश न जाने । मेरी महिमां कहत कहंत री ।।16।।
हरि द्वारे अटके सबही । सतगुरु पद जानें न पंथ री ।।17।।
यह अगम भेद रस भारी । कोइ पावे प्रेम मनंत री ।।18।।
मैं किंकर दासन दासा । क्या बरनूँ शोभा अंत री ।।19।।
गुरु मिले दयाल गुसाई । मैं पहुंची धुर घर कंत री ।।20।।
कोटिन रवि रोम बिराजत । क्या शोभा बरनूँ संत री ।।21।।
राधास्वामी दीन दयाला । यह भाखें बचन पुखंत री ।।22।।

।। शब्द दसवाँ ।।

सुरत रत घोर सुनावत भारी । गुरु चरन कँवल मेरे हिये अधारी ।।
मैं चरन गुरु पर जाउँ बलिहारी । जग भोग लगे सब खारी ।।2।।
मैं मारूँ जगत कुल तारी । क्यों भूलो भूत अनाड़ी ।।3।।
गुरु मंत सुनो अब आ री । नहिं नर्कन बीच दुखारी ।।4।।
गुरु महिमा अगम सुना री । नहिं जोत निरंजन गा री ।।5।।
गति ब्रह्मा विष्णु कहां री । क्या देवी देव पुकारी ।।6।।
सब बहे चौरासी धारी । गुरु बिन कोइ उतरे न पारी ।।7।।
या ते सब पकड़ो गुरु चरना री । क्यों बहते भौजल धारी ।।8।।
गुरु आदि पुरुष जग आये । सब हंस जीव चेताये ।।9।।

---

1. उड़ने वाली, सुन्दर, तारों जैसी ।

कौवों से दूर रहाये । निज प्रेमी खैंच बुलाये ।।10।।
तब काल करम मुरझाये । माया भी सिर धुन रही पछताये ।।11।।
गुरु अगम देश अब दीन्हा । मैं कहाँ लग बरनूं महिमा ।।12।।
मुझे लगे गुरु अति प्यारे । ज्यों चंद्र चकोर निहारे ।।13।।
गुरु रूप दीप[1] उजियारे । मैं पतंग समान तन जारे ।।14।।
चुम्बक लख लोह खिंचा रे । यों चरन गुरु मैं धारे ।।15।।
मैं जिऊँ अधार गुरु प्यारे । मैं बन्धन तींड़ तरा[2] रे ।।16।।
अब चढ़ूँ गगन घट पारे । वहाँ से सतपुर पग धारे ।।17।।
लख अलख अगम उजियारे । राधास्वामी धाम समा रे ।।18।।
यह आरत करूँ सदा रे । राधास्वामी फेर बुला रे ।।19।।

।। शब्द ग्यारहवाँ ।।

गुरु संग जागन का फल भारी ।। टेक ।।
सेवा मिले दरस पुनि पावे । बचन सुनत गुलज़ारी ।।1।।
रोम रोम हर्खत चित मंदर । अन्दर खिलत कियारी ।।2।।
शोभा अधिक सुगन्धित बन बन । भँवर चक्र फुलवारी ।।3।।
इन्द्री द्वार कँवल दल न्यारी । सूरत अग्र[3] चितारी ।।4।।
नैन बैन सतगुरु सुन निरखत । कँवल खिलत उजियारी ।।15।।
मारग छेक[4] झकत माया मन । निरत होत सुखियारी ।।6।।
सागर तोल बुन्द गति सिन्धा । अधर चढ़त पिउ प्यारी ।।7।।
कोमल धाम कँवल रवि भूमी । भावन भार निकारी ।।8।।
श्यामा सरस नील गिर सारी । धारी धरन उठा री ।।9।।
गुरु पद नाम अगम गम प्यारी । को कह सकत पुकारी ।।10।।
सूरत चढ़ी अधर पद डंडा । अंडा फोड़ निहारी ।।11।।
मैं तो अजान मर्म नहिं जाना । राधास्वामी कीन्ह दया री ।।12।।

---

1. दीपक। 2. तर गया। 3. आगे। 4. रोक।

।। शब्द बारहवाँ ।।

निरखो री कोई उठकर पिछली रतियाँ ।। टेक ।।

माया छलन तरँग मन रोकन । घट में कँवल खिलतियाँ ।।1।।

सीतल सागर मीन मर्म जस । न्हावत मल मल गतियाँ ।।2।।

सिला उठाय कँवल दल फोड़त । तोड़त द्वार सुनत जहाँ बतियाँ ।।3।।

चमक जोत धारा धुन झकियाँ । मन माया कूटत जहाँ छतियाँ ।।4।।

हरख हरख धावत पद उत्तम । तम संसार सकल बिनसतियां ।।5।।

मौज निहार पुरुष घर पावत । धावत सुरत निरतियां ।।6।।

पीवत अमी झकोल कँवल पद । केल करत सत मतियां ।।7।।

को कह सके नाम की महिमा । संत बतावत जो गति पतियां ।।8।।

राधास्वामी कहत सुनाई । मूल मिलो चढ़ हटियां ।।9।।

कड़ी 1---पिछली चार घड़ी पहले सूरज के निकलने से सुबह तक रात के वक्त अभ्यास करने से माया को छलने और मन की तरंग रोकने की किसी क़दर ताक़त आवेगी, और घट में कँवल का भी दर्शन होगा।

" 2---तब सुरत मछली की तरह सीतल सागर में अश्नान करके सफाई हासिल करेगी।

" 3---पहले परदे को उठा कर और श्याम कँवल का दल फोड़ कर यानी तीसरे तिल के अन्दर सुरत ने धस कर शब्द की आवाज़ सुनी।

" 4---जोत की चमक और वहां की धुन की धार मालूम हुई और मन और माया वहां पर छाती कूटने लगे कि यह अभ्यासी सुरत हमारी हद्द से निकल गई।

" 5---और खुश होकर सुरत वहां से आगे को बढ़ती चली और संसार यानी त्रिलोकी माया का अँधेरा दूर हुआ।

" 6---राधास्वामी दयाल की मौज के अनुसार सुरत और निरत सत्तलोक की तरफ को दौड़ने लगीं।

" 7---सुरत ऊपर को चढ़ कर और दसवें द्वार में अमी का रस लेती हुई और वहां से आगे बढ़ कर सत्त शब्द के साथ बिलास करती हुई चलती है।

" 8---संतों के नाम की महिमा कोई नहिं कर सकता है। वे आप ही उसकी गत और पत वर्णन करते हैं।

" 9---राधास्वामी दयाल समझा कर फरमाते हैं कि मूल पद से मिलना चाहिये रास्ते के मुक़ामात तै करके।

।। शब्द तेरहवाँ ।।

सोधत सुरत शब्द धुन अंतर । घटत तिमिर नभ बासी ।।1।।
चमकत चाँप धनुष गति न्यारी । कंज जोत छिटतक उजियासी ।।2।।
गगन गंग धारा उठ धावत । होत जहां निर्मल गति स्वांसी ।।3।।
जमुना तीर श्याम खुल खेलत । गोप गूजरी करत बिलासी ।।4।।
जसुधानंद कंस रिपु सुन्दर । धमक सुनत तज आसी ।।5।।
धूमत अधिक धधक धुन धावत । पावत काल तरासी ।।6।।
बिमल नगर जहां घोर अखाड़ा । खोजत रही नाम गति पासी ।।7।।
मीन मानसर भँवर कंज पर । भृंगी होत समझ गुन तासी ।।8।।
राधास्वामी उठत धाम धुन । बैठे मगन अविनासी ।।9।।

कड़ी 1---अभ्यासी सुरत, शब्द धुन छांट कर पकड़ती हुई नभ में पहुँची और नीचे के अन्धकार से न्यारी हो गई ।

" 2---इस तौर से तीर की भाल के मुवाफ़िक़ चमकती हुई तीसरे तिल से जो कि धनुष स्थान है पार हो कर जोत का प्रकाश देखने लगी (धनुष स्थान इस सबब से कहा कि दोनों आंखों से धारें कमान के मुवाफ़िक़ मिलती है) ।

" 3---अब वहाँ से (अर्थात सहसदल कँवल से) सुरत की धार जो कि गंगा की धार है गगन की तरफ़ को दौड़ी जहाँ पहुँच कर प्राण निर्मल होते हैं ।

" 4---और रास्ते में जमुना के किनारे (अर्थात बाईं तरफ़) मन खुल कर सैर करता जाता है और सुरत भी उसके बिलास को देखती जाती है (गोपी रूप गूजरी अर्थात सुरत जो इन्द्रियों से न्यारी हो गई है) ।

" 5---और वही मन जो की कृष्ण है ऊपर की आवाज सुन कर जगत की आस छोड़ कर ।

" 6---निहायत धूम धाम के साथ धुन की धधकार पकड़ कर ऊपर को दौड़ता है और काल मुरझाता जाता है ।

" 7---चढ़ते चढ़ते सुरत बिमल नगर (अर्थात सुन्न) में जहां हंसों के अखाड़े जमा हैं, पहुँची और नाम की गति वहां खोज कर अच्छी तरह से पहचानी ।

" 8---फिर सुरत मछली की तरह मानसरोवर में और भँवर की तरह गुफा में सैर करती हुई सत्तलोक में पहँच कर भृङ्गी अर्थात सतगुरु स्वरूप की गति को प्राप्त हुई ।

" 9---और वहाँ से राधास्वामी धाम में राधास्वामी धुन सुनती हुई पहुँच कर मगन हो गई अविनासी रूप हो कर वह विश्राम किया ।

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

मेल करो निज नाम गुसइयां । मेल करो निज नाम ॥ टेक ॥
गुरु के चरन धार रहूं हिय में । खुले सेत और श्याम ॥1॥
दुक्ख हटावन खेद मिटावन । टारन काल और जाम ॥2॥
ऐसे गुरु का ध्यान सम्हारन । पहुंच तिरकुटी धाम ॥3॥
मन और सुरत मान मद त्यागे । खोज लिया सतनाम ॥4॥
उल्टी घाटी चढ़ कर झांकी । सीतल हुई छुटी कलि धाम ॥5॥
मैं चकोर चंदा धुन पाई । छूट गई दिश बाम[1] ॥6॥
काल नगर की हद्द छुड़ानी । दयाल गुरु दीन्हा आराम ॥7॥
सुरत समानी शब्द ठिकानी । पाया सुन्न गिराम[2] ॥8॥
आरत करूँ प्रेम रस भीनी । सतगुरु चरन मिला विश्राम ॥9॥
राधास्वामी नाम अनामी । भेद दिया अब मूल मुक़ाम ॥10॥

॥ शब्द पंद्रहवाँ ॥

भरमी मन को लाओ ठिकाने । प्रीति लगे गुरु चरन समाने ॥1॥
दुबिधा छूटे मति बदलाने । सुमिरन टेक तुम्हारी आने ॥2॥
तुम बिन भर्म भुलाना भारी । जहाँ तहाँ की अटक सम्हारी ॥3॥
बिन सतसंग बूझ नहिं आवे । भाग बिना सतसंग न पावे ॥4॥
क्यों कर कहूँ ब्योंत[3] नहीं कोई । तुम दयाल कुछ कहो बिलोई ॥5॥
चरनामृत परशादी देना । और उपाव नहीं क्या कहना ॥6॥
इतना काम सदा तुम करना । तो कारज उसका भी सरना ॥7॥
उसकी तरफ़ से आरत करो । प्रीत प्रतीत चित्त में धरो ॥8॥
तब कुछ फल पावेगा थोड़ा । तो मन मति जावे चित मोड़ा ॥9॥
राधास्वामी कहें समझाई । करो आरती प्रीति लगाई ॥10॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

सुर्त बन्नी गुरु पाया बन्ना । देख दरस छिन छिन मन भिन्ना ॥1॥
तुरिया घोड़ी सहज सिंगारी । धीरज पाखर ता पर डारी ॥2॥
चाँद सुरज दोउ करी रकाबें । गगन ज़ीन ता पीठ धरावें ॥3॥

---

1. बांई । 2. गाँव । 3. साधन, उपाय, युक्ति ।

बिजली पवन चली घोड़ी । फेर लगाम एड़ दे मोड़ी ।।4।।
हीरे लाल झालरें मोती । माणिक पन्ना वारूँ जोती ।।5।।
ता पर बन्ना करी असवारी । बिजली चाल पवन धधकारी ।।6।।
चल बरात पहुंची गगना पुर । बन्नी बन्ना मिले शिष्य गुरु ।।7।।
ब्याह हुआ और फेरे डाले । बन्नी ले बन्ना घर चाले ।।8।।
घर में धसे मात पितु हरखे । प्रेम मगन मानो बादल बरखे ।।9।।

कड़ी 1---प्रेमी सुरत को जब सतगुरु प्रीतम मिले, तब उनका दर्शन करके मन छिन छिन मगन हुआ ।

" 2---तुरिया यानी चैतन्य आत्मा की धार को घोड़ी बना कर उस पर धीरज की पाखर डाली, यानी धीरज के साथ उस पर सतगुरु सवार हुए ।

" 3---चाँद सूरज यानी इड़ा और पिंगला की रकाबें बनाईं और गगन यानी चैतन्य आकाश रूपी ज़ीन उस पर धरी ।

" 4---इस तरह सतगुरु उस तुरिया की घोड़ी यानी चैतन्य धार पर सवार होकर बिजली और पवन की चाल के मुवाफ़िक चले और लगाम यानी मुख उस धार का धर की तरफ़ मोड़ कर ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर दिया यानी एड़ लगाई ।

" 5---ऐसे सतगुरु के ऊपर हीरे लाल और मोती की झालरें और माणिक पन्ना और जोत स्वरूप को (जो मुराद शब्दों की धुन और स्थानों के स्वरूप से है) वार दूँ । असल में जैसे कि सुरत चढ़ती जाती है, सब रास्ते के स्थान और वहाँ की रचना सतगुरु पर अपने आपे को वारते हैं यानी नीचे पड़ते चले जाते हैं ।

" 6---ऐसी चैतन्य धार की घोड़ी पर सतगुरु बन्ने सवार हुए, और वह धार बिजली और पवन की चाल और ज़ौर शोर के साथ चली और चढ़ी ।

" 7---चलते चलते सतगुरु और प्रेमी सुरत और बरात यानी और सतसंगी और सतसंगिनों की सुरतें त्रिकुटी में पहँची और वहाँ सतगुरु और सेवक का मेला हुआ ।

" 8---और प्रेमी सुरत सतगुरु की परिक्रमा करके उनके साथ घर को चली ।

" 9---जब सत्तलोक में पहुँचे तब सत्तपुरुष (जो कि कुल रचना के माता पिता हैं) देख कर मगन हुए । जैसे कि बादल की वर्षा होती है, इसी तरह प्रेम और आनन्द की बर्षा होने लगी ।

मोती हीरे लाल जवाहिर । बुआ बहिन मिल किये निछावर ।।10।।
करें आरत हँस बन्ना बन्नी । हंस पुकारें धन्ना, धन्नी ।।11।।
राधास्वामी रलियाँ मन्नी । मगन हुए भैया और बहिनी ।।12।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

धुन धुन धुन डालूँ अब मन को । मैं धुनिया सतगुरु चरनन को ।।1।।
मन कपास सुरत कर रूई । काम बिनौले डाले खोई ।।2।।
हुई साफ धुन की सुधि पाई । नाम धुना ले गगन चढ़ाई ।।3।।
गाली मनसा गाले कर्मा । चरख़ा चला कते सब भर्मा ।।4।।
सूत सुरत बारीक निकासा । कुकड़ी कर दिया शब्द निवासा ।।5।।
चित्त अटेरन टेर सुनाई । फेर फेर कँवलन पर लाई ।।6।।
कँवल कँवल लीला कहा गाऊँ । सुन सुन धुन निज मन समझाऊँ ।।7।।
सुरत रँगी करे शब्द बिलासा । तजी बासना बेची आसा ।।8।।
निकर पिंड सुन पैंठ समाई । सौदा पूरा किया बनाई ।।9।।
राधास्वामी हुए दयाला । नफा लिया खोला घट ताला ।।10।।

।। शब्द अट्ठारहवाँ ।।

ठुमरी अब करी है बखानी । सुरत चली ठुम ठुम अगवानी ।।1।।
मिल गया प्यारा झँझरी झाँकी । कहूँ कहा शोभा अब वहाँ की ।।2।।
किंगरी धुन अजब बजाई । सारंगी धुन वहां रही छाई ।।3।।
यह ठुमरी कोइ साध विचारी । जोगी जती रहे सब हारी ।।4।।
राधास्वामी कह कर भाखी । सेवक देखें खुल खुल आंखी ।।5।।

" 10---मोती हीरे लाल और जवाहिर, बुआ और बहिन यानी हंस और हंसनियों ने न्योछावर किये, यानी सत्त शब्द की धुनों की जो हर एक हीरा मोती और लाल रूप है सतगुरु और प्रेमी सुरत पर वर्षा होने लगी।

" 11---फिर सतगुरु और प्रेमी सुरत ने मगन होकर उमंग सहित सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की आरत उतारी, और चारों तरफ से हंस धन्य धन्य पुकारने लगे।

" 12---यह कैफ़ियत देख कर राधास्वामी दयाल मगन और प्रसन्न हुए और हंस हंसनी भी इस बिलास में शामिल होकर आनन्द को प्राप्त हुए।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

गुरु अचरज खेल दिखाया । सुर्त नाम रतन घट पाया ।।1।।
बकरी ने हाथी मारा । गउ कीन्हा सिंघ अहारा ।।2।।
चींटी चढ़ गगन समाई । पिंगला चढ़ पर्वत आई ।।3।।
गूँगा सब राग सुनावे । अंधा सब रूप निहारे ।।4।।
मक्खी ने मकड़ी खाई । भुनगे ने धरन तुलाई ।।5।।
धरती चढ़ वृक्षा बैठी । पक्षी ने पवन चुगाई ।।6।।
जंगल में बस्ती ब्याई । बस्ती सब ख़िलक़त खाई ।।7।।
मूसे से बिल्ली भागी । पानी में अग्नि लागी ।।8।।

कड़ी 1---गुरु ने दया करके अचरज रूपी खेल घट में दिखाया, सुरत को नाम रूपी रतन यानी दसवें द्वार का शब्द प्राप्त हुआ ।

" 2---सुरत ने मन को जीता और फिर सुरत ने काल को मारा ।

" 3---सुरत चढ़ कर गगन में पहँुची । जो मन कि दौड़ना यानी चंचलता छोड़ कर निश्चल हो गया वही पर्वत पर चढ़ गया यानी त्रिकुटी में पहुँचा ।

" 4---जो शख्स कि दुनिया की तरफ़ और अन्तर में बोलने से चुप हुआ वही शब्द कि धुनें सुनने लगा और जिस किसी ने बाहर से अपनी दृष्टि बन्द की वही अन्तर में रूप देखने लगा ।

" 5---मक्खी नाम सुरत का है जो मकड़ी यानी माया के घर में जब तक थी उसका खाजा हो रही थी और जब कि दसवें द्वार की तरफ़ उलट कर पहुँची तब माया को निगल गई---भुनगे यानी जीव या सुरत ने सूक्षम शरीर को समेट कर आकाश में उठा लिया ।

" 6---सुरत चढ़ कर त्रिकुटी में पहुँची---मन जो सैलानी था जब चढ़ कर त्रिकुटी में पहुँचा तब प्राण पवन को निगलता चला गया ।

" 7---बस्ती यानी रचना (और रचना करने वाली नाम सुरत का है) सो उसने पिंड रूपी जङ्गल में उतर कर रचना की और फिर जब उलट कर त्रिकुटी या दसवें द्वार में पहुँची तब पिंड और ब्रह्मांड की रचना को निगल गई यानी समेट गई ।

" 8---चढ़ने वाली सुरत को देख कर माया हट गई । अमी की धार जो कि सहसदल कँवल के मुकाम पर आई, वही जोति स्वरूप होकर रोशन हो रही है और वही माया का स्वरूप है और वही अग्नि है ।

कउआ धुन मधुरी बोले । मेंडक अब सागर तोले ।।9।।
मूरख से चतुरा हारा । धरती में गगन पुकारा ।।10।।
राधास्वामी उलटी गाई । उल्लू को सूर दिखाई ।।11।।

।। शब्द बीसवाँ ।।

अंत हुआ जग माहिं । आदि घर अपना भूली ।।1।।
मध्य गही पुनि आय । अंत को फिर ले तोली ।।2।।
आदि अंत मध छोड़ । गही जा अपनी मूली ।।3।।
जीवन पदवी मिले । चढ़े जो अब के सूली ।।4।।

कड़ी 9---जो मन कि पहले कड़आ वाक्य बोलता था और अपने मतलब के लिये औरों को दुख देता था वही त्रिकुटी में चढ़ कर मीठी बोली के साथ राग रागिनी सुनाता है—पिंड में नीचे का मन जो मेंडक के मुवाफ़िक़ थोड़ी हद में उछलता कूदता था त्रिकुटी में चढ़ कर भौसागर की तौल और नाप करता है।

" 10---मन जो कि पिंड में बैठ कर मूरखता से भोगों में फँस रहा था जब गुरु कृपा से घट में चढ़ कर त्रिकुटी में पहुँचा तब काल जिसने चतुराई करके जाल बिछाया था उससे हार गया और फिर धरती यानी पिंड में त्रिकुटी के शब्द की धुनें फैली।

" 11---राधास्वामी ने सुरत और मन के उलटने का यह हाल वर्णन किया और जो जीव कि उल्लू के मुवाफ़िक़ ब्रह्मरूपी सूरज का दर्शन नहीं कर सकते थे उनको त्रिकुटी में चढ़ा कर ब्रह्म का दर्शन कराया।

" 1---सुरत भोगों में फँस कर जड़ खान में उतर गई और संतों के दसवें द्वार को जो तीन लोक की रचना का आदि है और जहां से सुरत पिंड में उतरी थी, भूल गई।

" 2---और फिर मध्य यानी मृत्यु लोक में नर देही पा कर तिरलोकी के अन्त पद को जो कि वही दसवां द्वार है, सुरत ने खबर ली।

" 3---और फिर इन तीनों स्थान यानी दसवां द्वार और मृत्यु लोक और जड़ खान को छोड़ कर अपने मूल पद यानी सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुँची, या उसका निशाना और इष्ट बाँध कर उस तरफ़ को चलने लगी।

" 4---सूली मतलब उस धार से है जो सहसदल कँवल से गुदा चक्र तक आई है सो जो कोई उस धार को पकड़ कर ऊपर को चढ़े, वही छठे चक्र के पार जाकर मौत को जीत लेगा और फिर सत्तलोक में पहूँच कर अमर हो जावेगा।

ससे मारिया सिंह । कौन यह समझे बोली ।।5।।
मात पिता दोउ जने । पूत ने बैठ खटोली ।।6।।
मछली चढ़ी अकाश । धरन कर डारी पोली ।।7।।
चाँद सूर पाताल से । निकले पट खोली ।।8।।
चोरन पकड़ा साह । साह ने पहिरी चोली ।।9।।
अमृत पी पी मरें । ज़हर की गाँठी खोली ।।10।।
राधास्वामी गाइया । यह भेद अमोली ।।11।।
संत बिना को बूझि है । यह मर्म तोली ।।12।।
अजा मारिया भेड़िया । ले मिरगन टोली ।।13।।

कड़ी 5---और फिर वही सुरत जो कि मुवाफ़िक़ ख़रगोश के, पिंड में ग़रीब और निर्बल थी, दसवें द्वार में पहूँच कर सिंह यानी काल को मार लेगी।

" 6---जब सुरत गर्भ में यानी खट चक्र के देश में आई तब पहिले उसने ब्रह्मांड और पिंड की रचना करी, यानी माया और ब्रह्म के पद उसी से प्रगट हुए, और जब सुरत, जन्मी यानी जीव गर्भ से बाहर आया तब वही जीव पिंड में उतर कर बैठने से माया और ब्रह्म का पुत्र हो गया।

" 7---और जब सुरत मछली की तरह शब्द की धार को पकड़ कर उल्टी यानी ऊपर को चढ़ी तब वह धरन यानी पिंड को पोला या ख़ाली कर गई।

" 8---और जब चढ़ते चढ़ते दसवें द्वार के परे गई तब सूरज और चाँद यानी त्रिकुटी और सुन्न स्थान दोनों पाताल यानी नीचे नज़राई दिये।

" 9---जब सुरत यानी जीव का उतार हुआ तब काल और करम और काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार बग़ैरा चोरों ने इस को घेर कर बन्द यानी चोले में गिरफ़्तार कर लिया।

" 10---और जब वही जीव यानी सुरत उलट कर अपने घर की तरफ को चली और ब्रह्मांड के परे चढ़ गई और अमी की धारा बहाने लगी तब वही सब चोर अमृत पी कर मर गये और उनकी ज़हर की गाँठ खुल कर भस्म हो गई।

" 11---राधास्वामी ने यह अमोल पद का अमोल भेद गाया।

" 12---और इसको बिना संत के कोई नहीं समझ सकता है।

" 13---अजा बकरी को कहते हैं सो यह सूरत सुरत की पिंड में थी यानी काल भेड़िये का खाजा हो रही थी, सो जब सतगुरु की कृपा से उलट कर ब्रह्मांड और उसके परे पहुँची तो मन और इन्द्रियों को संग लेकर काल भेड़िये पर चढ़ आई और उसको मार लिया।

सुरत शब्द मेला भया । ले अनरस घोली ।।14।।

।। शब्द इक्कीसवाँ ।।

गुरु उलटी बात बताई । मूरखता ख़ूब सिखाई ।।1।।
सोते ने जमा कमाई । जगते ने माल गँवाई ।।2।।
बैठे ने रस्ता काटा । चलते ने बाट न पाई ।।3।।
धरती चढ़ गगना आई । सुन्नी पाताल समाई ।।4।।
चोरी से ख़ाविंद रीझा । सच्चे को मार ख़पाई ।।5।।

कड़ी 14---और तब सुरत का शब्द के साथ मेला हो गया यानी अमृत का भंडार खोल दिया।

" 1---गुरु ने यह उलटी बात बताई कि संसार में मूर्ख होकर के बरत यानी चतुराई छोड़ दे, तो तेरा कोई दामन नहीं पकड़ सकेगा और दूसरे यह कि मूर यानी मूल पद की रक्षा और सम्हाल रख यानी इस तरफ़ से उलट कर राधास्वामी के चरनों को दृढ़ करके पकड़।

" 2---जिस किसी ने संसार की तरफ़ से उदास होकर इसके कारोबार में दख़ल देना छोड़ दिया यानी इस तरफ से सो गया और परमार्थ में प्रेम की दौलत पाई, और जो संसार की तरफ़ मुतवज्जह रहा और बहुत होशियारी और शौक़ से इसके कारोबार करता रहा उसी ने परमार्थ की दौलत खोई और अपनी चैतन्यता मुफ़्त गँवा दी।

" 3---जो मन कि निश्चल होकर घट में बैठा वही ऊँचे की तरफ़ चढ़ने लगा और परमार्थ का रास्ता तै करता हुआ घर की तरफ़ चला और जो मन की चंचल रहा और इधर उधर संसार में दौड़ता रहा उस को घर का रास्ता नहीं मिला और न उस तरफ़ को चला।

" 4---जो सुरत कि अभ्यास करके ब्रह्मांड में और उसके परे पहुँची उसके संग धरती यानी माया भी जिसका आदि निकास त्रिकुटी से हुआ है उलट कर अपने असल में जा मिला ओर जो सुरत कि संसार में लिपट रही वह माया के साथ नीचे से नीचे के मुक़ाम तक उतरती चली गई।

" 5---जो शख्स कि अपने परमार्थ की कमाई और तरक़्क़ी को जगत से छिपाये हुए चला उससे मालिक प्रसन्न हुआ और जिस किसी ने कि सचौटी के साथ अपने परमार्थ का भेद और कमाई का हाल जगत के जीवें से खोल कर कहा उसी को अनेक तरह के विघ्नों से मुकाबला करना पड़ा और सख्त तकलीफ उठानी पड़ी और उसके परमार्थ में घाटा हुआ।

अग्नि को जाड़ा लागा । वर्षा से सूखी साखा ।।6।।
रोटी नित भूखी तरसे । पानी अब प्यासा तड़पे ।।7।।
सोते पर खाट बिछाई । जगते को सुषपति आई ।।8।।
बंझा नित जनती हारी । जनती पुनि बाँझ कहाई ।।9।।
घोड़े पर पृथवी दौड़ी । ऊँटन चढ़ गगना फोड़ी ।।10।।
राधास्वामी मौज दिखाई । सूरत अब शब्द लगाई ।।11।।

कड़ी 6---जब सुरत गगन की तरफ़ को चढ़ने लगी, तब अग्नि यानी माया (जो सुरत की मदद से चैतन्य थी) कांपने लगी, यानी उसकी चैतन्यता खिंच गई, और जब अमृत की वर्षा अन्तर में चढ़ने वाली सुरत पर होने लगी, तब ब-सबब खिंचाव और सिमटाव सुरत के जो उसकी धारें नीचे की तरफ़ जारी थी वह सूखने लगी और सिमटती चलीं ।

" 7---और जब रोटी यानी माया और उसके पदार्थ जो सुरत की धार से चैतन्य थे अब उस चैतन्यता के लिये भूखे तड़पते हैं और इसी तरह पानी यानी मन सुरत की चैतन्य धार के वास्ते प्यासा तड़पने लगा ।

" 8---जो परमार्थ की तरफ़ से गाफ़िल यानी सोता रहा वह माया के तले यानी षट चक्र में दबा और फँसा रहा और जो परमार्थ की कमाई चेत कर और होशियारी के साथ करने लगा वह पिंड और संसार की तरफ़ से बे-ख़बर होता गया ।

" 9---बंझा यानी माया से (जब कि सुरत उसके घेर में उतर कर आई) अनेक प्रकार की रचना और अनेक पदार्थ पैदा हुए, और जब सुरत यानी जनती और असल करता उलट कर पिंड और ब्रह्मांड के परे पहुँची, तब सब रचना सिमट गई, और वह अकेली अपने घर की तरफ सिधारी ।

" 10---जब कि सुरत जो पिंड में फँस कर देह यानी पृथ्वी रूप हो रही थी उलट कर ब्रह्मांड की तरफ़ चली तो वह मन रूपी घोड़े पर सवार होकर दौड़ी और तब ही ऊँट यानी स्वांसा अथवा प्राण उलट कर और गगन को फोड़ कर चढ़ गई ।

" 11---खुलासा इस शब्द का यह है कि राधास्वामी ने अपनी मेहर और मौज से सुरत को चढ़ा कर शब्द से मिला दिया ।

।। शब्द बाईसवाँ ।।

सुन री सखी इक मर्म जनाऊँ । नई बात अब तोहि सुनाऊँ ।।1।।
दिन बिच नाचत चंद दिखाऊँ । रैन उदय दिन कर दरसाऊँ ।।2।।
अग्नि पूतरी जल से सिंचाऊँ । जल की रंभा अग्नि नचाऊँ ।।3।।
गगन माहिं पृथवी चलवाऊँ । पृथवी मध्य गगन लखावऊँ ।।4।।
व्योम वलाय पवन थमवाऊँ । सिंह मार और स्यार जिताऊँ ।।5।।
दुर्बल से बलवान गिराऊँ । त्रिकुटी चढ़ यह धूम मचाऊँ ।।6।।
कागन झुंड हंस करवाऊँ । लूकन को अब सूर दिखाऊँ ।।7।।
उलटी बात सभी कह गाऊँ । ऐसे समरथ राधास्वामी पाऊँ ।।8।।

कड़ी 1---हे सखी तुझको एक भेद जनाता हूँ और नई बात सुनाता हूँ ।

" 2---सुन्न में जहां कि सदा रोशनी रहती है यानी दिन रहता है चन्द्र स्वरूप नज़र आता है, और त्रिकुटी के मुक़ाम पर जहां से कि माया यानी अन्धेरा और रात शुरू हुई सूरजरूप रोशनी देता है ।

" 3---सहसदल कँवल में जोत स्वरूप अमृत की जल धार से (जो ऊँचे से आती है) रोशन है, और अमृत धार के संग जो धुन सहस दल-कँवल से नीचे उतरी, वह अग्नि यानी माया के घेर में केल कर रही है ।

" 4---आकाश में पृथ्वी यानी देह की बासी सुरत को चढ़ाऊँ, और पृथ्वी यानी देह में गगन यानी आकाश का लखाव करूँ ।

" 5---व्योम यानी मन-आकाश जब सुरत की चढ़ाई के वक्त ऊँपर को सिमटे, तब प्राण यानी पवन धीमी होकर ठहर जाती है, स्यार जो जीव से मुराद है वह गगन में चढ़ कर सिंह यानी काल को जीत लेता है ।

" 6---दुर्बल वही जीव या सुरत से मतलब है जो पिंड में उतर कर निहायत बे-ताक़त हो जाती है, और त्रिकुटी में चढ़ कर काल बली को पछाड़ कर ज़ेर कर लेती है ।

" 7---अनेक जीवों को जो पिंड में निपट काग यानी मन रूप हो कर बर्त रहे हैं दसवें द्वार में पहुँचा कर हंस स्वरूप बनाऊँ, और निपट संसारी जो उल्लू के मुवाफ़िक़ मालिक की तरफ से अन्धे और अजान हो रहे हैं उनको त्रिकुटी में पहुँचा कर सूरज ब्रह्म का दर्शन कराऊँ ।

" 8---यह सब उलटी बातें समर्थ सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया में सही करके दिखाई जा सकती हैं ।

।। शब्द तेईसवाँ ।।

गूँगे ने गुड़ खाइया । वह कैसे कहे बनाय ।।1।।
बहिरे ने धुन पाइया । वह क्योंकर कहे सुनाय ।।2।।
अन्धे मोती पो लिया । वह किसे दिखावन जाय ।।3।।
लूले ने नभ थामिया । यह अचरज कहा न जाय ।।4।।
पिंगला पर्वत चढ़ गया । कोइ साधु जाने ताय ।।5।।
रोगी सद जीवित रहे । बिन रोगहि मर मर जाय ।।6।।

कड़ी 1---जिसने कि अपने घट में शब्द का गहरा रस पाया, वह उसको क्यों कर बयान कर सकता है। उसका हाल वही होगा जैसा कि गूँगे का जो गुड़ खाकर उसके स्वाद का बयान करने से लाचार है। और यह कि जिस किसी को गहरा रस अंतर में आया वही उसके प्रकट करने में आम लोगों के सामने गूँगा हो गया।

" 2---जिसने कि दुनिया की तरफ़ से अपने कान बन्द किये उसी को अंतर में शब्द खुला फिर वह उस शब्द और आनन्द के भेद को आम लोगों को कैसे जतावे या सुनावे ?

" 3---जिसने कि अपनी नज़र दुनिया की तरफ़ से खींच ली यानी आँखें बन्द कर ली, उसी ने अपनी सुरत की धार को दसवें द्वार में पहुँचाया यानी मोती पो लिया। फिर वह इस कैफियत को अवाम को कैसे दिखा सकता है ?

" 4---जो मन कि दुनिया में दौड़ने से रह गया यानी जिसने चंचलता छोड़ दी उसी ने चढ़ कर नभ यानी आकाश को थाम लिया और यही अचरज की बात है।

" 5---जो मन कि निश्चल हो गया, वही पिंगला है और वही सतगुरु की दया से सुमेर पर्वत यानी त्रिकुटी पर चढ़ गया। इस हाल को कोई अभ्यासी साधु समझता है।

" 6---जो कोई मालिक के चरनों के इश्क़ यानी प्रेम का बीमार हुआ और जिस किसी ने अपने मन को बीमार जान कर सतगुरु से उसका इलाज कराना शुरू किया, वही एक दिन अमर पद में पहुँच कर अमर हो जावेगा और जिस किसी को प्रेम की बीमारी नहीं लगी या जिसने अपने मन की बीमारी की ख़बर न ली यानी अपने को निर्मल और चंगा समझा, वह बारम्बार जन्मेगा और मरेगा।

सोगी नित हरखत रहे । बिन सोग चौरासी जाय ।।7।।
चिन्ता में जो नित रहे । सो मिले अचिन्ते आय ।।8।।
बैरागी भरमत फिरे । रागी मुक्ति समाय ।।9।।
सतगुरु यह परचा दिया । कोइ बिरले खोज कराय ।।10।।
अंतरमुख जो शब्द में । लेंगे बूझ बुझाय ।।11।।
राधास्वामी कह दिया । तुम लेना शब्द कमाय ।।12।।

कड़ी 7---जो अपने प्रीतम सच्चे मालिक के वियोग की विरह में उदास और ग़मगीन रहता है, वह दिन दिन अन्तर में चरण रस पाकर मगन होता जावेगा, और जिस किसी के हिरदे में मालिक के चरनों की विरह और प्रेम नहीं है, वही मनुष्य चौरासी में भरमता रहेगा ।

" 8---जो कोई अपने मालिक के मिलने और अपने जीव का सच्चा उद्धार और कल्याण करने की चिन्ता में रहता है, वही एक दिन अचिन्त पुरुष यानी सच्चे मालिक से मिलकर निशिचन्त हो जावेगा ।

" 9---जिस किसी ने संसार से वैराग किया यानी घर बार छोड़ कर भेष लिया और मालिक के चरनों का प्रेम और प्यार उसके मन में नहीं आया तो वह हमेशा चारों खानों में भरमता रहेगा, और जिस किसी के मन में मालिक के चरनों का राग और प्रेम समाया, वही एक दिन मुक्ति पद में पहुँच जावेगा ।

" 10---सतगुरु ने इस तरह से सच्चे प्रेमियों को उनके घट में परचे दिये सो इस बात को सुन कर कोई बिरले जीव उसके खोज और तलाश में लगेंगे ।

" 11---और जो अपने अन्तर में शब्द का अभ्यास करेंगे, वही इस कैफ़ियत को समझेंगे और अपने घट में निरख और परख कर बूझेंगे ।

" 12---इस वास्ते सतगुरु राधास्वामी दयाल सब जीवों को पुकार कर कहते हैं कि हे भाइयो ! शब्द की कमाई करो और अपने घट में रस और आनन्द लो और दया और मेहर के परचे देखो ।

।। शब्द चौबीसवाँ ।।

मन सींचो प्रेम कियारी । सतगुरु अस हेला मारी ।।1।।
घट पौद खिली अब भारी । भक्ति की लग रही बांड़ी ।।2।।
जल अमृत वर्ष बहा री । संतन संग देख बहारी ।।3।।
गुरु शब्द लगा सुर्त तारी । सुखमन रस पी ले प्यारी ।।4।।
कँवल कमोदनी चन्द्र निहारी । खिली सुरत और प्यार बढ़ा री ।।5।।
मन भँवरा गुंजार लगा री । सूरजमुखी कँवल निरखा री ।।6।।
मरूवा मोगर मन मोहा री । चाह चमेली मेल मिला री ।।7।।
चम्पा चाँप चढ़ा धनुवा री । सुरत बान से काल गिरा री ।।8।।
मौरसली नृत मोर रसा री । नरगिस नैन देख उजियारी ।।9।।

।। बचन बयालीसवाँ ।।

।। सेवा बाणी ।।

।। शब्द पहला ।।

स्वामी उठे और बैठे भजन में । कर कर ध्यान मगन हुए मन में ।।1।।
फिर भर कमँडल धर दिया आगे । सतसंगी आय दर्शन लागे ।।2।।
किया चरनामृत लई परसादी । हार चढ़ा कर बँदगी साधी ।।3।।
लोटे घर तब गये दिशा को । फिर आये जब टाल बला को ।।4।।
चौकी बिछा मैंने गद्दी बिछाई । स्वामी बिठा और हाथ धुलाई ।।5।।
दाँतन कर मंजन करवाई । मुख किया शुद्ध और दाँत सफ़ाई ।।6।।
कुल्ली दई स्वामी कुल मेरा उधरा । जन्म सुफल और तन मन सुधरा ।।7।।
बटना तन मल मैल गँवाई । बाट खुली और सुरत चढ़ाई ।।8।।
तेल मला और चमक बढ़ाई । शोभा राधास्वामी अधिक सुहाई ।।9।।
मानसरोवर जल भर लाई । तब राधास्वामी अश्नान कराई ।।10।।

कर अश्नान पोंछ अंग लीन्हा । मगन हुई मैं जस जल मीना ।।11।।
कंघा किया स्वामी बाल सुधारे । गया जंजाल[1] मोह मद हारे ।।12।।
धोती बदली पहिने वस्तर । सतसंगी सब अब हुए इस्थिर ।।13।।
कमँडल भर फिर दासी लाई । राधास्वामी ढिंग बैठ पिलाई ।।14।।
सतगुरु सत सत बोली बोला । श्रवणी सुनी सुख दर खोला ।।15।।
कली कली मन चित्त खिलानी । नइ नइ शोभा आन समानी ।।16।।
सतसँग में आय किया उपदेशा । बचन कहे दिया अगम सँदेशा ।।17।।
फिर भोजन कर बीड़ी खाई । बाँटी बीड़ी कन्हैया भाई ।।18।।
सीत प्रसाद सभी मिल लीन्हा । जन्म जन्म से पातक छीना ।।19।।
माँज कमंडल जल भर लाई । और स्वामी को दिया पिलाई ।।20।।
सेज बिछाई स्वामी पौढ़े । चरनन सेवा में चित जोड़े ।।21।।
चरनन सेवा करी बनाई । दुर्लभ सेवा यह हम पाई ।।22।।
जागे स्वामी दर्शन पाई । भाग आपना लिया जगाई ।।23।।
सेवा का वर्णन सब कीन्हा । गावे सुने होय मन लीना ।।24।।
जो गावे यह मेवा बानी । सो पावे सतलोक निशानी ।।25।।
राधास्वामी सेवा गाई । सुरत शब्द मारग तब पाई ।।26।।
बड़ भागी जो सेवा करते । प्रीत सहित स्वामी सँग रहते ।।27।।

।। शब्द दूसरा ।।

चौका बरतन किया अचंभी । सफ़ा किया मन अपना हम भी ।।1।।
नूर पुरुष का अद्‌भुत जागा । तेज प्रचंड तिमिर सब भागा ।।2।।
चौका कीन्हा दसवें द्वारा । पाँचों बासन माँज सँवारा ।।3।।
चूल्हा धोया श्याम कंज में । जोत जगाई सहसकँल में ।।4।।
तीन गुनन का पोता मारा । करम भरम का कूड़ा टारा ।।5।।
हुई सफ़ाई अचरज भारी । सतगुरु ने अब मोहि सम्हारी ।।6।।

---

1. दुख, रंज ।

सतगुरु सेवा में रहुं लागी । छिन छिन चरन कँवल में पागी ।।7।।

।। शब्द तीसरा ।।

रात जगूँ मैं सुन कर खड़का । उठत सुवामी मन मेरा फड़का ।।1।।
हाथ धुलाऊँ देऊँ अँगोछा । इस सेवा पर मन मेरा लोचा[1] ।।2।।
भाव भक्ति से बिंजन करती । थाल परोस स्वामी ढिंग धरती ।।3।।
जब राधास्वामी ने भोग लगाया । मगन हुआ मन अति सुख पाया ।।4।।
ग्रास दिया परशादी का जबही । घट के परदे खुल गये तबही ।।5।।
राधास्वामी राधास्वामी छिन छिन गाया । फिर सतसंगी सब मिल पाया ।।
बटी परशादी सुख भया भारी । फिर पानी की भर लाई झारी ।।7।।
करमंडल ले जल अचवाया । पलँग बिछा स्वामी पौढ़ाया ।।8।।
चरन पखारूँ जागूँ रैना । फिर उठें स्वामी तब पाउँ चैना ।।9।।
उठकर दर्शन छिन छिन करती । चरनामृत परशादी लेती ।।10।।

।। शब्द चौथा ।।

भोग धरे राधास्वामी आगे । लीन्हे बिंजन अमी रस पागे ।।1।।
गगन शिखर पर बजा है नगारा । भोग लगाया राधास्वामी सारा ।।2।।
काल करम को खा गये छिन में । जंगी नाम धराया पल में ।।3।।
ऐसा भोग लगा नहिं कबही । राधास्वामी खा गये सबको अबही ।।4।।

-----इति सम्पूर्ण समाप्त बचन सार बयालीस राधास्वामी के-----

---

1. लुभायमान हुआ ।

देशना (Index) सार बचन छंद बंद

जम जाल 156, 312

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

राधास्वामी जी